अकवितादि-महाकाव्यान्त



श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

अकवितादि महाकाव्यान्त

[वैचारिक आ समीक्षात्मक निबन्ध]

लेखक

श्रीचन्द्रनाथमिश्र अमर

प्रकाशक

नवरत्न गोष्ठी

दरभंगा

AKAVITADI MAHAKAVYANT

प्रकाशक	:	नवरत्न गोष्ठी आदित्य सदन, मिश्रटोला, दरभंगा- 846004

प्रथम संस्करण	:	2015 ई.
प्रति	:	300
मूल्य	:	300/- (तीन सय टाका)
मुद्रक	:	प्रिंटवेल टावर, दरभंगा

कहबाक अछि जे....

यद्यपि जहियासँ अर्थात् विगत 75 वर्षसँ जखने चेतन भेलहुँ, ने जानि तहियेसँ साहित्य रचना दिस प्रवृत्ति जागि गेल । अनेक बाधा-विघ्न अबैत रहितो एहि प्रवृत्तिमे अरुचि नहि भेल । देश पराधीन छल, मातृभाषा मैथिली आधुनिक भारतीय भाषामे सबसँ पुरान होइतो अपन स्वतन्त्र सत्ताक हेतु संघर्षरत छल । स्वाधनीता प्राप्तिक बादो सांविधानिक अधिकारसँ वंचिते राखल गेल । अंग्रेज शासक द्वारा प्रवर्त्तित नवीन शिक्षा पद्धतिमे एकरा कोनो स्थान नहि भेटलैक । एहि सब विषयक परिज्ञान जहिना-जहिना होइत गेल तहिना-तहिना एहि हेतु अपन क्षमता धरि किछु करैत रहबाक भावना दृढ़ होइत गेल । इन्द्रक प्रकोपसँ जलाप्लावित होइत ब्रजक रक्षाक हेतु गोवर्द्धन पर्वतकेँ यद्यपि श्रीकृष्ण भगवान उठा लेलनि, किन्तु व्रजवासी गोप लोकनि सेहो यथासम्भव अपन-अपन सोङर ओहिमे लगौने रहलाह तहिना हमहू मातृभाषाक उत्थानक अनुष्ठानमे अपनाकेँ लगौने रहलहुँ आ एही बलेँ जीवन यात्रा चलबैत विगत 90 (नब्बे) वर्षक काल कटि गेल ।

मैथिलीक शिखर पुरुष यात्रीजी कहियो बाजि गेलाह जे मैथिली मरि जायत । जहिया ई कथा बाजल छलाह ताहि समय सर्वथा समुचित नहि बुझायल छल ।

मैथिलीक विरोधी वर्ग मैथिलीकेँ ब्राह्मण ओ कर्ण-कायस्थ मात्रक भाषा होयबाक लांछना सेहो लगबैत छलथिन ।

सम्प्रति ओही ब्राह्मण ओ कर्ण कायस्थ वर्गकेँ द्रुत गतिएँ एहिसँ विमुख होइत देखि यात्रीजीक भविष्यवाणी सार्थक होयबाक संभावना प्रतीत भऽ रहल अछि । जाहि भारतीयता ओ मैथिलत्व पर गोटेक हजार वर्षक पराधीनता कालक विधर्मी शासक द्वारा चोट नहि पहुँचाओल जाय सकलैक से

एतबे दिनक स्वाधीनताक कालमे आत्म-विस्मृत, स्वाभिमान-शून्य जनप्रतिनिधि एकर जड़िए पर प्रहार कऽ नष्ट करबापर तुलल छथि ।

देश संक्रमण कालसँ गुजरि रहल अछि । भाषा सेहो संक्रमित भऽ रहल अछि । हमरा लोकनिक भाषाक क्षेत्र तँ सीमित अछि । जाहि हिन्दीकेँ भने॑ कागतेपर, राजरानीक पद पर प्रतिष्ठित कयल गेल छैक ताहि हिन्दीक समाचार पत्रमे मत्स्य, वत्तख आ बटेर पालन लै बनल चभच्चा (छोट-छोट पोखरिक उद्घाटनक समाचारक शीर्षक पढ़लहुँ– 'स्मॉल पाउंड बनेगा मॉडल' पढ़लहुँ तँ कपार पीटि लेल । जाहि समाचार पत्र सभकेँ हिन्दीकेँ समर्थ बनयबाक दायित्व छैक सैह चभच्चाकेँ पाउंड लिखऽ लागल अछि– सेहो अशुद्ध तँ एहि प्रवृत्तिसँ भाषा विकसित होयत ?

'जखन बड़के पर ई उत्पात
तखन छोटक के पूछत बात'

धन्य थिकाह मैथिलीक साहित्यकार वर्ग जे एखनहुँ अपन पेट काटि मैथिलीमे पोथी लिखैत छथि, छपबैत छथि आ विक्रयक बदला वितवरण कऽ आत्म सन्तोष कऽ लैत छथि ।

हिन्दीक मध्यकालीन परम लोक-प्रिय कवि अब्दुर्रहीम खान खानाक उक्ति छनि– 'वे रहीम अब नाहि' । वयसक धर्म ककरो छोड़ैत नहि छैक । रहीमक अशक्तताक अनुभव डेग-डेग पर आब हमरो भऽ रहल अछि । प्रायशः प्रचलित सब विधामे छोट वा पैघ मोट वा पातर पुस्तक सब प्रकाशित भऽ समाजक समक्ष अबैत रहल अछि । समय-समय पर छिट-फुट विभिन्न विषयसँ सम्बद्ध निबन्ध सेहो लिखैत रहबाक सुयोग भेटैत रहल जे सब यत्र-तत्र अनेक ग्रन्थ सब तथा विभिन्न पत्र-पत्रिकामे छपितो रहल । ओना हम कोनो पटु निबन्ध लेखक नहि छी तथापि छिड़िआयल सबकेँ एकत्र कऽ पुस्तकक आकार दऽ देलापर ओहि सब लेखमे व्यक्त विचार सुधी समुदायक समक्ष किछुओ दिन जीबैत रहि सकत, एही विश्वाससँ घरक आँटा जेँ एतेक दिन गील करिते रहलहुँ तेँ जीवनक सान्ध्यबेलामे किछु आरो गील करबाक दुस्साहस मात्र कयलहुँ अछि ।

●

अनुक्रमणिका



मैथिली साहित्यमे अकविता

मैथिली साहित्यमे अकविता विषयपर अनेक विचार संगोष्ठी भऽ चुकल अछि । जानल-मानल कतोक विद्वान अपन-अपन मन्तव्य व्यक्त कऽ चुकल छथि, जे सब पुस्तकक आकार लऽ चुकल अछि । तथापि अपन दृष्टिकोण सभक भिन्न-भिन्न होइते छैक । अतः एतय किछु विचार उपस्थित कयल जा रहल अछि ।

पहिने अकविता शब्दकेँ लेल जाय । एहि शब्दमे नञ् समास अछि– न कविता = अकविता अर्थात् कवितासँ भिन्न कोनो अन्य विधा हो से अकविता कहाओत । काव्यकेँ आचार्य लोकनि दू प्रकारक कहने छथि– श्रव्य ओ दृश्य । वर्त्तमान परिप्रेक्ष्यमे हमरा मतेँ तेसरो एक भेद होयबाक चाही– पाठ्य । सुनि कऽ जकर रसास्वादन कयल जाय से श्रव्य, तथा देखि कऽ जकर रसास्वादन हो से दृश्य काव्य भेल । श्रव्य काव्य लै मंच आ दृश्य काव्य लेल रंग मंचक प्रयोजन होइत छैक, किन्तु जनिका पढ़बाक व्यसन छनि से एकान्तमे बैसि पढ़ल करैत छथि जेना कथा, उपन्यास, निबन्ध, संस्मरण, आत्म-कथा आदि आ ताहीसँ रसास्वादन होइत छनि । हमरा जनैत तेसर प्रभेद सबसँ प्रमुख अछि ।

कविताकेँ श्रव्य काव्यक अन्तर्गत राखल गेलैक अछि तेँ ई कहब संगत नहि होयत जे कविता पढ़िकऽ आनन्द नहि लेल जा सकैछ, तथापि ई मानहि पड़त जे कविक मुहेँ सुनलासँ जतेक आनन्दक अनुभव होइत छैक ततेक पढ़लासँ नहि । बहुतो कवि तँ एहनो छथि जनिका मुखेँ सुनलासँ जे आकर्षण होइत छैक से पढ़ला उत्तर विकर्षणमे परिवर्त्तित भऽ जाइत छैक ।

सुनला आ पढ़लामे अन्तर एतबे जतेक घृत लगाओल सोहारी तथा घृतमे छानल सोहारीमे होइत छैक । मूल द्रव्य भेल गहूम आ घृत से दूनूमे छैके, खयला उत्तर जे प्रतिफल होइत छैक वुभुक्षाक शान्ति से दूनूसँ होइते छैक । अकविताक जे प्रबल पक्षधर छथि से एहि कसौटी पर कसि कऽ जाँचि लेथु तँ मनक संशय दूर भऽ जयतनि ।

अकविता शब्दक व्युत्पत्तिएसँ ई सिद्ध अछि जे श्रव्य विधासँ भिन्न विधा अर्थात् गद्य थीक । यदि से मानि लेल जाय तखन तँ कोनो झंझटे नहि रहैत अछि । झंझट तँ तखन ठाढ़ होइत अछि जखन तथाकथित अकविताक प्रणेता अपनाकेँ कविक पंक्तिमे परिगणित करयबाक हेतु आफन तोड़ैत रहैत छथि आ बजैत छथि जे नव लोककेँ पुरान-पंथी लोकनि मोजर देबहि ने चाहैत छथिन तेँ नव आ पुरानक दू गोल बनि गेल अछि ।

आचार्य जगन्नाथ रमणीय अर्थकेँ प्रतिपादित कयनिहार शब्दकेँ काव्य कहलनि अछि तथा रमणीयताक स्वरूप निर्वचन करैत कहने छथि- 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतायाः' परन्तु वर्त्तमान कालमे नवताक तेहन दुराग्रह बढ़ि गेल अछि जे कविताक क्षेत्रमे अराजकता उत्पन्न भऽ गेल अछि । अन्यथा नव-पुरान तँ सब दिनसँ आबि रहल अछि । ई एक अनिवार्य नैसर्गिक प्रक्रिया थीक । जे आइ नव अछि से काल्हि पुरान होयबे करत, एहि काल-चक्रकेँ रोकबाक सामर्थ्य आइ धरि ककरो नहि भेलैक अछि आ ने होयबाक संभावने छैक, तखन पुनि एहि हेतु दू गोल होयबाक तात्पर्य की ?

एकर मूलमे हमरा दू गोट तत्त्व बुझना जाइत अछि- प्रथम साहित्यकेँ राजनीतिक 'वाद'सँ प्रतिबद्ध करबाक दुश्चेष्टा तथा दोसर भारतीय साहित्यकेँ विदेशी सिद्धान्तक कसौटीपर कसबाक दुराग्रह । एही दूनूक संयोगसँ अकविताक जन्म भेलैक अछि । प्रति-बद्धता धर्ममे, उपासनामे कर्त्तव्यमे ओ राजनीतिमे होइत छैक, साहित्यमे नहि । साहित्य निसर्ग जकाँ सभक प्रति समान भावसँ देखलासँ बनैत अछि । ई बात हम कतहु अन्यत्रो कहने छी । अतः साहित्यमे नव-पुरानक प्रश्ने नहि उठैछ । नव सब दिन नवे रहि जाय से तँ प्रकृतिमे विपर्यये भेला उत्तर सम्भव होयत आ प्रकृतिक विपर्ययेक दोसर नाम प्रलय थिकैक । जहिना छायावाद, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद

आदिक श्रृंखला बनैत-बनैत आधुनिक कविता, नव कविता आ अन्तमे अकविता पर पहुँचि गेल अछि, के कहि सकैत अछि जे ई एतहु स्थिर रहि सकत ? नवीन-नवीन वैज्ञानिक आविष्कारक कारणेँ सम्पूर्ण संसार आइ निकटसँ निकटतर सम्पर्कमे आबि रहल अछि आ एहि निकटताक कारणेँ सांस्कृतिक सम्मिश्रणसँ भावबोध तथा मान्यतामे परिवर्त्तन भऽ रहल छैक से तँ क्रमशः बढ़िते जयतैक, तखन ईहो पुरान नहि भऽ जायत ?

नवता कहियो, कोनो युगमे ककरो अरुचिकर भेल होइक से हमरा ज्ञात नहि अछि । कहल तँ गेल छैक– 'नव नव गुणरागी प्रायशः सर्वलोकः' तेँ नवतासँ विरोधक संभावना नहि, विरोधक बीज तँ ओहि ठाम अछि जतय नवताक नाम पर पुरातनकेँ अग्राह्य, सड़ल, गन्हायल घोषित कयल जाइछ ।

साहित्यक मर्मज्ञ विद्वान, आजीवन मौन ओ एकान्त साधनामे निरत, प्रचार-प्रसारसँ सदा निरपेक्ष, साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत पण्डित उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' अपन पुरस्कृत कविता संग्रह– 'बाजि उठल मुरली'क भूमिकामे लिखने छथि–

''जहिना भारतीय वाङ्मयमे निराकार ब्रह्मक प्रतिपादक दर्शन सभ अछि आ ओहि मार्गक अनुयायीओ छथि जे ज्ञानक परिपाकक स्थितिमे योगसाधना द्वारा आत्माकेँ परमात्मासँ जोड़ि लैत छथि, तहिना कर्मकाण्डी परम्पराक अनुसार साकार ईश्वरक पूजा प्रतिमो पर कयले जाइत अछि आ फूल-अच्छत देले जाइत छनि । क्यो प्रतिमा पूजक आस्तिक ने निराकार ईश्वरक उपासककेँ दूसैत अछि ने क्यो योगी-वेदान्ती प्रतिमा पूजककेँ । सभक हेतु अपन-अपन बौद्धिक स्तर होइत छैक, यथा– रुचि उपासना करैत अछि । जँ आजुक कोनो साहित्यकारक संवेदनास्तर विदेशी भावधाराक नीक अनुकृति कऽ लैत अछि आ ओकरा पाठक ताहि कोटिक भेटि जाइक तँ ओहो वर्ग रहओ ने, किन्तु प्राचीन रस-सिद्धान्तक परिपाटीसँ लिखनिहार ओकर आनन्द उठौनिहारकेँ दुसबैक किएक ? ई किएक मानि लेब जे हमही सही बाट पर छी, आन पथच्युत वा दिग्भ्रान्त अछि ।''

करीब विगत चारि दशकसँ एकर खूब घमर्थन भऽ रहल अछि । एहि नव कविता आ अकविताक द्रष्टा ऋषि यदि यात्रीजीकेँ मानल जाइत छनि तँ उद्गाता राजकमल चौधरी मानल जाइत छथि । एकर समर्थनमे कतोक

अल्पजीवी पत्रिका उदित ओ अस्त होइत रहल । डॉ. हरिमोहन मिश्र 'आधुनिक मैथिली कविता' तथा डॉ. श्री रमानन्द झा 'रमण' 'नवीन मैथिली कविता' नामसँ समीक्षात्मक पुस्तको लिखलनि जे दूनू पोथी मैथिली अकादमी,पटनासँ प्रकाशित भऽ चुकल अछि । सिद्धान्तक स्थापना एतेक प्रयास होइतो एकर प्रबल पक्षधर लोकनिकेँ आत्म-प्रत्यय नहि भऽ रहल छनि ।

ओना अकविता कहि कऽ पत्र-पत्रिकामे छिटफुट रचना प्रकाशित होइत रहल अछि, परन्तु संकलित रूपमे अकविताक प्रथम संकलन श्रीकीर्तिनारायण मिश्रक 'सीमान्त' नामक एक पुस्तक 1967 ई.मे प्रकाशित भेल छनि । एकर आमुखक शीर्षक थिकै' -अकविताक सन्दर्भमे, जाहिमे कवि स्वयं लिखने छथि- संस्कारक पूर्वाग्रहे छल जे हिन्दीमे नागार्जुनकेँ प्रगतिशील आन्दोलनसँ सम्बद्ध एक महान जनकवि होइतो मैथिलीक यात्रीक प्रगतिवाद मार्क्सवादी कंबल ओढ़ने एकटा कर्मकाण्डी पण्डित बुझना जाइछ जकर आंचलिक संकीर्णता भारतीयतामे परिणत भऽ गेलैक, मुदा ओ कोनो क्रान्तिक जन्म नहि दऽ सकल ।' (क्रान्तिक बदला भ्रान्ति जन्म लऽ लेलक जे अगिला पीढ़ीकेँ दिशा विहीन बना देलक । लेखक) 'सीमान्तक' कवि आगाँ लिखैत छथि- 'चित्रा'सँ मैथिलीमे एक नवीन काव्य परम्पराक आरम्भ होइत अछि । यत्रीजी युगानुकूल भाव, भाषा आ शिल्पक अन्वेषण कयलनि तथा मिथिलाकेर माटि, पानि आ ओकर परिवेशकेँ नव ढंग, नव स्वर देलनि, मुदा तीक्ष्ण संघर्ष एवं विरोधी प्रतिक्रियासँ जाहि आत्मसंघर्षक जन्म भेल ओकरा ओ नहि पकड़ि सकलाह । मानव मनकेर विकृति हुनक उदारपंथी दृष्टिसँ ओझल रहि गेल ।'

उपुर्यक्त वक्तव्य सिद्ध करैत अछि जे जे समीक्षक यात्रीजीकेँ एकर द्रष्टा मानैत छथिन ओहो लोकनि भ्रान्तिक जालमे फँसल रहि गेलाह । एकर एक तात्पर्य ईहो भऽ सकैछ जे प्रकृतिक विशिष्टता ओ सौन्दर्य तथा संस्कृतिक उपादेयताक प्रति उदार दृष्टि रखनिहार व्यर्थ साहित्यमे जगह छेकने छथि । अनुदार पंथी बनि मानव मनक विकृतिकेँ उजागर करव क्रान्ति धर्मीक उद्देश्य होयबाक चाही । एकरे हमरा लोकनि माक्षिका वृत्ति कहैत छिऐक । ध्यानमे रहय जे मक्षिकाबुतेँ मधु संचय नहि भऽ पवैत छैक आ साहित्य ओ रसायन थिकै जकर अनुपान मधु होइत छैक । विलक्षणता ई जे जाहि वर्ष 'सीमान्त' प्रकाशित भेल छलनि ताहि वर्ष यात्रीजीक 'पत्रहीन नग्न गाछ' सेहो प्रकाशमे आयल छलनि आ अगिला वर्ष ओ साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृतो भेलनि ।

नव आ पुरानमे विरोधक बीज कतऽ अछि। तकर अन्वेषण कयल जाय। जाहि नव कविता आ अकविताक अन्हरजालीमे चोन्हरायल श्रीजीवकान्त असमाहि हमर हाथक भूमिकामे कहैत छथि– मैथिलीक आधुनिक कविताक प्रारम्भ भेला एक दशकसँ बेसी भऽ गेल, आधुनिक कविता नव एहि द्वारेँ कहौलक जे ओ अपनासँ पूर्ववर्त्ती लोकनिक पथदर्शकक (गाइडक) भूमिकाकेँ अस्वीकार कऽ देलक। मुदा गाइड मानैत नहि अछि, अहुछिया कटैत अछि आ भिखमंगा भऽ जाइत अछि। भारतीय संविधान भीख माङबकेँ हत्या नहि घोषित कयलक अछि आ ने भीख माङबाक दण्ड प्राण-दण्ड निर्धारित कयल गेल अछि तेँ भिखमंगाकेँ गोली मारब चलनिसारि नहि भेल अछि आ तेँ भिखारि सब बाट-घाट छिछिआइत अछि। ताही नवताक प्रतिफलन थिकनि मि. नामक अति क्षुद्र पत्रिकामे प्रकाशित निम्नांकित पंक्ति–

''खबरदार औ बूढ़
दूनू हाथउठाउ
फटाक्।''

आ एकर पुष्टिमे ओही पत्रिकामे श्री वीरेन्द्र मल्लिक दू डेग आरो आगू बढ़ैत छथि। श्रीजीवकान्त तँ संस्कारवश औ संबोधन कयने छथिन, श्रीमल्लिक जी तँ लिखने छथि–

''रौ बूढ़ चुप रह
बड़ अतत्तह कैलेँ
आब हमर राज छौक
जेना जे कहैत छिऔक से कर
नञि तँ
गोली दागि देबौक।''

[प्रसंगात् 2003 मे साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि रूपमे कोलकाता गेलहुँ तँ बहुत दिनक बाद मल्लिकजीसँ भेट भेल। अपन परिचय दैत नमस्कार कयलनि तँ कहलियनि– आब तँ अहूँ बूढ़ भऽ गेलहुँ]

किन्तु श्रीकीर्त्तिनारायणमिश्र मैथिलीमे आक्रामक विचार अननिहार कवि लोकनिमे श्री जीवकान्तक नाम बारि देने छथिन। पूर्वोक्त आमुखमे ओ

लिखैत छथि– संस्कार तथा वर्जना केर केहनो देबाल कियैक नहि बनाओल जाय, मुदा युगक नवता आग्रही विचार ओकर अतिक्रमण अवश्य करैत छैक। मैथिलीमे एहि आक्रामणक विचारकेँ आनैवाला कवि छथि राजकमल चौधरी, मायानन्दमिश्र धुमकेतु, सोमदेव, किसुन, हरिनारायणमिश्र, मधुकर गंगाधर, वीरेन्द्र मल्लिक, रामदेव, इलारानी सिंह आ एहि पंक्तिक लेखक ।

श्रीकीत्तिनारायण मिश्रक मन्तव्य छनि जे तीक्ष्ण संघर्ष आ विरोधी प्रतिक्रियासँ उत्पन्न आत्मसंघर्षकेँ पकड़बे नवता थिक आ यैह नवता काव्यक उद्देश्य होयबाक चाही ।' एतावता मानव–मनक विकृतिएकेँ पकड़ब मुख्य काज भेल । संस्कार तथा वर्जनाक अतिक्रमण यदि नहि भऽ सकल तखन कविकर्मक उद्देश्य बाधित भऽ गेल । हिनक ईहो कथन छनि जे 'जाहि भाषाक साहित्य जतेक समर्थ एवं उन्नतिशील होइत छैक, ताही अनुपातमे आन्दोलन, वैचारिक संघर्ष प्रयोग, संक्रान्ति, अन्तर्विरोधकेँ जन्म दैत छैक' । एहीसँ एहि अकवितावादी लोकनिक, जीवन–दर्शन बूझल जा सकैत अछि । भारतीय मनीषीगण तँ साहित्य द्वारा अन्तर्विरोधक शमन चाहैत छलाह । साहित्य शब्दमे हितक भाव सामाहित छैक । विचार मन्थन जतेक हो, 'वादे वादे जायते तत्त्वबोध:' मुदा वैचारिक संघर्ष कोनो समाधान तँ नहि भेल ।

एहि प्रवृत्तिक कविता सभक एक संकलन आ सम्पादन हमर एक अन्तरंग मित्र पं. रामकृष्णझा 'किसुन' कयने छलाह जकर प्रकाशन हुनक देहान्तक बाद भऽ सकलैक, तकर भूमिकामे ओ स्पष्ट करबाक प्रयास कयने छथि । ओ लिखने छथि– 'नव कविलोकनि अपन भोगल यथार्थक अनुभूतिक लेल शब्दकेँ नवीन अर्थवत्ता देबाक लेल प्रतिबद्ध छथि । एतदर्थ क्षण विशेष मे तीव्र संयोगक सूक्ष्म भाव–वहनक शाब्दिक अक्षमताकेँ बूझैत एकदम अनिवार्य युगानुरूप आपातत: वास्तविक आ नव बोधानुकूल नवीन बिंब, नवीन प्रतीक, नवीन उपमान आदिकेँ नव कवितामे साधन मानल गेल अछि। जनसाधारण द्वारा ई नवीन साधन पूर्ण परिचित आ अभिज्ञता नहि रहलासँ नव कवितामे दुर्बोध्यता वा दुरूहता उत्पन्न होइत अछि ।' तथ्य ई जे प्रसाद गुणक हत्या, प्रथम ग्रासे एव मक्षिका पात: ।

हमरा तँ एहिमे वदतो व्याघात दोष देखि पड़ैत अछि । युगानुरूप आ नव बोधानुकूल यदि नवीन विंब आदिक प्रयोग होइछ तखन जनसाधारणसँ

अपरिचित कोना ? हम तँ कहब जे जनसाधारणक कोन कथा, आजीवन काव्य शास्त्रेक अनुशीलन ओ काव्य रचनामे निरत रहनिहारो व्यक्ति एहि नव कविताकेँ बुझबामे अपनाकेँ अक्षम मानि रहल छथि । एहिठाम प्रो. हरिमोहन झाक मुहेँ सुनल एक गप्प मन पड़ि गेल । आचार्य रमानाथ झा 'नवीन गीत' नामसँ संकलित पोथीमे किछु नव कविता सेहो संकलित कयलथिन । हरिमोहन बाबू पुछलथिन जे एकर अर्थ लगैत अछि ? रमानाथ बाबू कहलथिन– नहि । पुनः पुछलथिन– तखन स्थान किएक देलिऐक ? उत्तर छलनि नहि देबैक तँ 'मा–र–त' ।

साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत कविता संग्रहक सूर्यमुखीक भूमिकामे आजीवन काव्यसरितामे आमूल चूल अवगाहन कयनिहार रससिद्ध कवि आरसीप्रसादसिंह अपन मन्तव्य व्यक्त कयने छथि, तकरा उद्धृत करब समीचीन प्रतीत होइछ । ओ लिखने छथि– ओना हमरा साहित्यक कोनो वादसँ लेब–देब नहि अछि । कविता नव होअय कि पुरान ई बात तँ जाय दिअऽ पहिने तँ ई देखल जाय– कविता छैक कि नहि । ओहिसँ कोनो रस भेटै छै कि नहि ? मुदा जे रस, छन्द, अलंकार, ध्वनि सभ पर अग्निश्च वायुश्च भेल छथि । पुरान सभ परिपाटीकेँ जड़ि–मूलसँ उखाड़ऽ पर प्रतिबद्ध छथि हुनका लै कालिदासेक एहि उक्तिक कि कोनो मूल्य रहि जाइ छै– पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम् । पुनः जेँ कि अकविता अथवा एहने कोनो सविशेष साहित्यक वाद जे परम्पराक विरोधमे ठाढ़ भऽ एकदम अपन मूलोच्छेद करऽ पर फाँड़ बन्हने अछि जँ कोनो तरहेँ जीवित रहि सकय तँ ओ कवि कालिदासक कवि जन्म केर पूर्ववर्त्ती मूर्खतेक औचित्य सिद्ध करत, जाहि प्रसंगमे किंवदन्ती छै' जे ओ जाहि गाछक डारि पर बैसल छलाह कुड़हड़िसँ काटऽ पर लागल छलाह । पुनश्च–कुण्ठा, मृत्यु, अन्हार वा छाँहे यदि सत्य छै तँ प्रकाश, अमृत आनन्द, उत्सव आदि कोना मिथ्या भऽ सकै छै ? आ जे कवि स्वयं एहि दुर्गतिसँ बाहर नहि भऽ सकैछ से यदि लाख–लाख दीन–दुर्बल दलित–पतित मानवक मसीहा बनि कऽ समाजमे परिवर्त्तन लाबऽ लै अरण्य रोदन करय तँ एहिसँ बढ़ि कऽ विडम्बना वा दुर्भाग्य की भऽ सकै छै ?

नव कविता वा अकविताक पुरोधा कवि राजकमलचौधरी अपन 'स्वरगन्धा'क भूमिकामे अभिमत व्यक्त करैत छथि– 'हमरा विचारेँ कविताक

हेतु ई आवश्यक नइँ अछि जे छन्द, लय, गीतात्मकता, प्रसार-विधि, यति प्रणालीकेँ मान्यता देले जाए। कविताक लेल एक्के वस्तु आवश्यक अछि- शब्द ! शब्द बिना कविता नहि कैल जा सकइए बस।

एहन सन क्रमपात जे आन विधा-कथा, उपन्यास, नाटक, आदि शब्द नहिओ रहने लिखल जा सकैछ। एक दिस ई शब्द मात्रकेँ साधन मानैत छथि आ दोसर दिस किसुनजी शाब्दिक अक्षमताक कारणेँ नव विंब, नव प्रतीककेँ साधन बनयबाक बात कहैत छथि। बोद्धा लोकनि चिन्तन करथु जे कोन उपयुक्त आ कोन अनुपयोगी। राजकमल आगाँ कहैत छथि- कविता गद्य नइ थीक जे शब्दक अतिरिक्त आन कोनो विधानकेँ मानिकेँ चलत। गद्यक लेल व्याकरण सम्मत एकटा सुनिश्चित स्वरूप आ मार्ग बना देल गेल अछि- कवितामे एहन कोनो नियम उपनियम नइँ अछि, छन्द योजना कविताक शृंगार मात्र थीक, आभूषण मात्र थीक आ कविताक वस्त्र थीक शब्द।

एहिसँ स्पष्ट होइत अछि जे कविताक हेतु शब्द मात्र अपेक्षित सेहो व्याकरण सम्मत हो से आवश्यक नहि। भारतीय मनीषी तँ अशुद्ध शब्दकेँ प्रयोक्तव्ये नहि मानैत छथि। महाभाष्यकार महर्षि पतंजलिक कहब छनि जे असुर लोकनि देव पक्षक विनाश करबा लै यज्ञ ठनलनि आ हे अरयः क बदलामे हे अलयः शब्दक प्रयोग कयलनि, परिणामतः पराभवकेँ प्राप्त करैत गेलाह।

पुरुषक हेतु सुसंस्कृत वाणीएकेँ अलंकार कहल गेलैक अछि- 'वाण्येका समलंकरोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते'। असंस्कृत शब्द मुहसँ वहराइते लोक देखार भऽ जाइत अछि। गद्यक हेतु जहिना व्याकरणमे प्रयोग विधान छैक, पद्यक हेतु छन्द शास्त्रमे तहिना विधान कयल गेल छैक। छन्दे अर्थात् लयात्मकते ओ तत्त्व थिकै जे पद्यकेँ गद्यसँ फराक करैत छैक।

कामेश्वरसिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक पूर्व कुलपति तथाराष्ट्रपति पुरस्कार, साहित्य अकादेमी पुरस्कार, तिरुपति विश्वविद्यापीठसँ महामहोपाध्यय सम्मानसँ सम्मानित आचार्य जयमन्त मिश्र, परम्परा एवं आधुनिक कविता चेतना समिति, पटना, स्मारिकामे लिखने छथि- 'बन्धन प्रायः प्रतिकूल बुझना जाइछ। अतः कष्टक कारण ओकराबूझि लोक बन्धनकेँ तोड़ए चाहैत अछि। परन्तु अनेको शारीरिक, व्यावहारिक, सामाजिक आदि बन्धन सुव्यवस्थाक मूल कारण होइत अछि। शरीरमे अस्थिक बन्धन, घर-द्वारमे कीलक बन्धन

गाड़ीक पटरीमे लोहक बन्धन, समाजमे मर्यादाक बन्धन जँ तोड़ि देल जाय तँ की परिणाम होएत ? एहि तरहेँ कविताक स्वरूप केँ जीवित रखबाक हेतु छन्दक बन्धन आवश्यक । तेँ कहल गेल अछि– 'अपि माषं मषं कुर्यात् छन्दोभंगं न कारयेत् ।

जहाँ धरि किसुनजी शब्दकेँ नवीन अर्थवत्ता देबाक हेतु नव कवि सब केँ प्रतिबद्ध कहैत छथि ताहू प्रसंग आचार्य डॉ. जयमन्त मिश्रक कथन छनि– 'शब्दसँ अर्थक ज्ञान परम्परानुगत संकेत द्वारा होइत छैक । अत एव शब्दज्योतिसँ अर्थ प्रकाशित होइत अछि । परम्परानुगत संकेतकेँ छोड़ि मनमाना अर्थमे शब्दक प्रयोग हो तँ श्रोताक हेतु ओ शब्द व्यर्थ होएत आ प्रयोक्ताक प्रयास निरर्थक । ओहेन कविताक व्यापकता तथा चिरस्थायिता कथमपि संभव नहि जे दोसराक हेतु अबोध्य हो । अभिधा लक्षणा तथा व्यंजनाकेँ छोड़ि एखन धरि अर्थ–ज्ञानक सर्वमान्य एवं सर्वबोध्य कोनो नव माध्यम नहि बनि सकल अछि । अतएव अकविता रूप कविता जखन परम्परावादीकेँ दृष्टिगोचर होइत छनि तखन ओकर अर्थ बुझबामे असमर्थ भऽ जाइत छथि ।'

एकटा सामान्य उदाहरण देखल जाय । कोनो पाहुन अयलाह । नेनाकेँ कहलिऐ– बौआ ! गोड़ लगियौन आ पाहुनकेँ पानि दैत कहलियनि– पैर धो लेल जाय । एकरा बदला जँ नेनाकेँ कहिऐ– पैर लगियौन आ पाहुनकेँ कहियनि– गोड़ धो लेल जाय । ई प्रयोग व्यवहार संगत होयत ? यद्यपि पैर आ गोड़ दूनू शब्द एके अर्थ रखैत अछि । एकरे परम्परागत संकेत कहल जाइत छैक ।

गद्य तथा छन्दोबद्ध पद्यकेँ व्यावहारिक दृष्टिसँ देखला उत्तर बुझना जायत जे नेना वा प्रौढ़ो व्यक्तिकेँ पद्य जतेक सुगमतासँ कण्ठस्थ भऽ जाइत छैक, एहिसँ दसोगुन अधिक चेष्टा कयलासँ गद्य कण्ठस्थ नहि भऽ पबैत छैक । छन्द रचनाक मूल तत्त्व थिकैक 'यति' जे लयात्मकता अनैत छैक । रसग्राही रसना ताल पर ओकर उच्चारण करैत अछि तेँ मेधा सुगमतासँ ओकरा धारण कऽ लैत अछि । अतः कविताक हेतु लयात्मकता अनिवार्य तत्त्व मानल गेल अछि । चाउरकेँ अदहनमे सिद्ध कयला पर भात तथा खापरिमे भुजला पर भूजा होइत छैक । आब शब्दकेँ नव अर्थवत्ता देबाक हेतु खापरिमे भुजलेकेँ भात कहिऐक तँ कहय पड़त– अपन महिंस कुड़हरिए नाथब ताहिसँ मतलब अनका की ?

ई निर्विवाद जे नव कविता लिखनिहारोमे जेना स्वयं यात्रीजी, किसुनजी रहथि वा श्रीमायानन्द छथि, ई लोकनि छन्दोबद्धो रचनामे पूर्ण निपुणता प्राप्त कयलाक बादे मुक्तवृत्त दिस प्रवृत्त भेलाह आ हिनका सभक मुक्तवृत्त रचनामे दुरूहता वा दुर्बोध्यता नहि रहैत छनि, किन्तु अकवितावादी रचनाकारमे छन्दोबद्ध रचना करबाक सामर्थ्ये नहि छनि, ते ई सभ छन्दक नामपर आमिल पीने रहैत छथि । एहि कथनक पुष्टिमे 'स्वरगन्धे'क पहिल कविताकेँ देखल जाय । श्रीकीर्त्तिनारायणमिश्र आक्रामक विचार मैथिलीमे अननिहार लोकनिमे राजकमल चौधरीएक प्रथम नाम गनौलनि अछि आ स्वरगन्धा राजकमलक प्रथम कविता संग्रह थिकनि आ तकर प्रथम कविता 'वन्दना' शीर्षकमे जे गन्हौलनि अछि तकर स्वाद लेल जाय–

'जय हे जय जय हे तारिणि जन-कल्याणी
जय हे आदि कल्पने भगवती भवानी
माँगब नइँ हम आइ कोनो वरदान
अछि अपन जातिपर हमरा बड़ अभिमान
भिक्षाटनमे व्यय न करब हम अप्पन वाणी
जय हे जय जय हे तारिणि जन-कलयाणी ।
तोहर मूर्त्ति अछि हमर कल्पना हमर प्रतीक
तोहर पूजा-अर्चना अछि परम्परा के लीक
परम्पराकेँ तोड़ब नहि हम छी संस्कृति अभिमानी
जय हे जय जय हे तारिणी जन-कल्याणी
कए तोहर वन्दना लीखि रहल छी शब्द-अल्पना
हम शक्ति उपासक तोँ शक्तिक आदि-कल्पना
शक्ति पबइ छी तोहर भक्तिसँ हम हे पाषाणी
जय हे जय जय हे तारिणी जन-कल्याणी ।

हमरा ओहिना स्मरण अछि । ललित (कथाकार) एम्.एल्. एकेडमीमे जीव विज्ञानक शिक्षक रहथि । हम ओहि समय वैदेहीक सम्पादन करैत छलहुँ। राजकमल ललितक संग एक कविता लेने हमरा डेरा पर आयल छलाह । छन्दक किछु प्राथमिक विधान पर हम किछु-किछु कहलियनि तँ

माथ कुड़ियाबऽ लगलाह। ललित ताहि पर हँसैत कहलथिन– माथ कुड़िआइत छौ ? मिसर (श्रीमायानन्द)कें कवि सम्मेलन सबमे काकाजीक संग जाइत देखि कऽ हमरो बड़ सेहन्ता होइत छल जे जिनगी भरि कथा लिखैत रहि जायब, कतहु क्यो ने बजाओत आ मिसर 'नभ आङनमे पवनक रथपर' एकटा कविता लिखि कऽ कवि सम्मेलन सबमे माछक मूड़ा आ छल्हिगर दहीक संग रसगुल्लो चपने फिरैत अछि, ताहिपरसँ लिफाफो भेटैत छैक। मुदा छन्दक एही टंट-घंटक कारणें हम मोह छोड़लहुँ। हमरा बुतें ई नहि पार लागल। ललितक एहि उक्तिक बाद चाह पीबिदून गोटे चल गेलाह। छन्दक सामान्यो अवगति रखनिहार उपर उद्धृत पदकें पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि जे ई छन्दोवद्ध रचना करबाक विफल प्रयास थीक वा नहि।

एहि ठाम पुनः महाकवि आरसीप्रसादसिंहक उक्तिकें उद्धृत करब सर्वथा प्रासंगिक प्रतीत होइछ। ओ उपर्युक्त भूमिकामे लिखने छथि– अकविता अर्थात् एन्टी कविता, कविताक एकदम विपरीत, मुदा अकवितो लिखैत कहबऽ चाहै छथि कविए। कतेक विडम्बना पोसि रहल छथि, देखल जाओ कनेक।

समाजमे रुढ़ि, अन्धविश्वास, वैषम्य, अनाचार, भ्रष्टाचार आदि दोष अछिए, एकर भंजन करब सेहो आवश्यके होइत छैक। सब युगमे एहन कवि होइतो रहलाह अछि, किन्तु की लयात्मक कवितासँ से संभव नहि छैक ? एखन धरि ओतेक पुरान होइतो कबीरक पहुँच धरि आजुक कोनो अकवितावादी पहुँचि सकलाह अछि ? कबीर एतेक पुरान होइतो एखनहुँ जन कण्ठसँ गुंजायमान छथि। आजुक अकविकें अपनो पाँती अपन कण्ठमे नहि छनि। कबीरकें छन्दे एतेक दिनसँ जीवन्त रखने छनि।

हमरे लोकनिक युगक थिकाह कविचूड़ामणि मधुप, जे 'द्वादशी'मे सामाजिक वैषम्यक चित्रण कयने छथि। सम्पूर्ण द्वादशी मुक्तवृत्ते मे छनि, मुदा लयात्मकताक प्रसादें कहियो कापी उनटा कऽ कविता पढ़ैत नहि देखलियनि। दुर्बोध्यताक आभास पर्यन्त कतहु देखबामे नहि अबैत अछि। कविताक आत्मा थिकै रस आ रसलिप्सु लोक तँ कुसियार सन कठोर दण्ड (छरक्का) कें दाँतसँ ओदाड़ि रस ग्रहण कऽ लैत अछि। अकवितामे एक तँ रसक लेश नहि, यदि एक-आध बुन्द कतहु भेटिओ जायत तँ जकर स्थायि भाव जुगुप्सा मात्र।

एहि प्रसंग आचार्य जयमन्त मिश्रक कथन मननीय अछि । ओ कहैत छथि– 'कविताक दू पक्ष छैक भाव पक्ष तथा कलापक्ष । भाव पक्षक प्राधान्य भेला पर रस, गुण अएबे करत । कलापक्षक प्रमुखता भेलासँ रीति अलंकारक साम्राज्य होएबे करत । दूनूक अभावमे कविता कविते कोना कहाओत ?' हमरा जनैत अकवितावादी लोकनिक हेतु ई भाव आ कला पुरान युगक बात भेल, आजुक समयमे लाठी हाथेँ राउत बेमाक केँ प्रमुखता भेटबाक चाही से ओ लोकनिक कऽ रहल छथि ।

डॉ. श्रीरमानन्दझा 'रमण' मैथिली नव कवितामे जीवन–मूल्यक निर्धारण करबाक क्रममे आरम्भे करैत छथि– मैथिली नव कविताक प्रसंग अबितहि एहि बात पर चर्चा चलि जाइछ जे ई नव कविता की भेल ? लोकसँ दूर अछि । जे लिखैत छथि ओएह बुझितो छथि । कौखन तँ इहो जे लिखैत छथि ओहो बुझैत छथि कि नहि ताहिमे सन्देह । फेर टिपैत छथि– एखन कविता लिखलनि अछि अर्थ प्रतिष्ठा बाद मे करताह । कौखन इहो कहल जाइछ– डरेँ कहि दैत छिअनि नव कविता बुझैत छी... नव कवितापर विभिन्न तरहक आक्षेप कयनिहारमे मैथिलीक वयोवृद्ध आ लब्ध प्रतिष्ठित (?) साहित्यकारक संख्या बेसी अछि ।.... विचारणीय अछि अग्रज साहित्यकार द्वारा अपन अनुज साहित्यकारक साहित्यिक उपलब्धि पर निर्मम प्रहार करबाक पाछू कोन मानसिक तनाव कार्यरत अछि ।' रमणजी कारणपर प्रकाश दैत आगाँ लिखैत छथि–

हमरा जनतबे– दू कारण अछि । पहिल किछु गोटे जे बुझिओ केँ नहि बुझबाक नाटक करैत छथि । बुझिओ क' नहि बुझबाक नाटक करबाक पाछाँ हुनका ईर्ष्याभाव काज करैत छनि । यदि ई लोकनि कहि देताह जे हम नव कविता बुझैत छी अर्थात् नव कविताक वैशिष्ट्यसँ नीक जकाँ परिचित छी तँ नव कविताकेँ साहित्यक जगतमे मोजर भेटतैक । जे प्रायः स्वीकार नहि छनि । नव कविक सामाजिक प्रतिष्ठासँ हुनका लोकनिक एकाधिपत्य डोलि सकैत छनि, भण्डो फूटि सकैत छनि तेँ असुरक्षाक खतरासँ कात रहबा लेल सोझे कहि दैत छथि– नव कविता नहि बुझैत छी । दोसर कारण अछि दृष्टिकोणक जड़ता ।

नव कविताक मर्मज्ञ समीक्षकक एहि मन्तव्य पर सुधीवर्ग स्वयं

विचार कऽ सकैत छथि जे 'लाठी हाथें राउत बेमाक' कहबी सार्थक भेल वा नहि ? साहित्य क्षेत्रमे एकाधिपत्यक स्थान कतय अछि से हमरा स्थूल दृष्टिमे नहि अबैछ । भण्डा फुटबाक संभावनासँ एहन प्रतीत होइछ जे समीक्षक महोदयक मतें आदि कवि वाल्मीकि सँ लऽ हमरा पीढ़ी धरिक कवि कथी-दनिकें कविता कहि लोक तथा समाजकें ठकैत रहलथिन अछि आ अपने सब पुजबैत रहलाह अछि । आब अकविताक सर्जक लोकनि अवतीर्ण भेलाह अछि । आब हिनका लोकनिक असली वस्तु देखि, सुनि, पढ़ि तथा स्वादि लेलाक पश्चात एकाधिपत्य रखने छन्द, रस, अलंकार ध्वनि आदिक नाम पर ठकनिहार एहि मठाधीश लोकनिक समाज जे दुर्दशा करत से जे जीबैत रहत से देखत ।

आश्चर्य होइत अछि जे समीक्षक महोदय दोसर कारण दृष्टिक जड़ताकें मानलनि अछि । तखन जड़ दृष्टिकोण रखनिहार यदि मोजर नहिए दैत छथिन तँ ताहिसँ नव (अ) कवि लोकनिक बिगड़िते की छनि ? बकरीक छीक, ने शुभ ने अशुभ । साहित्यक कोनो विधा हो, ओकर प्रतिष्ठा वा अप्रतिष्ठाक कसौटी तँ वस्तुतः पाठक होइत छथि । पाठकक रुचिक अनुकूल तथा बोधगम्य जे किछु लिखल जयतैक तकरा ओ ग्रहण करबे करत । एहि हेतु पुरान साहित्यकारक अनुशंसाक प्रयोजन कोन ?

प्रसंगत : एक मनोरंजक घटनाक उल्लेख अप्रासंगिक नहि होयत । श्रीकीर्त्तिनारायणमिश्र मैथिलीमे आक्रामक विचार, अननिहार लोकनिक जे नाम गनौने छथि ताहीमे सँ एक गोटेक कविता संग्रह प्रकाशित भेल रहनि । संयोगवश एक यात्रा क्रममे एक पुरान सहपाठी ओ समान आजीविकामे कार्यरत एक पुरान मित्रसँ भेट भऽ गेलनि । कविजी उल्लसित तथा उत्साहित भऽ अपन टटका पोथीपर हुनकर नाम लिखि उपहार स्वरूप समर्पित कयलथिन । मित्रवर पोथीकें उनटा पुनटा कविजीसँ पूछि बैसलथिन- अहाँ वाल्मीकीय रामायण, वा रघुवंश महाकाव्य अथवा कुमार संभव आदि किछु पढ़ने छी ? कविजीक उत्तर छलनि- हमरा संस्कृत नहि पढ़ल अछि । ताहिपर मित्र पुछलथिन- अच्छा संस्कृतकें छोड़ू, रामचरितमानस आद्यन्त पढ़ने छी ? कविजीक उत्तर छलनि- आद्यन्त तँ नहि, किछु-किछु उनटौने पुनटौने छी, मुदा आजुक समयमे रामचरित मानस पढ़ि कोन लाभ ? ओ सब आउटडेटेड

(काल बाह्य) भऽ गेलैक । मित्र पोथी आपस करैत कहलथिन– अहाँ हमरा एहन बूड़ि बुझैत छी जे एहन पोथी पढ़ि हम समय नष्ट करू ? ज्ञानक ततेक विस्तृत भण्डार छैक जे हम सात जन्म धरि पढ़ैत रहब तैओ सम्पन्न नहि होयत । ई कहि आपस कऽ देलथिन । एहिसँ जनिका जे बुझबाक हो से बूझि सकैत छी ।

वस्तुत: साहित्यमे राजनीतिक 'वाद' घोंसिया गेलैक अछि तेँ मत् कम्बले फालो नास्ति' उद्घाटित भऽ रहल अछि । अन्तमे साहित्यक एकान्त मौन साधक पण्डित उपेन्द्र ठाकुरक उक्तिकेँ उद्धृत करैत हम विराम लेबऽ चाहब । मोहनजी 'बाजि उठल मुरली'क भूमिकामे लिखने छथि–नीतिशास्त्रकेँ राजनीतिसँ सम्बन्ध रहलैक अछि तेँ ओ वक्रमार्गी भऽ सकैत अछि, किन्तु साहित्य तँ सत्यं शिवं सुन्दरम् थिक ई ऋजुपथिए होयत- एतऽ तिकड़मक स्थान कोना भऽ सकैत छैक ? स्पष्ट अछि जे जे व्यक्ति साहित्यिक अथवा साहित्यकार होयत तिकड़म विद्यासँ हित-साधन नहि करऽ चाहत । जँ छल-छद्म चलैत अछि तँ मानऽ पड़त जे से अमृत पायी देवगणक बीच धूर्त्ततासँ प्रविष्ट भेल राहु-केतु तुल्य थिक, देवत्व नहि रहनहुँ वेशधारी थिक । ओकरा ग्रहक रूपमे मान्यता भनेँ भेटि जाइक, ओ विशुद्ध देव भऽ नहि सकैत अछि । किन्तु एहन राहु आ देवताक भेद करत के ?



मैथिलीक अभिव्यंजना-शक्ति ओ हिन्दी

[1954 ई. मे 'पाटल' नामक मासिक पत्रिकामे रामविलासशर्माक मैथिलीक विरुद्ध छपल लेखक उत्तरमे लिखल तथा ताही समय मिथिला दर्शनमे प्रकाशित]

मैथिलीक पुनरुत्थानक युगक आरम्भे-कालसँ हिन्दीक किछु जिद्दी एवं स्वार्थान्ध अधकच्चू विद्वान लोकनि मैथिलीक स्वतन्त्र सत्ता स्वीकार करबामे हनछिन-हनछिन करैत रहलाह अछि आ से क्रम एखन धरि चलिए रहल अछि । एहू दिनमे दिल्लीक साहित्य अकादेमी मैथिलीकेँ स्वतंत्र स्थान देबासँ असहमति प्रकट कैलक अछि ।

ई सब जनैछ जे अकादेमिओंमे किछु स्वार्थी हिन्दीक समर्थक पैर रोपने अकड़ि रहल छथि । तेँ यदि अकादेमी असहमति देखौलक तँ कोनो आश्चर्यक बात नहि, किन्तु ई एक क्षोभक बात अवश्य जे भारतक एक मात्र निष्पक्ष नेता पं. जबाहरलाल नेहरूक अध्यक्षतामे ई विरोध प्रस्ताव स्वीकृत भेल अछि ।

प्रान्तीय सरकार जाहि भाषाकेँ विश्वविद्यालयक उच्चतम कक्षा एवं लोक-सेवा आयोग पर्यन्तमे स्थान देने अछि ताहि भाषाक सम्बन्धमे प्रान्तीय सरकारसँ बिनु किछु परामर्श लेनहि ई काज भेल अछि, ई स्वतः अनुमान कैल जा सकैछ, अन्यथा विहार विश्वविद्यालयक उपकुलपति एवं लोकसभाक प्रतिष्ठित सदस्य स्व. श्यामनन्दन सहाय अपना मुहेँ बाजल छथि जे ई कहैत हमरा अत्यन्त सङ्कोच होइत अछि जे भारतवर्षक संविधानमे मिथिला भाषाक परिगणन एखन धरि नहि भेल अछि, यद्यपि मैथिलीक मान्यता विश्वलेखक संघ 1945 ई.सँ देने अछि । एहि संग स्वर्गीय सहायजी हिन्दी समर्थक

लोकनिक सन्देह दिश सेहो संकेत कैने छथि जे बहुत गोटेकेँ ई सन्देह छनि जे मातृभाषाक उन्नति भेलासँ भारतक एकताक नाश भऽ जायत से भ्रम थिकनि। क्षेत्रीय भाषा देशक संगठनकेँ दृढ़ करैछ, तथापि साहित्य अकादेमी पक्षपात पूर्ण नीति अपनौलक अछि।

गणतन्त्र देशक नागरिककेँ अधिकारक रक्षा करबाक पूर्ण स्वातंत्र्य छनि, ओ कोनो अनीतिक विरुद्ध संघर्ष करबाक हेतु स्वतन्त्र छथि। किन्तु ईहो सर्वथा सत्य जे कोनो अधिकार कर्तव्यक अभावमे सुरक्षित नहि रहि सकैछ। अतः हमरा सभकेँ ईहो देखऽ पड़त जे हमरा लोकनि अपन कर्तव्य पर कतेक दृढ़ छी।

कोनो प्रान्तीय वा क्षेत्रीय समस्या दिश केन्द्रक ध्यान आकृष्ट करबाक काज वा उत्तरदायित्व ओहि क्षेत्रसँ निर्वाचित लोकसभाक प्रतिनिधि लोकनिक थिकनि। अपना देशमे जे निर्वाचन-प्रणाली अछि, ताहि अनुसारेँ प्रत्येक प्रतिनिधि पहिने पार्टीक नीति ओ अनुशासनकेँ ध्यानमे रखैत छथि, तकर बाद अनुकूल परिस्थिति यदि बुझि पड़ैत छनि तँ जनताक अभाव-अभियोग दिश आँखि उठबैत छथि। तैँ ई मानऽ पड़त जे समस्त मैथिलीभाषी क्षेत्रसँ निर्वाचित प्रतिनिधि लोकनिमेसँ एको गोटे दृढ़ता पूर्वक मैथिलीक अपहृत अधिकार प्राप्त करबाक प्रयत्न नहि कयलनि अछि। दबल कण्ठेँ जँ एक आध बेर बजबो कयलाह अछि तँ से सर्वथा नगण्ये कहल जा सकैछ। हँ ईहो स्वीकार कयल जा सकैछ जे कोनो साहित्यिक संघटन सेहो प्रतिनिधि लोकनिकेँ एहि हेतु तत्पर करबा दिश विशेष यत्न नहि कयलक अछि, किन्तु तैँ कोनो प्रतिनिधि अपन उत्तरदायित्वसँ मुक्ति नहि पाबि सकैत छथि।

एहि छोट सन निबन्धमे मैथिलीक अभिव्यंजना-शक्ति पर थोड़ेक प्रकाश देबाक चेष्टा कयल जायत जाहिसँ ई सिद्ध भऽ सकत जे हिन्दी एहि भावकेँ व्यक्त करबाक सामर्थ्य नहि रखैछ, कारण जे ओकर शब्द-वैभव ततेक उन्नत नहि छैक।

यद्यपि ई विषय ततेक व्यापक अछि जे बड़े विस्तारपूर्वक विचार करब एहि हेतु आवश्यक, सेहो कालक्रमे होयबे करत। एहि ठाम स्थानाभावक कारणेँ 'स्थालीपुलाकन्यायेन' किछु सामान्य उदाहरण उपस्थित कऽ सुधीवर्गक ध्यान आकृष्ट करबाक चेष्टा कयल गेल अछि।

व्याकरणक दृष्टिञे हिन्दी एवं मैथिलीक प्रकृतिमे कतेक भिन्नता छैक तकर आन ठाम विचार कयल जा चुकल अछि । एहि ठाम मैथिलीक शब्द-वैभव कतेक व्यापक छैक तावन्मात्र उदाहरणार्थ उपस्थित कयल जा रहल अछि ।

भीठ जमीनकेँ चारि चास कऽ मकइ, राहड़ि आदि बाओग कयल जाइछ आ कदाच वर्षा किछु भऽ गेलैक तँ ऊपरमे पपड़ी पड़ि जाइत छैक जाहिसँ अंकुरकेँ बाहर अयबामे असुविधा होइत छैक । ओहि असुविधाकेँ दूर करबाक हेतु खेतकेँ जोतल जाइछ, किन्तु ओ जोतब नहि उनाहब थीक । उनाहब आ जोतबमे अन्तर अछि । एहिना जखन मड़ुआ, काउनि, साम आदिक गाछ सघन भऽ जाइछ तँ ओहि छोट छोट गाछक समुचित विकासक हेतु जोतल जाइछ जकरा मैथिलीमे विदाहब कहैत छैक । माघमे खेत तामल जाइछ, जेठुआ हालमे हरहा फिराओल जाइछ, चासल जाइछ, समारल जाइछ । बिनु जोतल खेतकेँ पनिएला सन्ताँ अराहि कऽ गजाड़ल जाइछ आ तामल खेतकेँ सोझे गजाड़ल जाइछ, तखन कदबा कयल जाइछ । एवं क्रमेँ उनाहब, बिदाहब, तामब, हरहा फेरब, चासब, समारब, अराहब, गजाड़ब, कदबा करब आदि अनेक क्रिया किछु सामान्य अर्थभेदकेँ स्पष्ट करबाक हेतु प्रयुक्त होइछ । हिन्दीमे 'जोतना' आ 'कोड़ना' एहि दुइ मात्र क्रियासँ काज लेल जाइछ । मैथिलीमे हिन्दीक प्रभावेँ भने 'खेत कोड़ब' क्रियाक प्रयोग होइत होइ, किन्तु वस्तुत: कोड़ल जाइछ बाँसक ओधि, गाछक बूट आदि । एहू क्रियासँ किंचित् अर्थभेद रखनिहार क्रिया सब अछि उखाड़ब, उपाड़ब, खूनब । हिन्दी मे 'उखाड़ना' ओ 'खोदना' अछि । आलू, ओल, उखाड़ल अछिया, अहरी, तीर आदि खूनल जाइछ । अर्थात् उपाड़बाक हेतु कोनो उपकरण नहि चाही आ उखाड़बाक, कोड़बाक एवं खनबाक हेतु उपकरण चाही । एतेक सूक्ष्म भावक अभिव्यक्ति हिन्दीक माध्यमसँ संभव नहि अछि ।

एहने एक दोसर उदाहरण लिअऽ । हिन्दीमे उबालना, पकाना, भूनना, गरम करना, तपाना अग्नि संयोगेँ पदार्थकेँ रूपान्तर करबाक हेतु प्रयुक्त होइछ । मैथिलीमे भात, दालि, तरकारी रान्हल जाइछ, रोटी पकाओल जाइछ, दूध औंटल जाइछ; आलू, अल्हुआ उसिनल जाइछ, पानि सुसुम कयल जाइछ, गरम कयल जाइछ और इन्होर कयल जाइछ, बालु धिपाओल जाइछ, लोहा

तबाओल जाइछ, धान उसिनल जाइछ, भारल जाइछ, आ तारल जाइछ, भूजा भूजल जाइछ, सोहारी छानल जाइछ । की कतेक सूक्ष्म भेदकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु मैथिली भाषी हिन्दीसँ काज चला सकैत छथि ?

छीलब, छोलब, सोहब, सिसोहब, चाँछब, रोलब, काटब, पाङब, निकायब, बनायब, गदिआयब, कँपिआयब, असारब, छेबब, कूटब, खिजायब, छाँटब, चिकनायब, मोड़ब, ममोड़ब, घसमोड़ब, टहलब ओ बूलब आदिमे जे एक दोसरसँ किंचित् अर्थभेदेँ सूक्ष्म अभिव्यक्तिक साधक होइछ से हिन्दीमे भेटि सकत ?

एहि प्रकारेँ मैथिलीक धातु-खान दिश बिटियाकऽ ताकब तँ बूझि पड़त जे एकर शब्दानुवाद कयनिहार टिटिया कऽ रहि जयताह मुदा पार नहि लगतनि ।

आब किछु विशेषण पर आँखि उठाउ । हिन्दीमे आमक मंजर, टिकोला, कच्चा, पका हुआ आ सड़ा हुआ ई पाँच अवस्था कहल जायत, किन्तु मैथिलीमे मज्जर, टिकुला, कोसायल, जोआयल, बनायल, डम्हायल, पाकल, महुआयल, रसायल, उतरल आ सड़ल ई एगारह स्थिति विशेषण द्वारा अभिव्यक्त कयल जा सकैत अछि ।

लतामक अवस्था देखू– फूल, फुल्ली, ठुरड़ी, पाकल आदि । कदीमाक पहिने फूल, बतिया, अजोह, जोआयल, पाकल एतेक अवस्था होइछ ।

अम्ल पदार्थ विभिन्न धातुक संयोगेँ विभिन्न विकृत रूप धारण कऽ लैछ, ताहि हेतु हिन्दीमे कहबइ 'बिगड़ गया' अथवा 'विकृत हो गया । किन्तु मैथिलीमे लोहराइन, पितड़ाइन, कसखराइन, अतिखाइन, अइलाइन, एहिना माछक इछाइन ओ बिसाइन आदि विशेषण द्वारा स्वादक अभिव्यक्ति होइछ, से हिन्दीक माध्यमसँ सम्भव अछि ? सड़ल ओ गुमसड़लमे, थाकल ओ ठेहिआयलमे कोना अर्थ भेद कऽ सकब ? अलबौक, अलबटाह, अपरोजक, अवढंग, अकान, मतसुन्न आदि विशेषणमे जे सूक्ष्म अर्थभेद छैक से हिन्दीमे फुटा सकब ? लोक लक्षणमे कविवर सीतारामझा सभक लक्षण लिखि अनुपम काज कयने छथि ।

हाथे लागल किछु संज्ञा पर सेहो विचार कऽलिअऽ । पनुघी,

कनोजड़ि आ पेंपीकें हिन्दीमे कोना फराक कऽ सकबइ ? अँकुसी आ नकुसीक अन्तर कोना स्पष्ट होयत ? मैथिलीमे बाँसक गिरहक अर्थमे प्रयुक्त अखुआक अर्थ हिन्दी बला अँकुरा बुझताह आ अँकुरा कहबन्हि तँ केवाड़ीमे ठोकल लोहाक हुक्क बुझताह; जँ हुक्क कहबन्हि तँ ताहूमे पेटक पानि हुक्काक पानि जकाँ गुड़-गुड़ा उठतनि ओ बुझि लेताह 'दिल की हूक' ।

धानक सीस, मकइक बालि, मड़ुआक ढेसर, राहड़िक छिम्मड़ि सब कें हिन्दी वला 'बाली' आ 'छीमी' कहताह । आमक घड़ुछा, केराक घौड़, फूलक थौका, मालक थरि, पक्षीक हेँज, लोकक झुण्ड, मखानक पूड़ा, बाँसक कोटि, बीआक थल्ला, चुट्टीक धरोहि, साबेक बीट आदि जे बहुत्व बोधक शब्द अछि से हिन्दीमे कहाँ पाबी ?

माँटिसँ निर्मित वासन सभक दिश देखू– माट, घैल, कूँड़ा, पुड़हर, बसनी, सुराही, डाबा, चपइ, टाड़ा, टाड़ी, तौला, कोहा, कराही, करहुल्ली, कोही, पातिल, सरबा, ढाकन, चुकिया, मटकूड़, मटकुड़ी, छाँछ, छाँछी, लगजोड़ी, मलसी, लबनी आदि । एहिना बाँस सँ निर्मित बासन यथा– बखार, बखारी, मुनहर, ढक, ढाक, ढाकी, पथिया, मौनी, छिट्टा, छिट्टी, छितनी, धामा, धामी, दौरा, दौरी, चंगेरा, चंगेरी, ताइ, सगधोआ, पनपथिया, पनपथनी, धुथरी, कोनिआ, सुपती, सूप, डगरी, चालनि, गुड़चल्ला, पौती, पेटारी, पेटार, सखारी, डाला, डाली, फुलडाली, साजी, बिरहारा आदिमे जे आकार एवं उपयोगिताक दृष्टिऍ अर्थभेद अछि से हिन्दीक माध्यमसँ स्पष्ट होयब संभव नहि अछि ।

गाछ, फेंड़, डारि, ठारि, ठहुरी, झाँखी, फुनगी, छीप आदि गाछक विभिन्न अंगकें हिन्दी नहि फुटा सकैत अछि । पियास आ तरासक भेद हिन्दीमे कयल नहि पार लागत । खाम्ह, खम्हा, खम्हेली, खुट्टा, सट्टा, चोंगड़ा उचाँड़ी, मनुस, मलाही, कैँच, आदिक हेतु एतेक व्यापक भंडार हिन्दीमे कोना भेटत ?

उपर्युक्त किछु उदाहरणसँ ई स्पष्ट भऽ गेल होयत जे मैथिलीक शब्द भंडार कतेक समृद्ध छैक आ कतेक सूक्ष्म अर्थभेदकें व्यक्त करबाक एकरा सामर्थ्य छैक । तथापि "अपन महिंस कुड़हरिअहिँ नाथब" वला सिद्धान्त मानि ली तँ तकर उत्तर सोझ मुँहे नहि देल जा सकैछ । ताहि हेतु फाँड़ बान्हऽ

पड़त । किन्तु मैथिलीभाषी क्षेत्रक बहुतो सुशिक्षितो व्यक्ति मोहक अन्धकारमे पड़ल एहि वैभवक महत्त्व बुझिते ने छथि, प्रतिदिन प्रयोगमे आबै वाला तथा बिनु आयासेँ एहि शब्दावली पर जन्मजात अधिकार रहलाक कारणेँ 'एकरा बाड़ीक पटुटा तीत' बुझैत छथि । अशिक्षित समुदाय एहन चिरपरिचित शब्दावलीक साहित्यमे प्रयोग सुनि ओहि साहित्यकेँ हास्योत्पादक मानि करुणो रसक कवितामे बतीसी देखाबऽ लगैत छथि । हुनका प्राय: ई बूझि पड़ैत छनि जे ई शब्दावली साहित्यमे हास्ये सृष्टि करबाक हेतु प्रयुक्त होइत अछि । ओ कोना बुझथु जे ई हमर अक्षय भण्डार थीक जकरा बलेँ हम बहुतो राजनीतिक अधिकार प्राप्त कऽ सकैत छी, जाहि आधारसँ एखन वंचित रहऽ पड़ैत अछि । हुनका एकर बोधे नहि छनि जे नेना सबकेँ संसारक सामान्य ज्ञान अर्जन करबामे अपन भाषा बड़ पैघ सहायक होइत छैक जाहि ज्ञानक बलेँ लोक जीवन यात्रामे पाथेय प्राप्त करैत अछि ।

एहि राजनीतिक संक्रमण कालमे हमरा सबकेँ सजग होअय पड़त । सापक विषसँ मातल व्यक्तिकेँ जेना डाकनि दैत छैक तेना डाकनि दऽ समाज केँ जगबऽ पड़त । भारतवर्षमे कमसँ कम पाँच प्रतिशत हमरा लोकनि मैथिलीभाषी छी । यदि पंचानबे प्रतिशत लोककेँ अपना मातृभाषाक माध्यमसँ अपन भावना अभिव्यक्त करबाक अधिकार प्राप्त छैक तँ हमरा लोकनि असेढ़, आलसी एवं अभागल छी जे एहि हेतु दत्तचित्त नहि होइत छी ।

यद्यपि हमरा लोकनि क्रमहि प्रगतिक पथ पर आगू बढ़ि रहल छी किन्तु जे मन्थर गति हमरा सभक अछि ताहि गतिसँ एहि उद्‌जन वमक युगमे उन्नति करबामे आधा शताब्दी लागि जायत । अत: समय रहैत चेतब आवश्यक ।

विशेष द्रष्टव्य–

यदि कोनो हिन्दीक विद्वान् एहि निबन्धक शब्दानुवाद हिन्दीमे कऽ देथि तँ हम व्यक्तिगत रूपेँ मैथिलीक समर्थनमे आजन्म किछु नहि बाजब । ई हमर प्रतिज्ञा–वाक्य थीक ।

●

अलंकारक मूल रहस्य

अलंक्रियते काव्यमनेनेत्यलंकारः —साहित्यशास्त्रमे अलंकारक एक महत्त्वपूर्ण स्थान छैक । मनुष्यमात्र कनेक ने कनेक कोनहु रूपेँ नित्य अपनाकेँ अलंकृत करिते अछि । तहिना काव्यमे कोनहु रूपेँ अलंकार अपेक्षित रहिते छैक । काव्य रचना जेँ मनुष्य द्वारा होइत छैक आ मनुष्य अपनाकेँ नित्य अलंकृत करैत अछि तेँ ओ अपना कृतिओकेँ अलंकृत देखय चाहैत अछि । ई कखनहु स्वाभाविको होइत छैक आ कखनहु कृत्रिम सेहो । स्वाभाविकमे जे चमत्कार उत्पन्न होइत छैक से कृत्रिममे नहि ।

अलंकारक दुइए गोट जाति छैक, शब्दगत चमत्कारकेँ शब्दालंकार आ अर्थगत चमत्कारकेँ अर्थालंकार नामसँ जानल जाइत छैक । शब्दमे साधारणतः दुइ गोट साधारण धर्म होइत छैक । संगीतमयता ओ चित्रमयता । हम अंलकारकेँ शब्दक एहि साधारण धर्मक संग संयुक्त कय सकैत छी । शब्दक प्रयोग एतय ओकर प्रचलित संकीर्ण अर्थमे नहि, प्रत्युत् ओकर व्यापक अर्थमे कयल जा रहल अछि जाहि अर्थमे ओकर प्रकाश-रूपता छैक ।

अनिर्वचनीय रसानुभूतिकेँ आभासित करबाक प्रयासमे ई संगीतमयता सबसँ बेसी सहायक होइत छैक । काव्यमे जे वाक्य रहैत छैक से सब ठाम 'विशेष' होइते छैक । वाक्यक एहि विशेषत्वकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु भाषाकेँ सेहो विशेषत्व प्राप्त करय पड़ैत छैक । भाषाकेँ अपन साधारणत्वक अतिक्रमणकय असाधारणत्व प्राप्त करबामे ई संगीत धर्म बहुत सहायता करैत छैक ।

काव्यक संगीत धर्मक प्रकाश एक तँ छन्दमे होइत छैक, दोसर

शब्दालंकारमे । शब्दालंकार जाहि ठाम कविक वागैश्वर्यकेँ प्रकाश करबाक हेतु आडम्बर सहित चेष्टापूर्वक जानल जाइत छैक ताहि ठाम ओ काव्यक हेतु भूषण नहि भय दूषणे भय जाइत छैक । शब्दालङ्कारक काज छैक शब्दक अर्थकेँ विचित्र ध्वनितरंग द्वारा विस्तृत करब । हृदयक जे अस्फुट भाव भाषामे अभिव्यक्त नहि भय पबैत छैक तकरा शब्दालङ्कार आभासित कय देबामे समर्थ होइत छैक । अतः उपयुक्त छन्दक संग उपयुक्त शब्दालङ्कारक योग होइत छैक तँ एहि पारस्परिक साहचर्यसँ शब्दशक्तिक अनन्त एवं अपूर्व विस्तार होइत छैक । शब्दालङ्कार केवल कटककुण्डलादिवत् नहि रहि, साधारण शब्द द्वारा जे भाव प्रकट नहि भय पबैत छैक तकरा संगीत द्वारा, झंकार द्वारा प्रकट करबाक माध्यम बनि जाइत छैक । अभिव्यंजनाक एहि कला-कौशलकेँ चेष्टा पूर्वक नहि आनय पड़ैत छैक, प्रत्युत् ई भावक सूक्ष्मता एवं अनिर्वचनीयताक भीतर निहित रहैत छैक । तेँ भाव स्वयं एकर संग्रह कय लैत छैक । शब्दालङ्कार जाहि ठाम भाव-प्रकाशक स्वच्छन्द गतिक भीतर अति स्वाभाविक नियमसँ नहि अबैत छैक ओहि ठाम ई एक कृत्रिम चाकचिक्य मात्र बनि कय रहि जाइत छैक । ओहन स्थलमे प्रयोजनसँ बेसी आयोजन रहैत छैक । कहबाक तात्पर्य जे चेष्टापूर्वक अलङ्कार-योजना अनावश्यक चातुर्य-प्रदर्शन थीक जे काव्यक सौन्दर्य-वृद्धिक बदला ओहिमे असौन्दर्येकेँ बढ़यबामे सहायक होइत छैक, जकरा ठेठ शब्दमे कठाइन कहि सकैत छिऐक । जेना शरीरकेँ स्वस्थ एवं कर्मठ बनयबाक हेतु जीवनमे व्यायामक अपन महत्त्व छैक अवश्य, परन्तु व्यायामे जीवनक लक्ष्य बना लेला उत्तर क्यौ पहलमान भय सकैत अछि, विद्वान् नहि, तहिना काव्यमे कृत्रिम अलङ्कार-योजना पहलमानीए मानल जायत, विद्वत्तासँ ओकरा कोनो सम्बन्ध नहि रहि पबैत छैक । एहि तरहेँ स्पष्ट अछि जे शब्दालङ्कार शब्दक संगीत-धर्मिताकेँ प्रकट करैत छैक ।

भाषामे चित्रधर्मिताकेँ आलोकित करैत छैक अर्थालङ्कार । शब्दक चित्रधर्मकेँ एहि रूपेँ बूझक चाही जे बाहरक कोनो वस्तु वा घटनाक स्मृति-धृत स्फुट-अस्फुट चित्र मनक पर्दा पर प्रकट भय अभिव्यक्तिक मर्म धरि पहुँचबामे सहायक होइत छैक । थोड़ेक विचारला उत्तर हमरा देखबामे आओत जे हम जे किछु सोचैत वा बूझैत छी से सम्पूर्ण नहि तँ अधिकांश बहिर्जगतक वस्तु वा घटनाक अनुकृतिक छायामे । हम अपन सम्पूर्ण ज्ञान

बहिर्जगतक अभिज्ञता द्वारा प्राप्त कयल अछि । इन्द्रियानुभूति द्वारा वस्तुक सम्बन्धमे जे सामान्य प्रतीत होइत अछि ओ मूलतः निर्भर करैत अछि बहिर्वस्तु अथवा घटनाक अनुभूति पर । अपना मनक जाहि भावकेँ हम अमूर्त्त मानैत छी, ओहो सम्पूर्णतः अमूर्त्त अछि वा नहि ताहूमे घोर सन्देह अछि । तकला उत्तर ओकरो पाछाँ मनक अवचेतन लोकमे किछु-किछु अस्पष्ट प्रतिच्छविक सन्धान भेटि सकैत अछि । तात्पर्य ई जे सब मिला-जुला कय हमर ज्ञान-क्रिया सम्पूर्णतः नहि तँ अधिकांशतः बहिर्वस्तु वा घटनाक प्रतिच्छविएमे निष्पन्न होइत अछि । भाषामे निहित ई जे बहिर्जगतक प्रतिच्छवि छैक सैह भाषाक चित्रधर्म थिकैक ।

ईश्वरक की स्वरूप छनि से ककरो दृष्टिगोचर तँ नहिएँ भेल अछि, परन्तु कल्पना द्वारा जखन कखनहु ईश्वरक स्वरूपक प्रतीति करय चाहैत छी तँ साधारणतः अपने सदृश हाथ-पैर आदिसँ संयुक्त कोनो रूप ठाढ़ भय जाइत अछि, जाहिमे दुइगोट हाथक बदला हम चारि टा हाथक कल्पना कय अपन साधारण स्वरूपसँ ओहिमे किछु विशेषताक आरोप कय लैत छी । भाषाक यैह चित्रधर्म विकसित भय प्रतीकात्मक स्वरूपक सृष्टि करैत अछि । किछु उदाहरणसँ एकरा एना स्पष्ट कयल जा सकैत अछि–

जखन हम एक गोलीसँ दुइ शिकार करब कहैत छिऐक तँ एक प्रयाससँ दुइ काजक सिद्धिए अभिप्रेत रहैत अछि । कुपात्रक लग निष्फल निवेदनकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु अरण्यरोदन कहि दैत छिऐक । जखन ककरहुसँ परस्पर विरोधभाव प्रकट करबाक रहैत अछि तँ छत्तीसक सम्बन्ध कहैत छिऐक । एतय आचार्य पं.सुरेन्द्रझा 'सुमन' रचित 'ललना लहरी'क एक दोहा स्मरण भय अबैत अछि–

''तीन अथ च जँ छौ बनय भाउजि ननदि केर खीस
आँकब तिरसठि माय धी, सासु पुतहु छत्तीस ।''

जखन 'खेत खाय गदहा, मारि खाय जोलहा' बजैत छी तँ अपराधीकेँ छोड़ि निरपराधकेँ दण्डित करबाक भाव व्यक्त होइत अछि । 'अपन नाक काटि परक यात्रा बिगाड़ब' सँ आन्तरिक दुष्टते प्रकट होइत अछि । जकरासँ सहज रूपेँ भेट होइत रहबाक आशा रहैत अछि तकरासँ बेसी दिनपर भेट

भेलापर कहैत छिऐक अहाँ 'डुमरिक फूल' भय गेलहुँ ? 'छुछुन्नरिक माथमे चमेलीक तेल' तखन देल जाइत छैक जखन कोनो अयोग्य व्यक्तिकेँ उचितसँ बेसी आदर भेटय लगैत छैक । जखन अपन पराजयक आभास भय जाइत छैक तँ 'नाङड़ि कटा' कय पड़ाइत अछि । एक बेर धोखा खयलाक बाद दोसर बेर ओहन काज करबासँ विरत भेनिहारकेँ 'गोनूझाक बिलाड़ि' कहैत छिऐक । जखन डरेँ त्रस्त भए जाइत अछि तँ के नहि 'नाङड़ि सुटका' लैत अछि । अपराध कर्म करैत काल जँ अभिभावकक दृष्टि पड़ि गेलैक तँ लोक 'तीतल बिलाड़ि' भय जाइत अछि आ जँ ससरि जयबाक गऽर पाबि क्यौ अभिभावक अधिकारीक नजरि बँचबय चाहैत अछि तँ लोक 'सिताहल नढ़या' बूझय लगैत छैक । ऊपरसँ सज्जनताक नाटक आ भीतर सँ दुर्जनताक व्यवहार कयनिहारकेँ 'मूनल मुँह मटकूड़ी सन' कहय लगैत छिऐक । स्वार्थसिद्धिक हेतु जखन कोनो ने कोनो सम्बन्ध स्थापित करबाक चेष्टा करैत अछि तँ 'चऽरक सम्बन्धेँ चिचोढ़ मामा' सभकेँ भेटि जाइत छथिन । यदि एक परिवारक दुइओ व्यक्ति असंगत आचरण करय लगैत छैक तँ 'ओझाक बीये बताह' भय जाइत छनि । क्षुद्र अधिक अधिकार पबिते 'सिक्का चढ़ि जाइत अछि ।' निराश्रितकेँ आश्रय देनिहारे ने 'पंथक पाकड़ि' होइत अछि । अज्ञात संकटक संभावनासँ सबकेँ 'अन्हार घरक साप'क आभास होअय लगैत छैक आ पड़ोसिया प्रतिकूल भेला पर 'सिरहन्नाक साप' भय जाइत छैक । सिद्धप्राय कार्यमे कोनो बाधक तत्त्व उपस्थित भेलापर सबकेँ 'पकला जबक पाथर' पड़ि जाइत छैक । यदि हम स्वयं अपन गुणक विवरण ककरो देबय लगैत छिऐक तँ लोक तुरन्त 'अपने मुँह मियाँ मिट्ठू' बूझय लगैत अछि । जँ एक बेर अनेक आवश्यकता आबि जाइत छैक तँ आकाशे फाटि जाइत छैक । उपर्युक्त सब उक्तिमे भाषाक चित्र-धर्मिता हमरा अभिव्यक्त भाव धरि पहुँचबामे समर्थ होइत अछि । हम दुखमे डूबि जाइत छी, मिथ्या प्रशंसा सुनि कुप्पा भय जाइत छी, क्रोधेँ जरय लगैत छी, चिन्ताक सागरमे तखने पड़ि जाइत छी जखन माथ पर विपत्तिक पहाड़ टूटि खसैत अछि । एहि सब कथनकेँ एहिसँ भिन्न रूपेँ प्रकट कयला उत्तर ओहि मर्मक उद्घाटन नहि भय सकैत छैक जे एहि उक्ति द्वारा होइत अछि ।

एहि प्रकारेँ गंभीरतासँ विचार कयला उत्तर देखबामे अबैत अछि जे ई संगीत-धर्मिता अछि जे छन्दक माध्यमसँ विशेष रूपेँ निखरैत अछि तथा ई

जे चित्र-धर्मिता छैक जे अलङ्कार द्वारा अभिव्यक्त होइत अछि से काव्यक भूषण स्वरूपे हो, से बात नहि, चित्र बिना हमर भाषा चलिए ने सकैत अछि– हम अपना हृदयक भावकेँ सम्यक् रूपेँ अभिव्यक्त करबामे समर्थ नहि भय पायब । संगीत एवं चित्रक माध्यमसँ हमर भाषा इन्द्रियग्राह्य भय उठैत अछि, तखन ओहि इन्द्रियग्राह्य भाषा द्वारा मनक संसारकेँ प्रत्यक्ष कय पबैत छी । भाषाक माध्यमसँ प्रत्यक्ष अनुभूतिए द्वारा एक हृदयक रस दोसर हृदय धरि संक्रमित होइत अछि । एकरे उक्तिवैचित्र्य अथवा वाग्विदग्धता अथवा रमणीयार्थ प्रतिपादक अथवा रसात्मक आदि शब्द द्वारा आचार्य लोकनि अभिव्यक्त कयने छथि ।



शिवसंकल्प

मानवक सहजात प्रवृत्ति ने सद्‌गुण दिस रहैत छैक ने दुर्गुण दिस । मात्र एक औत्सुक्य ओकरा हृदयमे अवश्य रहैत छैक जकर निवारणार्थ जे कोनो नवीन वस्तु ओ देखैत अछि, तकर रहस्य बुझबाक जिज्ञासा अन्तःकरणमे उत्पन्न होइत छैक । तात्पर्य ई जे जाहि प्रकारक प्राकृतिक, सामाजिक आ पारिवारिक परिवेशमे रहि, ओ प्रकृति, समाज तथा परिवारसँ परिचय प्राप्त करत ताही प्रकारक जिज्ञासा ओकरा हृदयमे उत्पन्न होयतैक आ तदनुकूले प्रवृत्तिक विकासो होयतैक जे स्वयं सिद्ध अछि । ओही ठामसँ निर्विशेषण 'गुण' सत् अथवा दुर् विशेषणसँ युक्त होअय लगैत छैक । अतः संसारक शिक्षा-शास्त्री वा मनोविज्ञान-विशेषज्ञ मानव शिशुक समुचित विकासक हेतु परिवेश आ वातावरणकेँ महत्त्वपूर्ण स्थान दैत छथिन ।

प्रायः एही मनोवैज्ञानिक तथ्यकेँ दृष्टिपथ पर राखि, प्राचीन युगमे ऋषि-मुनि लोकनि गुरुकुलक व्यवस्था कयने छलाह जतय मानवजीवनक जे मुख्य उद्देश्य, श्रेय प्राप्ति, तदनुकूले वातावरणक सृष्टि कयल रहैत छलैक । स्वभावतः सद्‌गुणक प्रति ओकरामे जिज्ञासा सेहो उत्पन्न होइत छलैक तथा ताहि जिज्ञासाक पूर्त्तिओ कयनिहार विचक्षण, आत्म-तत्त्वदर्शी विद्वान विद्यमान रहैत छलथिन, जाहि कारणेँ सद्‌गुणेक प्रति आकर्षणो उत्पन्न होइत छलैक ।

सद्‌गुणेक विकाससँ विवेकक जन्म होइत छैक । विवेककेँ पुस्तकीय ज्ञानसँ नहि, अपितु सद्‌विचार सँ सम्बन्ध छैक । सद्‌विचार उत्पन्न होइत छैक शिवसंकल्पसँ । आहार-निद्रा-भय-मैथुन आदि पांचभौतिक तत्त्वसँ प्रादुर्भूत भाव प्राणीमात्रमे समाने रूपसँ विद्यमान रहैत छैक, परन्तु प्राणीमात्रमे सर्वश्रेष्ठ

जैँ हेतु मनुष्य होइत अछि तेँ ओकरा प्राकृतिक दुर्बलता पर विजय प्राप्त कऽ एक एहन गुणक विकास करबाक दिस अग्रसर होयब आवश्यक छैक जे गुण मनुष्यकेँ 'स्व'क परिधिसँ बाहर कऽ मानव जातिक अतिरिक्त अखिल जीव लोकक कल्याणार्थ नियोजित कऽ सकैक । तखने ओ अपन मानव-जीवनक सार्थकता सिद्ध कऽ सकैत अछि, तेँ वेदमे 'तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु' कहल गेल छैक ।

विद्याक सम्बन्धमे कहल गेल छैक 'सा विद्या या विमुक्तये' अर्थात् अहंकारक जे क्षुद्र परिधि, प्राकृतिक जे सहजात दुर्बलता, भोगलिप्सा, संसर्ग जन्य दोषसँ उत्पन्न स्वार्थक संकीर्णता तथा अज्ञान ताहिसँ मुक्तिए विद्या प्राप्तिक मूल उद्देश्य थिकैक, उदरभरण तँ कीट-पतंगो कइए लैत अछि ।

दोसर ठाम कहल गेल छैक– 'विद्ययाऽमृतमश्नुते' विद्या द्वारा अमृत प्राप्त होइत छैक आ मनुष्य अमृतत्व तखने प्राप्त कऽ सकैत अछि जखन 'स्व'क परिधिसँ बाहर भऽ सकय, अहंकारसँ मुक्त भऽ सकय । जाहिठाम विद्या प्राप्तिक एहन महान उद्देश्य राखल गेल छलैक, ताहि ठाम वर्त्तमान युगमे विद्याक की उद्देश्य रहि गेलैक अछि से अवश्य चिन्तनीय थीक ।

कविवर सीताराम झा एक ठाम कहने छथि–

'पेट भरक टा हेतु क्यो पढ़ि जनु होथु हरान
ओ संगहि सिरजैत छथि सबहिक श्रीभगवान'

यद्यपि एहि भौतिकता-प्रधान युगमे सेहो सद्गुण आदिक प्रति श्रद्धा विद्यमान छैके । कोनो चरित्रवान व्यक्ति जे भौतिक दृष्टिएँ साधन हीन छथि जनिका बाह्य चाकचिक्यसँ नितान्त दूरे रहय पड़ैत छनि, ओ सामाजिक प्रतिष्ठा नहि प्राप्त कऽ पबैत छथि । किन्तु से सब होइतो, भनेँ वातानुकूलित भवनमे रहैत होथु, रेशमीए वस्त्रसँ सर्वांग आच्छादित कयने रहैत होथु, आङुरक पोरपोरमे रंग-विरंगक रत्न-जटित औँठी पहिरैत होथु, करोड़ टाकाक बैंक बैलेन्स रखैत होथु, परन्तु ओहि निर्धन व्यक्तिक चारित्रिक बलक समक्ष, नहि व्यक्त रूपमे, तथापि चारित्रिक बलक अभावमे अपनाकेँ हीन भावनासँ मुक्त नहि कऽ पबैत छथि । विचित्रता ई जे आन्तरिक अनुभव करितहु ने अपने आ ने अपन उत्तराधिकारी सन्ततिकेँ सद्विचार आ सद्विवेक

विकसित करबाक दिस प्रेरित करैत छथि । तकर मूल कारण थीक शिव संकल्पक अभाव ।

आइ चारू दिससँ ध्वनि आबि रहल अछि जे जाहि विद्यार्थीवर्गपर देशक भविष्य निर्भर छनि, जनिका देशक भविष्य मानल जाइत छनि, ताहि वर्गमे अनुशासन पालनक स्थान पर एकर उल्लंघने करबाक प्रवृत्ति विशेष रूपेँ तीव्रतासँ बढ़ि रहल अछि । एहि हेतु देशक नेतृत्व कयनिहार कर्णधार लोकनि चिन्ता व्यक्त करैत छथि । एकर निराकरणक हेतु आयोग गठित करैत छथि, अनेक संगोष्ठी (सेमिनार) आयोजित होइत अछि । बड़का-बड़का विद्वान लोकनि अपन-अपन आलेख पाठ करैत छथि । अपन-अपन टी.ए.डी.ए. उठबैत छथि, कचरम कूट कऽ खाय-पीबि ढेकरैत अपन गामक बाट धरैत छथि आ पठित आलेख सब एक संचिका (फाइल) मे बान्हि राखि देल जाइत अछि । दोषारोपण शिक्षक समुदाय पर होइत छनि । अपनाकेँ राष्ट्रक निर्माता कहनिहार, राष्ट्रिय शासनतन्त्रकेँ संचालित कयनिहार तथा जनिक अभिभावकत्वमे आजुक छात्र समुदाय स्वविकासक प्रक्रियामे अपनाकेँ संलग्न कयने छथि से अभिभावक वर्ग अपन पाल्यक समक्ष अपनाकेँ केहन आदर्शरूपमे उपस्थित कऽ रहलाह अछि, अपन पारिवारिक आ सामाजिक परिवेश केहन बनाकऽ रखने छथि से आत्म निरीक्षणो करबाक समय बाहर कऽ पबैत छथि ?

आइ अनुशासन शब्दक वास्तविक तात्पर्य की होइत छैक ताहिपर ककरो ध्यान नहि छनि । तीन गोट शब्द अछि– शासन, प्रशासन, अनुशासन । शासन जनप्रतिनिधिक हाथमे छनि, जाहि पदक हेतु संविधानमे एक मात्र योग्यता निर्द्धारित अछि वयस्क मताधिकार । अठारह वर्ष वयस जकर भऽ गेलैक ओकरा मतदानक अधिकार छैक । मतदानक अधिकार जकरा छैक से जनप्रतिनिधि बनबाक अधिकार स्वत: प्राप्त कऽ लैत अछि । एहनो योग्यताधारी आन दृष्टिएँ उच्छृंखल, उद्दण्ड, दुराचारी किच्छु रहओ, बाहुबल, धनबलसँ जनप्रतिनिधि बनि जाइत अछि । ओ लोकनि भेलाह शासन कयनिहार शासक आ ई लोकनि संसंद, विधान सभामे जाय केहन अनुशासनक परिचय दैत छथि से दूरदर्शनक कृपासँ कोटि-कोटि लोक अपना आँखिएँ देखि रहल अछि । एहने लोक विधान बनबैत छथि तेँ शासक कहबैत छथि । एहने शासक

राजकाज चलयबाक हेतु प्रशासकक नियुक्ति करैत छथि । प्रशासनमे पदस्थापित होयबाक हेतु लाखो टाका खर्च कऽ कतोक वर्ष माथक गुद्दीकेँ गुलगुलबैत छथि । पदस्थापित भेलाक बाद 'महाजनो येन गतः स पन्थाः' नीतिक अनुसरण करबाक बाट धरय पड़ैत छनि । यदि सांसद, विधायक अपन सत्कर्मक (?) प्रसादेँ जेल यात्रा करैत छथि तँ प्रशासके ओहन 'सत्कर्म (?) केँ किएक छोड़ताह ?

एकर पछाति अबैत अछि अनुशासन । कहबी छैक– जकर जेठकी छुलाहि तकर छोटकी भाँड़ेमेसँ खाय । तखन छात्र समुदाय अनुशासनहीन भेल जाइत अछि ताहि हेतु उत्तरदायीके ? शासनक अनुगमनेकेँ अनुशासन कहल जाइत छैक ने ?

अतः अपेक्षित अछि जे जाहि पवित्रताक, उत्तरदायिताक, अनुशासनहीनताक आ चारित्रिक सबलताक आशा अपन प्रभविष्णु छात्रसँ देश, समाज वा व्यक्ति करैत अछि से सबसँ पहिने अपनामे, समाजमे विकसित करय आ से विकसित होयत एक मात्र शिवसंकल्पसँ ।

वस्तुतः अनुशासन पालन ने पुस्तकीय शिक्षासँ, ने दण्डविधानसँ आ ने मंच पर ठाढ़ भऽ उपदेश वाक्य छँटलासँ सम्भव भऽ सकैछ, ओ अभ्यासक वस्तु थीक, जकर विकास ने एक दिनमे, अथवा ने कोनो स्थान वा अवधिमे सीमित राखि संभव अछि, अपितु हम जँ ककरोसँ अनुशासन पालन करबऽ चाहैत छी तँ हमरा अपन व्यक्तिगत आचरणमे अनिवार्यरूपेँ आनय पड़त, ओकरा समक्ष स्वयं उदाहरण प्रस्तुत करऽ पड़त ।

अनुशासन एक क्रम थीक, एक पद्धति थीक, जकर क्रमिक विकास अभ्याससँ भऽ सकैत अछि, जाहि पद्धतिसँ जीवनक विकासमे स्वतः स्फूर्त्त सौन्दर्य उद्भूत होइत छैक । समय-निष्ठता वाक्-संयम एकर मूल तत्त्व थिकैक । अर्थात् अनुशासन मानसिक स्वस्थता थीक, जे स्वस्थता लाभ कयला उत्तर हम अपनाकेँ समाजक समक्ष एक अनुकरणीय व्यक्तित्वक रूपमे उपस्थित कऽ सकैत छी । मानसिक स्वस्थता मनकेँ सद्वृत्ति दिस नियोजित कयलासँ भऽ पबैत छैक ।

मनकेँ शिव संकल्पक हेतु उत्प्रेरित करैत रहब, सेहो शाब्दिक नहि,

अपितु क्रिया द्वारा तखने ओहि उत्प्रेरित मनमे उत्पन्न विचार विवेक पूर्ण भऽ सकैछ आ विवेकपूर्ण विचार मनमे अयले सन्ताँ संकल्पक दृढ़ता आबि सकैत अछि । यदि अल्पसाधनक रहितो, अनुशासित आचरण द्वारा हम अपनाकेँ प्रसन्न राखि सकी तँ सुख अपनहि हमरा पाछाँ दौड़ल आओत तथा एहन सृष्ट वातावरणमे पालित भेनिहार सन्तति ओकरे अनुकरण करत आ ओकर जीवन स्वतः अनुशासित भऽ जयतैक ।

अपन हृदयपर हाथ राखि आजुक अनुशासनहीनताक हेतु सार्वजनिक मंचसँ चिन्ता व्यक्त कयनिहार नेतृवर्ग संगहि शिक्षक समुदाय तथा शिक्षा पद्धति पर दोषारोपण कयनिहार समाजक लोक आत्म-निरीक्षण करबाक हेतु प्रस्तुत छथि ? की अपन अन्तरात्माकेँ हथोड़ि कऽ देखबाक हेतु उद्यत छथि जे हुनका हृदयमे शिवसंकल्पक भावना छनि ?

ई सब होइतो छात्र समुदाय अपनाकेँ सर्वथा निर्दोष नहि सिद्ध कऽ सकैत छथि । कारण, जखन ओ अपन उज्ज्वल भविष्यक निर्माणमे लागल छथि तखन अपनहुँ मनमे शिवसंकल्पकेँ स्थान देथि । समाजमे अत्यल्प शिक्षा प्राप्त एखनहु एहन लोक छथि, तकलासँ भेटि सकैत छथि जे सांसारिक सुख सुविधामे कतोक विद्याविभव सम्पन्नो व्यक्तिसँ आगाँ छथि । अतः मात्र सांसारिक सुख-सुविधा प्राप्त करब विद्यार्जनक उद्देश्य नहि बुझबाक चाही । मनुष्य जन्म प्राप्त भेल अछि तँ निश्चित रूपेँ एहूसँ उत्तम किछु वस्तु एहि संसारमे छैक जे विद्ये द्वारा प्राप्त कयल जाय सकैत अछि । तेँ छात्रो समुदायकेँ शिव-संकल्प दिस अग्रसर होयबाक हेतु एहन पद्धतिक अनुसरण करबाक चाहियनि जे लक्ष्य धरि लऽ जाइनि, जीवनक श्रेय-प्राप्तिमे सहायक होइनि आ सैह थीक अनुशासन, जकर उपेक्षा कथमपि वांछनीय नहि ।



वर्णमाला

श्रुतिक युग धरि निश्चित रूपेँ मानल जा सकैछ जे वर्ण अर्थात् लिपिक भाविष्कार नहि भेल छल होयतैक । सृष्टिक रहस्यक उद्घाटन हेतु मन्त्रद्रष्टा ऋषि-महर्षि अपन चिन्तन-मनन-निदिध्यासनसँ मानव मात्रक कल्याण हेतु जे किछु तत्त्वसँ अवगत होइत रहलाह से श्रुति परम्परासँ सत्पात्र लोकनिमे प्रचरित-प्रसरित होइत रहल । तकर पश्चात् स्मृतिक युग आयल । एहि तत्त्व-ज्ञानकेँ स्थायित्व ओ सार्वभौमिकता प्रदान करबाक हेतु लिपिक आविष्कार प्रयोजनीय मानल गेल होयत ।

लिपि आकल्पान्त नष्ट नहि होयत एहि विश्वाससँ एकरा अक्षर संज्ञा देल गेलैक । अक्षरक दोसर नाम वर्ण थिकैक । मनक समस्त भावकेँ अभिव्यक्त करबाक हेतु जतेक वर्णक उच्चारण अपेक्षित होइछ ततेक वर्ण (चिह्न)क स्वरूप निर्धारण भेलैक जकरा वर्णमाला कहल गेलैक जकरा अंग्रेजीमे अल्फावेट कहैत छिऐक ।

वर्णक समूहकेँ वर्णमाला संज्ञा देबाक तात्पर्य पर ध्यान देल जाय से आवश्यक अछि । ओना संसारक समस्त लिपिक बोध नहि अछि, तथापि ई कहबामे संकोच नहि कयल जा सकैछ जे भारतीय वर्णमाला सर्वथा वैज्ञानिक आधारपर निर्मित अछि आ से उच्चारण स्थान ओ प्रयत्न पर आधारित अछि ।

ई तँ सर्व विदित अछि जे ध्वनि उत्पन्न होइत छैक आघात लगला पर । जे कोनो जीव बजैत अछि तकरा कण्ठमे प्रकृति-प्रदत्त स्वरयन्त्र रहैत छैक । श्वास-प्रश्वास प्रक्रिया द्वारा जखन ओहि यन्त्र पर आघात पड़ैत छैक तँ ध्वनि उत्पन्न होइत छैक, से दू प्रकारक एक अव्यक्त दोसर व्यक्त । मनुष्य

द्वारा व्यक्त शब्द स्पष्ट तथा मनुष्येतर प्राणी द्वारा अव्यक्त नाद मात्र ।

हम सब जे बजैत छी से उच्चारण करबामे जाहिमे अल्प वायुक निःसरण होइछ से अल्पप्राण, जाहिमे वेसीवायु निःसृत होइछ से महाप्राण तथा जकरा उच्चारणमे नाकहुक सहयोग अपेक्षित होइछ से अनुनासिक वर्ण कहबैत अछि । वर्णक दू प्रकार कहल गेल अछि स्वर ओ व्यंजन । व्यंजनक उच्चारण बिनु स्वरक सहायतासँ संभव नहि होइत छैक । कण्ठसँ क्रमशः मुहक बाहर दिस ओठ धरि अबैत पाँच टा स्थान छैक जतऽ स्पर्श करैत 'क' अक्षरसँ 'म' अक्षर पर्यन्त उच्चरित होइत अछि । कण्ठसँ कवर्ग, तालुसँ चवर्ग, मूर्द्धासँ टवर्ग, दन्तसँ तवर्ग ओ ओष्ठसँ पवर्ग । एहि पाँचोकेँ वर्ग कहल गेलैक अछि । रेखा गणितक अनुसार जकर चारू रेखा समान तथा चारूकोण समकोण होइत छैक तकरा वर्ग कहल जाइत छैक । पाँच टा वर्ग छैक, पाँचोमे पाँच-पाँच टा अक्षर छैक अतः पाँच पंचे पचीस गोट अक्षर भेल जे स्पर्श वर्णक नामसँ जानल जाइछ । प्रत्येक वर्गमे पहिल ओ तेसर अक्षर अल्पप्राण, दोसर ओ चारिम महाप्राण तथा पाँचम अल्पप्राण तँ रहिते अछि, उच्चारणमे नाकक सहयोग लेबाक कारणेँ अनुनासिक कहबैत अछि । एहि क्रमकेँ कतहु भंग नहि कयल गेल अछि ।

एहि सँ आगाँ चारि टा वर्ण य, र, ल, व क्रमशः इ, उ, ऋ, लृ एहि चारि स्वरसँ बनल अछि, जाहि क्रममे स्वर सब अछि ताही क्रममे एहि चारू अन्तःस्थ वर्णकेँ राखल गेल अछि । तदुत्तर चारि गोट ऊष्म वर्ण श, ष, स, ह केँ स्थान देल गेल छैक । एहिमे 'ह' एक टा वर्णकेँ व्यतिक्रममे स्थान देल गेल छैक । ध्यातव्य जे अंग्रेजी वर्णमे जखन भारतीय भाषाक शब्द लिखैत छी तँ K अक्षरमे H जोड़ि दैत छिऐक तऽ 'ख' भऽ जाइत छैक 'घ' छ, झ, ठ, ढ, थ, ध, फ, भ सब अक्षर बनयबालै Hक प्रयोग करय पड़ैत अछि । एकर तात्पर्य ई जे अल्पप्राण व्यंजनमे जखन 'ह' महाप्राणक संयोग होइत छैक तखने वर्गक दोसर ओ चारिम अक्षर महाप्राण भऽ जाइत छैक तेँ संघटन शब्द लोकभाषा हिन्दी-मैथिली आदिमे संगठन रूपमे प्रचलित अछि । संघटन शब्दक 'घ' भे जे 'ह' छैक से घुसुकि कऽ 'ट' अक्षरमे चल गेल छैक तेँ घ अक्षर ग भऽ गेलैक आ 'ट' अक्षर ठ अक्षरमे परिवर्त्तित भऽ गेलैक । एहिना सबतरि बुझबाक चाही ।

फूल हो वा मोती, रुद्राक्ष हो वा कमलाक्ष अथवा कोनो आन वस्तु जकरमाला गाँथल जाइत अछि । जाहि सूत्र अर्थात्, तागमे एकरा सबकेँ गँथैत छी ताहि तागक दूनू छोरकेँ मिला कऽ जाधरि जोड़बैक नहि तावत धरि ओ 'माला' नहि कहा सकैत अछि । हमरा जनैत जे क्यो एकर आविष्कार कयने होथि, अन्तिम ऊष्म चारू वर्णमे तालव्य, मूर्द्धन्य ओ दन्त्य वर्णक बाद कण्ठ्य वर्ण होइतो ह अक्षरकेँ अन्तमे एहि हेतु स्थान देने होइथिन जे पहिल अक्षर 'अ' अल्पप्राण थिक आ अन्तिम 'ह' अक्षर महाप्राण आ दूनू कण्ठसँ उच्चरित होइछ, तागक दूनू छोर एक ठाम बन्हा गेलासँ वर्णक ई समूह वर्णमालाक रूप धारण कऽ लेलक ।

ध्यातव्य जे लिपिक आविष्कार देववाणीक ध्वनिकेँ ध्यानमे राखि भेल होयत, तेँ जहिना लिखल जाइछ तहिना बाजलो जाइत हो, से हमरा जतेक ज्ञान अछि तदनुसार एक मात्र संस्कृत भाषा अछि । अन्यान्य भाषामे ध्वनिक अनुकूले सब वर्णक विन्यास नहि देखबामे अबैछ । ई संकट मैथिलीओ भाषामे विद्यमान अछि, जाहि कारणेँ लेखनमे एकरूपता अद्यावधि नहि आबि सकल अछि ।

●

मैथिली साहित्यपर रामायणक प्रभाव

कूजन्तं राम रामेति मधुरं मधुराक्षरम्
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकि कोकिलम्

आदि काव्य रामायणक रचयिता जगद्वन्द्य महाकवि वाल्मीकिक हृदय-हिमगिरिसँ निःसृत कविता मन्दाकिनीक मधुर सुधारस पान जे नहि कऽ सकल, ओकर मानव-जीवन निष्फले मानबाक चाही ।

'साहित्य-संगीत-कलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छ-विषाणहीनः' एहि उक्तिक अनुसार साहित्य-संगीत-कलाक ज्ञानक अभावमे मनुष्यता परिपक्व भइए ने सकैत अछि । साहित्य यदि दूध तँ कविता तकर छाल्ही, संगीत यदि झंकार तँ कविता झंकार उत्पन्न कयनिहार वीणाक तार आ कलाक तँ सबसँ सूक्ष्म रूप काव्ये थीक । अतः एक काव्यक ज्ञान साहित्य, संगीत आ कला, एहि तीनूकेँ अपनो समेटि लैत अछि तथा एकर पूर्णता मनुष्यताकेँ पूर्णता दैत छैक ।

एहि काव्यक मूलमे रामायण विद्यमान अछि आ रामायणक मूलमे महर्षि वाल्मीकि देखल जाइत छथि, तेँ ई निर्विवाद सिद्ध अछि जे मानवताक सृष्टि ओ विकास तथा मानवताक परिपाकमे एहि महाकाव्यक संगहि महाकविक महत्त्वपूर्ण स्थान छनि । यैह एक मात्र महाकाव्य अछि जे आदि काव्य होइतहु काव्यत्वक ओहि चरम उत्कर्ष धरि पहुँचि गेल अछि जतय धरि अद्य पर्यन्त कोनो दोसर महाकवि नहि पहुँचि सकलाह अछि ।

वाक्यं रसात्मकं काव्यम्, रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम् आदि काव्यकेँ परिभाषित करबाक हेतु आचार्य लोकनि लक्षण कहलनि, निश्चित

रूपेँ हुनका सभक समक्ष रामायणे प्रतीक रूपमे रहल होयतनि । महर्षि वाल्मीकिक समक्ष ने कोनो प्रतीक रहल होयतनि ने कोनो लक्षणग्रन्थ । हँऽ लक्षण ग्रन्थक निर्माणमे लक्ष्य रूपमे रामायणे रहल होयतनि ।

कार्य-कारणभाव अथवा लक्ष्य-लक्षणभावक अनुसार कार्य देखि, कारणक अनुमान कयल जाइछ तथा लक्ष्य देखि लक्षणक निरूपण होइछ । अतः लक्ष्य अथवा कारणक अनुसन्धानक क्रममे रामायण लक्ष्य, करुणाक संचार कारण आ 'मा निषाद' आदि कार्य । ओहि करुणाक उद्गम स्थल आदि कविक विह्वल मानस, तेँ रसेषु करुणः श्रेष्ठः ई सिद्धान्त स्वीकार कयल गेल । सुतरां ई सिद्ध भऽ जाइछ जे काव्यक उद्भव आ उद्देश्येपर वाल्मीकिक प्रबल प्रभाव पड़ल छैक तखन कोनो भाषा वा कोनो कविक रचनापर रामायणक प्रभाव पड़लनि तँ अजगुत की ? प्रत्युत ई कहल जाय सकैछ जे जाहि भाषा साहित्य पर रामायणक प्रभाव नहि पड़लैक से भाषा साहित्य साहित्यिक प्रतिष्ठा प्राप्त करबाक अधिकारी कोना भऽ सकैत अछि ! अतः निस्सन्देह कहल जाय सकैछ जे भारतीय समस्त आर्यभाषा समूहक मूलमे रामायण कोनो ने कोनो रूपमे प्रेरक रहले अछि ।

वाल्मीकीय रामायणमे प्रयुक्त सरल-सरस शब्दावली जाहि गम्भीरसँ गम्भीर भाव, उत्तमसँ उत्तम उपमा एवं उत्कृष्टसँ उत्कृष्ट चरित्रक चित्रण भेटैत अछि, तकर तुलनामे कतहु कोनो दोसर ग्रन्थ प्राप्त अछि ?

कविकुल गुरु सदृश विशिष्ट विशेषण-विभूषित महाकवि कालिदास पर रामायणक पर्याप्त प्रभाव देखबामे अबैत अछि, जनिका समबन्धमे 'उपमा कालिदासस्य' ई उक्ति विश्व विश्रुत छनि, ताहूमे महाकविकेँ मेघदूतक नायिका यक्षिणीक हेतु मैथिली (सीता)सँ उपयुक्त दोसर उपमा नहि भेटैत छनि तँ लिखैत छथि– 'इत्याख्याते पवन तनये मैथिलीवोन्मुखा सा' ।

ई ककरासँ अविदित अछि जे रामायणक मर्यादापुरुषोत्तम सदृश धीरोदात्त नायक, सतीकुल मूर्द्धन्या साध्वी सीता सदृश नायिका, भरत सदृश भक्त भ्राता, लक्ष्मण समान अनुगत अनुज, हनूमान समान सेवक तथा रामराज्य सन शासन व्यवस्था संसारक कोनो महाकाव्यमे अद्यपर्यन्त अनुपलब्धे अछि ।

रघुवंश महाकाव्यमे महाकवि कालिदास कहैत छथि–

अथवा कृत वाग्द्वारे वंशेऽस्मिन् पूर्व सूरिभिः
मणौ वज्र समुत्कीर्णे सूत्रस्येवास्ति मे गतिः ।

कोनो वस्तुक उपयोगिता स्थिर करबाक हेतु दुइ गोट स्थिति होइत छैक । एक तँ उद्देश्यकेँ लक्ष्यमे राखि कोनो वस्तुक निर्माण । जेना असहनीय गर्मीसँ पीड़ित लोक ओहिसँ त्राण पयबाक लेल पंखाक निर्माण कयलक । दोसर कोनो वस्तु प्राप्त भेलापर ओकर उपयोगिता सिद्ध करब । जेना खानिमे लोह प्राप्त भेला पर ओकर परिष्कार कऽ अनेक प्रकारक आवश्यकताक पूर्तिक लेल अनेक रूपमे उपयोग ।

गोस्वामी तुलसीदासजी 'राम चरित मानस'क रचना करबासँ पूर्व ओकर उद्देश्य स्थिर कऽ लेलनि ।

'स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा भाषा निबद्धमतिमंजुलमातनोति' उद्देश्य सम्मुख राखि कार्यारम्भ करबाक तात्पर्य ई जे आचार्य लोकनि काव्यक उद्देश्य स्थिर करैत कहने छथि– 'काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये कान्ता सम्मिततयोपदेशयुजे' ताहि सबसँ मुक्ति भेटल रहय । एवं क्रमेँ हुनका सोझाँमे उद्देश्य स्थिर छनि, तखन ओ एहि दिस अग्रसर होइत छथि । किन्तु महर्षि वाल्मीकिसँ पूर्व कविता अर्थात् छन्दोबद्ध भाषाक प्रयोगे ने भेल छलैक तँ महाकाव्यक अस्तित्व रहितैक कोना ? अतः एहन अनुमान करबामे कोनो असमंजस नहि देखना जाइछ । तेँ ई स्वतः सिद्ध अछि जे जखन वाल्मीकिक हृदय–हिमगिरसँ अकस्मात् काव्य गंगाक स्रोत हुनका हृदयकेँ द्रवित करैत उमड़ि पड़ल होयतनि, ओकर कलकल निनादसँ जनमनमे स्पन्दन आबि गेल होयतैक, कविताक सुधामाधुरीसँ अन्तःकरण रसाप्लावित भऽ गेल होयतैक तँ एहि दिस स्वतः आकर्षण भेल होयतैक, लोक हपसि कऽ एकरा ग्रहण कयने होयत आ तखने एकर उपयोगिता ओ स्वरूप निर्द्धारण करबाक जिज्ञासा जागल होयतैक ।

अतः ई मानि लेबामे ककरो आपत्ति नहि होयबाक चाहियनि जे आचार्य लोकनिकेँ काव्यक परिभाषा ओ लक्षण स्थिर करबाक काल हुनका सभक समक्ष आदर्श रूपमे रामायणे रहल होयतनि । जनिकर मन रमि गेल होयतनि से रमणीयार्थः शब्दः वाक्यम्' कहलथिन । जनिका विभिन्न रसक अनुभूति भेल होयतनि, से

'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' कहने होयताह। जनकि अलङ्कारे आकृष्ट कयने होयतनि से 'काव्यं ग्राह्यम् अलङ्कारात्' कहलनि आ जनिका रीति नीक लागल होतयनि से 'रीतिरात्मका काव्यस्य' कहि एकर परिभाषा स्थिर कयलनि। तत्त्वतः विचार कयल जाय तँ उपर्युक्त सब गुणक समन्वये काव्य थीक।

हिन्दीक सुप्रसिद्ध छायावादी कवि सुमित्रानन्दन पंत एक ठाम कहने छथि–

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकले होंगे गान
निकल कर आँखों से चुपचाप बही होगी कविता अनजान'

एहिमे 'अनजान' शब्द यैह ध्वनित करैत अछि जे कोनो प्रतीककेँ सोझाँ राखि कविताक रचना नहि होइत छैक। स्वाभाविक रूपेँ अभिव्यक्त भावनामे जे भाव निखरैत छैक, जे उद्दाम प्रवाह अबैत छैक, जे अभिव्यंजकता झलकैत छैक, आ जे लालित्य प्रतिविंबित होइत छैक से बुद्धितत्वक जोर पर प्रसूत रचनामे कतयसँ भेटत। ओहिमे भेटत कृत्रिमताक अतिखाइनि स्वाद।

रामायणक प्रसंग महात्मा गान्धीक कथन छनि जे यदि रामायणकेँ सत्यक आधारपर नहि मानि, कल्पना प्रसूते मानी तँ एहि काव्यक निर्माताक कल्पना शक्तिक प्रशंसा करबा लै शब्द असमर्थ भऽ जायत। तेँ आदि काव्य रामायणक रमणीयता ओ सर्वश्रेष्ठता अथवा सर्वव्यापकता स्वतः सिद्ध अछि।

काव्यक प्रसंग ध्वनिवाद, रसवाद, रीतिवाद, अलंकारवाद आदि सब वादक विवाद रामायणक रचनाक बादेक वस्तु थीक। एहू युगमे जतेक छायावाद, रहस्यवाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद अन्ततः अकवितावाद धरि पहुँचल विवाद आदिसँ एखनहुँ रामायण निर्विवाद बहुत आगाँ अछि।

एतय धरि तँ रामायणेक वैशिष्ट्यपर चर्चा भेल अछि। जहाँ धरि मिथिलाक जनजीवन ओ मैथिली साहित्यपर रामायणक प्रभावक प्रश्न अछि, ई तँ मानहि पड़त जे रामायणक नायिका जगदम्बा जानकीक जन्मभूमि होयबाक कारणेँ एहि महाकाव्य पर मिथिलाक प्रभाव पड़लैक तथा एहि महाकाव्यक प्रभाव मिथिलाक काव्यात्मक वातावरण पर। मिथिला तँ मुख्यतः संस्कृत वाङ्मयक भूमि, अतः प्रसिद्ध दार्शनिक प. पक्षधर मिश्र, जनिक प्रसंग 'पक्षधर प्रतिपक्षी लक्षीभूतो न च क्वापि' उक्ति प्रसिद्ध छनि, 'प्रसन्न राघवम्'

नामक नाटक लिखलनि तथा 'मुरारेस्तृतीयः पन्था' उक्ति जनिका प्रसंग प्रचलित छनि से मुरारि मिश्र 'अनर्घराघवम्' नामक नाटक लिखलनि, जाहि दूनू नाटकके संस्कृत नाटक ग्रन्थमे विशिष्ट स्थान छैक ।

संस्कृतक विद्या केन्द्र मिथिला साहित्य-संगीत-कला तथा दर्शन शास्त्र सब क्षेत्रमे अपन मौलिक महत्त्व रखैत आयल अछि, जकर प्रभाव एकर पार्श्ववर्त्ती क्षेत्र सब पर पड़ैत रहलैक । तेँ उपर्युक्त दूनू नाटक रामायणसँ प्रभावित रहितहु अपन मौलिकताक हेतु ख्यात रहल अछि ।

मिथिलामे श्रीमद्भागवत पुराणक पारायण तथा भाषामे तकर व्याख्यात्मक प्रवचन सबसँ अधिक प्रचलित रहलैक अछि । एकर अतिरिक्त आनो-आनो पुराणक जाहि रूपेँ पारायण होइत अछि, ताहि रूपेँ रामायणक नहि । कोनो मनः कामनाक पूर्त्यर्थ कयल जाइत अनुष्ठानमे जेना दुर्गासप्तशतीक पाठ होइत रहल अछि, वाल्मीकीय रामायणक सुन्दरकाण्डक पाठ व्यापक रूपेँ होइतो प्रवचन नहि होइत अछि । एकर मूल कारण रामायणक आर्षत्वके मानल जाय सकैछ । जेना वैदिक मन्त्रक व्याख्या पुराण जकाँ जनसाधारणक सभामे उचित नहि कहल गेल अछि तहिना रामायणोक सम्बन्धमे बूझक चाही । केवल संस्कृतज्ञ लोकनिक मध्य एकर चिन्तन-मनन होइत रहल अछि ।

ई काव्य अछिए ततेक व्यापक जे संसार भरिक कोनो सभ्य देश नहि अछि जाहि देशक भाषामे एकर अनुवाद नहि भेल हो । तहिना भारतीय कोनो प्रान्तीय भाषा एहन नहि अछि जाहिमे एही कथानकके आधार बनाय स्वतन्त्र रामायणक रचना नहि भेल हो । ताहि स्थितिमे मैथिली सन मधुर भाषा एकर प्रभावसँ कोना बाँचि सकैत अछि । तथापि एतबा तँ कहले जाय सकैछ जे जेहन घनिष्ठ सम्बन्ध एहि काव्यक कथानकके मिथिलासँ रहलैक तेहन व्यापक प्रभाव परिलक्षित नहि होइत अछि ।

तथापि मैथिली भाषा साहित्यमे प्राचीनतम ग्रन्थ कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर कृत 'वर्ण रत्नाकर' उपलब्ध अछि, तकर अनुशीलनसँ प्रतीत होइछ जे ॠतुवर्णनक परम्परा रामायणेक प्रभाव थीक । आचार्य लोकनि महाकाव्यमे ॠतु वर्णनके ओकर अत्यावश्यक अंग घोषित कऽ देलनि । मैथिलीमे बरहमासा, छौमासा, चौमासा ॠतु वर्णनेक एक प्रकार मानल जाय सकैछ । हेमन्त ॠतुक वर्णन अन्यान्य भाषामे अपेक्षाकृत थोड़ अछि, किन्तु

मैथिलीमे किछु अधिके देखल जाइत अछि । वर्त्तमान युगमे डॉ० कांचीनाथझा 'किरण', प्रतिक्रिया स्वरूपे किएक ने हो, तर्क संगत युक्ति दऽ वसन्तक स्थान पर हेमन्ते ऋतुकेँ ऋतुराजक आसन पर बैसाय देलनि अछि, जकरा हम किरणजीक सर्वोत्कृष्ट उद्भावना मानैत छियनि ।

रामायणक अरण्यकाण्डमे वर्णित हेमन्त ऋतुक स्वाद लेल जाय–

'नीहार पुरुषो लोकः पृथ्वी सस्य मालिनी'
'जलान्यनुपभोग्यानि, सुभगो हव्यवाहनः'
'मृदु सूर्या सुनीहाराः पटु शीताः समहिताः'
'प्रकृत्या शीतलस्पर्शो हिमविद्धश्च साप्रतम्'
'स्पृशन् सुविमलं शीतमुदकं द्विरदः सुखम्'
'शोभन्ते किञ्चिदालम्बाः शालयः कनक प्रभाः'
'प्रसुप्ता इव राजन्ते विपुष्पा वनराजयः'
नालशेषा हिमध्वस्ता न भान्ति कमलाकराः'

एही क्रममे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक हेमन्त वर्णनकेँ देखल जाय–

''दमनाक मंजरी, शालिक परिमल, द्रव्यक नूतनता, कोषक माधुर्य, नव अन्नक प्रचार, वस्त्रक विनियोग, दिवस-लघुत्व, आदित्यक कोमलता, स्वभाव शीतल जल, पाठयोग्य रात्रि, भक्षणक सौकर्य, शीतक बाहुल्य, अवसन्न नलिनी, पुष्पक स्वल्पता एवं विध सम्पूर्ण हेमन्त देषु' ।

आब एहि परम्परामे वर्त्तमानयुगमे हेमन्त ऋतुक केहन वर्णन भेल अछि तकर अवलोकन कयल जाय । रमेश्वरचरित रामायणमे महाकवि लाल दास वर्णन करैत छथि–

'दिवस छलाह बढ़ल सब भाँति । लाजेँ सकुचि भेला लघु काँति ।
शोभ शालि मंजरि सुख मूल । जनि लटकल खर्जूरक फूल ।
हिमभय रवि उत्तर तजि देल । आग्नेय दिशिक सुआश्रय लेल ।'

एवं क्रमेँ कविचूड़ामणि मधुप, डॉ० कांचीनाथझा 'किरण' रामचरित्र पाण्डेय अणु, श्रीश्रीमन्त पाठक, इन्द्रनाथ झा आदि अनेक कवि हेमन्तक वर्णन

कयलनि अछि, जाहि सभक एक पृथक् संकलन कयल जाय सकैछ जेना 'विजयशंख' 'हन्त अयोध्याकाण्ड', भूकम्प काव्य' आदिक कयल गेल अछि। महर्षि वाल्मीकि किष्किन्धा काण्डक आरम्भेमे वसन्तक वर्णन कयने छथि। सीता हरणक बाद वसन्तक आगमनसँ वियोग विह्वल श्रीराम अनुज लक्ष्मणकेँ कहैत छथिन–

'श्यामा पद्मपलाशाक्षी मृदुभाषा च मे प्रिया
नूनं वसन्तमासाद्य परित्यक्षति जीवितम् (कि.का. श्लोक 54)

नव वयस, कमलदल सदृश आँखि वाली, मृदुभाषिणी हमर प्रिया जानकी एहि वसन्त ऋतुक आगमन देखि निश्चित रूपेँ प्राण त्यागि देतीह। परन्तु अनुजसँ वार्त्ता कऽ रहल छथि, तेँ मर्यादाक रक्षाक कारणेँ एहिसँ पहिने कहि देने छथिन्ह–

मां तु शोकाभिसंतप्तमाधयः पीड़यन्ति वै
भरतस्य च दुःखेन वैदेह्या हरणेन च।

परन्तु हम एखन भरतक दुःख आ सीताक हरणक चिन्ताक शोकसँ सन्तप्त भऽ रहल छी। मानसिक वेदना बहुत कष्ट दऽ रहल अछि। एहि क्रममे मैथिल कोकिल विद्यापतिक ई पंक्ति द्रष्टव्य–

'मन्द पवन बह, पिक कुहु–कुहु कह
सुनि विरहिनि कइसे जीवइ'

महर्षिक वियोगिनी सीता प्राण त्याग कऽ लेथिन आ मैथिल कोकिलक विरहिणीराधा कोना जीवन धारण करथिन ? कोनो महाकविक चिन्तन शैली कोनो महाकवि पर एतबे प्रभाव दऽ सकैत छनि।

रामायणक मूल स्रोत करुणा थीक। मैथिलीमे करुणोत्पादक संगीत अछि 'समदाउनि' आ 'उदासी' जे दूनू विशेष राग थीक। जमायक विदा कालमे उदासी तथा कन्याक द्विरागमनक कालमे समदाउनि गाओल जाइत अछि। समदाउनिमे सबसँ अधिक प्रचलित पद अछि–

'बड़ रे जतन सँ सियाजीकेँ पोसलहुँ, सेहो रघुवंशी लेने जाय'

प्रत्येक घरसँ कन्या एखनहु सासुर जाइते अछि, एखनहु रघुवंशी अबिते छथि

आ सियाजीकेँ लऽ जाइत छथिन । ललना लोकनिक कण्ठसँ निःसृत समदाउनिक स्वर करुणाकेँ साकार कऽ दैत अछि, वातावरण आम्रेड़ित भऽ उठैत अछि । राजर्षि जनक सन स्थितप्रज्ञ तथा महर्षि कण्व सन तपस्वी पर्यन्त भाव विह्वल भऽ जाइत छथि ।

ई सब देखितो मिथिलाक माटि-पानिसँ रामायणक जेहन घनिष्ठ सम्बन्ध छैक, ताहि रूपेँ जे व्यापक प्रभाव पड़बाक चाही से दृष्टिगोचर नहि होइछ । पूर्वहु कहि चुकल छी, रामायणक आर्षत्व एकरा जनजीवनमे घुलऽ मिलऽ नहि देलकैक । ई उच्च बुद्धिजीवी संस्कृतज्ञे सभक बीच रहि गेल, तेँ गोस्वामी तुलसीदासकेँ भाषानिबद्ध करय पड़लनि । वाल्मीकिसँ लऽ तुलसीदासक काल धरि विशाल अन्तरालमे ई राम कथा नाना पुराण निगमागम सर्वत्र पसरि गेल छल तेँ गोस्वामी जी केँ कहय पड़लनि—

नाना पुराण निगमागम सम्मतं यत्
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि
स्वान्तः सुखाय तुलसी रघुनाथ गाथा
भाषा निबद्धमतिमंजुलमातनोति ।

दोसर कारण अभिनव जयदेवक आविर्भावकेँ सेहो मानल जाय सकैछ । विद्यापतिकेँ 'अभिनव जयदेवक' उपाधि एहि हेतु देल गेलनि जे गीत गोविन्दमे महाकवि जयदेव भागवतक आधार पर जे कृष्णक लीलाक गीतिमय वर्णन कयलनि ताहिमे उद्दाम शृंगारक प्रचुर मात्रामे वर्णन छनि । संस्कृत साहित्यमे तँ ई नवीन धाराकेँ प्रवाहित कयने छथि । महाकवि विद्यापति पर प्रत्यक्ष प्रभावो परिलक्षित होइत छनि ।

एमहर भागवतक कथा व्यासक गद्दीक माध्यसँ जनसाधारण पर्यन्तकेँ विशेष सम्पर्क छलैक, जाहि कारणेँ कृष्णभक्ति शाखा सम्बन्धी विशेष रचना ओ तकर प्रचार सुलभ छलैक । मैथिल कोकिलक काकलीसँ अंग-वंग कलिंगसँ लऽ ब्रज भूमिक वृन्दावन आ कालिन्दी तटक कदम्बनिकुंज धरि कूजित भऽ उठल, मिथिलाक आम्रकुंजक कथे कोन । एक सुदीर्घ परम्परामे आसाम (असम)सँ लऽ राजस्थान धरि तथा हिन्दू सँ लऽ मुसलमान धरि कतेको कृष्ण भक्त सन्त कवि उत्पन्न होइत रहलाह । एहन प्रखर प्रवाह

रामभक्ति शाखाक साहित्यमे नहि देखल जाइछ । तुलसीदासक 'रामचरित मानस'क रचनाक पश्चात रामभक्ति शाखाक किछु सन्त कवि देखि पड़ैत छथि मिथिलोमे, परन्तु हुनका लोकनिक भाषा विशुद्ध मैथिली नहि रहलनि, प्रत्युत हिन्दी-ब्रजभाषा मिश्रित मैथिली छनि जकरा इतिहासकार लोकनि सधुक्कड़ी भाषाक संज्ञा देलथिन । उदाहरण स्वरुप लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, साहेबरामदास प्रभृतिक नाम लेल जाय सकैत छनि ।

तेसर आ हमरा जनैत सबसँ प्रमुख कारण थिक रामक मर्यादापुरुषोत्तमता । महर्षि वाल्मीकिक काव्यक नायिका जगदम्बा जानकी आ नायक मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र, जे एक पत्नीव्रतव्रती । एमहर जयदेवक नायिका राधा जे पत्नी नहि, प्रेयसी तथा नायक कृष्णचन्द्र वृन्दावन बिहारी, लीला पुरुष, सहस्र गोपिका बीच रास रचौनिहार । दूनू जीवन लीला दू छोर पर ।

शृंगार, संयोग वा विप्रलम्भ दूनू जीवनक शाश्वत सत्य, जे राजासँ रंक धरि, नीरस धूलिसँ सरस पंकधरि सभक जीवनमे अबिते छैक, ताहि शृंगारक उद्दाम वर्णन राधाकृष्णकेँ आलम्बन बनाय सम्भव छलैक परन्तु सीतारामक माध्यमेँ अमर्यादित होइत । ताहूमे सीता जगन्माता होइतो मिथिलाक तँ बेटी सेहो ।

पहिनहु उल्लेख भेल अछि राम द्वारा मर्यादा पालनक प्रसंग । वसन्तक आगमनसँ पीड़ित राम सीताक वियोग जन्य मानसिक पीड़ाक चर्चा क्रममे रामद्वारा व्यक्त भाव-

मां तु शोकाभिसन्तप्तमाधयः पीड़यन्तिवै
भरतस्य च दुःखेन वैदेह्या हरणेन च ।

एहि ठाम प्रथम-प्रथम भरतक चर्चा कऽ राम लक्ष्मणक मनकेँ बाँटि दैत छथिन तखन वैदेहीक हरणक चर्चा करैत छथिन । एहि तरहेँ वाल्मीकि रामक मर्यादाकेँ सुरक्षित राखि लेलथिन अछि । किन्तु कृष्णभक्ति शाखा सम्बन्धी साहित्यमे नायिकाक नख-शिख वर्णनसँ लऽ विपरीत रति पर्यन्तक वर्णन भेल अछि । मर्यादा पुरुषोत्तमक चरित्रमे नहि छजि-सजि सकैत छल ।

एहि कथनसँ हमर ई आशय नहि अछि जे कृष्ण भक्ति शाखाक साहित्य अमर्यादित अछि । आशय ई अछि जे कृष्ण भक्ति शाखा जकाँ रामभक्ति शाखामे कविक बाढ़ि आयब कठिन छल ।

एहि ठाम एक बात अवश्य अविस्मरणीय थीक जे साहित्यमन्दिरक देवतामे जतेक स्थान कृष्णकेँ भेटलनि ततेक रामकेँ नहि । हम तँ ईहो कहि सकैत छी जे कृष्ण सेहो साहित्य मन्दिरेमे बेसी स्थान छेकि सकलाह । देवमन्दिरक देवताक रूपमे मिथिलामे 'कलौचण्डीमहेश्वरौ' शक्ति ओ शिवकेँ जतेक स्थान भेटल छनि ततेक ने रामकेँ ने कृष्णकेँ, हँऽ रामभक्त हुनमान सब ठाम विद्यमान छथि । किन्तु हनुमान रामभक्त होइतो एकादश रुद्रोमे परिगणित छथि ।

उत्तर भारतक करीब-करीब मध्यमे स्थित ई मिथिला गोसाउनिक गीत आ नचारी-महेशवाणीमे रमल रहल । रामक सम्बन्धमे गोविन्द दासझाक एक पद भेटैत अछि-

"जय जय श्रील राम रघुनन्दन जनक सुता रतिकन्त
सुर नर वानर खचर निशाचर जसु गुण गाब अनन्त" परन्तु

भगवतीक वन्दनाक परम्परा अविच्छिन्न रूपमे अद्यावधि चलिए रहल अछि-

'जय जय भैरवि असुर भयाउनि पशुपति भामिनि माया'- विद्यापति
'जय जय जय भय भंजिनि भगवति आदि शक्ति तुअ माया'- म. महेश ठाकुर
जय जय मधुकैटभ अर्दिनि, जय जय महिषासुर मर्दिनि- उमापति
वदन भयान कान शव कुण्डल विकट दशन घन पाँती- म. महिनाथ ठाकुर
जय जय भय हरनि मंजु हासिनि, मधु दमन कंज आसिनि- हर्षनाथ
जगतमे थाकि जगदम्बे अहिंक पद आबि बैसल छी,
सुनैए ने हमर क्यो, हम सभक गुण गाबि बैसल छी- सीतारामझा
जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर- श्री प्रदीप

हँऽ सखी सम्प्रदायक उद्भव भेलाक पश्चात् पछिला शताब्दीसँ मधुर भावक उपासक सब भक्तिपदक रचना करय लगलाह तँ रामायणक धनुष यज्ञ, फुलवाड़ी लीला आदिकेँ विशुद्ध जनभाषामे कीर्त्तनक रूपमे चित्रित करय लगलाह ताहिमे पर्याप्त रचना भेल अछि । जाहिमे स्नेहलता, मोदलता आदि नाम लेल जाय सकैत अछि । सम्प्रति पद्मश्री शारदा सिन्हा अपन माधुर्य पूरित-स्वरसँ कोन-कोन केँ गुंजायमान कयने रहैत छथि ।

●

एकाङ्की : सातम दशक

संस्कृतक हिमालयसँ उतरि साहित्य गङ्गा जखन लोक भाषाक समतल धरातल पर पहुँचलीह तँ गद्य, पद्य ओ नाटक एहि तीनू मार्गें त्रिपथगा जकाँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति ओ उमापतिक आश्रय धैलनि । यद्यपि एमहर किछु अनुसन्धान कार्यकेँ आगाँ बढ़ला सन्ताँ विद्यापतिक 'गोरक्ष विजय' नामक नाटकक पता चलल अछि, ताहि अनुसार विद्यापति हरिद्वारक ओ धारा प्रतीत होइत छथि जाहि ठाम नील गंगा, मन्दाकिनी ओ भागीरथी एहि तीनूक संगम होइछ । किन्तु सूत्रपात कयनिहार भने विद्यापति होथि, विस्तृत समतल पर अननिहार उमापतिए मानल जाइत छथि । डा. जयकान्त मिश्र ओ प्रो. कृष्णकान्त मिश्र अपन 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे विद्यापतिकेँ नाटककार मानितहुँ परम्पराक प्रवर्त्तक हुनका नहि मानलनि अछि । ओ बंगालमे 'यात्रा', आसाममे 'अंकिया नाट' तथा मिथिलामे 'कीर्त्तनिञा-नाटक'क प्रकारक उल्लेख करैत छथि । श्री शिवदान सिंह चौहान अपन 'हिन्दी साहित्यके अस्सी वर्ष' शीर्षकमे 'कीर्त्तनिञा-नाटक' लिखनिहारक संख्या 35, नाटकक संख्या 106 एवं परम्पराक अविच्छिन्न धाराक क्रम समय चारि सय वर्ष लगातार लिखैत छथि, जकरासँ प्रभावित भऽ वल्लभाचार्य सम्प्रदायमे व्रजभाषामे 'रास लीला' तथा 'रामचरित मानस'क आधार पर अवधीमे रामलीलाक श्रीगणेश सेहो मानैत छथि । जे किछु हो, गद्य-पद्य ओ नाटक एहि तीनू धाराक प्राचीनता मैथिली सुरक्षित रखने अछि । एहि मध्यमे काव्यक लघु रूप छोट-छोट कविता जकाँ-नाटकक लघु रूप नाटिका ओ ताहिसँ एकांकीक विकास होइत आयल अछि ।

प्रस्तुत निबन्धमे एहि दशकमे जे मैथिलीक एकांकी प्रगति कयलक अछि, ताहिपर संक्षेपमे विचार कयल जा रहल अछि ।

एहि दशकमे एकांकी ओ प्रहसन लिखनिहारक संख्या आशाबर्द्धक देखना जाइछ । सुप्रतिष्ठत लेखकसँ लऽ निकट भूतमे कलम धयनिहार पर्यन्त थोड़ बहुत चेष्टा कयलनि अछि । हुनका सभक नाम एहि रूपेँ गनाओल जा सकैत अछि– कुमार श्रीगंगानन्द सिंह, प्रो. श्रीहरिमोहनझा प. श्री काञ्चीनाथझा 'किरण', प्रो. श्रीतन्त्रनाथझा, प. श्रीजीवनाथझा, पं. श्रीरामकृष्णझा 'किसुन', श्रीपरमेश्वरमिश्र, प. श्रीगोविन्दझा, श्रीअनन्त बिहारी 'इन्दु', पं. श्रीभवनाथझा, श्रीगोपालजीझा 'गोपेश', डा. श्रीब्रजकिशोर वर्मा, श्रीरेवतीनाथझा, पं. श्रीराघवाचार्य शास्त्री प्रो. श्रीआनन्द मिश्र, प्रो. श्रीसरोजकान्तमिश्र, श्रीमथुरानन्दचौधरी 'माथुर' तथा एहू निबन्धक लेखकक नाम एहि पंक्तिमे राखल जा सकैछ ।

यद्यपि एखनहुँ रंगमंचक सर्वथा अभावे अछि तथापि एकांकी लिखबाक ई प्रवृत्ति बढ़ि रहल अछि, तकर किछु कारण अछि । किछु दिन पूर्व नाटकमे भाग लेनिहार नटकिया नामेँ उपहासास्पद बूझल जाइत छलाह । कारण नाटक खेलयनिहारक मण्डली जखन जीविकाक हेतु गामे-गाम घूमि-घूमि नाटक करैत छल तखन ओकरा जन-साधारणक मनोरंजनार्थ निम्नसँ निम्न कोटिक वस्तु उपस्थित करबामे संकोच नहि होइत छलैक आ जनता भ्रष्ट रुचिक बेसी भेटैत छलैक, अतः शिष्ट लोक नाटकमे भाग लेब हेय बुझैत छलाह । एही दिस संकेत करैत कविवर जीवनझा लिखैत छथि–

गिरा सुमिरि जौँ नाचब
सकल दोष सँ बाँचब

नचबामे समाज उपहास करब तहिए आरम्भकऽ देने छल । एक दिस समाजक ई उपहास आ दोसर दिस सिनेमाक विकास नाटकक भविष्यकेँ एक-दम अन्धकार पूर्ण बना देने छल । सौभाग्यसँ शिक्षित लोकक बीच एहि हेतु जागरण भेल आ स्कूल कालेजमे नाटकक प्रवृत्ति बढ़य लागल । कम्पनी वला सब तँ खाजा-लड्डूक भोजमे अँचारक काज लेबाक हेतु बिपटा रखैत छल । प्राचीनो संस्कृत नाटकमे विदूषक रहैत छल, मुदा शिक्षक-विद्यार्थी लोकनि की करथि, तेँ प्रह्सन दिस आकर्षण भेल । आब देखल जाइत अछि जे कतहु कोनो नाटक होइत अछि तँ घटही पसिञ्जरमे जोड़ल गाड़ीक डिब्बा जकाँ मैथिलीक कोनो ने कोनो प्रहसन ओहि संग अवश्य भेटत । ई काज किछु प्रो. श्रीहरिमोहनझाक कथा सब सेहो प्रहसनक रूपान्तरमे आबि कयलक ।

एमहर आबि 'बौआक दाम', 'महाराज विजय' आदि प्रह्सन श्री हरिमोहन बाबू लिखबो कयलनि । मुदा एतबा जँ सब स्वीकार करैत छथि जे 'कन्यादान' लिखि हरिमोहन बाबू मैथिली भाषीसँ इतरोकेँ मैथिली पढ़बाक हेतु आकृष्ट कयलनि तँ संगहि ईहो स्वीकार करैत छथि जे ओकर चित्र अति रंजित भऽ जाइत छैक । ई प्रायः हुनका स्वभावमे समवेत भऽ गेल छनि । उक्त प्रह्सन सबमे नाटकीयताक पूर्ण परिपाक नहि भेल छैक । यद्यपि कृत्रिम हास्य सीमाकेँ पार कऽ जाइछ । 'खट्टर ककाक तरंग' अथवा 'भोल बाबाक गप्प' अपिच 'टोटमा' आदि कथाक रूपान्तर कऽ कतेको अभिनय भऽ चुकल अछि । हिनक लिखल 'टी-पार्टी' कविताकेँ सेहो श्रीविष्णुकान्तझा एकांकीक रूप दऽ चुकल छथि जे 'वैदेही'क जनवरी 1954क अंकमे प्रकाशित भऽ चुकल अछि । ई दोष कही वा गुण, परन्तु एतबा निःसंकोच कहल जा सकैछ जे हिनक लिखल कथा वा कवितामे जहिना नाटकीयता आबि जाइछ तहिना हिनक प्रहसनमे कथाक तत्त्व आबि घोंसिया गेलनि अछि । जे क्यौ हरिमोहन बाबूक मुहेँ हुनकर कविता सुनने होयताह तनिका अनुभव होयतनि जे हिनक कविता पाठमे सेहो नाटकीयता घोंसिआयल रहैत छनि । तेँ एकांकीक दृष्टिेँ हरिमोहन बाबू गप्प अथवा कथा-साहित्य जकाँ सिद्धहस्त नहि मानल जयताह । हँ पल्लवमे प्रकाशित हिनक 'अयाची मिश्र' बड़ सुन्दर एकांकी भेलनि अछि। यद्यपि ओ ततेक लघुकाय भेल अछि जे छुछुन्न लगैत अछि आ बहुतो विद्वान ओकरा इतिहाससँ असम्बद्ध ओ काल्पनिक कहैत छथि, तथापि ओहि बंगाली शिष्यक जिज्ञासा, बालक शंकर द्वारा तकर प्रतिपादन, मिथिलेशक हुनका दुआरि पर पहुँचब आदि घटना-क्रम तेना विन्यस्त भेल अछि जाहिसँ सन्तोष एवं प्रतिभाक प्रति श्रद्धाक भाव दर्शकक मनमे जागि उठैत छैक । एकटा अस्वाभाविकता ओहिमे ई मात्र छैक जे 'अपूर्ण पंचमे वर्षे' वला बालककेँ घृत आदि अनबाक भार देल जाइछ ।

श्रीजीवनाथझा 'विद्याभूषण' संस्कृतक निविष्ट विद्वान् ओ संस्कृत, हिन्दी, मैथिलीक प्रतिष्ठित कवि छथि । हिनक लिखल 'अयाचीक शंकर' 'याज्ञवल्क्य विजय' नामक दुइ गोट एकांकी पण्डुलिपिमे पढ़बाक सौभाग्य प्राप्त भेल अछि । 'अयाचीक शंकर' ओ हरिमोहन बाबूक अयाचीक घटना क्रममे बहुत अन्तर अछि । 'अयाचीक शंकर'मे शंकर मिश्रक प्रौढ़ पाण्डित्यक निदर्शनक संग दूनू बापुतक पाण्डित्य निखरि उठलनि

अछि जखन कि हरिमोहन बाबूक अयाचीमे बालक शंकर मात्रक प्रतिभा अंकित होइछ ।

श्रीजीवनाथ बाबू नाट्यशास्त्रक आधारकेँ जतेक मुख्यता देलनि ततेक नवीन टेकनिक (शैली)केँ नहि । मनोरंजन द्वारा जनसाधारणक हृदयकेँ स्पन्दित करब भिन्न बात थीक आ पण्डित लोकनिक हेतु हृदयग्राही प्रसंग बना देब भिन्न । उक्त नाटकमे संस्कृत श्लोकक ततेक बाहुल्य अछि जे पण्डित मण्डलीक हेतु आकर्षक भेल अछि । याज्ञवल्क्य तँ एहि दृष्टिजे अस्पृष्ट छलाह । एहि पर पहिले पहिल जीवनाथे बाबू कलम उठौलनि अछि से सर्वथा सराहनीय थीक । तखन एतबा तँ कहहि पड़त जे एकरो रचना संस्कृते पण्डित द्वारा भेल अछि, अतः जनसाधारण जतबा संस्कृतसँ दूर अछि ततबा एकरा बुझबामे ओकरा कठिनताक बोध होयबे करतैक ।

हमरा मतेँ सर्वोत्कृष्ट एकांकी थिकनि कुमार श्रीगंगानन्द सिंहजी 'जीवन संघर्ष' । ई मासिक 'स्वदेश'मे प्रकाशित ओ वर्त्तमान मैट्रिक्युलेशन पाठ्य ग्रन्थमे संकलित अछि । एहि एकांकीमे तीन गोट समस्याकेँ एक सूत्रमे गाँथि, अप्रत्यक्ष रूपेँ तीनूक समाधान दिस संकेत कयल गेल अछि । एक पात्र छथि चिरंजीव बाबू जनिक पूर्वजक बनाओल भगवानक मन्दिर छनि । पूजाक पद्धतिं पकड़निहार रहत मकुनमा जे बाहरसँ थोड़ बहुत शिक्षा प्राप्त कऽ अपन नाम बालमुकुन्द शास्त्री घोषित कयलक अछि । चिरंजीव बाबूक भातिजे चमरटोलीमे प्रसाद बनयबामे अगुआ छथिन । एकरे नेतृत्वमे अछोपसब मन्दिरमे प्रवेश करबाक आयोजन कयने अछि । संगहि दोसर घटना चलैछ जे फूदरक एकटा बहिन विधवा छलथिन जे बालमुकुन्द शास्त्रीक संग चुपचाप कानूनी विवाह कऽ लेलथिन अछि । तनिक हुलिया थानामे कराओल जाइत छनि । एही संग तेसर घटना क्रम चलैत अछि जे यैह दल जमीन्दारक जिरातमे झंडा गाड़ि देलक अछि, तेँ देवानजी व्यग्र भेल थानासँ दरोगाकेँ बजा अनैत छथिन । जुलूस बहराइत अछि, दरोगाजी पहुँचैत छथि बालमुकुन्द शास्त्रीक संग अपना बहिनकेँ देखि फूदर हुनकापर दण्ड प्रहार आरम्भ कऽ दैत छनि । फलतः कानूनी विवाहकेँ जायज बूझि फूदरकेँ चलान कऽ दैत छनि । जिरात पर जमीनदारक कब्जा प्रमाणित कयनिहार गवाहीक सर्वथा अभाव अछि । देवानजी हताश भऽ जाइत छथि । जुलूस मन्दिरमे पहुँचैत अछि भीतरसँ केवाड़

बन्द देखि केवाड़कें तोड़ि दैत अछि आ ओही केवाड़ तर पड़ि चिरंजीव बाबू पंचत्व प्राप्त कऽ लैत छथि । अतः अच्छूतोद्धार, विधवा विवाह आ भूमिक विकेन्द्रीकरण ई तीनू समस्या अछि । युग जेमहर जा रहल अछि ताहि दिस संकेत करैत नाटककार 'पद्म पत्रमिवाम्भसा' जकाँ अपन कोनो मत बिनु व्यक्त कयनहि परिणामसँ समाजक अथवा युगक प्रवृत्ति स्पष्ट कऽ दैत छथि। यैह थिक कलाविशिष्टता । आदर्श पर बिनु कोनो आघात कयने यथार्थकें एहि रूपें व्यक्त कऽ प्रगतिशीलताक दिस संकेत करब सामान्य बात नहि थीक । यैह सब एहि एकांकीकें सर्वोत्कृष्ट बना दैत छैक ।

प्रो. श्रीतन्त्रनाथझा 'कीचक-वध' महाकाव्य लिखि पूर्ण प्रतिष्ठा लाभ कयने छथि । ई मैथिली-साहित्य-परिषद्क प्रधान मन्त्रित्वक भार उठा बहुतो दिनसँ मातृभाषाक सेवा करबैत आयल छथि । हिनक लिखल 'एकांकी-चयनिका' पाँच गोट एकांकीसँ विभूषित मैट्रिक्युलेशनक पाठ्य ग्रन्थमे स्वीकृत अछि । एकांकी सभक शीर्षक अछि– 'कालेज-प्रवेश', 'तमघैल', 'पन्ना', 'उपनयनाक भोज', 'घटकक पराभव' । एहिमे हमरा जनैत ४ गोट प्रहसन अछि ओ एक एकांकी 'पन्ना' । एहिमे राणा संग्राम सिंहक ज्येष्ठ पुत्र राणा विक्रमक स्वर्गगामी भेलाक बाद बालक उदयकें चेतन होयबाक समय धरि राणाक रखेली शीतल सेनीक पुत्र वनवीर राणाक कार्यभार सम्हारलक । तदुपरान्त वनवीरक हृदयमे राज्यक प्रति लोभ उत्पन्न भेलैक आ ओ उदयक हत्या करबाक षड्यन्त्र रचलक । एहि षड्यन्त्र रचबाक कालसँ घटनाक आरम्भ होइत अछि आ पन्नाधाय जे उदय सिंहक पालन करबाक हेतु नियुक्त छलि अपना पुत्रकें राजकुमारक वेशभूषासँ सुसज्जित कऽ राजकुमारक ओछौन पर सुताय, निस्तब्ध रातिमे गढ़सँ राजकुमारक संग पड़ा जाइत अछि, तावन्मात्रे घटना चलैत अछि । यद्यपि अपना पुत्रकें बलिदानक वेदी पर सुतैबाक काल मातृ-हृदयक वात्सल्य एवं कर्त्तव्यक बीच जे अन्तर्द्वन्द्व भेल होयतैक तकर चित्रण नहि भऽ सकल अछि, तथापि ई एकांकी नीक बनि सकल अछि । एहि ठाम स्मरण रखबाक थीक जे समस्त घटनाक्रम पर पं. गोविन्द वल्लभ पन्त हिन्दीमे 'राजमुकुट' नामक नाटक लिखि चुकल छथि । एहि दुनूक घटना क्रममे कोनो विशेष अन्तर नहि देखि पड़ैछ । दोसर आराक समीपस्थ खुटहा निवासी हिन्दीक यशस्वी लेखक अखौरी कृष्ण प्रसाद 'पन्ना' नामक नाटक बहुत पहिने लिखि चुकल छथि । एहि प्रसंगमे ईहो लिखब युक्ति संगत जे

पं. श्रीकांचीनाथ झा 'किरण' एही घटना क्रमसँ सम्बद्ध एक 'शीतल-सेनी' नामक एकांकीमे लिखने छथि जे सर्वथा मौलिक भेल अछि। एहि एकांकीमे राणाक सन्तान होइतो जकर माय रखेली होइ तकर उपेक्षा करब की न्याय थीक, ताहि पर नवीन दृष्टिकोण उपस्थित कयल गेल अछि। स्वामी रहितहु रखेली कमस्सल ? ई वस्तुतः अन्याय थीक तथा एही अन्याय ओ उपेक्षाक कारणे शीतल-सेनीक मन पर प्रतिक्रिया होइत छैक आ ओ अपन पुत्र वनवीरकेँ तरुआरि हाथमे दऽ प्रोत्साहित करैत छैक जे बाहुबलसँ अपना मार्गक कंटक राणा विक्रम एवं बालक उदयकेँ काटि राजगद्दीक उत्तराधिकार प्राप्त करए। एहिमे अभिव्यक्त मौलिक विचारक सोझाँ 'एकांकी-चयनिका'क पन्ना भटरङ भऽ जाइत अछि। तथापि एहि चयनिकामे सर्वोत्कृष्ट इएह एकांकी मानल जा सकैछ।

'कालेज-प्रवेशक'क मुख्य पात्र बिजलीकान्तक चरित्र बड़ निम्नस्तर भेल अछि। मौगियाह स्वभाव, पौरुषक अभाव, घटनाक्रम निर्जीव ज्योतिषीजीक संग निरर्थक त्वञ्चाहञ्च, आदि अनेक बात अछि जे एकरा निम्न कोटिक प्रहसन बना कऽ छोड़ि देलक अछि। एहिमे एक मात्र चतुरता ई देखल जाइछ जे बिजुली कान्तक संगी नन्नू ज्योतिषीक कहल– परिश्रम बेसी वेतन थोड़, सम्मान बेसी आ अधिकार थोड़ एहि कथनक विलक्षण रूपेँ अर्थ लगाय विजुली कान्तकेँ भविष्यमे हाइकोर्टक जज बनबाक आश्वासन दऽ उद्विग्न मन केँ शान्त करैत अछि।

'उपनयनाक भोज'मे तँ एक पेटू ब्राह्मणक गर्हित कर्म मात्र अंकित भेल अछि। निमंत्रण नहि पाबि आशामे कतेक वर्ष बितौनिहार ओ ब्राह्मण कुटुम्बक घोड़ी चोराय खड़हीमे बान्हि अबैत छथि आ नाम काढ़ि, ताकि कऽ आनि दैत छथिन। यैह थीक ओकर कथा वस्तु। की भोज खैबाक हेतु एहन प्रपंच निन्दित कर्म कयनिहार समाजक दुइयो प्रतिशत अछि ? एक बात उपनयन शब्दमे षष्ठीक विभक्ति 'क' लगला सन्ताँ उपनयनाक कोना भऽ सकैछ से तँ वैयाकरण लोकनि जानथि (?)

'तमघैल' नाटकमे वयोवृद्ध पं. श्रीकान्तझा जीवन भरि प्रधान पंडितपदपर रहि, जखन अवकाश ग्रहण करैत छथि तँ उपार्जित टाकासँ चारि कोठली वला मकान बनबैत छथि। बेटा पुतहु बुढ़ारीमे उपेक्षा करैत छथिन। एक प्रिय शिष्य जिज्ञासामे अबैत छथिन तँ पण्डितजी 'रहिमन निज मन की व्यथा मनही राखौ गोय' वला सिद्धान्त अपनबैत छथि, किन्तु खबासनीक संग वार्त्तालापसँ

शिष्यकेँ पण्डितजीक होइत दुर्दशाक आभास भेटैत छनि, तखन प्रपंच रचि, दुइ गोट तमघैल मङबाय, कोठलीमे पण्डितजीक चौकी तरमे गड़बाय चल जाइत छथि । पण्डितजीक मुइला पर जखन तमघैल उखाड़ल जाइत अछि तँ ओहिमे रोड़ा पाथर भरल तमघैलमे किछु नहि अछि 'द. श्रीकान्त झा ब. खास' लिखल भेटैछ । अपवाद रूपमे भने समाजमे एहन लोक भेटय जे बेटा पुतहुकेँ एना ठकैत अछि, आदर्शक तँ नीक जकाँ एहिमे हत्या भेल प्रतीत होइछ ।

घटकक पराभव तँ वस्तुतः ओहि युवकक पराभव थीक जे कन्या बिनु देखने विवाह नहि करै चाहैत छथि आ जखन कादम्बरी नामक कन्याक परीक्षणमे जाइत छथि तँ ओकर पाण्डित्य-कला, चातुरी आदि देखि हुनका बघजर लागि जाइत छनि आ पाश्चात्य सभ्यतासँ प्रभावित फुदकैत खंजनि कन्या प्राप्त करबाक अभ्यासे छूटि जाइत छनि । एहि अंशमे तँ ई नीक बनि पड़ल अछि, मुदा एक बी.ए. पास एवं बी.एल. केर छात्रकेँ एक मैथिल घरक कन्या एक संग संस्कृत, व्याकरण, छन्द, अलंकार, संगीत, न्यूटनक सिद्धान्त बंगला मैथिली कविता एतेक दूर धरि जे खेल पर्यन्तमे पछाड़ि केँ चारू नाल चित्त कऽ दैत अछि से सर्वथा अस्वाभाविक प्रतीत होइछ । एहि रूपेँ देखला सन्ताँ 'एकांकी-चयनिका' उत्तम कोटिक एकांकीकेँ के पूछय सामान्यो पंक्तिमे बैसबासँ असमर्थ देखना जाइछ ।

पं. काञ्चीनाथ झा 'किरण' मातृभूमि ओ मातृभाषाक कतेक प्रेमी छथि से हिनके लिखल निम्नलिखित पंक्ति–

पुनि पुनि पूत होइ हम तोर
कान धरब मा विनती मोर
कमला कोसीक बाढ़ि उडंड
ओ बिहाड़ि भूकम्प प्रचण्ड
तोड़ि सकत नहि तोहर नेह
तोहरे हित अरपल ई देह

तथा–

किन्तु मैथिली का तो केवल मैं ही एकमात्र आधार
मेरे बल पर ही अबतक है इसमें जीवन का संचार

सूचित करैत अछि । श्री किरणजी कविसँ बेसी सफल नाटककार छथि । ताहूसँ बेसी कर्मठ एवं दक्ष रचनात्मक कार्यकर्त्ता । एमहर आबि ई एकांकी लिखबाक दिस प्रवृत्त भेलाह आ सबसँ बेसी एकांकी लिखि राखि देलनि हिनक एकांकी सब क्रमशः 'जय जन्मभूमि' 'कर्ण' 'शीतल-सेनी' 'जय विद्यापति' 'कामेश्वर' 'चण्डेश्वर' 'देशभक्त महाराज शिवसिंह' 'हरिसिंहदेव' 'त्रियुगा' ओ 'श्रीकान्त' (पाण्डुलिपि) हमरा दृष्टिपथ पर आयल अछि । हिनकामे राजनीतिक चेतना अधिक देखना जाइछ अपेक्षाकृत मैथिलीक अन्य साहित्यकार सबसँ । ई साहित्य द्वारा जनतामे राजनीतिक चेतना जगैबामे बेसी संलग्न देखना जाइत छथि । हिनक 'जय जन्म-भूमि' मात्र पुस्तकाकार भऽ लोकक सोझाँ पहुँचल अछि । एहिमे ई ऐतिहासिक तथ्य पर बेशी ध्यान नहि दऽ वर्त्तमान समयमे जे मिथिलाक राजनीतिक चेतना सुषुप्तप्राय अछि तकरा उद्‌बुद्ध करबाक हेतु ऐतिहासिक राजा, नेता, कवि, दार्शनिक, पण्डित आदि लोकनिकेँ स्वर्गक मंच पर उपस्थित करैत एकांकीकेँ नव दिशा देलनि अछि। हिनक सब एकांकीमे हिनक प्रौढ़ विचारक संग नवीन दृष्टिकोण भेटत। स्थानाभावक कारणेँ एहि ठाम दुइ एक एकांकी मात्र पर प्रकाश दऽ रहल छी। हिनक समस्त एकांकी पर पृथक् पुस्तकाकारे लिखब समीचीन होयत ।

'कर्ण' यद्यपि पौराणिक कथा मानल जायत, कारण महाभारतो आब पुराणेक कोटिमे आबि चुकल अछि । एहि पर ई नवीन रूपेँ विचार करैत छथि । कुन्ती सूर्यक समक्ष अपन मनोभाव व्यक्त करैत कहैत छथिन्ह—

'चुटकी सँ सिउँथिमे सिन्दूरकेँ देब भेलैक विवाह आ हृदय-हृदयक मेल किछु नहि ? हम अहाँक सुन्दरतासँ मुग्ध नहि भेलि छलहुँ । अहाँक संग क्षणिक सुखक कामना नहि छल, ई तँ दुष्कर्म थिक । ...अहाँक तेज हमरा प्रेरित कयलक अहाँक वरण करक हेतु ।... दुष्यन्त ओ शकुन्तलाक विवाह तँ एहिना भेल छलनि । एकर उत्तर— हम देवता थिकहुँ, देवता मनुष्यक कन्याकेँ स्वर्ग नहि लऽ जा सकैत छथि— सूर्यसँ सुनि, कुन्ती कहैत छथिन— मनुष्यक संग भोग विलाससँ देह छुतितेने छनि आ मनुष्यक गेलासँ स्वर्ग छुति जयतनि ? एहिमे कतेक क्रान्तिकारी विचार अछि से स्वयं ऊह्य थीक । तहिना द्रोणक ओहिठामसँ निराश भऽ कर्ण परशुरामक ओतऽ छद्म रूप सँ विद्या ग्रहण करैत छथि आ भेद फुजला उत्तर जखन परशुराम पुछैत छथिन्ह जे तोँ ब्राह्मण नहि थिकेँ तखन हमरासँ छल किएक कयलेँ ? तकर उत्तरमे कर्णक कथन जे

गुरुदेव ! अहाँ प्रतिभा, सौन्दर्य, संयम, आचरण ओ अनुशासन कोनो गुणमे ब्राह्मणसँ घाटि हमरा नहि पौलहुँ । जन्मक कारणेँ विकास करबाक अवसरसँ क्यो किऐक वञ्चित रहत गुरुदेव ! सभकेँ मातृभूमिक संग समान सम्बन्ध स्थापित करऽ देल जाओ । अपने ब्राह्मण मात्रकेँ शिक्षा देबनि, द्रोण क्षत्रिय मात्रकेँ, तखन हमरा सन अभिलाषा रखनिहार ककर शरण धरत ? संसार देखलक जे जँ गुरु भेटथिन तँ सभ विद्वान भऽ सकैत अछि । एहिमे जन्म वा कुलक कोनो महत्त्व नहि छैक । एवं प्रकारेँ सूर्य जखन कर्णकेँ साक्षात् दर्शन दऽ परिचय दैत छथिन्ह जे अहाँ हमरे पुत्र थिकहुँ, तखन कर्णक उत्तर जे– की अहाँकेँ बुझि पड़ल हमरा एकमानक बेटा कहयबामे संकोच आ अहाँक बेटा कहयबामे गौरवक बोध होयत ? जकर कुकृत्यक कारणेँ एक मानवी कन्याकेँ मातृत्वक हनन करै पड़लैक, एहन मानव शत्रुक बालक कहाय गौरवान्वित होयब ? कथमपि नहि । हमरा अहाँक आशीर्वाद नहि चाही । हम मनुष्यक शुभकामना चाहैत छी, अपन पुरुषत्वक भरोस रखैत छी ।

कतेक प्रगतिशील विचारक पुष्टि करैत अछि ? हम तँ एहि निष्कर्ष पर पहुँचलहुँ अछि जे एकांकी लिखनिहारमे श्रीकिरण जी मूर्द्धन्य छथि । यद्यपि रंगमंचक अनुकूल कथोपकथनमे कोनहुँ ठाम व्याघात सेहो पड़ैत छैक । किन्तु विचारक दृष्टिजे एकांकीकेँ ई नवीन भावधारा ओ चिन्तनधारा दिस अग्रसर करैत छथि जे हिनका सबसँ उत्कृष्ट नाटकारक रूपमे प्रतिष्ठित करैत छनि ।

पण्डित श्रीरामकृष्णझा 'किसुन' साहित्यकार होइतहुँ अधिक रचनात्मककार्य एवं संगठनसँ रुचि ओ प्रेम रखनिहार लोक छथि । ई समस्त सहर्षा जिलाक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक चेतनाक केन्द्र-बिन्दु छथि, जाहि कारणेँ हिनका साहित्य रचनाक बड़ थोड़ समय भेटैत छनि । कवि एवं कथाकारक रूपमे तँ ई प्रसिद्ध छथिहे, हिनक 'उदना रे मोन कतै गेला' शीर्षक एकांकी रंगमंचक दृष्टिजे खासकऽ बड़ उपयुक्त ओ विलक्षण भेलनि अछि । ई एकांकी 'निर्माण' साप्ताहिकमे प्रकाशित छनि । एहिमे उदनाक महाकविक ओतऽ आगमन, साक्षात् शिव रूपमे दर्शन ओ अन्तमे अन्तर्द्धानक घटना-क्रम सन्निविष्ट भेल अछि । दृश्य ओ गीतक सन्निवेश ततेक विलक्षण भेल अछि जे दर्शकक हृदय भक्ति-भावसँ ओतप्रोत भऽ जाइत छैक । भऽ सकैछ जे उदनाक अन्तर्द्धान होयबाक घटना-क्रममे तथा ऐतिहासिक आधारमे मतभेद हो,

किन्तु अभिनयक अंश बड़ पुष्ट अछि, संगहि जाहि कोनो ठाम रंगमंच पर असुविधाक संभावना भऽ सकैछ तकर निराकरणक हेतु ठाम ठाम निर्देश कऽ देल गेल अछि । एकर मंच भऽ चुकल अछि । हिनका मंचक पूर्ण अनुभवो छनि, तेँ एकरा अनुकूल बनयबामे पूर्ण सफल भेलाह अछि । उक्त एकांकीमे करुण रसक नीक परिपाक भेल अछि ।

पं. श्रीभवनाथझाक लिखल 'विद्यापति' चौपाड़िमे प्रकाशित ओ 1956क रेडियो सप्ताहमे पटना रेडियोसँ प्रसारित छनि । ऐतिहासिक आधारमे मतभेद रहितो विद्यापतिक विद्यार्थी-जीवनसँ घटनाक्रमकेँ आरम्भ कऽ गंगालाभ पर्यन्त सन्निविष्ट कयल गेल अछि, से एक तरहेँ दोष ओ दोसर तरहेँ गुण वर्द्धक भेल अछि । दोष एहि दृष्टिञे जे छोट सन एकांकीमे एतेक पैघ घटनाक्रम पिछड़ैत आगाँ बढ़ि सकल अछि आ गुण एहि दृष्टिञे जे एहि छोटो सन एकांकीसँ महाकविक सम्पूर्ण जीवन पर संक्षेपमे प्रकाश पड़ि सकल अछि । एहि संग एकटा विलक्षण बात ई अछि जे मध्यमे अनेको ग्रन्थक रचनाक कथा प्रसंग सन्निविष्ट भऽ एकर मूल्यकेँ बढ़ा देलक अछि । यद्यपि कतेको प्रसंग एहन अछि जतऽ मतभेदक सम्भावना हो, जेना यवन सेनाकेँ परास्त कऽ सेनापति सूचित करैत छथिन- स्वयं मिथिलेश पिताकेँ गंगालाभ करयबाक लेल गंगातट गेल छथि, ओहि अवसरमे विजयक उल्लासमे महाकवि 'ससन परस खसु अम्बर' गीत साज पर गबैत छथि । एक ओहि प्रतिकूल समयमे राजभवनमे गीते असंगत आ ताहू पर साज पर स्वयं महाकवि गाबथि । दोसर बात सेनापति ओही ठाम कहैत छथिन जे महाराज बूढ़ा सरकारकेँ गंगालाभ कराकऽ घुरताह तखन एहि विजयक उपलक्षमे विशेष उत्सव मनाओल जायत, से वातावरणक विपरीत प्रतीत होइछ । दोसर बात ई जे पं. गणपति ठाकुर प्रधानमंत्री छलाह ओ अपन आत्मज विद्यापतिकेँ अपना पद पर आसीन करा स्वयं भगवद् भजनमे समय लगौने रहैत छलाह । तखन विद्यापतिसँ भिन्न मन्त्रीक कल्पना इतिहास विरुद्ध । चारिम बात जे शिवसिंह जीवन भरि यवन सेनासँ लड़िते रहलाह तखन एहन प्रसङ्ग उपस्थित करब जे यवन सेनाक पैर तेना उखड़ि गेलैक जे पुन: आक्रमण नहि कऽ सकत, सेनापतिक ई कथन युक्तिसंगत नहि । परन्तु से सब रहितहुँ भवनाथजी एहि नाटकमे कवि कोकिलक जीवन पर अपना ऊहिसँ विलक्षण रूपेँ प्रकाश देबामे पूर्ण सफल भेलाह अछि आ यैह थीक एहि नाटकक विलक्षणता । विद्यापति पर तेसरो नाटक किरणजी

लिखलन्हि अछि, जाहिमे शिवसिंहक बन्दी होयबाक, विद्यापतिक बुद्धि-बलसँ सुलतानकेँ मोहबाक आ शिवसिंहकेँ मुक्त करयबाक घटनाक्रम उपस्थित कयल गेल अछि, मुदा ओ काज लेल गेल अछि किरणजीक कलमसँ, तेँ मिथिलाक जनताक हृदयमे सहजात स्वतंत्रताक प्रेमक निदर्शन अपना ढंगक बड़े चमत्कारक भेल अछि । एहिमे भिन्न-भिन्न वर्गक मुहसँ भिन्न-भिन्न मैथिली बोली सब बजबैत छथि, परन्तु सब ठाम खूब ओरिआयल नहि भऽ सकलनि अछि ।

श्रीभवनाथजीक 'वक बुढ़ैने कुड़ेर' नामक सामाजिक एकांकी मिथिला-दर्शनमे प्रकाशित भेल छनि । हम ओहिमे नाटकीयताक ततेक अभाव ओ घटना क्रममे ततेक कृत्रिमता पबैत छी जे ओकरा एकांकी मानवासँ असहमत छी । ओहिमे एकटा बहत्तरी बुढ़िया अछि । अधिक वयसक कारणेँ खटखटाहि भऽ गेल अछि । बेटासँ झगड़ा कऽ नैहर चल जाइत अछि । बाटेमे भायसँ भेट भऽ जाइत छैक, ओही ठामसँ उतरा-चौरी करैत अङना बिनु गेनहि मुनहारि साँझमे मुइल बेटीक सासुर चल जाइत अछि । पहुँचैत देरी जमायसँ झगड़ा आरंभ कऽ दैत अछि आ निशा रातिमे पड़ायल-पड़ायल अपन गाम चल अबैत अछि । एहिमे ने घटना क्रम निखरि सकल अछि ने कोनो सामाजिकताक आभास भेटैत अछि आ ने कोनो उद्देश्य स्पष्ट होइत अछि । हँऽ विद्यापति एकांकीमे ई अवश्य सफल भेलाह अछि ।

ऐतिहासिक नाटक लिखबामे प. श्रीगोविन्द झा सेहो पूर्ण सफल भेलाह अछि । हिनक लिखल 'वीर कीर्त्तिसिंह' एकांकी चौपाड़िमे प्रकाशित भेलनि अछि । श्रीगोविन्दझा प्रौढ़ कवि आ सफल अनुवादकक रूपमे पूर्ण परिचित छथिहे, एहि एकांकीमे सेहो हिनक प्रतिभा निखरि उठलनि अछि । यद्यपि एकर आधार अछि कवि कोकिलक कीर्त्तिलता, मुदा ठाम-ठाम ओहिमे मौलिक विचार राखल गेल अछि जेना– कीर्त्तिलताक अन्तमे लिखैत छथि–

वान्धवजन उच्छाहकर तिरहुति पाइअ रूप
पातिसाह जसु तिलक करु कित्ति सिंह भउँ भूप,

आ श्रीगोविन्दझा कीर्त्ति सिंहक अग्रज वीरसिंहक राजतिलक कराय हुनके हाथेँ कीर्त्ति सिंहक माथपर राज मुकुट धरबैत छथि जे सर्वथा मौलिक एवं भ्रातृस्नेहक विलक्षण आदर्श स्थापित कैलनि अछि । ई काज सम्पन्न भेला पर बादशाह कीर्त्तिसिंहक दरबारमे स्वयं उपस्थित होइत छथि । एकटा

विचारणीय विषय एहूमे अछि, कीर्त्तिलतामे एकठाम प्रसंग अबैत अछि जे– 'माए जम्पइ अवरु गुरुलोए मन्ति, मित्त सिक्खबइ । कबहु एहु नहि कम्म करिअइ । कोहे रज्ज परिहरिअ बप्प वैर निजचित्त धरिअइ । अर्थात् पिताक वैरभाव मनमे राखि कखनहुँ एहेन कर्म नहि करी जे राज्यक परित्याग करी ई माता, गुरु, मन्त्री, मित्र सब बुझौलथिन । एहि प्रसंगकेँ चित्रित करैत श्रीगोविन्दझा प. गणपति ठाकुरक मुहेँ असलानसँ दान रूपमे राज्य स्वीकार करबाक समर्थन करौलनि अछि । जाहिसँ गणपतिठाकुरक प्रबल चरित्र किछु धूमिल भऽ जाइत छनि । दोसर नीति विरुद्ध एकटा बात ई देखना जाइछ जे एहने प्रबल शत्रुकेँ, जे देल राज्य स्वीकार नहि कऽ बापक बदलाक हेतु उद्यत अछि, कारावाससँ मुक्त कऽ निर्वासनक दण्ड देत तखन ओ आरो शक्ति संगठितकऽ आक्रमण करबामे समर्थ भऽ जा सकैत अछि । परन्तु ई सब रहितहु ई नाटक मंच करबाक योग्य भेल अछि आ मिथिलाक इतिहास पर प्रकाश दैत कीर्त्तिलता पर सेहो प्रकाश दैत अछि ।

श्रीअनन्तबिहारी दास 'इन्दु' विद्यापतिक पद्धति पर मैथिलीमे बड़ सरल गीत लिखैत छथि । ई सम्प्रति पटना रेडियोक मैथिली विभागमे काज करैत छथि । 'सौराठ मेला' शीर्षक एकांकी रेडियोसँ प्रसारित तथा निर्माण साप्ताहिकमे प्रकाशित छनि । एहिमे इन्दुजी हरिसिंह देवीय संस्थाक उपादेयता एवं सौराठ सभाक उपयोगिता पर ऐतिहासिक तर्क दैत, रोचक ढंगसँ ओहि ठामक चित्र अंकित कयलनि अछि । कतहु-कतहु हास्यक बेस परिपाक भेल अछि । तखन कतेक गंभीर बातक विश्लेषण ई अपन एवं हुनक गृहिणी चिचरी वालीक कथोपकथनमे कयलनि अछि से नाटककेँ कने हल्लुक बना देलक अछि । परन्तु मंचक उपयुक्त ई बड़ सुन्दर भऽ सकल अछि ।

डा. व्रजकिशोर वर्मा बहुमुखी प्रतिभासँ सम्पन्न अवाध गतिञे कलम भँजनिहार लोक छथि । हिनक अध्ययन सेहो प्रौढ़ आ विचार सेहो बड़ सूक्ष्म । ई मैथिलीमे रंग-विरंगक वस्तु लिखि एकरा भंडारकेँ भरबामे व्यस्त रहैत छथि। हिनक विलक्षणता हिनक विचारक वेगवतीधारा थिकनि । हिनक लिखल 'मिथिलाक बेटी' एकांकी नहिओ होइत ओही प्रकतिक एक बेछप वस्तु थीक । एहिमे ई अहल्या, सीता, लोरिक पत्नी माजरि आ सल्हेस (शैलेश)क स्त्री कुसुमाक घटनाकेँ रेडियो रूपकक रूपमे विलक्षण ढंगेँ

उपस्थित कयलनि अछि । ई चारू सती शिरोमणि सब कोना जीवन भरि कर्त्तव्य ओ त्यागक निर्धूम एवं निष्कल्मष ज्वालामे तपैत रहलीह तकर अद्‌भुत चित्रण कयलनि अछि । एहि रूपक वस्तु हिनके कलमक चातुरीसँ संभवो अछि ।

गोपालजीझा 'गोपेश' नवोदित कालकारमे प्रौढ़ प्रतिभा लऽ साहित्य क्षेत्रमे उतरलाह अछि । हिनक 'सोन दाइ' कोन अनोन मोनकेँ नहि नोनगर बनौने होयतीह । हिनक लिखल 'विदाइ' शीर्षक एकांकी 'मिथिला-दर्शन'मे प्रकाशित भेलनि अछि । परन्तु एहिमे किछु कथोपकथन मात्र अछि, नाटकीयताक तँ सर्वथा अभावे अछि, तेँ एकरा हम एकांकी नहि मानैत छी । हिनक लिखल 'आदर्श वर' जे गत 10 फरवरी कऽ पटना रेडियोसँ प्रसारित भेल छल, बड़ सुन्दर सामाजिक नाटक भऽ सकलनि अछि । एहिमे एकवाली मिसरक बेटा उमाकान्त उत्तर प्रदेशक कोनो विश्वविद्यालयमे समाज-शास्त्रक गवेषणा कऽ रहल छथिन । हुनका विवाहमे अमेरिका जयबाक हेतु पन्द्रह हजार टाका व्यवस्थाक रूपमे देबाक हेतु कतेको कन्यागत उपस्थित भेलथिन अछि, मुदा फोचाइ झा जे अत्यन्त निर्धन कन्यागत छथि, जनिक कन्या रूप-गुण सम्पन्ना छथिन तनिका संग नमोनाथ सन मित्रक घटकैती पर उमाकान्त पन्द्रह हजार पर लात मारि विवाह कऽ लैत छथि । जाहिसँ पिता अत्यन्त रुष्ट होइत छथिन । किन्तु समाजक समक्ष व्यवस्था प्रथाक एहि भीषण विषमताक अन्तक हेतु वस्तुतः उमाकान्त सन क्रान्तिकारी विचार रखनिहार युवकक आवश्यकता अछि । अतः एहि रूपक सुधारवादी दृष्टिकोण उपस्थित कऽ श्री गोपेश जी सफल एकांकी लेखकक पंक्तिमे आबि गेलाह अछि ।

'वैदेही' मे श्री रेवतीनाथ झाक 'वृद्धस्य तरुणी विषम्' शीर्षक एकांकी पढ़ल । यद्यपि घटनाक्रमक अनुसार शीर्षक नहि भेल अछि आ घटनाक्रम सेहो बड़ पुरान विचार पर आधारित अछि, कारण, नारायण बाबू सन सत्तरि वर्षसँ अधिक वयसक वृद्ध आब विवाह नहि करैत छथि । जँ ई पन्द्रहो वर्ष पूर्व लिखल गेल रहैत तँ युगक अनुकूल होइत, तथापि लेखक नवीन छथि । एकांकी दृष्टिऍं सफलो भेलाह अछि तेँ एहन नवीन प्रतिमासँ भविष्यक बहत किछु आशा कयल जा सकैत अछि ।

प. मथुरानन्द चौधरी 'माथुर'क 'कनिञा पुतरा' प्राच्य विद्या सम्मेलनक अवसर पर लिखल गेल । किन्तु ओ ने प्रकाशित भऽ सकल ने प्रतिलिपि

सुरक्षित रहि सकल । उक्त एकांकीमे कनिञा पुतराक उपयोगिताक संग बालविवाह पर बड़े तीक्ष्ण व्यंग्य कयल गेल अछि ।

श्री परेश्वरमिश्र, जे सम्प्रति पटना कालेजक मैथिली एम्.ए.क परीक्षामे बैसल छथि, आइसँ सातवर्ष पहिने समाज सुधारक दृष्टिञे तीनि गोट एकांकीक संग्रह 'त्रिवेणी' नामेँ प्रकाशित कयलनि । अत्यन्त आरम्भिक कालक ई रचना लेखकक भविष्य दिस किछु संकेत करैत सन प्रतीत होइछ । एकर शीर्षक थीक बाल-विवाह, अत्याचार ओ विधवा । बाल-विवाहमे वंशीधर बाबूक धर्मपत्नी शशिकला दाइ एक मात्र अपन किशोर बालकक विवाह करयबाक दुराग्रह करैत कहैत छथिन्ह जे की बच्चाक विवाह नहि करबनि ? हम जाइत छी इनारमे ... शशिधर बाबू बाध्य भऽ विवाह कराय दैत छथिन, अन्तमे रुग्ण भऽ दुनू वरवधू परलोकक यात्री बनैत छथि । अत्याचारमे जमीन्दार वर्ग द्वारा निम्नवर्गक साक्षात् शोषण तथा शासक वर्गक भ्रष्टाचार दिस संकेत कयल गेल अछि । विधवा शीर्षक मे एक छओ वर्षक बालिकाक एक वृद्धक संग विवाह ओ अन्तमे वैधव्यक अभिशापसँ अभिशापिता समाजक धनीमानी ललबबुआक दुराचारक लक्ष्य होमऽ चाहैत छथि, परन्तु अपन आत्म-बलक कारणेँ सतीत्वक रक्षा कयला पर पेट्रौलसँ भिजाय जनक नामक नौकर द्वारा भस्मसात् कऽ देल जाइत छथि । उक्त तीनू नाटक अनेक त्रुटि रहितो प्रथम प्रयासक कारणेँ श्लाघ्य प्रयास मानल जायत । सम्प्रति ई साहित्यक विभिन्न अंगकेँ पुष्ट करबा लै अपना योग्यता भरि पूर्ण प्रयासमे लागल रहैत छथि ।

प्रो. श्रीआनन्द मिश्र पटना रेडियोक हेतु समय-समय पर रोचक एकांकी सब लिखलनि अछि, परन्तु खेद जे एहि सभक संग्रह कऽ नहि रखने छथि । समाजमे पसरल अनेक अनावश्यक रूढ़ि पर मार्मिक रूपेँ व्यंग्य करबामे ई सफल भेल छथि । हिनक शीर्षकमे स्थानीय रंग बड़ गाढ़ देखि पड़त, जेना एकटा शीर्षक छनि 'तरल माछ' । आनन्दबाबू कलम भाँजब केँ व्यावसायिक कोटिक बात नहि बुझैत छथि । मनक उमंगमे जखन जे किछु लिखलहुँ से कतहु प्रकाशित भऽ गेल पुनि ओकर पुछारि नहि । एवं प्रकारेँ एहि दशकमे अनेको नवीन नाटक नवीन दृष्टिकोण लऽ उपस्थित भेल अछि जे नाटक विकाशोन्मुख अछि तकर प्रमाण थीक ।

●

मैथिली-रंगमंचक विकास : एक ऐतिहासिक दृष्टि

भरत मुनि नाट्यकेँ सार्ववर्णिक वेद कहलनि अछि । कारण जे वेद केवल द्विज मात्रक हेतु उपयोगी ओ उपादेय होइत छल, किन्तु नाटकक आनन्द उठैबाक अधिकारी तँ सब मानल जाइछ आ एकर विषय सेहो असीमित कहल गेल अछि 'त्रैलोक्यस्यास्य सर्वस्य नाट्यं भावानुकीर्त्तनम् ।' कविकुलगुरु महाकवि कालिदास सेहो कहने छथि– 'नाट्यं भिन्न रुचेर्जनस्य बहुधाप्येकं समाराधनम् ।' अतः सर्वजन सुलभ नाटकक प्रचार प्रसार जतेक सुलभ अछि ततेक श्रव्य काव्यक संभव नहि । नाटक शब्द नट् धातुसँ बनैत अछि जे नाचब अर्थमे प्रयुक्त होइछ । कविवर जीवन झा सामवती पुनर्जन्मक मंगल गानमे लिखितो छथि 'गिरा सुमिरि जँ नाचब, सकल दोषसँ बाँचब' । किन्तु नाटकमे नाचब प्रधान नहि थीक, प्रधान थिक अभिनय । नाटककेँ लोकवृत्तक अनुकरण कहल गेल अछि– 'नानाभावोपसम्पन्नं नानावस्थान्त रात्मकम् । लोकवृत्तानुकरणं नाट्यमेतन्मया कृतम्' (नाट्यशास्त्र)

एकरा हेतु रूपक शब्दक प्रयोग सर्वथा उचित मानल गेल अछि आ एहि रूपकक दश भेद होइछ । 1. प्रकरण 2. भाण 3. प्रहसन 4. डिम 5. व्यायोग 6. समवकार 7. बीथि 8. अङ्क 9. ईहामृग आ नाटक तँ स्वयं सर्वप्रथम थीक । उपरूपकक से 18 भेद मानल गेल अछि– नाटिका, त्रोटक, गोष्ठो, सट्टक, नाट्य रासक, प्रस्थानक, उल्लाप्य, काव्य, प्रेंखण, रासक, संलापक, श्रीगदित, शिल्पक, विलासिका, दुर्म्मल्लिका, प्रकरणिका, हल्लीश और भाणिका । यद्यपि भरतकृत नाट्य शास्त्रमे उपरूपकक चर्चा नहि अछि तथापि लोक एकरो प्रामाणिक मानैत आबि रहल अछि । वस्तुतः उपरूपक सभक भेदक उल्लेख अग्नि पुराणमे भेटैत अछि । एहि रूपक सभमे भेद

स्पष्ट करयवाला नायक, रस, भाषा, शैली, अंक आदि मानल जाइछ । प्रकरणक स्थान नाटकसँ कनेके न्यून छैक । नाटकक नायक राजा, राजर्षि, दिव्य आदि होइत अछि । शृङ्गार एवं वीर रस प्रधान होइत अछि । आ प्रकरणक नायक मन्त्री, ब्राह्मण, वैश्य सेहो भऽ सकैत अछि, एहिना नायिका कुलीना एवं वेश्या दूनू भऽ सकैत अछि । एहिसँ अतिरिक्त सब बात नाटकेक समान होइछ । समवकारमे तीन अंक होइछ आ नाटक वा प्रकरणमे नौ अंक धरि भऽ सकैछ । स्मरण रहै जे यदि दशम अंक भऽ जाय तँ ओ महानाटकक संज्ञा ग्रहण कय लैछ । व्यायोग, प्रहसन, अंक, वीथि तथा भाण सब एक-एक अंकक होइछ, किन्तु प्रहसनमे खासकऽ कल्पित पात्र होइछ, हास्य रसक प्रधानता रहैछ तथा पात्र निम्न कोटिक रहैत अछि । व्यायोगक नायक दिव्य वा राजर्षि होइत छथि तथा वीर रस प्रधान होइछ । वीथिमे शृंगार रस ओ अंकमे करुण रस प्रधान होइछ । अंकमे कतेको पात्र होइछ, बीथिमे दू पात्र मात्र एवं भाणमे एक पात्र सब कथा कहि जाइछ ।

सम्प्रति एक अंकमे सम्पन्न होमऽ वला कोनो नाटक, जकर कथा वस्तुक उद्देश्यकेँ लऽ चलैछ, एकांकी कहबैत अछि आ मनोरंजन मात्र उद्देश्य राखि, हास्य रस प्रधान कल्पित एकांकी प्रहसन नामेँ अभिहित होइछ । स्मरणीय थीक जे एहिमेसँ सभक उदाहरण संस्कृतोमे उपलब्ध नहि अछि यद्यपि ग्रन्थक नामोल्लेख संस्कृत साहित्यक इतिहासमे भेटैछ ।

मैथिलीमे नाटक, नाटिका, व्यायोग, सट्टक, प्रहसन आदिक उदाहरण भेटैत अछि ।

एहि निबन्धमे प्रतिपाद्य विषय अछि रंगमंचक विकास । ई तँ सब स्वीकार करताह जे उत्तर भारतक भाषा-साहित्यमे मैथिलीमे नाटकक उपलब्धि सबसँ प्राचीन थीक । मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापतिए 'गोरक्ष विजय' नामक नाटक लिखि चुकल छथि । ज्योतिरीश्वरक 'धूर्त्त समागम' सेहो प्रकाशमे अयलनि अछि ।

नाटकक प्रसार तँ बिनु रंगमंचेँ कठिन आ मैथिली नाटकक प्रभाव उत्तर भारतक पूव एवं दक्षिण दिश पूर्ण रूपेँ पड़ल अछि । कीर्त्तनिया नाटकक चर्चा सर्वत्र भेटैछ आ एहीसँ प्रभावित अंकियानाट आसाम धरिकेँ व्याप्त कयने अछि । एहिसँ ई अनुमान कयल जा सकैछ जे रंगमंचक व्यवस्था अवश्य छल

होयत । नाट्य शास्त्रमे रंगशाला वा प्रेक्षागृहक तीन भेद कहल गेल अछि– विकृष्ट, चतुरस्र तथा त्र्यस्र । जाहिमे विकृष्ट 108 हाथक होइत छल तथा देवता मात्रक हेतु नियत कयल गेल छल । चतुरस्र 64 हाथ नाम ओ बत्तीस हाथ चाकर होइत छल त्र्यस्र प्रायः राजा महाराज लोकनि वैयक्तिक मनोरंजनक हेतु बनबबैत छलाह । एकर तीनू भुजा 32–32 हाथक होइत छल । जनसाधारण चतुरस्र रंगशालासँ काज लैत छलाह ।

क्रमहि एहिमे साधनक सुविधानुसार परिवर्त्तन होमऽ लागल । आब जकरा जतबा स्थान ओ सामग्री रहैत छैक ताहि अनुसारेँ रंगमंचक निर्माण करैत अछि ।

मैथिली नाटक जतेक प्राचीन भेटैत अछि तेना रंगमंचक सम्बन्धमे कोनो उल्लेखनीय ग्रन्थक पता हमरा नहि अछि । सम्प्रति मैथिलीमे नाटकक बड़ बेसी आवश्यकताक अनुभव कयल जाइछ । अधिकारी विद्वान लोकनि एहि विषय पर बेसी प्रकाश देथि तँ उत्तम ।

अपना देशमे पारसी कम्पनी द्वारा अभिनयक प्रदर्शन जहिआसँ आरंभ भेल तहियासँ क्रमहि शिष्ट लोकक बीच अभिनय कलाक प्रति एक प्रकारक घृणा उत्पन्न होमऽ लागल । पहिने सुयोग्य पात्रकेँ ताकि अभिनयक व्यवस्था कयल जाइत छल । तेँ स्वतः सिद्ध छल जे पूर्ण शिक्षित व्यक्तिए एकर अधिकारी मानल जाइत छलाह, किन्तु पारसी कम्पनी एकरा व्यवसाय बना लेने छल आ कमसँ कम वेतन पर काज कैनिहार व्यक्तिकेँ नियुक्त करैत छल । फलतः विद्वन्मण्डली एहिसँ विमुख होमऽ लागल । अन्तमे तँ नाटकमे भाग लेनिहार व्यक्तिक नटकिया कहि उपहास होमऽ लगलैक । प्राचीनकाल वा मध्य कालमे मिथिलामे रंगमंचक की स्थिति छल ताहिपर हिन्दओक विद्वान लोकनि विचार कयलनि अछि । श्रीकृष्णदास हमारी नाट्य परम्परा' नामक ग्रन्थमे 'मैथिल नाटक और रंगमंच' नामक एक अध्याय लिखने छथि, जाहिमे प्राचीन काल वा मध्यकालमे कोन प्रकारेँ नेपाल, आसाम, बंगाल आदिमे मैथिली नाटकक प्रचार भेल आ कोन प्रकारक 'रंगमंच बनैत छल तथा पात्र लोकनिक रूप-सज्जा वाद्य-संगीत, अभिनय, सूत्रधारक काज, नान्दी आदि सब वस्तुक विवरण देलनि अछि । ओ स्वीकार करैत छथि जे यवनक आक्रमणक बादो मैथिली नाटकक परम्परा लुप्त नहि भेल, अपितु एकरा

सुरक्षित रखबाक हेतु मिथिलाक कलाकार नेपाल महाराजक छत्रच्छायाक आश्रय लेलनि । ओहिठाम एहि कलाकार सभकेँ पूर्ण सुविधा एवं सम्मान प्राप्त छलनि । स्मरणीय थीक जे श्रीकृष्णदास सेहो डा. श्रीजयकान्तमिश्रक मैथिली इतिहाससँ सामग्री उपलब्ध कऽ ओही आधारपर ओकर विशद् विवेचन कयलनि अछि, किन्तु मिश्रजीक इतिहासमे सेहो वर्त्तमान रंगमंचक विकासपर पूर्ण प्रकाश नहि पड़ि सकल अछि ।

यद्यपि वर्तमान समयमे मिथिलाक विभिन्न भागमे शिक्षित समुदायक बीच नाटकक जतेक प्रचार अछि आ विभिन्न पर्वक अवसरपर जतेक उत्साह पूर्वक अभिनयक व्यवस्था होइछ एवं जाहि मात्रामे दर्शकक उपस्थिति रहैछ से प्राय: पूर्वमे नहि छल होयत तथापि रंगमंचक इतिहासपर प्रकाश देबाक चेष्टा नहि होयबाक कारणेँ समस्त मिथिलामे कतै-कतै कोन कोन उत्साही लोक सब कतेक मंचक व्यवस्था कऽ सकलाह अछि, कतेक अभिनय भेल अछि, आदि-आदि विषयक पूर्ण विवरण देब एहि अल्प स्थान आ थोड़ समयमे संभव नहि अछि ।

यद्यपि मिथिलामे जनिक आराधना सबसँ बेसी होइछ से भगवान शंकर नटराज नामेँ सुविख्यात छथि । संगहि मैथिल कोकिल विद्यापतिक चरित-नायक भगवान श्रीकृष्ण नटनागर कहल जाइत छथि, तथापि पारसी कम्पनीक प्रचारक बाद यदि क्यो शिक्षित लोक एहि दिशि रुचि देखबैत छलाह तँ हुनक भर्त्सना ई कहि कयल जाइत छल- 'बाभन नाचै राड़ देखै' घोर कलियुग ! हँऽ अर्वाचीन कालमे जहियासँ गद्य एवं पद्य दूनू मैथिलीक माध्यमसँ व्यवहृत होमऽ लागल ताहिमे सर्वप्रथम नाटककार कविवर जीवनझा छथि । ईहो कथा सुनल थीक जे काशीनरेशक उत्साहेँ सामवती पुनर्जन्म एवं सुन्दर-संयोग नाटकक मंच रामनगरमे भेल छल । रामनगर काशी नरेशक राजधानी थिकनि । ओहिठाम विधिवत् प्रत्येक वर्ष रामलीला होइत छल । किंवदन्ती अछि जे एक बेर रामलीलामे भाग लेनिहार हुनमानकेँ क्यो कहने छलथिन जे त्रेताक हनुमान समुद्र फानि गेलाह तँ कलियुगी हुनमान गंगोकेँ फानि सकताह वा नहि ? ताहि पर हनुमानक स्मरण कऽ ओ व्यक्ति गंगाकेँ फानि गेल, किन्तु एहि पार काशीमे आबि खसैत देरी ओकर मृत्यु भऽ गेलैक कहबाक आशय ई जे रामलीलामे भाग लेनिहार व्यक्ति सभक द्वारा काशी

नरेश उपर्युक्त दूनू नाटकक मंच करौने छलाह । पछाति शिक्षण-संस्था सबमे संस्कृतक नाटक मंच कयनिहार छात्र लोकनि समुत्साहित भऽ मैथिलीओमे प्राप्य नाटकक अभिनय आरंभ कयलनि ।

उमाकान्तक आ नन्दकुमारक नाटक-मण्डली मिथिलामे विख्यात छल । एहि कम्पनीमे अभिनेताक रूपमे गीतगोविन्द, बालगोविन्द, परमानन्द, छोटका परमानन्द आदि व्यक्तिक नाम समस्त मिथिलामे पसरल छल । प्राय: बीसम शताब्दीक आरंभेसँ मैथिली नाटकक अभिनय आरंभ भेल, किन्तु नवयुगक नवीन भावना अभिव्यक्त करबाक योग्य नाटकक सर्वथा अभाव छल वा अछि सेहो कहि सकैत छी । तथापि मिथिलाक विभिन्न भागमे शिष्ट लोक सब मंचपर उतरय लगलाह । खास कऽ सरस्वतीपूजा, दुर्गापूजा एवं श्यामापूजाक अवसर पर शिक्षण संस्थासँ लऽ ग्रामीण-संस्था सभक उत्साह एहि दिशामे बड़ विलक्षण काज कयलक । बहुतो शिक्षित गाममे बूढ़-बुढ़ानुसक घोर विरोधक सामना करैत युवक-मंडल एहि दिशामे अग्रसर भेल । कोइलख, पिण्डारुछ, ठाढ़ी, गजहरा, खोजपुर, ढंगा, भटपुरा, नवानी, चनौर, विरसायरि, लोहना, पतोर, भवानीपुर, पनिचोभ, मधुबनी, लालगंज, सरिसबपाही, सेरपुर लगमा, पण्डौल बड़ागाँव आदि अनेक गाममे तथा अंग्रेजी स्कूल, कॉलेज तथा संस्कृत विद्यालय आदि शिक्षण-संस्थामे शिक्षित वर्ग द्वारा नाटकक स्थायी मंच जकाँ बनि गेल, किन्तु एहिमे बहुतो ठाम उत्साही युवक जखन कर्म लोकमे व्यस्त भऽ गेलाह तखन जनसाधारणक अप्रवृत्तिक कारणेँ स्थायी रंगमंच नष्ट-भ्रष्ट सेहो भऽ गेल । मधुबनी नाट्य संघ, पिण्डारुछ नाट्य परिषद्, पतोर नाट्य परिषद्, आदि बहुतो संस्था एखनहुँ अछि जे नियमित रूपेँ अपन सभ साधन जुटाय रखने अछि ।

जीविका बनाय नाटक खेलैनिहार कम्पनीसभक तँ एक प्रकारेँ अन्ते भऽ चुकल अछि आ तकर कारण थीक सिनेमाक विकास ।

स्वर्गीय विभूतिनाथ झा (म.म. डा. सर गंगानाथझाक सुपुत्र) स्वयं नाटकमे भाग लैत छलाह । आदरणीय गुरुवर पं. त्रिलोकनाथमिश्र भू.पू. प्राचार्य महारानी रमेश्वरलता विद्यालय तँ लोहना विद्यापीठमे प्रतिवर्ष संस्कृत नाटकक मंच करैत छलाह । आ बादमे स्वयं जीमूतवाहन नामक नाटक लिखि मंच कयलनि । नवीन नाटक प्रस्तुत करबामे ईशनाथझाक नाम लेल जा सकैत

छनि । पिण्डारुछ नाट्य परिषद सेहो एहि दिशामे नीक काज कयलक अछि । इन्दीवर झा, पण्डौल, एहि दिस पूर्ण प्रयत्नीशल रहलाह । सम्प्रति अ.भा. मैथिली-साहित्य-परिषद्क कला-मंत्री हरिश्चन्द्रझा 'हरीश' स्वयं नाटक लिखि ओकर अभिनय कऽ मैथिली नाटकक लोकप्रियता बढ़ाय रहल छथि । नाटकक क्षेत्रमे सुधांशुशेखर चौधरी नीक अनुभव प्राप्त कयने छथि । किन्तु दुर्भाग्यवश प्रकाशकक अभावेँ ओ हिन्दीएमे बेसी नाटक लिखलनि अछि ।

सम्प्रति मैथिलीक हेतु एकांकीक युग कहि सकैत छी । जतय कतहु मिथिलाक क्षेत्रमे हिन्दीओ नाटकक संग आब मैथिली प्रहसन आवश्यक मानल जाय लागल अछि । हम एकरा अभ्युदयक लक्षण मानैत छी । यदि मैथिलीक साहित्यकार लोकनि आधुनिक रंगमंचकेँ ध्यानमे राखि नवीन नाटकक रचना करथि आ एक स्थायी रंगमंचक व्यवस्था हो तँ एहि दिशामे सन्तोषजनक कार्य कयल जा सकैत अछि । एमहर बहेड़ामे राधाकृष्णझा एवं गोपालबाबू प्रसिद्ध मित्रम्‌जी नवीन ढंगसँ नाटकक उपयुक्त रंगमंच बनबाय एक दूटा नाटकक अभिनय कयलनि अछि । जाहिसँ ओहि प्रान्तमे पूर्ण जागरण आबि गेल अछि । सहर्षा दिस रामकृष्ण झा 'किसुन' मधेपुरा दिस हितनारायणझा लोकनिक सत्प्रयासेँ मैथिली रंगमंच क्रमहि विकसित भऽ रहल अछि ।

एहि अल्प समयमे जतेक रंगमंचक पता हम लगा सकलहुँ अछि जाहिमे स्थायी मंच सबसँ प्राचीन पिण्डारुछ नाट्य परिषद्क छैक । 1921 ई. मे एहि ठामक किछु अभिनय-प्रेमी युवक कलाकार अभिनयक हेतु उद्यत भेलाह आ सफलता पाबि 1923 ई.मे विधिवत् एहि नाट्य परिषद्क स्थापना कयल । स्व. नवीनचन्द्र चौधरी, गोविन्द चौधरी एडवोकेट आदि सफल अभिनयमे विख्यात भऽ गेलाह । विन्ध्यनाथझा अभिनय द्वारा स्वदेश प्रेम जगैबामे ततेक संलग्न छलाह जे हुनक उत्साह एवं प्रेरणा हिनका लोकनिकेँ पूर्ण रूपेँ भेटैत रहलनि । रतिकान्त चौधरी जस्टिस, गोविन्द चौधरीजी कतेक नाटक स्वयं लिखल आ कतेक कथाकेँ नाटक साँचमे ढारि अभिनय कयलनि । विश्वनाथ चौधरी, चन्द्रानन्द चौधरी, जगदीश मिश्र, तेजनारायण सिंह ठाकुर, सुखदेव दास, गिरवरधारीलाल आदि अर्थ, साधन, समय, श्रम, बुद्धि आदिक योगदानसँ एहि नाट्य परिषद्केँ ततेक स्वस्थ बना देल जे 1953 ई. जूनमे प. हरिनाथ मिश्रजी भू.पू. चिकित्सामन्त्री एवं अध्यक्ष अखिल भा. मैथिली साहित्य

परिषद्क अध्यक्षतामे एकर रजत जयन्ती मनाओल गेल छल जाहि अवसर पर हमरो उपस्थित रहबाक सुअवसर प्राप्त भेल छल । एहि नाट्य परिषद्मे एक-एक अभिनेता अपन अपन अभिनय कलासँ दर्शकके ँ मन्त्रमुग्ध करबाक सामर्थ्य रखैत छथि । गोविन्द चौधरीजी तँ हिन्दी, बंगला अंगरेजी आदिओ नाटकमे कतेक पात्रक भूमिका उपस्थित कयने छथि । 1930 ई.मे मिथिलेशक लक्ष्मीश्वर विलास भवनमे कृष्ण-सुदामा नाटकमे कृष्ण ओ सुदामाक अभिनय कयने छलाह जाहिमे स्व. नवीन बाबू सुदामा एवं गोविन्द चौधरीजी कृष्णक अभिनय कयने छलाह । ई नाट्य परिषद् सर्वथा स्वस्थ अछि । मिथिला नाटक, चीनीक लड्डू, उपनयनाक भोज, शकुन्तला, भलमानुस, छीक आ प्रणम्य देवताक कतेको कथाके ँ नाटकक साँचमे ढारि अभिनय कऽ चुकल अछि ।

दोसर नवटोलक विद्वन्नाट्य परिषद्क प्रारंभ एक प्रकारे ँ 1917 ई.सँ भेल से बूझक चाही । जकर संस्थापक हरिगोविन्दझा राजे छलाह । प्रायः अपना ओहिठाम प्राप्य यावन्तो वाद्ययन्त्र ई स्वयं बजबय जनैत छलाह । विद्वन्नाट्य परिषद्क मंचपर आरंभमे उतरनिहार अभिनेतामे प्रो. ईशनाथ झा, तारानन्दझा, हरिश्चन्द्र मिश्र दीनानाथ झा आदिक नाम लेल जाइछ । एहि परिषद्क विधिवत् स्थापना 1931 मे भेल । एकरो निजी मंच छैक । भूख, शकुन्तला, उगना, चीनीक लड्डू, आदि अभिनय एहि मंचसँ कतेको बेर भेल अछि ।

1932 ई.मे स्व. विभूतिनाथझा आइ.ए.एस्. मधुबनीमे एस्.डी.ओ. छलाह । ओ स्वयं ततेक कुशल अभिनेता छलाह आ अभिनय कलाक प्रति ततेक रुचि ओ प्रेम छलनि जे अत्युच्च पदपर रहितहुँ समय समयपर जखन दरभंगा अबैत छलाह आ गाम जाइत छलाह आ डा. अमरनाथझाजी उपस्थित रहैत छलाह तँ डा. भवनाथझाजीक डेरापर एवं गामक मंचपर अभिनय प्रस्तुत कऽ दर्शक लोकनिके ँ मन्त्रमुग्ध कऽ दैत छलाह । हुनके उत्साह ओ प्रेरणासँ मधुबनी नाट्य संघक स्थापना भेल स्व.प. लक्ष्मीनाथ मिश्र (सप्ता) प. रामचन्द्रझा मुख्तार, गोकुल प्रसाद आदिक सहयोगे ँ ई नाट्यसंघ दिनानुदिन उन्नति करैत गेल । 1929मे एकरा अपन मंच ओ सब साधन उपलब्ध भऽ गेलैक । कृष्ण सुदामा, निरक्षरता निवारक पाठशाला, उगना, चीनीक लड्डू,

उपनयनाक भोज, विद्यापति, उगना रे मोर कतऽ गेला, छीक, समस्या आदि अनेक नाटक लिखित वा स्वयं लिखि प्रस्तुत करैत रहलाह अछि । अखिल भारतीय मैथिल संघ द्वारा आयोजित विद्यापति-स्मृति-पर्वक अवसरपर सर्वप्रथम हरिश्चन्द्रझा द्वारा लिखित ओ अभिनीत 'छीक' शीर्षक नाटक कलकत्तामे देखबाक सुयोग प्राप्त भेल छल । 1956 मे अखिल भारतीय मैथिली लेखक सम्मेलनक अवसरपर एही पंक्तिक निर्देशकत्वमे दरभंगामे नगर भवनमे जे अभिनय भेल से सर्वविदिते अछि । तकर बाद तँ छीकक प्रकाशन भेल आ मिथिलाक कोन-कोनमे अभिनीत भऽ रहल अछि । 1957क विद्यापति-स्मृति-पर्वक अवसरपर अ.भा. मैथिली साहित्य परिषद्क तत्त्वावधानमे वीणापाणि क्लब लहेरियासरायमे समस्या नामक हरीश लिखित नाटक मंचपर आनल गेल । जकरा देखि उपस्थित दर्शक एहि निष्कर्षपर पहुँचलाह जे मैथिली मंच सन रोचक आन भाषाक मंच मिथिला क्षेत्रमे नहि भऽ सकैछ ।

भद्रकाली नाट्य परिषद् कोइलखक जीवन काल तँ विधानत: 4 वर्ष मात्र भेलैक अछि, किन्तु उत्साही युवक लोकनि बहुत पहिनेसँ दुर्गापूजाक अवसरपर एहिठाम अभिनयक व्यवस्था करैत रहलाह अछि । अनुमानत: आइसँ बीस वर्ष पूर्व चन्द्रगुप्त नाटकक मंचमे प्रो. जयदेव मिश्रजी चाणक्यक अभिनय कयने छलाह, एहि बीस वर्षसँ पुरन्दर मिश्र जी (छीक नाटकमे ज्योतिषीक अभिनेता, जे पछाति ज्योतिषीएक नामेँ विख्यात भऽ गेल छलाह) श्रीशक्तिधर झा, श्रीसूर्यनारायण चौधरी प्रसिद्ध भुल्लू बाबू आदिक उत्साहेँ ओ सत्प्रयाससेँ दुर्गापूजाक अवसरपर नाटक होइते छल से तीनसँ कम नहि आ पाँचसँ अधिक नहि, किन्तु विधान छल जे एक मैथिली नाटक अवश्य हो । 1946-47मे स्व. जितेन्द्रनाथ झा 'कमल' (जे मैथिलीमे सिनेमा बनयबाक धुनिमे दरभंगा कलकत्ता बम्बई एकार्णवा कयने रहैत छलाह आ जनिक आकस्मिक निधनसँ एहि दिशामे प्रयास कैनिहारक अभाव जकाँ भऽ गेल) स्व० विजयनाथ चौधरी सन प्रभावशाली युवक एहिमे स्थायित्व आनि गामक गोलैसीमे लागल बूढ़-पुरान व्यक्ति सभक ध्यान पर्यन्त एहि दिस आकृष्ट कयलनि । किन्तु एहि प्रतिभाक आकस्मिक अवसानसँ एहिपर जे पैघ धक्का लागल ताहिसँ ई परिषद् लटपटा जाइत, किन्तु दमनकान्त झा वकीलक सत्प्रयाससँ ताहिसँ बाँचल । एक विधान बनाय विधिवत सदस्यता शुल्क दऽ एक सय सदस्य एकरा सुदृढ़ बनयबाक हेतु उद्यत भेलाह । मुनिक मतिभ्रम,

शकुन्तला, चीनीक लड्डू, प्रणम्य देवता आदि अनेक मैथिली नाटकक मंच होइत रहल अछि । वर्त्तमान अध्यक्ष श्री वीरेन्द्रनाथ झा एम्.ए. स्वयं सफल अभिनेता छथि । एहि वर्ष उगनाक अभिनय बड़े आकर्षक भेल छल । सम्प्रति एहि परिषदक 130 सदस्य छथि आ श्री पुरन्दर मिश्र, रुद्रानन्द झा, श्री देवानन्द झा, सुरेन्द्र झा, कमलकान्त झा, बचबू चौधरी, सुमनकान्त झा, आदि सफल कलाकार लोकनि अपन विलक्षण अभिनय कलासँ लोकप्रिय भऽ गेल छथि ।

लाल गंज, सरिसब, पाही आदि स्थान मे तँ एहन-एहन विशिष्ट कलाकार लोकनि छथि जे सिनेमाक अभिनेताकेँ फीका कऽ दैत छथि ।

वीरसायरमे जीवनाथ रायक सुपुत्र विद्यानाथ राय जे स्वयं विद्यापति नाटक लिखि मंच कयने छथि, बड़े मनोयोग पूर्वक मैथिली मंचक विकासमे प्रयत्नशील छथि ।

समौलमे आनन्द ठाकुर, गन्धवारिमे मुक्तिनाथ ठाकुर, गजहड़ामे यदुवंश मिश्र, खोजपुरमे देवेन्द्र झा, एवं दिनेश मिश्र ढंगामे गोवर्द्धन मिश्र श्रीनारायण सोनार द्वारिका भगत आदि उल्लेखनीय थिकाह ।

स्व. हरिनन्दन ठाकुर 'सरोज' विद्यापति नामक नाटक लिखि एवं अभिनय कराय, स्वयं भाग लऽ मधुबनीमे नाटकक प्रति अभिरुचि जगैबामे अग्रसर भेल छलाह ।

1954 मे वैदेही समितिक तत्वाधानमे डा. एडगर्टनक आगमनक अवसर पर अयाची मिश्रक अभिनय भेल छल । जाहिमे महाराजाधिराज श्री५मान् मिथिलेश ओ म.म. डा. श्री उमेश मिश्र जी आदि उपस्थित छलाह । अयाची मिश्रक अभिनय एहि पंक्तिक लेखककेँ करय पड़ल छलनि ओ डा. अमूल्यधन चटर्जी सदृश उच्चकोटिक बंगलाक कलाकार अभिनेताक रूप मे उपस्थित भऽ ओकरा सफल बनौने छलाह ।

यदि सभठामक विशद विवेचना कयल जाय तँ मैथिली रंग मंचक विकास नामक एक पोथी प्रस्तुत भऽ सकैछ । ई तँ एक विहंगम दृष्टि मात्र भेल अछि ।

चित्रगुप्त पूजा, सरस्वती पूजा, आदिक अवसर पर लहेरियासरायमे प्रति वर्ष अभिनयक प्रदर्शन होइछ । श्री रामदेवझा, दिनेश झा, श्री गंगाराम

चौधरी, श्री उपेन्द्र कुमर, श्री अशर्फी चौधरी, श्री जितेन्द्र प्रसाद सिंह, प्रभास कुमार चौधरी आ अनेक किशोर अभिनेता एहि दिस अग्रसर भऽ रहल छथि। छीक, हाकिमक हाकिम, बौआक दाम, निरक्षरता निवारक पाठशाला, श्रमदान, कालेज प्रवेश, उगना रे मोर कतय गेला, जय जन्म भूमि, शीतल सेनी आदि अनेक एकांकीक अभिनयसँ, मैथिली नाटककेँ लोकप्रिय बनैबामे सफल भेलाह अछि। हम पूर्वहि कहि चुकल छी जे समयक अल्पता ओ स्थानक अल्पताक कारणेँ एहि ठाम सभक चर्चा सर्वथा असंभव अछि। कतेक नीक-नीक कलाकार मिथिलाक माटिमे गोड़ल पड़ल छथि। सरकार नाट्य अकादमीक स्थापना कयलक अछि। यदि एहि दिस संघटित प्रयास कयल जाय आ एक केन्द्रीय कलामंचक स्थापना हो जाहि दिस आइ सँ 8-10 वर्ष पूर्व डा. जयकान्त मिश्र मिथिलामिहिरमे एक निबन्ध लिखि मैथिली प्रेमीक ध्यान आकृष्ट कयने छलाह, तँ निश्चित अछि जे मैथिली रंगमंचक ई स्वर्णमय परम्परा जे एखन धरि आबि रहल अछि, विकसित होइत चल चित्रक रूप ग्रहण कऽ सकैत अछि।

पुनश्च- बाबन-तिरपन वर्ष पूर्वक स्थितिक विवरण एहि लेखमे प्रकाशित भेल छल। एहिमे जे आशा-विश्वास व्यक्त कयल गेल छल से कतेक साकार भऽ सकल अछि तकर उदाहरण थीक भंगिमा (पटना), मिथिला विकास परिषद्, कोकिल मंच (कोलकाता), मैलोरंग (दिल्ली) तथा कन्यादान, ममता गाबय गीतसँ आरम्भ भऽ अनेक चलचित्रक निर्माण ओ प्रदर्शन आगाँ गति पकड़लक अछि जाहिसँ आशान्वित भेल जाय सकैछ।



आधुनिक मैथिली नाटकक विकास

संस्कृतक लक्षणग्रन्थमे दृश्य काव्यकेँ रूपक कहल गेल छैक जे दस रूपमे विभाजित अछि जाहिमे एकटा नाटक सेहो थीक । परन्तु ई संज्ञा तेहने भाग्यवान् अछि जेना वनस्पतिमे 'डालडा' । कोनो कम्पनी नामसँ वनस्पति घीक उत्पादन करओ, लोक ओकरा डाल्डा सैह कहैत छैक, तहिना सम्प्रति रूपक मात्रक हेतु नाटक शब्द रूढ़ भऽ गेल अछि ।

एहि नाटक शब्दमे जखन आधुनिक विशेषण जोड़ल जाइत अछि तँ सामान्यतः सभक ध्यान पारसी थियेटर कम्पनी द्वारा निर्मित नवीन ढंगक मंच ओ अभिनयक स्वरूपपर चल जाइत छैक । मनुष्य स्वभावतः नवीनताक आग्रही होइत अछि । एहि नवीन परिपाटीक हिन्दीमे लोकप्रियता देखि मैथिलीमे तदनुरूप नाटक लिखबाक हेतु सर्वप्रथम कविवर जीवनझा यज्वालय प्रवृत्त भेलाह । हिनक प्रथम नाटक सुन्दर संयोग 1904 ई.मे लोकक सम्मुख आयल । ध्यातव्य जे मैथिलीमे पत्रकारिताक आरम्भ 1905 ई.सँ होइत अछि । एतावता सिद्ध होइछ जे कवीश्वर चन्दा झा जाहि नवजागरणक सूत्रपात कयने रहथि तकरा अग्रसर करबामे प. जीवनझा अग्रगण्य भेलाह । एही कारणेँ आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' आधुनिक गद्यक प्रणेता हिनके मानलनि अछि । ओ लिखैत छथि–

"कवीश्वरक गद्यक स्वरूप–विश्लेषणसँ स्पष्ट होइछ जे ओ आधुनिक गद्यक अपेक्षा प्राचीने गद्यक श्रेणीमे परिगणित होयबाक योग्य अछि । सरल कथ्य–तथ्यक प्रथम गद्य–प्रयोग कविवर जीवनझाक 1904 मे प्रकाशित सुन्दर संयोग नाटकक माध्यमसँ भेल जकरा ओ मैथिलीसट्टक, नर्मदा सागर सट्टक, आ सामवती पुनर्जन्म नाटकमे पूर्ण पल्लवित कयलनि । वस्तुतः आधुनिक

गद्यक प्रणेताक रूपमे प्रतिष्ठित होयबाक अधिकारी कविवर जीवनझा कहल जा सकैत छथि ।''[1]

ई उद्धृत करबाक उद्देश्य जे मैथिलीक गद्यकेँ वर्तमान परिष्कृत रूप देबामे आधुनिक नाटकक मूल्यवान योगदान छैक । हिनक समग्र मैथिली कृतिक एक संकलन जीवनझा रचनावली नामेँ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा प्रकाशित भऽ चुकल छनि जकर विस्तृत भूमिकामे डॉ. श्रीरामदेवझा सम्पूर्ण कृतिपर पर्याप्त प्रकाश देने छथि । एकटा विलक्षणता ईहो अछि जे नवीन परिपाटीक नाटक लिखल गेल तँ सर्वप्रथमे कृतिमे सामाजिक समस्या मुख्य रूपसँ सम्मुख आयल । ध्यातव्य जे मैथिलीमे उपन्यास-लेखन एकर पछाति आरम्भ भेल तँ ताहूमे एहने स्थिति दृष्टिगोचर होइछ ।

जीवनझा जाहि परम्पराक प्रवर्त्तन कयलनि ताहि परम्परामे तहियासँ एखनधरि सामाजिक, धार्मिक, पौराणिक, ऐतिहासिक सब प्रकारक नाटक लिखाइत रहल अछि, जाहि महक नाटक ओ नाटककार सभक नामावली इतिहास ग्रन्थ सबमे तथा प. श्रीगोविन्दझा लिखित **मैथिली नाटक : अधुनातन सन्दर्भ** नामक पुस्तकमे एवं डॉ. श्रीप्रेमशंकर सिंह लिखित **मैथिली नाटक परिचय** नामक पुस्तकमे अंकित कयले गेल अछि तेँ चर्वितचर्वण अनावश्यक बुझैत छी ।

एकांकी

सम्पूर्ण नाटक, जकरा डॉ. श्री दिनेशकुमारझा अपन इतिहासमे अनेकांकी संज्ञा देलनि अछि, एकर अपेक्षा एकांकीक रचना परिमाणमे अधिक भेल अछि । हमरा जनैत एकर दू गोट मुख्य कारण रहल अछि । पहिल मैथिलीमे प्रचुर नाटक नहि रहलाक कारणेँ गामो घरमे हिन्दीएक नाटक खेलायल जाइत छल । परन्तु भोजमे जेना विविध व्यंजनक अछैतो भोजैतकेँ जीह पर रेती देबालै चटनी वा अँचार अपेक्षित भए जाइत छनि, तहिना मिथिलाञ्चलक दर्शककेँ मैथिलीमे नहि किछु रहने मन छुछुआयले रहि जाइत छलनि । एहि अभावक पूर्ति मैथिली एकांकीसँ कयल जाइत छल ।

दोसर कारण आधुनिक शिक्षाक प्रचार-प्रसारसँ सम्भ्रान्त परिवारक लोक मंचपर कोना उतरत, ई जे धारणा छल से क्रमशः दूर होइत गेल आ

1. मैथिली गद्यक विकास, साहित्य अकादेमी, पृ.- 28

स्कूल-कालेजमे अवसरविशेष पर अल्पसमयमे किछु एहन उत्कृष्ट मनोरंजक कार्यक्रम हो जे सुरसुर-मुरमुर दुनू होयबाक चाही, तँ ताहि हेतु एकांकीकेँ विशेष प्रश्रय भेटय लगलैक । छात्र लोकनि आग्रहपूर्वक एकांकी लिखबथि । ई हमर स्वानुभूत विषय थीक, जकरा नव लोक भोगल यथार्थ कहैत छथि । संयोगवश साहित्य अकादेमीक प्रतिनिधि डॉ. श्रीरामदेवझा तथा एहि अनुष्ठानक सहयोगी डॉ. दिनेशकुमारझा साक्षी छथि, जे हमर छात्र रहि चुकल छथि ।

दरभंगामे 1949 मे विद्यापति गोष्ठीक स्थापना भेल, जे गोष्ठी 1950-51-52मे क्रमशः विद्यापतिक जन्मूभूमि विस्फी, सिद्धिभूमि भवानीपुर तथा समाधिभूमि ताहि दिनुक बाजितपुर, आजुक विद्यापति नगरक साहित्यिक तीर्थयात्रा प्रो. जगन्नाथमिश्रक नेतृत्वमे कयलक । तदुत्तर राजधानी पटनामे चेतना समितिक स्थापना ओ विद्यापति स्मृतिपर्वक अवसरपर क्रमशः कार्यक्रमक विस्तार होइत गेल । एकर देखादेखी समस्त भारतक विभिन्न नगरमे रहनिहार मैथिलीभाषी समुदाय प्रेरित ओ उत्साहित भऽ द्विदिवसीय-त्रिदिवसीय पर्व आयोजत करय लगलाह । चेतना समिति तँ नवीन नाटक लिखबाय तकर मंचन आ पुस्तकाकार प्रकाशन करय लागल जाहिसँ नवीन नाटकक रचना तँ भइए रहल अछि नवीन नाटककार उभरि रहलाह अछि, ताहि संग नव-नव रंगमंच जे एकर अभिन्न अंग थीक, अस्तित्वमे आयल अछि । एकर चर्चा आगाँ कयल जायत ।

रेडियोरूपक

जखन आकाशवाणी केन्द्र विस्तार भेल तँ एक विधा आरो जन्म लेलक **रेडियोरूपक** । स्वभावतः आकाशवाणीसँ मैथिली कार्यक्रम प्रसारित होमय लागल तँ एकर रचनो अवश्यम्भावी छल । ओना नाटक तँ दृश्य काव्य थीक जाहिमे अभिनय अर्थात् वाचिक, आंगिक आदि प्रदर्शन, ताहि संग पात्रानुरूप साज-सज्जा, वेष-भूषा आदि अपेक्षित उपकरण ओ परिवेश आवश्यक होइछ जे रेडियोरूपकमे सम्भव नहि थिक । यद्यपि ध्वनि-संकेत द्वारा किछु आंशिक पूर्ति कयल जाइत अछि, तथापि हमरा जनैत जे मुख्य रूपसँ आँखिक विषय थीक तकरा कर्णेन्द्रिय मात्रसँ ग्रहण कयने सम्पूर्ण तृप्ति सम्भवो नहि भऽ सकैत अछि, जे से तथापि ईहो एक विधा तँ थीके आ एहू विधामे गति सन्तोषजनक अछि ।

रंगमंच

मिथिलामे कीर्तनिञा नाटकक परम्परा छल, यद्यपि ई एक विवादास्पदे विषय रहल अछि । कारण दृश्य विधाक अभिन्न अंग थीक रंगमंच, जकरा बिनु एकर प्रदर्शन सम्भवे नहि अछि आ मिथिलामे रंगमंच छले नहि । एहि विषयपर पं. श्री गोविन्दझा **मैथिलीनाटक : अधुनातन सन्दर्भ** नामक अपन पुस्तकमे तर्कपूर्ण विचार खुइँचा छोड़ाकऽ व्यक्त कयने छथि जे मैथिलीकेँ अपन रंगमंच किएक नहि भेलैक । हमरहु दृष्टिएँ हनुक विचार सर्वथा संगत छनि । ई अंग्रेजी शिक्षाक प्रसार भेलाक बादक प्रभाव थीक जे सम्भ्रान्त परिवारक लोक मंच पर उतरय लगलाह । बान्ह टुटलाक बाद गाम-गाममे जतय सार्वजनिक दुर्गापूजा, कालीपूजा, कृष्णाष्टमी, चित्रगुप्त पूजा आदि पर्व मनाओल जाइत अछि, ओहि गामक शिक्षित उत्साही युवक लोकनि गाममे बेहरी कऽ किछु पर्दा, किछु राजसी वस्त्र, मुकुट आदिक स्थायी व्यवस्था कऽ अवसर अयलापर बाँसबल्ला गाड़ि, चौकी जोड़ि मंच ठाढ़ करैत छथि आ पैट्रोमेक्सक प्रकाशमे नाटक खेलाइत जाइत छथि ।

एहि क्रममे पिण्डारुछ नाट्य परिषद्, जकर हीरक जयन्ती पर्यन्त मनाओल जा चुकल छैक, कोइलख भद्रकाली नाट्य परिषद्, बल्लीपुरक तरुण नाट्य परिषद् आदि कतेकक नाम गनाओल जाय, सैकड़ो मंच अछि, परन्तु ई सब व्यावसायिक मंच नहि थीक । हमरा तँ म.म. डॉ. सर गंगानाथझाक सुपुत्र विभूतिनाथझाकेँ, जे कलक्टर छलथिन, अभिनय करैत देखबाक सुयोग लागल अछि ।

व्यावसायिक मंचक रूपमे, जकरा नाटकमण्डली कहल जाइत छलैक से शेरपुर लगमाक उमाकान्तक नाटकमण्डली तथा भिड़हाक आद्याप्रसादक नाटकमण्डली छल जे साइ पाबिकऽ गाम-गाम जा कऽ नाटक खेलाइत छल । उकामान्तक नाटकमण्डली तँ राजदरभंगा द्वारा दरभंगामे आयोजित इन्द्रपूजामे तथा राजनगरमे आयोजित दुर्गापूजामे नियमित रूपेँ आठ-आठ, दस-दस दिन प्रति वर्ष नाटक खेलयबाक हेतु अनुबन्धित रहैत छल । हमरा लोकनि छात्रावस्थामे एही नाटकमण्डलीक मंच पर मुन्सी रघुनन्दनदासक मिथिला नाटक तथा ईशनाथ बाबूक चीनीक लड्डूक अभिनय अनेक बेर देखने छी । परन्तु एखनहु एहि प्रकारक नाटक-मण्डली मिथिलामे अछि वा नहि से हमरा ज्ञात नहि ।

ई तऽ भेल मिथिलाञ्चलक स्थिति, एहिसँ बाहरो कलकत्ता प्रवासमे रहनिहार मैथिलीभाषी समाज बंगाली समाजक संसर्गमे रहैत, एहि दिस पूर्णरूपें जागरूक रहलाह अछि। बंगला नाटकक विकसित रंगमंचक अनुरूप मंच स्थापितकऽ आरम्भमे बंगला नाटकक अनुवाद तदुत्तर मौलिक नाटक लिखि तकर मंचन करैत रहलाह अछि।

एतेक होइतो ई विचारणीय विषय अछि जे जाहि शताब्दीक प्रथम दशकमे कविवर जीवनझा जाहि आधुनिकताक दिस डेग उठौने छलाह, ताहि शताब्दीक अन्त कालहुमे ओ आधुनिक रहि गेल अछि ?

आइसँ दू दशक पूर्व आधुनिक नाटक लिखबामे समर्थ नाटककार जे अपनाकेँ मुख्यरूपसँ नाटककारे घोषित कयने छथि, से सुधांशु शेखर चौधरी स्वरचित पहिल साँझ नामक नाटकमे, जे मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित भऽ गेल अछि, एक विस्तृत भूमिका लिखैत एहि प्रश्नकेँ उठौने छथि। हमरा जनैत हुनक प्रश्न विचारणीय छनि।

वस्तुतः वैज्ञानिक विकासक संग सामाजिक परिवेश, लोकक जीवन-पद्धति, प्रदर्शनक टेकनिक, नाटकक शिल्प, मानवीय समस्या, रंगमंचक स्वरूप, दर्शकक मानसिकता सबमे एहन घोर परिवर्तन भऽ गेलैक अछि, दिनादुदिन भऽ रहलैक अछि जे आब पर्दा उठैत अछि, पर्दा खसैत अछि वला मंचकेँ आधुनिक कहयबाक योग्यता नहि रहि गेलैक अछि। ताहूपर बिजली गाम-गाम पहुँचि रहल अछि, दूरदर्शन जकरा हम दुर्दर्शन कहैत छिऐक, ग्राम्य जीवनधरि प्रवेश पाबि गेल अछि। अतः नाटककारक संग रंगकर्मी लोकनिकेँ सेहो गम्भीरता ओ सतर्कतापूर्वक नाटकक भविष्यकेँ सुरक्षित ओ संरक्षित रखबाक हेतु सचेष्ट रहय पड़तनि।

सन्तोषक बात जे कोलकातामे 'रंगमंच', कोकिल मंच पटनामे 'भंगिमा' ओ 'अरिपन' सदृश नाट्यसंस्था एहि दिशामे ठोस डेग उठौने अछि जे सर्वथा प्रशंसनीय थिक। एकरा सबकेँ प्रोत्साहित करबाक हेतु सामाजिक सहयोग भेटबाक चाही। नाटकक विकासमे प्रमुख बाधक तत्त्व छल अभिनेत्रीक अभाव, से मैथिलीक सर्वांगीण विकासक हेतु आकुलतापूर्वक चिन्तन कयनिहार चिरस्मरणीय हरिमोहनबाबू दुस्साहसपूर्वक अपन पत्नी आदरणीया सुभद्राजीकेँ सर्वप्रथम मंचपर उतारि मार्ग प्रशस्त कऽ देलनि। तकरे प्रतिफल थीक जे

श्रीमती प्रेमलतामिश्र प्रभृति अनेक मैथिल ललना निर्भीकतापूर्वक ओहि बाधाकेँ दूर कऽ रहलि छथि । एहिसँ उज्ज्वल भविष्यक आशा बलवती होइत अछि ।

चलचित्र

नाटकक प्रदर्शनमे चरम परिणति थीक चलचित्र, जाहि दिस डेगतँ उठल, मुदा ई ततेक व्ययसाध्य व्यवसाय थीक जे एहि दिशामे गति अति मन्थर अछि । ओना कलाकारक अभाव नहि अछि, किन्तु पूजी लगयबाक हेतु साहसी लोकक अल्पता अछि । मन्थर गति भने रहओ, किन्तु गति अछि अवश्य जकर सद्यः प्रमाण थीक गत दिन प्रदर्शित भेल **सस्ता जिनगी महग सेनूर** तथा निर्माण प्रक्रियामे **आउ पिया हमर नगरी** जे आशा जगबैत अछि । रहल दूदरर्शनमे मैथिलीक प्रवेश, से बिनु संघर्षे ने आइधरि किछु उपलब्ध भेल अछि ने भविष्यमे भऽ सकत । नवयुवक लोकनिमे नव स्फूर्ति, नवप्रेरणा जगलनि अछि। आशा करैत छी ओ लोकनि एहि हेतु सन्नद्ध होयताह ।

ध्यातव्य जे विगत दस वर्षमे अनेक सिनेमा मैथिलीओमे बनल अछि, परन्तु प्रवृत्तिमे भोजपुरीक अनुकरणे विशेष बुझना जाइछ, मौलिकता अनबाक प्रयास शून्य प्राये अछि ।

निष्कर्षतः कहल जा सकैत अछि जे मैथिली आधुनिकतम नाटक विकासक पथपर गतिशील अछि, एहि गतिकेँ तीव्रतर बनयबाक प्रयोजन अछि। सौभाग्यवश श्रीमहेन्द्र मलंगियाजी आधुनिक नाटककारक रूपमे भारतक राजधानी दिल्लीमे मैलोरंग नामक सदृश संस्था स्थापित कऽ अन्यान्य भारतीय भाषा समूहमे मैथिलीक झण्डा गाड़ि मैथिली नाटकक मंचकेँ प्रभावित कऽ रहल छथि तेँ सर्वथा संवर्द्धनीय थिकाह ।



मैथिली पत्रकारितामे गद्यक विकास

हमर विवेच्य विषय अछि 'मैथिली पत्रकारितामे गद्यक विकास' । एहि प्रसंग हमर निश्चित मन्तव्य अछि जे यदि पत्रकारिताक शुभारम्भ नहि होइत तँ प्राय: गद्यक विकास सन्दिग्धे रहैत । ई सबहु गोटे जनैत छी जे आधुनिक भारतीय यावन्तो भाषा अछि, ताहि सबमे प्राचीनतम गद्य-ग्रन्थमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर विरचित 'वर्ण रत्नाकर'हिक नाम लेल जाइत छनि जाहि ग्रंथक प्रसंग डा. अमरनाथझा अपन मन्तव्य प्रकट करैत एकर तुलना कविवाण रचित 'कादम्बरी'सँ कयने छथि जे 'कादम्बरी' संस्कृत गद्यक सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ मानल जाइत अछि । ज्योतिरीश्वरकेँ अपन मातृभाषामे एहन ग्रन्थ लिखबाक प्रेरणा किएक आ कोना भेलनि से नहि जानि । कारण, आवश्यकताकेँ आविष्कारक जननी कहल जाइत छैक । मनुष्यक स्वभावे छैक जे जखन जेहन आवश्यकता भेलैक तखन तकर पूर्तिक हेतु मनुष्यक मस्तिष्कमे वैचारिक मंथन आरम्भ होइत गेलैक । अस्तु ।

तकर बाद कवीश्वर चन्दाझा धरि साहित्यिक गद्यक दर्शन दुर्लभ अछि । ओहो कोनो मौलिक रचना नहि कयलनि, केवल विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक अनुवाद देखल जाइछ सेहो संस्कृतेक वाक्यविन्यासक अनुसरण पर, मैथिलीक अन्यान्य भाषासँ भिन्न अपन जे विशिष्ट प्रकृति छैक तकर आभासो एहि अनुवादमे परिलक्षित नहि होइछ । तथापि आधुनिक युगक गद्यकारक रूपमे इतिहासकारलोकनि हिनक नामोल्लेख एहि हेतु करैत आबि रहल छथि जे अनुवादे सही, परन्तु एहि दिस सबसँ पहिने यैह उन्मुख भेलाह ।

सुविदित तथ्य अछि जे जखन अंग्रेजी शासनकालमे नवीन शिक्षा पद्धति प्रवर्तित भेल तखन आधुनिक भारतीयो भाषा सभक सन्निवेश ओहिमे

कयल गेलैक । मिथिलामे कतोक दशाब्दीधरि आधुनिक शिक्षाक प्रवेश नहि भेलैक । जखन तकर आवश्यकता अनुभव कयल जाय लागल तावत धरि पद्य साहित्य छाड़ि और किछु छले नहि । ताहि समय धरि संस्कृते शिक्षा प्रणाली प्रचलित छल । संस्कृत पढ़बाक तथा बुझयबाक माध्यम यद्यपि मैथिलीए छल, परन्तु से मौखिके धरि सीमित छल, लिखित गद्यक आवश्यकताक अनुभवे नहि कयल जाइ छल । धन्यवाद ग्रिअर्सन साहेबकेँ जे एहि ठामक लोकमे आधुनिक दृष्टि विकसित करबामे प्रेरक भेलाह । यदि एहि दिस प्रवृत्तो भेलाह तँ मुख्यत: संस्कृते विद्वानलोकनि, ताहूमे बहुतो गोटेक प्रवृत्ति संस्कृताभिमुखे दृष्टिगोचर होइछ । उदाहरणार्थ म.म. परमेश्वरझाक 'सीमन्तिनी आख्यायिका'केँ देखल जा सकैछ ।

हँ, जखन मैथिलीमे पत्रकारिताक श्रीगणेश भेल तखन अपन प्रकृतिक अनुकूल मैथिलीक वाक्यविन्यास विकसित होमय लागल । अपन अनुकूल प्रकृतिसँ हमर तात्पर्य अछि जे मैथिलीमे कर्म, सम्प्रदान, संबंध आदि कोनो कारककेँ परिवर्त्तित कऽ देला उत्तर तकर प्रत्यक्ष प्रभाव क्रियापद पर पड़ि जाइत छैक । यथा– तों हमरा कहलह, हुनका कहलहुन, ओकरा कहलहक । तोहर गाय चरैत छह, हमर गाय चरैत अछि, हुनकर गाय चरैत छनि, ओकर गाय चरैत छैक । तोँ हमरा लै दूध अनलह, हुनका लै अनलहुन, ओकरा लै अनलहक । तों हमरा सँ छोट छह, हुनकासँ छोट छहुन, ओकरासँ छोट छहक । ई विशेषता ने संस्कृतमे छै ने हिन्दी वा अंग्रेजीमे । एतय एतबा संकेत करब हम प्रयोजनीय बुझैत छी जे एहि दिस बहुतो विद्वान ध्यान नहि दऽ रहल छथि । अस्तु ।

प्रथम मैथिली मासिक पत्रिका थिक 'मैथिल हित साधन' जे 1905 ई.मे जयपुरसँ विद्यावाचस्पति मधुसूदनझा तथा रामभद्रझाक सत्प्रयाससँ प्रकाशित होमय लागल । उक्त पत्रिकाक भाषाशैली गद्यकेँ सुघटित ओ सुव्यवस्थित रूप देबामे पूर्णत: सफल प्रतीत होइत अछि । एतय उदाहरणार्थ उक्त पत्रिकासँ तीन गोट उद्धरण उपस्थित अछि । पहिल उद्धरण एक समाचार थिक–

"सोनवरिसा । गत एप्रिल मासक प्रथम तारीखमे सोनवरिसा–महाराज श्रीमान् हरिवल्लभ नारायण सिंह बहादुर, के.सी.आई.ई.क आकस्मिक अकाल मृत्यु सुनि शिक्षित मैथिल समाजमे के एहन व्यक्ति हयत जकर हृदय शोकसँ विदीर्ण नहि भेल हयतैक ।

महाराजक असाधारण उदारता, हृदयग्राही सरस भाषण, आदर्शभूत गुण

ग्राहकताक स्मरण मात्रमे गदगद कंठ भय एक बेरि हा: हा: नहि कयने हयत।''

दोसर उद्धरण 'प्राकृतिक दर्शन'सँ अछि। एकर लेखक के छथि से उपलब्ध अंश सँ ज्ञात नहि होइछ। अनुमान अछि जे विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा स्वयं ई अंश लिखैत छल होयताह जे क्रमश: प्रकाशित होइत छल। भाषाक स्वरूप अछि–

''मिथिलामध्य मैथिल मात्रक साधारणत: ओ विशेषत: अत्याराध्या उपास्या कुल देवी यैह आदिशक्ति भगवती मूल प्रकृति थिकीह। अतएव मैथिल–हित–साधन पत्रमे सर्वत: प्रथम एहि कर्त्रीहर्त्री विधात्री परमेश्वरी मूल प्रकृतिक सावशेष स्वरूप निरूपणार्थ प्राकृतिक दर्शन प्रस्तुत भेल अछि। एहि मूल प्रकृतिकेँ अनेक शास्त्रकारालोकनि अनेक तरहसँ वर्णन कयने छथि से सब विशद रूपसँ प्राकृतिक दर्शनमे स्पष्ट देखाओल जायत।''

तेसर उद्धरण पत्रिकाक मन्तव्य सँ सम्बद्ध अछि। मिथिलामे शिक्षाक की स्थिति छल तकर संकेत उपर कयल गेल अछि। अष्टम एडवर्डक जन्मक उपलक्षमे मिथिलेश रमेश्वर सिंहकेँ महाराज उपाधिसँ विभूषित कयल गेलनि तँ ताहि हर्षमे ओ एक लाख टाका सार्वजनिक विकासमे खर्च करबाक घोषणा कयने छलाह, जाहिमे दरभंगाक हड़ाही, दिग्घी ओ गंगा–सागरकेँ मिलाय झील निर्माण करबाक योजना बनल छल। 'हितसाधन' से समाचार प्रकाशित करैत ताहि प्रसंग अपन सुझाव दैत लिखने छल–

''सर्वत: प्रथम मिथिलामे शिक्षाक आवश्यकता छैक। ओना त अनेक शिशु शीघ्रबोध, सारस्वत वा कारिकावलीक पोथी हथियबितहि छथि, परन्तु तादृश शिक्षा वर्तमानकालमे पर्याप्त नहि भय सकै अछि।... प्राथमिक शिक्षाक अभावहिक फल थीक जे भाष्यान्त उच्चशिक्षा पओलहु उत्तर मैथिललोकनि बाँचब, लिखब, हिसाब जे नितान्त आवश्यक विषय थीक ओहिमे नितान्त अपटु ओ अक्षम रहै छथि। प्रमाणक आवश्यकता नहि विदिते अछि जे पण्डित लोकनिकेँ अपठित पुस्तक हाथमे देल जाइन तँ पढ़ै काल अनेक स्थलमे स्खलन हयतैन्ह। साधारणो हिसाब करबामे ई लोकनि नितान्त अक्षम रहै छथि। एहना स्थितिमे लिखब, पढ़ब, गणित, भूगोल, इतिहास आदि सामाजिक शिक्षाक मिथिलामे नितान्त आवश्यकता अछि।''

ई तँ भेल भाषाक स्वरूप, तदतिरिक्त एही नीतिकेँ ध्यानमे राखि 'हितसाधन' उपर्युक्त विषयक पुस्तक लिखबाय क्रमशः प्रकाशित करैत छल जाहिसँ गद्यक स्वरूप स्थिर होइत गेल ।

मैथिली-हित-साधनक प्रकाशनक किछुए दिनुक पश्चात काशीसँ दोसर मासिक पत्रिका 'मिथिलामोद' नामसँ प्रकाशमे आयल । एहि पत्रिकाक नीति ओ हित-साधनक नीतिमे बहुत साम्य छल, परन्तु भाषाक लेखन शैलीमे किछु भिन्नता सेहो छल । हितसाधनमे ठेंठ शब्दावलीक प्रयोग अल्प अछि, मुदा मोद एहि दिस बेसी मुखर आ सतर्क बुझना जाइछ । एहि कथनक पुष्टिमे मोदक निम्नांकित उद्धरण द्रष्टव्य । 110म उद्गारमे लिखने छल– ''औ बलाँ । अपने क्रुद्ध भै जे कही से कहू, परन्तु हम अपनेकेँ बराबरि सावधान करबैत जाइत छी जे जँ अपने सम्पादकक आसनकेँ शोभित कै रहल छी, अपने मैथिल थिकहुँ तथा मिथिलाहि देशमे रहितहुँ छी, तखन एहन भ्रष्ट भाषा !! औ ! बरद ? नहि बड़द । हैजा ? नहि, ओवा महामारी वा कालरा कहू से धरि स्वीकृत अछि । 'देखैमे अबै अछि' ई कोन भाषा भेल ? बरै केँ बरई लिखैत छी । गलफर ? नहि, गलफड़ इत्यादि कतेक लिखू, थोड़को दृष्टि दिऔक । एहीसँ अपनेकेँ कहैत छी जे जानि बुझि अपने मिथिला भाषापर, अपन स्वच्छन्दताक कुड़हरि चलाय रहल छी ।''

सुघटित ओ मैथिली भाषाक प्रकृतिक अनुकूल वाक्य रचनाक हेतु मोद लेखक लोकनि केँ प्रशिक्षित करबाक चेष्टा करैत छल । 50म उद्गारमे प्रकाशित निवेदन एकर प्रमाण थिक । मोद लिखने अछि–

''अतिरिक्त निवेदन ई अछि जे कोहुना अपने लोकनि लिखब हम खराजि मोद योग्य बनाय मुद्रित कराएब । एहना अवस्थामे लेख प्रेषक महोदयकेँ उचित थिकन्हि जे जे लेख पठाबथि से जँ स्वयं मोदमे छपबाक योग्य पठाबथि अर्थात् स्पष्ट अक्षर तथा विभक्ति, क्रिया, कारक, वाक्य-सन्दर्भ, लेखक उपरमे अपन वक्तव्य ओ एकहि पृष्ठमे रहै इत्यादि यावत्साध्य लिखि पठाबथि तँ सुगमतासँ ताहि-ताहि महाशयकेँ लेख पाटब झट भै सकैत छन्हि ।

मैथिलीमे ए तथा ऐ एवं ओ तथा औ एहि दुनूक मध्यवर्ती एहन ध्वनि अछि, जाहि हेतु वर्णमालामे कोनो वर्ण संकेत नहि अछि । अतः ई दुनू ध्वनि कोन रूपेँ लिखल जाय, ताहि हेतु आदि कालेसँ विवाद रहल अछि ।

यद्यपि डा. गिअर्सन एहि हेतु एकलेँ केँ उनटा कऽ ओ तिरहुतामे एकर मात्रा लगैत छैक तेहने स्वर संकेतक टाइप बनबौने रहथि । रामलोचन शरण अपन रामचरितमानसक मैथिली अनुवाद छपयबामे तकरे अनुसरण कयलनि । किन्तु सब प्रेसमे से उपलब्ध नहि रहबाक कारणेँ ओहि विवादक अन्त नहि भऽ सकल, प्रत्युत औरो विकल्प रूप सब बनैत गेल अछि ।

भाषाक कसौटी गद्ये होइत अछि । अतः सुघटित गद्यक हेतु भाषामे एकरूपता रहब बेसी नीक थीक । पत्रकारलोकनि एहि दिस सचेष्ट भेलाह तथापि एकवाक्यता नहि भऽ सकल । संस्कृतमे एकटा उक्ति छैक– 'अर्द्धमात्रा लाघवेन पुत्रोत्सवं मन्यन्ते वैयाकरणाः' मोद एही लाघवकेँ ध्यानमे राखि लिखने छल–

"श्रीयुत विज्ञ मिथिलाभाषा विचारक ! अपने लोकनि मिथिलामोदकेँ देखि ओ अपन यथेच्छ लेखकेँ विचारि विप्रतिखिन्न अर्थात् कोन भाषा लिखैक थीक एहि संशयमे पड़ि, नानाविध शंका समाधान करैत होयब– यदर्थ दू चारि उदाहरण हम देखबैत छी यथा "ओ ई कार्य कएलैन्ह, ओ ई काज कयलन्हि, ओ ई काज कैलैन्ह" । आब एतै विचारणीय जे कोन प्रयोग शुद्ध । ध्यान देबाक थिक जे जे क्यो वर्ष मध्य 2-4 चिट्ठी मात्र लिखैत छी वैह शुद्ध, यदि ताहि प्रयोगकेँ मानी तँ उपर जे देखा आएल छी चारिटा सेहो पहाड़ामे पड़ि पहाड़ भै जाएत, से कोनहु रूपेँ नहि बुझल जाय सकैत अछि, अथच यदि उच्चारण पर निर्भ होएब तँ कएलैन्ह कयलन्हि कैलन्हि एहि तीनूसँ एक विलक्षणे उदाहरण थिक जकरा हम कोनहु मातृकाक्षरमे नहि लिखि सकैत छी । एहना स्थितिमे कैलनि यैह यदि मोदमे प्रयुक्त होइत अछि तथापि कएलैन्ह कयलन्हि एहि दुनूसँ जे बोध होएत सैह बुझल जाइत अछि, विशेषता ई जे एक अक्षर लाघव... ।"

प्रेसक युगमे लाघवकेँ ध्यानमे राखब विशिष्ट दृष्टिकोणक परिचायक मानल जयबाक चाही । 'हितसाधन' सेहो लाघव पर ध्यान देने छल, परन्तु ओकर स्थल एहिसँ भिन्न छलैक । ओ सकैत, जाइत, होइत आदि क्रिया पद सबसँ ओकारोकेँ हटाय हयत सैह प्रयोग करैत छल जे कवीश्वर चन्दा झा अपना रामायणमे कयने छथि ।

एतय प्रसंगतः एकरो उल्लेख करब समीचीन होयत जे जखन

साप्ताहिक 'मिथिला मिहिर' विशुद्ध मैथिलीमे नव कलेवरमे पटनासँ प्रकाशित होमय लागल तँ लेखन-शैली अर्थात् स्पेलिंगक कोन रूप हो ताहि पर विचार करबाक हेतु पं. गिरीन्द्रमोहनमिश्र, श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार तथा प्रो. हरिमोहनझा एहि तीन गोटेक एक समिति बनल । ओ लोकनि भिन्न-भिन्न स्वरूपकेँ ध्यानमे राखि एक समन्वित मध्यम मार्गक चयन कयलनि । लाघवक दृष्टिएँ ईहो लोकनि छन्हि, कहलन्हि आदि शब्दसँ हकारकेँ हटाय कहलनि, छनि एहने स्वरूप रखबाक सुझाव देलथिन । सम्पादक सुधांशु शेखर चौधरीकेँ सम्पादन करबामे पर्याप्त श्रम करय पड़ैत छलनि । कहबाक तात्पर्य जे पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ समय-समय पर गद्यक स्वरूप स्थिर करबाक प्रयास आरम्भे कालसँ होइत आबि रहल अछि ।

मिथिला मासिक, जे 1929मे बाबू भोलालाल दासक सम्पादकत्वमे प्रकाशित होइत छल ताहिमे भाषा शैलीक प्रसंग जे मन्तव्य प्रकाशित भेल छल तकरो उद्धृत करब समीचीन होयत । मिथिला लिखने छल–

''सम्प्रति मैथिलीमे जे लेख आ कविता अबैछ, तकर शैली अनेक देखना जाइछ । शैलीक निर्धारण प्रयोग पर अवलम्बित अछि आओर अनेक स्थलमे हमरालोकनिक शैली निर्धारित नहि अछि । अत: हमरालोकनि तत्काल यथासम्भव सभ शैलीकेँ स्थान दै रहल छी, जाहिसँ अनेको विद्वानकेँ भ्रम भै रहल छैन्हि जे ओ सभ संपादकीय अवहेला वा व्याकरणक अशुद्धि थिक । हमर नम्र निवेदन जे सम्प्रति हमरालोकनि मिथिला भाषाक अधिकाधिक प्रयोग करी, शैली अपनहि स्थिर भै जायत ।''

परन्तु हमरा कहबामे कनेको संकोच नहि अछि जे एतय 'नैको मुनिर्यस्य मतं न भिन्नम्' । पहिने तँ शब्दक लिखित स्वरूपे टामे मतभिन्नता छल, आब तँ अराजकताक स्थिति अछ जाहि सभक चर्चा करबामे एतय स्थानाभाव ओ समस्याभाव दुनू अछि ।

गद्यक विकासक अनेक आयाम होइत छैक । मानक गद्यक स्वरूप स्थिर होइत छैक निबन्धमे, कारण निबन्धमे एकमात्र निबंधकारेक व्यक्तित्व प्रतिबिम्बित होइत छनि, आ ओकर पाठको विद्वाने वर्गक लोक होइत छथि, परन्तु गद्यकेँ लोकप्रियता प्राप्त होइत छैक कथा, उपन्यास, नाटक आदिसँ । एहि सभक भाषा आ निबन्धक भाषामे भिन्नता स्वाभाविके थिकैक । एकर

कारण जे एहि सब विधामे पात्रक चयन होइत छैक समाजसँ, जाहिमे विविध श्रेणी होइत छैक । अतः पात्रोचित भाषाक प्रयोगसँ कथा उपन्यासमे रोचकता अबैत छैक, जे सर्वसाधारण पाठककेँ आकृष्ट करैत छैक । कहबाक आवश्यकता नहि जे मिथिला मासिकमे जखन हरिमोहन बाबूक कन्यादान उपन्यासक अंश सब प्रकाशित होमय लगलनि तँ मैथिलीकेँ सर्वसाधारण पाठक अपनाबय लगलैक ।

तकर बाद तँ भारती, विभूति, स्वेदश, वैदेही, मिथिला दर्शन, मैथिली दर्शन सर्वोपरि साप्ताहिक मिथिला मिहिर आदि पत्र-पत्रिकाक माध्यमसँ उपन्यास ओ कथा साहित्यक ततेक प्रचुरता सँ प्रकाशन होमय लागल जे कथाकारक एक शृंखला ठाढ़ भऽ गेल ।

एमहर आबि अनेक पत्रपत्रिका जन्म लैत आ मरैत रहल अछि, ताहिमे अनेक सम्पादक एखनो छथि जे भाषाकेँ चमकौलनि अछि आ किछु एहनो सम्पादक भेलाह अछि जे सम्पादकक गरिमाकेँ भ्रष्टो कयलनि अछि, तथापि मैथिली गद्यक विकासमे सर्वोपरि महत्त्वपूर्ण योगदान मैथिली पत्रकारितेक रहलैक अछि, से हमर निश्चित मत अछि ।

●

ऋतुसंहारसँ ऋतुशृंगार धरि

कविकुलगुरु महाकवि कालिदास भारतीय प्रतिभाक एक एहन अतुलनीय उदाहरण छथि जाहि प्रसंग कोनो कविक ई उक्ति–

पुरा कवीनां गणना प्रसंगे कनिष्ठिकाधिष्ठित कालिदास:
अद्यापि तत्तुल्य कवेरभावदनामिका सार्थवती बभूव

सर्वथा चरितार्थ अछि। ओ अपन महाकाव्य, नाटक तथा मेघदूत ओ ऋतुसंहार नामक ग्रन्थ सबहुमे जे अनुपम सौन्दर्यकेँ उरेहिकऽ राखि देने छथि तकर तुलनामे आन साहित्यक कोन कथा, संस्कृतो साहित्यमे अन्यत्र दुर्लभ अछि। एक प्रकारसँ ई कहल जा सकैछ जे सम्पूर्ण संस्कृत साहित्यकेँ गोदुग्ध मानि ली तँ तकर नवनीतक स्वाद कालिदासहिक रचनाक गंभीर अध्ययनमे प्राप्त कयल जा सकैत अछि।

संस्कृत काव्य सभक मर्मोद्घाटन कयनिहार टीकाकार लोकनिमे मल्लिनाथक स्थान सर्वोपरि छनि। मल्लिनाथ कालिदासक रचनाक प्रसंग लिखने छथि–

कालिदास गिरां सारं कालिदास: सरस्वती
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशा:

अर्थात् कालिदासक रचनाक मर्म स्वयं कालिदास बुझैत छलाह, दोसर साक्षात् सरस्वती, तेसर चतुर्मुख ब्रह्मा बूझि सकलथिन, एकर अतिरिक्त क्यो नहि, हमरासन अल्पज्ञक तँ कथे नहि हो।

कालिदासक आविर्भावक पश्चात् सहस्राब्दी बीति गेल। एहि मध्य अपरिमित साहित्यक रचना होइत आयल– परन्तु आइयो बुझना जाइछ जे

साहित्यसंसारमे अपन प्रतिभाक गौरवसँ जाहि स्थानपर अधिकार पाबि, कालिदास विराजमान छथि, ओहि आसनक अधिकारी केवल कालिदासे छथि ।

संस्कृत साहित्यक अध्येता यदि कविकर्ममे प्रवृत्त होथि तँ महाकवि कालिदासक प्रभाव बिनु ग्रहण कयने सर्जनात्मक प्रक्रियाकेँ आगाँ बढ़ाइए ने सकैत छथि । ताहूमे जाहि कविमे प्रकृतिक प्रति विशेष आकर्षण होइनि ओ तँ कोनहु प्रकारेँ कालिदासक प्रभावसँ अस्पृष्ट रहिए नहि सकैत छथि ।

वर्त्तमान कालक मूर्द्धन्य साहित्यकारक अग्रिम पंक्तिमे आसीन आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' 'साओन-भादव', 'प्रकृतिशतक' 'पयस्वनी' आदि प्रकृतिविषयक काव्य-प्रणेता उपर्युक्त कथनक अपवाद कोना रहि सकैत छथि ?

जखन श्रीसुमनजी रचित पंक्ति 'हंस नूपुर नृत्य-निपुणा' (प्रतिपदा) पढ़ैत छी तँ 'सोन्माद हंस-रव-नूपुर नादरम्या' (ऋतुसंहार तृ० सर्ग), 'शरद ऋतु सुन्दरी अंगक सुछवि नखत अनन्त' (प्रतिपदा) पढ़ैत छी तँ 'तारागण प्रवर भूषणमुद्वहन्ती (ऋतुसंहार तृ० सर्ग, 'खन सूची वेधित अन्धकार, जगमगा गेल झट तडित तार' (पयस्विनी) पढ़ैत छी तँ घनान्धकारीकृत शर्वरीष्वपि तडित्प्रभादर्शित मार्ग भूमयः' (ऋतुसंहार द्वि० सर्ग) आदि पद सब स्मृतिपथपर आबि जाइत अछि । एही प्रभावक कारणेँ हमर विवेच्य कवि महाकवि कालिदासकृत कुमार संभव, शृंगार तिलक, ऋतु संहार आदि काव्यक अनुवादे करबामे प्रवृत्त भऽ गेलाह ।

एहि ठाम ऋतुसंहारक अनुवादमे अनुवादकक द्वारा जे यत्र-तत्र मौलिक प्रतिभाक उपयोगक कारणेँ विशेषता परिलक्षित भेल अछि तकरे नमूनाक रसास्वादन पाठककेँ करायब अभिप्रेत अछि ।

सर्वप्रथम अनुवादक 'ऋतुसंहार'क स्थानपर एकर नामकरण 'ऋतु शृंगार' कयने छथि । ऋतुसंहार शब्दसँ सब ऋतुक वर्णनक एकत्रीकरण अर्थ बहराइत अछि, परन्तु ऋतु शृंगार पदसँ ऋतुसभक सौन्दर्यवर्णन अर्थ ध्वनित होइछ । वस्तुतः ऋतुसंहार पदसँ अधिक भावप्रवणता ऋतु शृंगार पदमे छैक । अतः एकर नवीन नामकरण द्वारा अनुवादक एहिमे चमत्कारक वृद्धिए कयलनि अछि।

ऋतुसंहार महाकवि कालिदासक काव्यकृतिमध्य प्रारम्भिक रचना मानल जाइत छनि, तकर कारण ई जे रघुवंश, कुमारसंभव, मेघदूत आदि काव्यमे जे प्रौढ़ता परिलक्षित होइत अछि से एहिमे नहि । बहुत विद्वान् तँ

एकरा कालिदासक रचना मानबहुमे सन्देह प्रकट करैत छथि, परन्तु बहुतो विद्वानक तर्क छनि जे साधारणतः वसन्त ओ वर्षा ऋतुक वर्णन संस्कृत साहित्यमे जतेक व्यापक परिमाणमे प्राप्त होइत अछि ततेक ग्रीष्म ऋतुक नहि आ कालिदास 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्'मे सेहो ग्रीष्मक वर्णन व्यापक रूपमे कयने छथि, एहिसँ एहन प्रतीत होइछ जे ग्रीष्मऋतु हिनका बेसी प्रिय छलनि। अभिज्ञान शाकुन्तलम्मे जे मनोहारी वर्णन भेल अछि ओकर आभास एहि ऋतुसंहारमे देखल जाइछ। अतः ई ग्रन्थ कालिदासक थिकनि से निःसन्दिग्ध।

उक्त काव्यमे महाकविक प्रकृति-प्रेम ओ सूक्ष्मदर्शिता अत्यन्त स्फुट रूपे चित्रित भेलनि अछि। एकरा पढ़ला उत्तर परिलक्षित होइत अछि जे कविकेँ प्रत्येक ऋतुक सूक्ष्म विशेषतासँ पूर्ण परिचय छलनि। पशु-पक्षी, लता-पुष्प, गाछ-वृक्ष, धरती-आकाश, वायु-जल आदिक जेहन जीवन्त चित्रण ऋतुसंहारमे भेल अछि तेहन अन्यत्र भेटब दुर्लभ अछि। जतय आदिकवि महर्षि बाल्मीकि अथवा व्यास आदिक रचनामे एहि ऋतु सभक उपादान सभकेँ आलम्बन प्रधान मानि वर्णन कयल गेल अछि ओतय कालिदास एहि सबकेँ मात्र उद्दीपन मानि वर्णन कयने छथि।

ऋतु-संहार छबो ऋतुक वर्णनक आधारपर छओ सर्गमे विभाजित अछि। ग्रीष्मवर्णनसँ आरम्भ भऽ क्रमशः वसन्त वर्णनमे जाकऽ समाप्त भेल अछि। ग्रीष्मसँ वसन्तवर्णन धरि तत्तत् समयक वृक्ष, लता, पशु, पक्षी तथा वातावरणक चित्रण द्वारा कवि अपन कवित्व-प्रतिभाक चमत्कार देखौने छथि। एकर भाषा ततेक सरल ओ तेहन सरस छैक जाहिसँ पाठकक चित्त रसाप्लावित भऽ जाइत छनि।

एहि ग्रन्थक प्रसंग अनुवादक अपन विचार व्यक्त करैत लिखैत छथि– 'युगयुगान्तक लेल भारतक प्रतिनिधि कवि कालिदासक रचनामे प्रकृतिक छवि अनुपम रीतिसँ विन्यस्त अछि। कुमारसंभवक नगाधिराज यदि देवतात्मा रूपेँ प्रतिष्ठित छथि तँ मेघदूतक अलका, कामिनी जकाँ चित्रित भेल अछि। शकुन्तलाक आश्रममे, मालविकाग्निमित्रक प्रमदवनमे रघुवंशक देवदारु मण्डपमे प्रकृतिक जे सुषमा अङ्कित अछि ओकर प्राक्‌रूप भेटैछ ऋतुसंहारमे जे किशोर कालिदासक रस-तूलिकासँ रंजित-व्यंजित अछि। कालिदासक मूल रचना जहिना मैथिली संस्करणमे ऋतुश्रृंगारक अभिधान ग्रहण कयलक अछि, संभव थिक तहिना मूलभाव-बन्धमे सेहो किछु नव निबन्धन ग्रहण कयने हो। किन्तु

हमरा विश्वास अछि कविकुलगुरु आइ जीवित रहितथि तँ जहिना ऋतुसंहारकेँ ऋतुशृंगार अनुचित नहि बुझितथि तहिना अपन भाव-बन्धनमे मैथिली संस्करणक परिवर्त्तन परिवर्धनकेँ विकृत नहि कहितथि ।'

एहि आत्मविश्वासक पृष्ठभूमि सबल अछि । अनुवादक केवल अनुवादके नहि छथि हिनक मौलिक कवित्व-प्रतिभा अपन युगक प्रतिभाशाली कविलोकनिक मध्य स्पृहणीय मानल जाइत छनि । प्रकृतिवर्णनमे हिनको लेखनी अनुपमे रहलनि अछि । अनुवादक आत्मविश्वासक सत्यताक प्रमाणमे स्थालीपुलाकन्यासँ मूल ओ अनुवादक किछु छिटफुट अंशक रसास्वादन कयल जाय । गीष्म ऋतुक वर्णन क्रममे महाकवि कालिदासक पद छनि-

सुवासितं हर्म्यतलं मनोहरं प्रिया मुखोच्छ्वास विकम्पितं मधु
सुतन्त्रिगीतं मदनस्य दीपनं शुचौ निशीथेऽनुभवन्ति कामिनः

अर्थात्, एहि आषाढ़ (ग्रीष्म ऋतु)क रातिमे कामीलोकनि सुगन्धयुक्त अट्टालिका, प्रेमिकाक मुखोच्छ्वास युक्त मदिरा तथा कामोद्दीपक मधुर गीतक आवश्यकता अनुभव करैत छथि । आब एकर अनुवादक स्वरूप देखल जाय-

चिक्कन चुनचुन छत पर बैसक, स्निग्ध इजोरिया तनल वितान
झंकृत बीना बेनु निनादित, कलकण्ठक रस-रंजित गान
परसि सरस कर-किसलय तियक मुखक छवि विंबित मधुरसपान
उन्मद प्रियतम झुमइत करइछ उष्म ग्रीष्म रजनी रतिमान

मैथिली रूपान्तरमे मैथिलीक स्वाभाविक माधुर्यकेँ निखरबाक हेतु जतय मूलमे 'सुवासितं हर्म्यतल मनोहरम्' कहल गेल अछि ततय अनुवादक छतक हेतु चिक्कन चुनमुन सन ठेठ विशेषणक प्रयोग कऽ मैथिलीक गाढ़ रंग चढ़ा देलनि अछि । एहि संग दोसर वैशिष्ट्य अछि जे मूलमे प्रिया मुखोच्छ्वास विकम्पितं मधु कहल गेल अछि, परन्तु अनुवादक तियक मुखच्छविमे विंबित मधुरससपान कहि मर्यादाक रक्षा कयने छथि । मैथिल संस्कृतिमे मदिरापाने शास्त्रक विरुद्ध, ताहूमे स्त्री द्वारा तँ मदिरापान आरो विचित्र । तेँ मुखच्छविमे मदिराक आरोप कयलासँ अनौचित्यक सर्वथा परिहार भऽ जाइत अछि । तहिना सुतन्त्रि गीतं मदनस्य दीपनम् पदमे तन्त्री मात्रक उल्लेख अछि आ ताहूमे विशेषणक रूपमे 'सु' उपसर्गक प्रयोग पद पूर्त्यर्थ सन प्रतिभासित होइत अछि, परन्तु

अनुवादमे 'वीना वेनु निनादित कल कण्ठक रस-रंजित गान' कहि भावक विस्तार कऽ देल गेल अछि एवं 'कामिनः निशीथेऽनुभवन्ति'क स्थानपर 'उन्मद प्रिय झुमइत रजनीकें रतिमान करइछ' कहि श्री सुमनजी कालिदासोसँ दू डेग आगू बढ़ल बुझना जाइत छथि। ग्रीष्मेक वर्णन क्रममे कविकुलगुरु लिखने छथि–

नितान्त लाक्षारस रागरंजितैर्नितम्बिनीनां चरणैः सुनूपुरैः
पदे पदे हंसरुतानुकारिभिर्जनस्य चित्तं क्रियते समन्मथम्

अर्थात् एहि ग्रीष्म ऋतुक पृथुक नितम्बिनी कामिनी पैरमे आलता लगाय हंसक गतिक संग जेहन मधुर ध्वनि होइत छैक ताही समान निनादित होइत नूपुरकें धारण कयने चरण-विन्यास द्वारा लोकक चित्तमे कामोत्तेजना भरि दैत अछि। एकर मैथिली रूपानतर अछि–

आलत रत-रत चरन अरुन, नूपुर रुनझुन तरुनिक मदचालि
हंसक धुनिकें छपइत पद-पद ककर न मनकें दै अछि घालि

एहिमे चरन अरुनक संग रतरत विशेषण नूपुरक ध्वनिक हेतु रुनझुन सन अनुरणनात्मक विशेषण मैथिलीक स्वाभाविक सुरभिसँ पदकें सुवासित कऽ देलक अछि। मूलमे जतय हंसक ध्वनिक अनुकरण मात्र कहल गेल अछि ततय अनुवादमे 'हंसक ध्वनिकें छपइत' कहि ध्वनिक माधुर्यमे प्रगाढ़ता भरि देल गेल अछि। तहिना 'क्रियते समन्मथम्' पद ओहि आतुरताकें अभिव्यंजित नहि कऽ सकल अछि जे 'दै अछि घालि' द्वारा अभिव्यक्त भेल अछि। श्रुतिमाधुर्यकें सुरक्षित रखबाक हेतु अनुवादक वीणा, वेणु, चरण, तरुणी आदि पदमे 'ण'क स्थानपर नकारक प्रयोग कयने छथि।

वर्षा वर्णनक क्रममे महाकवि कालिदासक उक्ति छनि–

बलाहकाश्चाशनि शब्दमर्दलाः सुरेन्द्रचापं दधतस्तड़िद्गुणम्
सुतीक्ष्णधारा पततोग्र सायकैस्तुदन्ति चेतः प्रसभं प्रवासिनाम्

अर्थात् वज्र समान शब्द करैत मेघ बिजुरीक प्रत्यंचाकें इन्द्रधनुषपर चढ़ौने, वारिधारा रूपी सुतीक्ष्ण वाणक वृष्टिसँ प्रवासी लोकनिक चित्तकें क्लेशित कऽ रहल अछि। श्री सुमनजी एहि भावकें बहुत थोड़ शब्दमे व्यक्त करैत कहैत छथि–

इन्द्र धनुषपर जोड़ि तड़ित गुण धारा शर बरिसाबथि
वज्र गर्जनें पावस उद्धत विरहीजन तरसाबथि

एहि पदमे पावसक हेतु उद्धत विशेषण विशेषरूपें द्रष्टव्य थिक। निरर्थक कोनो निरपराध व्यक्तिकें दुख देब उद्धते लोकक काज भऽ सकैत छैक। एक तँ प्रवासी बेचारा अपने वियोगानलक तापसँ पीड़ित रहैत अछि ताहि परसँ ई पावस आबि ओकर ओहि पीड़ाकें आरो संवर्द्धित कऽ दैत छैक। तें उद्धत विशेषण द्वारा अनुवादमे पूर्णतः भाव विस्तार कऽ देल गेल अछि।

शरद वर्णनक क्रममे महाकवि कालिदास लिखैत छथि–

काशैर्मही, शिशिर दीघितिना रजन्यो,
हंसैर्जलानि, सरितं कुमुदैः सरांसि,
सप्तच्छदैः, कुसुमभारनतैर्वनान्ता
शुक्लीकृतान्युपवनानि च मालतीभिः

अर्थात्, शरदऋतु काशपुष्पसँ पृथ्वीकें, चन्द्रमासँ रातिकें हंससँ नदीक जलकें, कुमुदसँ सरोवरकें, सप्तपर्णक रजत परागसँ वनकें तथा मालतीसँ उपवनकैं उज्ज्वल बना देलक अछि। एहिमे 'शुक्लीकृतानि' क्रियापदक अन्वय प्रत्येक पदक संग भेल अछि। आब एहि पदक मैथिलीरूपान्तरकें देखल जाय।

अवनी धवलित कास विकासें, रजनी चान इजोर
तटिनी हंसें विमल-धवल, चर-चाँचर कुमुदें गोर
सप्तपर्णकेर रजत परागें दप-दप कानन श्याम
मालतीकक फूलक हासें अछि चक-चक शरदक धाम

मूलमे प्रयुक्त 'शुक्लीकृतानि' क्रियापदसँ ओ सूक्ष्मता नहि अभिव्यक्त भऽ सकल अछि जे धवलित, विमल-धवल, इजोर, गौर, दपदप तथा चकचक विशेषणक प्रयोगसँ भेल अछि। एहि प्रयोगसँ जेना मैथिलीक रूप प्राणवन्त भऽ उठल अछि। एवंक्रमे अनुवादक स्वरूप बहुत ठाम मूलसँ अधिक निखरि उठल अछि। स्थान ओ समयक संकोचें एतय दिग्दर्शन मात्र कराओल गेल अछि। वस्तुतः भूमिकामे जे आत्मश्विास व्यक्त कयल गेल अछि से अतिशयोक्ति नहि, सर्वथा तथ्यपरक अछि।

●

गंगावर्णनक परम्परा : श्रीसुमनजीक भाव-साम्राज्य

आसमुद्रात्तु वै पूर्वादासमुद्रात्तु पश्चिमात्

तयोरेवान्तरं गिर्योरार्यावर्तं प्रचक्षते ।

मनुस्मृतिक एहि वचनक अनुसार पूबमे बंगोपसागर, पश्चिममे अरब सागर, उत्तरमे हिमालय तथा दक्षिणमे विन्ध्याचल, एहि मध्यक भूभाग आर्यावर्त थीक । आर्य लोकनिक आदिभूमि होयबाक कारणेँ एहि भूखण्डक नाम आर्यावर्त्त पड़लैक । भूगोलमे एकरा गंगाक सपाट मैदान कहल गेल छैक । आर्य जाति संसारमे सबसँ अधिक कृतज्ञ जाति रहल अछि । जड़ हो अथवा चेतन, जीवनयापनमे जकरा ककरोसँ एहि जातिकेँ कोनो प्रकारक सहायता प्राप्त होइत रहलैक तकरा प्रति हृदयमे श्रद्धा, भक्ति ओ कृतज्ञताक भाव संयोगि कऽ रखने रहल अछि । इतिहासकार मानवजातिक विकासक आदिम युगकेँ पाषाण युग कहैत छथि, जाहि युगमे आश्रयक हेतु पर्वतक गुफा आ वन्य जन्तुसँ आत्म-रक्षार्थ मानव प्रस्तरनिर्मित शस्त्रादिक प्रयोग करैत छल आ तहियेसँ पाथर पूज्य बनल रहल अछि । धरती अन्न, फल, मूल, कन्द आदि दैत रहलीह तेँ धरती माता, गायसँ दूध भेटलैक तँ गाय गोमाता, बड़द हर जोति देलकैक तेँ महादेव ।

पीपर एक एहन वृक्ष अछि जकरासँ फूल ओ फल प्राप्तिक कथे नहि, इन्धन पर्यन्तक उपयोगमे आबयवला नहि, किन्तु थाकल-पियासल पथिकक हेतु आश्रयस्थल बनबाक तथा पर्याप्त प्राणवायु (ऑक्शिजन) प्रदान करैत रहबाक कारणेँ आइओ हिन्दू मात्रक हेतु ई वृक्ष पूज्य मानल जाइत अछि। कहबाक तात्पर्य जे एही प्रकारक भावनासँ अभिभूत रहलाक कारणेँ

हिन्दू मात्र गंगाक प्रति अगाध श्रद्धा ओ भक्ति रखैत आयल अछि । भौगोलिक दृष्टिएँ ई भूखण्ड गंगासँ सबसँ अधिक उपकृत रहल अछि । यमुना, सरयू, कमला, कोशी, गंडक, सोन आदि समस्त छोट ओ पैघ नदीकेँ अपनामे समेटैत-समाहित करैत ई गंगा समुद्रमे जाकऽ विलीन भऽ जाइत छथि । यदि से नहि होइत तँ प्राय: ई सम्पूर्ण भू-भाग सालो भरि जलप्लावित भेल झील बनल रहैत । अत: अन्यान्यो नदीक प्रति मातृभाव रखितो गंगाकेँ सर्वोपरि स्थान देल गेल छनि । गंगाक महिमाक गान ओही दिनसँ एहि ठामक लोक करैत आबि रहल अछि जहिया मानवक कण्ठमे छन्दक रूप सजल, हृदयमे भावनाक लहरि उठल, अन्त:करणमे चेतनाक ज्योति जागल आ ओहि प्रकाशमे मुदित मानवमन गाबय लागल आ ओही तालपर प्रकृति नाचि उठल तथा पुलकित-प्राण आनन्द-विभोर भऽ गेल ।

भारतवर्षक प्राचीनतम भाषा संस्कृत आ ताहि संस्कृतक आदिकाव्य रामायण, ताहि रामायणक प्रणेता वाल्मीकि आ ताहि वाल्मीकिसँ आरम्भ कऽ आइ धरिक युगमे कवि लोकनि गंगाक प्रति अपन श्रद्धा निवेदित करैत, काव्य रचना करैत अयलाह अछि । एही परम्पराक वर्तमान युगक मूर्द्धन्य कवि लोकनिक प्रथम पंक्तिमे परिगणित एक कवि थिकाह आचार्य श्रीसुरेन्द्रझा 'सुमन' जे 'अर्चना' नामक काव्यसंकलनमे 'गंगातरंगिणी' शीर्षक कविताक रचना कयने छथि । एहि कविताक अन्तिम पद थिक–

आदिकविक नहि छन्द, कालिदासक ध्वनि बन्ध न,
द्रविड़ शिशुक नहि कण्ठ, जगन्नाथक न निबन्धन,
विद्यापतिक न स्वर, न लभ्य पद्माकर सौरभ,
जननि ! सुनाओत कोना मुग्ध सुत विनय हतप्रभ ।

किन्तु विदित विश्वास ई जननी हृदयाऽवर्जना
जड़सुत क्रन्दन सुनि यथा, तथा न चतुरक कल्पना ।

उपर्युक्त पदमे कवि अपन लघुता प्रदर्शित करैत इतिहासक पृष्ठकेँ गौरवान्वित कयनिहार ओहि महाकवि लोकनिक नामोल्लेख कयलनि अछि जे लोकनि गंगाक वर्णन कऽ अपन वाणीक संग अपन लेखनीओकेँ धन्य बना चुकल छथि । एहि ठाम उपर्युक्त महाकवि लोकनिक पंक्तिक संग 'गंगा

तरंगिणी 'क पवित्तक तुलनात्मक विवेचन कऽ सुधी लोकनिकें किछु रसास्वादन करयबाक चेष्टा कयल जा रहल अछि । एहि विवेचनसँ जेना विवेच्यकवि अपना प्रयासकें जड़ सुत क्रन्दन कहलनि अछि, से हिनक विनम्रता मात्र थिकनि, तत्त्वतः ई पद सब हमरा केनको झूस नहि प्रतीत होइत अछि । ई सत्य जे ओहि वर्णन सभक चिन्तन-मननसँ कवि बहुत किछु प्रेरणा प्राप्त कयने होथि, परन्तु कतोक ठाम कल्पनामे जाहि नवीन दृष्टिएँ गंगाकें देखलनि अछि, से कविक आधुनिक दृष्टिबोधक अतुलनीय उदाहरण सिद्ध होइत अछि ।

महर्षि वाल्मीकि गंगाक सामीप्य प्राप्त करबाक अभिलाषा व्यक्त करैत लिखैत छथि–

त्वत्तीरे तरु कोटरान्तर्गतो गंगे ! विहंगो वरं
त्वन्नीरे नरकान्त-कारिणि ! वरं मत्स्योऽथवा कच्छपः ।
नैवान्यत्र मदान्ध सिन्धुरघटा संघट्ट घण्टा रणत्-
कारत्रस्त समस्त वैरिवनिता लब्धस्तुतिर्भूपतिः ।।

अर्थात् हे नरकान्तकारिणि गंगे ! अहाँक तटवर्ती तरुवरक कोटरमे पक्षी भऽ कऽ रहब नीक थिक । अहाँक जलमे माछ वा काछु भऽ रहब श्रेयस्कर थिक, किन्तु आन ठाम (अहाँ सँ दूर) मदमत्त गजराजक घण्टाध्वनिसँ भयभीत वैरी सभक वनिता द्वारा स्तुत होइत भूपतिओ वनिकऽ रहब श्रेयस्कर नहि । अपिच

उक्षा पक्षी तुरग उरगः कोऽपि वा वारणो वा
वारीणः स्यां जनन-मरण-क्लेश दुःखासहिष्णुः ।
न त्वन्यत्र प्रविरल रणत्कङ्कण क्वाणमिश्रं
वारस्त्रीभिश्चमर मरुता वीजितो भूमिपालः ।।

अर्थात् जन्म मरण जन्य दुःखकें सहन करबामे असमर्थ हम अहाँक निकट बड़द, पक्षी, घोड़ा, साप अथवा हाथी आदि किछु होइ, किन्तु अहाँसँ दूर रहि वारांगना द्वारा मन्द झकारसँ झंकृत कंकणक मधुर ध्वनिक बीच चामर डोलाओल जाइत होइक जकरा तेहन भूमिपालो नहि होइ ।

आब द्रविड़ शिशु अर्थात् जगद्गुरु शंकराचार्यक उक्ति देखू–

वरमिह नीरे कमठो मीनः, किंवा तीरे शरटः क्षीणः
अथवा श्वपचो मलिनोदीनः तव दूरे नहि नृपति कुलीनः

अर्थात् अहाँक जलमे काछु वा माछ बनि रहब नीक थीक अथवा अहाँक तटपर दुर्बल गिरगिटो बनि रहब अथवा दीन, मलिन चाण्डालो भऽ रहब नीक, किन्तु अहाँसँ दूर रहि कुलीन नृपतिओ होयब नीक नहि थीक ।

आब महाकवि कालिदासक उक्तिक अवलोकन कयल जाय । ओ लिखैत छथि–

देवि ! त्वत्पुनरांगणे स्थितिजुषां निर्मानिनां ज्ञानिनां
स्वल्पाहार निबद्ध शुद्ध वपुषां तार्णं गृहं श्रेयसे ।
नान्यत्र क्षिति मण्डलेश्वर शतैः संरक्षितो भूपतिः
प्रासादो ललना गणैरधिगतो भोगीन्द्र भोगोन्नतः ॥

अर्थात् हे देवि ! अहाँक तट–प्रांगणमे मानापमानसँ दूर ज्ञानी लोकनिक जे तृणकुटी से श्रेयस्कर, किन्तु अहाँसँ दूर शत–शत मण्डलेश्वरसँ रक्षित प्रासादमे रहैत ललना लोकनिसँ सेवित उत्तमोत्तम भोग्य पदार्थ प्राप्त कयनिहार राजराजेश्वरो होयब सुखद नहि ।

पण्डितराज जगन्नाथ एहूसँ कतेको आगाँ बढ़ल छथि । हिनका लोकनि तँ सांसारिक ऐश्वर्यकेँ तुच्छ मानलनि अछि आ पण्डितराज तँ समस्त विशाल राज्यकेँ तृणवत् मानि परित्याग कऽ गंगाक तटपर निवास करैत अमृतोसँ अधिक सुस्वादु जल पिउनिहारक जे आनन्द छनि से निर्वाण अर्थात् मोक्ष पदवी पर्यन्तक परिहास करैत सन मानैत छथि । हिनक उक्ति छनि–

अपि प्राज्यं राज्यं तृणमिव परित्यज्य सहसा
विलोलद्वानीरं तव जननि ! तीर श्रितवताम्
सुधातः स्वादीयः सलिलभरमातृप्ति पिबतां
जनानामानन्दः परिहसति निर्वाण पदवीम् ।

एहि क्रममे हमर विवेच्य महाकवि श्रीसुमनजीक गंगातरंगिणीक किछु पदक आस्वादन कयल जाय । उपर्युक्त कवि लोकनि जतय गंगाक जलमे बोहिआइत रहयवाला माछ, काछु वा तटस्थित तरुक कोटरमे पक्षी आदि किछु

होयबाक अभिलाषा व्यक्त कयने छथि ततय ई कहैत छथि–

यदि न हमर हो भाग्य जीव जे जल संचारी
अथवा तटतरु पत्र खासय टुटि अन्तहु वारी
यदि नहि संभव होय तृणक तनु सलिल विलासी
अथवा स्नातक केश लुलित भय स्रोतक वासी,
ओहि पथक हम रेणु कण बनी जाहि पथ पथिक जन
जाथि, तनिक पद लागि कहुँ जाय मिली तट बालु कण।

एहिमे तँ गंगा स्नान करबाक हेतु जाइत पथिकक हृदयमे गंगाक प्रति भक्ति ओ श्रद्धा छनि, ओ पुण्यात्मा थिकाह, एहन पुण्यात्माक पैरहुमे लागि गंगा तटक बालु कणमे मिश्रित होयबाक आकांक्षा व्यक्त भेल अछि, किन्तु एहूसँ बढ़ि जाहि भावनाक अभिव्यक्ति भेल अछि, से निम्नांकित पदमे देखल जाय सकैत अछि–

कण्टकमय तटवास हेतु प्रासादहु तेजब,
छोड़ि अरगजा लेपन गंगा पाँक अङेजब,
नहि व्यवसायी पोत सागरक वक्ष बिहारी,
काठ बनब अछि इष्ट जाह्नवी जल–संचारी,
नहि कुंकुम कश्मीरजा युवति कपोल पराग रुचि
अंग–वंग–मगधक पशुक खुर–रज बनि लहि स्रोत शुचि।

एहिमे पुण्यात्मा पथिकक पैरमे लागि जयबाक स्थिति नहि अछि, अंग, वंग, मगध जाहि बाटेँ गंगा प्रवहमान छथि, ताहि तटक रहनिहार जे पशु अछि, से अपन पियास मेटयबाक हेतु गंगामे प्रवेश करत, कवि ओकरो खुरमे लागि, ओहि स्रोत धरि पहुँचि, अपन जीवनकेँ सार्थक करबाक आकुलता व्यक्त कयने छथि। एहिमे एक विशेषता आरो द्रष्टव्य अछि। एक दिस कश्मीरजा युवतीक कपोलक कोमलताक उपेक्षा आ पशुक खुरक कठोरताक अपेक्षा।

एहि क्रममे एक पद आरो मननीय अछि, से थिक–

नहि कस्तूरी तिलक भाल गंगौट लम्य जत,
स्वर्णक कण अछि तुच्छ, बालु कण हो यदि उपगत,

अमृत-कलश ओंघड़ाय देब गंगाम्बु चुलुक भरि,
पंक अंग यदि संग, न चन्दन लेपब उपकरि,
गंगा स्रोतक छाड़निक यदि हो सम्प्रति बिन्दु भरि
चित न चढ़त कथमपि हमर क्षीरक संभृत सिन्धु धरि।

अन्यान्य कवि जतय गंगाक तट ओ प्रवाह एवं गंगाजलक महिमा दर्शौने छथि ततय श्रीसुमनजी बालुकण, पाँक ओ गंगौट आदिकें के कहय, गंगाक धारासँ बहरायल जे छाड़नि, तकरो समक्ष क्षीरसागरकें तुच्छ कहि, हिनक महत्त्वकें उच्चतम शिखरपर पहुँचा देलनि अछि।

आब दोसर प्रसंगक वैशिष्ट्यपर दृष्टिनिक्षेप कयल जाय। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि- "अभिनवविसवल्ली पादपद्मस्य विष्णोः मदन मथन मौलेर्मालती पुष्पमाला", जगदगुरु शंकराचार्य- "आदावादि पितामहस्य निगम व्यापार पात्रे जलं, पश्चात्पन्नगशायिनो भगवतः पादोदकं पावनम्", पण्डितराज जगन्नाथ- 'समुत्पत्तिः पद्मारमण पद्मामल नखात्, मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति- 'हरि-पद-कमल गलित मधु सोदर' तथाा 'ब्रह्म कमण्डलु वाससुवासिनि' एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र- 'श्रीहरिपदनख चन्द्रकान्तमणि द्रवित सुधारस' कहि कऽ महत्त्व प्रतिपादित कयने छथि, जाहिसँ ई प्रतीत होइत अछि जे गंगाक महत्त्व एहि हेतु छनि जे ई ब्रह्माक कमण्डलुमे छथि, भगवान विष्णुक चरणसँ बहराइलि छथि, भगवान शंकरक जटाजूटमे समाइलि छथि, तें एतेक पवित्र छथि, किन्तु श्रीसुमनजीक कल्पनाक प्रौढ़ता निम्नांकित पदमे कोना निखरि उठल छनि, तकर अनुशीलन कयल जाय।

गिरिजा वामहि अंग, अहाँ शशिकलहु उपर चढ़ि
की न बनलि छी प्रिया जगत्पति-पतिक अधिक बढ़ि,
अहिँक नीरबल नारायण पद नीरज पावन,
करथि अहिंक संचय हित विधिहु कमण्डलु धारण,
अहँ त्रिदेव सहचारिणी त्रिपथ-वाहिनी त्रिदश-धुनि !
त्रिविध-ताप-संहार हित, होउ सदय जनपर जननि !

पार्वती महादेवक प्राणाधिक प्रिया रहथुन, किन्तु हुनक स्थान बाम अंगमे छनि आ गंगाकें शशिकलहुसँ ऊपर स्थान देने छथिन। भगवान

विष्णुक चरण पूज्य ओ पावन मानल जाइत छनि, से धन्य गंगा जे चरणकेँ पखारि पूजनीय बना देलथिन । सम्पूर्ण सृष्टिक विधाता ब्रह्मा अपनाकेँ पवित्र रखबाक हेतु सतत कमण्डलुमे जोगाकऽ रखने रहैत छथि । एतावता अहाँ तेहन महिमामयी छी जे संसारक उत्पत्ति-स्थिति-संहारक जे कारण छथि, सेहो लोकनि अहाँक सामीप्य पाबि अपनाकेँ धन्य मानैत छथि । एहिमे 'त्रि' पदक प्रयोग कतेक चमत्कारक अछि से मननीय ।

ब्रजभाषाक यशस्वी कवि पद्माकर जे चमत्कार देखौने छथि, तकर रसास्वादन कयल जाय । ओ कहैत छथि–

लोचन असम, अंग भसम चिता को लाइ
तीनों लोक नायक सौं कैसे कै ठहरतो
कहै पद्माकर विलोक इमि ढंग जाके
वेदहू पुरान गान कैसे अनुसरतो
बाँधे जटाजूट बैठि परवत कूट माहि
महाकाल कूट कहौ कैसे कै ठहरतो
पीबै तित भंगै, रहै प्रेतनके संगै, ऐसे
पूछतो को नंगै जो न गंगे शीश धरतो ?

एक दोसर पदमे ओ कहैत छथि–

सूखि जाती सिन्धु बड़बानल की जारन सौं
जो न गंगाधार ह्वै हजार धार मिलती

एही भावकेँ श्रीसुमनजी केहन मौलिकताक संग अभिव्यक्त कयलनि अछि से निम्नांकित पदमे देखबाक योग्य अछि । आ कहैत छथि–

शिव की सकितथि विष पचाय यदि लितथि न माथे
जैतथि सिन्धु सुखाय वाड़वानलहिक हाथे ।
की न ठिठुरि हिमवान मरण-शय्यागत रहितथि
यदि न अमरधुनि ! अहँक अमृत-रस भाग्येँ पबितथि
शत-शत ज्वालामुखी-मुख जरि जैतथि भू दग्ध भय,
यदि न जुड़बितनि सुधामयि ! अहँक सुधाधिक विमल पय

शिवकेँ कालकूट घोंटि पचा लेबाक सामर्थ्य देनिहारि तथा समुद्रकेँ बड़वानलक प्रकोपसँ बचा लेनिहारि तँ पद्माकर सेहो गंगाकेँ कहने छथिन जाहिमे भाव-साम्य अछि, किन्तु हिमालयकेँ ठिठुरबासँ तथा पृथ्वीकेँ ज्वालामुखीक मुखमे पड़ि दग्ध होयबासँ रक्षा कयनिहार गंगाकेँ कहि श्रीसुमनजी अपन मौलिक उद्भावना व्यक्त कयने छथि। पण्डितराज जगन्नाथ कहैत छथि–

स्खलन्ती स्वर्लोकादवनितल शोकापहृतये
जटाजूटग्रन्थो यदसि विनिबद्धा पुरभिदा
अये निर्लोभानामपि मनसि लोभं जनयतां
गुणानामेवायं तव जननि ! दोषः परिणतः।

अर्थात् पृथ्वीतलक शोक हरण करबाक हेतु स्वर्गसँ उतरैत अहाँकेँ भगवान शंकर अपना जटाजूटमे बान्हि कऽ राखि लेलनि। हे जननि ! जे पूर्णकाम छथि, जनिका लोकनिक हृदयमे कोनो वस्तुक लोभ नहि छनि, तनिको लोकनिक हृदयमे अहाँक गुण लोभ उत्पन्न कऽ दैत छनि से गुणे दोष रूपमे परिणत भऽ गेल अछि।

श्रीसुमनजी देवाधिदेव महादेव पर्यन्तक हृदयमे लोभ उत्पन्न कयनिहारि ई गंगा स्वयं केहन निर्लोभ छथि तकर वर्णन निम्नांकित पदमे कोन चतुरतासँ कयने छथि तकर रसास्वादन कयल जाय–

स्वर्ग अर्गलां तोड़ि, गिरिक रोधन नहि मानल,
शिवशिर वासक लोभ लेश मनमे नहि आनल,
शत-शत प्रान्तर पार, सहस कोसक कय धावन,
अन्त क्लान्त मिलि क्षारवारि, कयलहुँ भव पावन,
शतमुख विनिपातक कथा कहौ, न खेदक लेश अछि,
जगत जीव हित साधना एक मात्र उद्देश अछि।

देवाधिदेवक शिखरपर वास करब त्रिभुवनमे सर्वोच्च पद कहल जा सकैत अछि। साधारणो पदक लोभ लोकके कर्त्तव्यविमुख कऽ दैत छैक, तेँ गंगाक हृदयमे एहन उच्च पदक लोभ होयबैक चाहियनि, परन्तु ई तँ मर्त्यलोकक शोककेँ दूर करबाक पवित्र परोपकारक भावनासँ स्वर्ग पर्यन्तक परित्याग कऽ

चललि छलीह । एहि हेतु भर्तृहरि ''विवेक भ्रष्टानां भवति विनिपात: शतमुख:'' कहि गंगाकेँ लांछितो कयलथिन, हजारो कोस दोड़ैत आबि, अन्तमे क्लान्त भेलि समुद्रक खार जलमे मिलि अपन अस्तित्व पर्यन्त विलीन कऽ देलनि तथापि जगत जीव हित साधना जे एक मात्र उद्देश्य छलनि, तकर विनु पूर्त्ति कयने नहि रहलीह । तेँ आचार्य रमानाथझा कहने छथि जे हजारो वर्षक बाद भर्तृहरिकेँ उत्तर देनिहार यैह श्रीसुमनजी भेलाह अछि । एहनास्थितिमे शिवक जटामे वास करबाक लोभ गंगाकेँ कोना कर्तव्यसँ विचलित कऽ सकैत छलनि !

पण्डितराज जगन्नाथ गंगाक प्रवाहकेँ अविद्याद्रुमदलन दीक्षागुरु कहने छथिन– ''अपिद्रागाविद्याद्रुमदलन दीक्षागुरुरिह प्रवाहस्ते'' तँ श्रीसुमनजी गंगाकेँ विश्वविद्यालयेक रूपमे चित्रित कऽ देलनि । ई विश्वविद्यालय भगीरथक श्रमसँ संचालित तथा भगवान विष्णुक चरणसँ उद्घाटित भेल । अन्य विश्वविद्यालयमे प्रवेश हेतु प्रवेशिका परीक्षोत्तीर्ण होयबाक प्रमाणपत्र अपेक्षित होइछ, एतय ताहि सभक कोनो बाधा नहि । एहिमे वयसक सीमा सेहो किछु नहि । अन्यत्र न्यूनतम चारि वर्ष पढ़ू तखन जा कऽ स्नातक होयब, एतय क्षण मात्रमे । अगणित प्राध्यापक सतत प्रस्तुत । शोध, अनुसन्धान आदि कतेक भेल से गनल नहि जा सकैछ । आर्य लोकनि युगयुगसँ तत्त्वचिन्तन करैत रहलाह अछि । अत: ई विश्वविद्यालय सबहुमे सबसँ उत्कृष्ट अछि । पदक अवलोकन कयल जाय–

परम पुरातन भगीरथक श्रमसँ संचालित,
विश्व अविद्या हरण हेतु हरिपद उद्घाटित,
जत निर्बाध प्रवेश, जलक कण-कण अध्यापक,
नर-नारी, शिशु-युवा-जीर्ण पलभरिमे स्नातक,
युग-युगसँ जत आर्यजन तत्त्व-चयन कयलनि परम,
करथु अविद्या दूर से विश्वक विद्यालय चरम ।

कतिपय स्थल तँ एहन अछि जकर कल्पनो प्राचीन कवि लोकनि नहि कऽ सकैत छलाह । श्रीसुमनजीक आधुनिक दृष्टिबोध तखन प्रत्यक्ष भऽ उठैत अछि जखन सुधारिका तथा मुक्ति साम्य सन्देशदायिनी क्रान्तिकारिणीक

रूपमे कयल वर्णन पढ़ैत छी। समाज-सुधारक लोकनि समाजसँ अस्पृश्यताकेँ हटाय, मन्दिरमे हरिजनहुक प्रवेशक हेतु आन्दोलन करैत रहलाह अछि, किन्तु श्रीसुमनजीक दृष्टिएँ समाज-सुधारिकेक रूपमे गंगा एहि भूतलपर अवतीर्ण भेलीह। ई सर्वविदित अछि जे गंगाजल नहि छुआइत अछि। हिन्दू मात्र समाने श्रद्धासँ गंगास्नान करय जाइत अछि। ओहि ठाम ककरो क्यो जाति नहि पूछैत छैक। एहि सत्यक चित्रण निम्नांकित पदमे कयल गेल अछि—

द्विज-अन्त्यजकेँ एक घाट जल अहाँ पियौलहुँ,
दलित-दलहुकेँ पानि परसि हरिपद पहुँचौलहुँ,
स्वर्ग मन्दिरक रुद्ध अर्गला खोलि सहज मति,
अघी अन्त्यजक सुलभ कयल जननी दर्शन गति,
अहँ सुधारिका धरणिमे प्रथम-प्रथम अयलहुँ जखन
यम-समाजमे गेल मचि रिक्त-रक्त हलचल तखन।

एहि पदमे 'पानि परसि' शब्दमे श्लेष द्रष्टव्य अछि!

यम समाजमे हलचल मचल तकर केहन मनोरम वर्णन कविवर पद्माकर करैत छथि तकरो स्वादल जाय। ओ लिखैत छथि—

गंगा के चरित्र लखि भाष्यो यमराज यह
एरे चित्रगुप्त! मेरे हुकुममे कान दे;
कहै पद्माकर नरक सब मूँदि कर
मूँदि दरबाजेनको तजि यह थान दे,
देखु यह देवनदी कीन्हे सब देव याते
दूतन बुलाइ कै विदा के वेगि पान दे,
फारि डारु फरद, न राखु रोजनामा कहूँ
खाता खत जान दे, बही को वही जान दे।

अर्थात् नरक विभागेकेँ समाप्त कऽ देल जाय।

आइ साम्यवादक ढोल पिटनिहार अपने समस्त सुख-सुविधाक बीच जीवन-यावन करैत दीन-दलितक उद्धारक नारा दैत छथि जनिकर कथनी आ

करनीमे कतहु एक आरि भेट नहि, किन्तु ई गंगा संसारमे साम्य स्थापित करैत समाजमे तेहन क्रान्ति आनि देलनि तकर चित्रण देखल जाय–

गिरिक शिखरसँ सागर धरि एकहि प्रवाहसँ,
मुक्ति–साम्य सन्देश देल स्वच्छन्द नादसँ,
स्वर्ग राज्यमे भेद न राखल, नृपति रंकमे
भक्तिक श्रममे, ज्ञानक पूजीपतिक अंकमे
मुक्ति–तन्त्र जन–सुगम कय, दण्डधरक बल लय निखिल,
क्रान्तिकारिणी कयल अहँ भव–बन्दी बन्धन शिथिल ।

एहि भूतलपर सर्वोच्च हिमालय, गंगा ताहि पर्वतसँ उतरैत छथि आ निम्नतम तल समुद्र, ताहिमे खसैत छथि । एहि मध्य निरन्तर प्रवहमान हिनक धारामे प्रत्येक अवगाहन कयनिहारक पापकेँ प्रक्षालित करैत रहैत छनि । यदि हिमालय समाजक उच्च वर्गक प्रतीक थिकाह तँ समुद्र निम्न वर्गक प्रतीक, किन्तु गंगाक दृष्टिमे दूनू समान । ई गंगा स्वर्गक हेतु जेहने पावन तेहने मर्त्यलोकक हेतु शुचितमा । एहि गंगामे अवगाहन कयनिहार राजा होथु वा भिखमंगा, फलप्राप्तिमे दूनू समान भागी । ज्ञानी लोकनि ज्ञानक पूजी रखनिहार पूजीपति थिकाह तँ भक्त लोकनि श्रम कयनिहार श्रमिक । गंगाक हेतु दूनूमे कोनो अन्तर नहि । एहि प्रकारेँ सभक हेतु मुक्तिक द्वारकेँ फोलि देनिहारि गंगा वास्तवमे क्रान्तिकारिणी ओ असली साम्यवादिनी थिकीह ।

एहि रूपेँ महर्षि वाल्मीकिसँ चल अबैत जे गंगा वर्णनक परम्परा, ताहिमे श्रीसुमनजी जाहि महाकवि लोकनिक नामोल्लेख करैत अपन रचनाकेँ जड़ सुत कन्दन कहलनि अछि ताहिपर तत्वतः विचार कयला उत्तर हमरा दृष्टिमे उनैस नहि, प्रत्युत बीसे बुझि पड़ैत छथि । पण्डितराजक उक्ति– 'समृद्धं सौभाग्यं सकल वसुधायाः''मे अतिरंजकता अछि आ 'भारत–भूमिक भाल बीच भाग्यक शुभरेखा'मे यथार्थता । के एहन भक्त होयत जे गंगातरंगिणी कविता पढ़ि भाव–विभोर नहि भऽ जायत ? पद–पदसँ जेना भक्ति–प्रवाह तरंगित होइत हो तेहन प्रतीत होइत अछि ।



उपन्यास : साप मरय, लाठी नहि टूटय

महाकाव्य, नाटक, उपन्यास एहि तीनूक रचना साधारणतः चरित्रक आधार पर होइत छैक । ओ चरित्र देवताक होइनि, मनुष्यक होइक अथवा राक्षसक, परन्तु तीनूक संरचनामे परस्पर बहुत अन्तर होइत छैक ।

महाकाव्य एक अथवा एकसँ अधिको चरित्रक चित्रणसँ आरम्भ होइत अछि, परन्तु प्रधानता चरित्रक रहितहु व्यापकता वर्णनक भऽ जाइत छैक । जेना कोनो उत्सवक हेतु मण्डपक निर्माण करैत छी तँ ओकरा आकर्षक बनयबाक हेतु केराक थम्ह गाड़ैत छी, पल्लवकेँ लटकयबा लेल बन्धन दैत छिऐक डोरीमे, तेँ बान्हलो जाइछ डोरिए, परन्तु प्रधानता भऽ जाइत छैक पल्लवक । चरित्र थीक डोरी जाहिमे वर्णन रूपी पल्लव लटकायब महाकविक अभिप्रेत रहैत छनि । जेना महाकवि कालिदास यक्षसँ भिन्नो ककरो नायक बनाय मेघदूतक रचना कऽ सकैत छलाह । एक प्रेमी एक प्रेमिकाक विरहमे की सब करैत अछि, से यक्षसँ अतिरिक्तोकेँ नायक बनाय कऽ सकैत छलाह, मुदा अभिप्रेत छनि अलकापुरीक वर्णन, बाटक बीचमे पड़ैत उज्जैन, उज्जैन स्थित महाकाल आदिक वर्णन से नहि भऽ पबितनि । तेँ महाकाव्य खण्ड-काव्य आदिमे वर्णनक व्यापकता भऽ जाइत छैक ।

उपन्यासमे अनेक चरित्रकेँ लै सुन्दर कथानकक रचना करब उपन्यासकारक उद्देश्य रहैत छनि, ओहिमे सफलताक हेतु चरित्रक विश्लेषण पूर्णरूपेँ एहन कयल जाइत छैक जाहिसँ पाठकक हृदयपर ओकर प्रभाव पड़ैक । प्रधानतः उपन्यासक प्रति आकर्षण कथानकक औत्सुक्य पूर्ण चमत्कारिता पर रहैत छैक । प्राकृतिक चित्रण वर्णन उपन्यासकेँ बोझिल बनाय दैत छैक ।

ओना कतोक समीक्षक उपन्यासकेँ गद्यात्मक महाकाव्ये मानैत छथि ।

नाटक– नाटक काव्य ओ उपन्यासक बीचक वस्तु होइत अछि । ओहिमे कथानकक विचित्रता, चरित्रक संगठन एवं कवित्व शक्तिक परिचय तीनू देल जाय सकैत अछि, किन्तु नाटकक हेतु बहुत प्रकारक नियम–उपनियम आदि छैक जाहिमे नाटककारकेँ बद्ध रहय पड़ैत छनि, जकर उल्लेख करब विषयान्तर होयत ।

उपन्यास की थीक, –एहि प्रसंग अनेक विद्वान अपना–अपना मतानुसार परिभाषा कहि गेल छथि, परन्तु बात ई अछि जे जाहि वस्तुक परिभाषा जतेक सरल होइत छैक ततेक सरल ओ वस्तु नहि होइत अछि तथा जे वस्तु जतेक सरल तकर परिभाषा ततबे कठिन । कविताक परिभाषा आइ धरि जहिना निश्चित नहि भेल अछि; जतेक आचार्य, ततेक मत, ककरो मतसँ ककरो पूर्ण सामञ्जस्य नहि । उपन्यासोक प्रसंग ई कहब कोनो अत्युक्ति नहि कहल जायत । संस्कृतमे आख्यायिका कहल जाइत छैक । मैथिलीमे आख्यायिका सर्वप्रथम म.म. परमेश्वरझा लिखलनि– सीमन्तिनी आख्यायिका । संस्कृतमे वाणरचित 'कादम्बिनी' एही विधाक ग्रन्थ थीक, तेँ मराठीमे उपन्यासकेँ कादम्बिनीए कहल जाइत छैक । हमरा लोकनि जकरा खीरा कहैत छिऐक, सोतिपुरामे तकरे सोहाँस कहल जाइत छैक । नामक कारणेँ वस्तु भिन्न नहि भऽ जाइत छैक । अस्तु ।

उपन्यास सम्राट् हिन्दी संसारक ख्यातनामा उपन्यासकार प्रेमचन्दक मतानुसार- उपन्यास मानव–चरित्रक एक एहन चित्र थीक जकरा देखलासँ लोक अपना अन्तःकरणकेँ टकटोरि सकैत अछि । मानव–चरित्र पर प्रकाश देब एवं ओकर रहस्यक उद्‌घाटन करबे उपन्यासक मूल तत्त्व थिकैक ।''

जहिना पांचभौतिक शरीर सभक समान रहितहु स्वरूपमे भिन्नता रहैत छैक, तहिना चरित्रोमे । एही चरित्र सम्बन्धी समता ओ भिन्नता–अभिन्नत्वमे भिन्नत्व आ भिन्नत्वमे अभिन्नत्व देखयबे उपन्यासक मुख्य उद्देश्य होइत छैक ।

एहिठाम प्रश्न उठि सकैत अछि जे उपन्यासकारकेँ कोनो चरित्रक सम्यक् अध्ययन कऽ ओकरा यथावत् पाठकक समक्ष राखि देब कर्त्तव्य होइत छनि अथवा अपना उद्देश्यक पूर्त्ति हेतु काटि–छाँटि, अपन मनोनुकूल बनाय

पाठकक समक्ष उपस्थित करथि ? एहि ठाम उपन्यासक सामान्य दू टा भेद भऽ जाइत अछि– आदर्शवादी तथा यथार्थवादी ।

यथार्थवादीकेँ एकर प्रयोजन नहि रहैत छनि जे सच्चरित्रताक परिणाम जँ अधलाह होयतैक तँ सर्वसाधारण पाठकक चित्त सच्चरित्रतोक प्रति आकृष्ट नहि होयतैक, अथवा दुश्चरित्रताक परिणम नीक होयतैक तँ अर्थक लोभमे दुश्चरित्रताक प्रति बेसी लोकक प्रवृत्ति बढ़तैक, जकर प्रत्यक्ष उदाहरण समाजमे पसरल दुराचार प्रत्यक्षे अछि । परन्तु यथार्थवादीकेँ एहि सबसँ कोनो मतलब नहि रहैत छनि । ओ तँ अपन चरित्र–नायकक दुर्बलताक चित्रण कऽ अपन पीठ अपने ठोकि प्रसन्न भऽ जाइत छथि । प्रकृतिओक माया विचित्र छैक । एहन समाजमे देखल जाइत अछि जे केहन–केहन सदाचारी धर्मात्माक जीवन कष्टमय बितलनि अछि आ केहन–केहन दुराचारी, पापीक जीवन सुखमय बितलैक अछि, बीति रहल छैक । यथार्थवादी अपन सिद्धान्तक प्रति प्रतिबद्ध रहैत छथि । टोकबनि तँ कहताह साहित्य तँ समाजक दर्पण थिकैक, जेहन समाज रहतैक तेहने ने प्रतिबिम्बो औतैक ! मुदा प्रतिविम्बमे वाम दहिन भऽ जाइत छैक आ दहिन वाम भऽ जाइत छैक अर्थात् अहाँकेँ दच्छिन मुहेँ ठाढ़ भऽ अपन प्रतिविम्ब उत्तरमुहेँ ठाढ़ भेटत । सफल साहित्यकार एहि मर्मकेँ ध्यानमे राखि चित्रण करबामे प्रवृत्त होइत छथि ।

समान्यतः संसारक प्रवृत्ति अधोमुखी होइत छैक, दुर्बल चरित्रकेँ आदर्श बनायब कठिन छैक, किन्तु आदर्श चरित्रमे दुर्बलता ताकि लेब सहज होइत छैक । ई स्वयं सिद्ध अछि जे संसारक प्रत्येक वस्तुमे गुणक संग किछु ने किछु दोषो रहिते छैक ।

यद्यपि यथार्थवादी सामाजिक विभिन्न प्रकारक प्रदूषण दिस समाजक ध्यान आकृष्ट करैत छथिन अवश्य, किन्तु सामजक क्रूरता, पैशाचिकता, विषमता, दुर्बलता आदिक चित्रणकेँ ततेक तिक्ख–चोख रूपमे अंकित करैत छथि जे तकरा देखला–पढ़ला उत्तर मानव–चरित्रक प्रति एक प्रकारक घृणाक भाव मनमे उत्पन्न होइत छैक, मानव–चरित्रपर विश्वास उठि जाइत छैक । भविष्यक गर्भमे अन्धकारे–अन्धकार, नैराश्ये–नैराश्य दृष्टिगोचर होअय लगैत छैक । एकर परिष्कार करबाक स्थानपर समाज हतोत्साहे होइत अछि । कतहु–कतहु तँ चित्रण करैत–करैत अत्युक्तिक बिहाड़िमे उड़िया जाइत छथि ।

जेहो कम मात्रामे पाओल जाइत अछि तकरो सीमाक पार धकेलि देबामे अपन बहादुरी मानैत छथि । मैथिली जगतमे ई प्रवृत्ति विशेषत: कथा साहित्यमे पर्याप्त रूपमे प्राप्त होइत अछि ।

आदर्शवादी जेठक रौदायल बटोहीक हेतु पाकड़िक गाछक समान होइत छथि, जाहि तर गेलासँ मार्गजन्य श्रमसँ श्रान्तकेँ शीतलता प्राप्त होइत छैक । सांसारिक दूषित वातावरणसँ अकछि कऽ जखन हम शान्ति चाहैत छी तखन आदर्शवादी एक एहन अपूर्व चरित्रसँ परिचय करबैत छथि– जे स्वार्थ एवं वासना, ईर्ष्या एवं द्वेष, जन्म-मरण जन्य हर्ष, शोक आदिसँ दूर रहैत अछि– जकरा पढ़ि कऽ किछु कालक हेतु मनक उद्विग्नता शान्त भऽ जाइत अछि । यदि यथार्थवादी आँखिक पट्टी फोलि दैत छथि तँ आदर्शवादी एक एहन मनोरम दृश्य देखबैत छथि जाहिसँ समस्याक समाधानक मार्ग आभासित भऽ उठैत अछि । तखन आदर्शो लौकिक होयबाक चाही, अलौकिक नहि जकर अनुगमन मनुष्य कैए नहि सकय ।

अत: उत्तम उपन्यास ओ थीक– जाहिमे आदर्शोन्मुख यथार्थक चित्रण भऽ सकय, साप मरय, मुदा लाठी टूटय नहि ।



प्रसंग : ऋतु-प्रियाक

सांसारिक कार्य व्यापारकेँ अबाध गतिएँ संचालित रहबामे ऋतुचक्रक बहुत पैघ योगदान छैक । कहल जाइत छैक जे सृष्टिक आरम्भमे सर्वप्रथम एहि पृथ्वी पर वनस्पतिक उत्पत्ति भेलैक, जकर असंख्य प्रजाति छैक प्राण वनस्पतिओमे छैक, किन्तु ई सब स्थावर अछि । एहि उत्पत्तिक कारण थिकैक प्रकृति । अपन सन्ततिक हेतु जेना मायक हृदयमे ममता ओ ओकरा जीवन धारणक यावन्तो आवश्यकताक साधन जुटयबाक चिन्ता रहैत छैक तहिना प्रकृति सेहो एहि सृष्टिक हेतु ममता आ चिन्ता रखने रहैत छैक । वनस्पतिक दोसर नाम थिकैक 'पादप' । वनस्पति जीवन धारण लै पैर अर्थात् जड़ि, जाहि बलेँ ओ ठाढ़ रहैत अछि ताही बाटेँ पृथ्वीसँ भोजन ग्रहण करैत अछि । किन्तु जे जंगम अछि– कीट-पतंग, पशु-पक्षी, नर-वानर ताहि सबकेँ भोजन चाहिऐक । जंगम प्राणी सभक बुभुक्षा शान्ति वनस्पतिएसँ होइत छैक । अन्न, फल, कन्द-मूल सब वस्तु वनस्पतिए दैत छैक ।

तेँ प्रकृति पहिने जंगम प्राणीक हेतु भोजन व्यवस्था कऽ लेलक, तत्पश्चात जंगमक सृष्टि कयलक । आइ भनेँ मनुष्य वैज्ञानिक रीतिए वर्णसंकर बीज बनाय सब ऋतुमे सब वस्तु उपजाय लेअओ, परन्तु प्रकृति भिन्न-भिन्न अन्न-फल आदिक हेतु भिन्न-भिन्न ऋतु निर्धारित कयने अछि । तेँ भदै, अगहनी, चैती तीनू फसिल कृषक वर्ग उपजबैत अछि ।

संसारक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेदकेँ कहल जाइत छैक । वैदिके युगसँ अभीष्ट लक्ष्य प्राप्तिक हेतु मन्त्र द्रष्टा ऋषि लोकनि उपासना करय लगलाह तँ कामना करय लगलाह–

पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः

शतम्प्रव्रवामशरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात्

एहि मन्त्रमे दिन, मास, वर्ष आदिक नाम नहि लऽ ऋतुएक नाम लेलनि। बुझि पड़ैछ ओही कालसँ ऋतु दिस लोकक ध्यान आकृष्ट भेल होयतैक आ साहित्यकार लोकनि प्रतिक्षण परिवर्त्तनशील प्रकृतिक छटाकेँ अपना-अपना दृष्टिएँ देखैत ऋतु वर्णनमे प्रवृत्त भेल होयताह। महाकाव्यमे तँ ऋतु वर्णन आवश्यक अंग मानल गेलैक अछि। कहल जाइत छैक जे कविकुल गुरु कालिदासक पहिल कृति ऋतु-संहारे थिकनि। एहिमे छबो ऋतुक वर्णन छैक जे 'ग्रीष्म'सँ आरम्भ भऽ 'वसन्त' पर समाप्त भेल छैक। जतेक महाकाव्य अछि सबमे कवि अपना-अपना ढंगेँ ऋतुक वर्णन कयने छथि। कहबाक आशय ई जे ऋतुवर्णन एक अतिशय पुरान परम्परा थीक। आजुक एहि वैज्ञानिक युगमे एहन सड़ल पुरान विषय वस्तुपर कलम उठायब पिष्ट पेषण मात्र होयत जाहिमे पाठककेँ कोनो रुचि आब नहि रहि गेलैक अछि। तथापि हमर मन्तव्य अछि जे जीवन धारण करबाक हेतु चिरपरिचित सृष्टिक आदिएसँ मनुष्यक चतुर्दिक प्रकृतिक कटु-मधु रूप आवरण आच्छादित रहलैक अछि। अतः जहिया कहियो जखन कखनहु मानवक कण्ठसँ लय युक्त गान प्रस्फुटित होमय लगलैक, हृदयक भाव स्वरमय भऽ बहराय लगलैक तँ ओहिमे प्रकृतिक वन्दना स्वतः अपन स्थान बनाय लेलक।

वैदिक ऋचाक उद्गाता ऋषि लोकनि जखन उषा सुन्दरीक अनुपम सौन्दर्यसँ भावविभोर भऽ उठलाह तँ ओकर चित्रण विभिन्न रूपमे करब आरम्भ कयलनि। प्रकृतिकेँ कखनहु कुमारि कन्या, कखनहु गृहिणी, कखनहु माता आ कखनहु प्रतिदिनुक घटमान घटनाक रूपमे चित्रित करैत रहलाह। वर्त्तमान युगमे आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' तँ अपन 'साओन-भादव' नामक ऋतु काव्यमे एकमात्र वर्षा ऋतुक वर्णन करैत नवो रसक भेद-उपभेद केँ समेटैत अभूतपूर्व प्रतिभाक परिचय दैत, हमरा जनैत विश्व साहित्यकेँ एक एहन बेजोड़ रचना दऽ गेलाह जकर तुलना करबाक हेतु दोसर कोनो भाषा साहित्यमे प्राप्त होयब दुर्लभ अछि। मैथिली भाषा साहित्यमे एहन चेष्टा कयनिहार प० जीवनाथझा 'विद्याभूषण' अपन 'आसिन-कातिक' नामक पुस्तकमे कयने छथि। चेष्टो करबाक साहस प्रशंसनीय मानल जाय सकैछ।

मानव समुदाय सदासँ अपना हृदयमे प्रकृतिक प्रति श्रद्धा, भक्ति, ममता, स्नेहभावक संग भय सेहो संयोगि कऽ रखैत आयल अछि । अतः सहृदय संवेद्य काव्यमे प्रकृतिक विभिन्न अंग आ परिस्थितिकेँ उपादान रूपमे आचार्य लोकनि स्थान दैत रहलथिन । यैह कारण थीक जे संस्कृत महाकाव्यमे प्रकृति-चित्रण आवश्यक तत्त्व मानल गेल । संस्कृत नाटककार तथा महाकवि लोकनि सतत प्रकृतिसँ सम्बन्ध जोड़ने रहलाह अछि । प्रकृतिक सहृदयतापूर्ण चित्रणमे कविकुलगुरु कालिदास अद्वितीय छथि । शकुन्तला नाटकमे शकुन्तलाक तपोवनसँ बिदा कालमे तपोवनक लता-वल्ली सेहो वियोग जन्य दुःखसँ पत्र निपातक व्याजेँ अश्रुपात कऽ रहल छल, पशु-पक्षी पर्यन्त **उद्गलित दर्भकवलामृग्यः, परित्यक्त नर्त्तना मयूरी अपसृत पाण्डुपत्राः मुञ्चन्त्यश्रूणीव लताः** ।

परवर्त्ती कालक साहित्यकारमे एहि प्रकारक दृष्टि अल्पे देखना जाइत अछि । सामान्यतः संयोग आ विप्रलम्भ शृंगारक उद्दीपनक रूपमे प्रकृति-चित्रण रूढ़ जकाँ भऽ गेल । चन्द्रमा आ मलयानिल, वसन्त आ वर्षा- एक ऋतुराज तँ दोसर ऋतुरानी- प्रेमी-प्रेमिकाक सम्मिलन आकांक्षाकेँ उत्कट रूपसँ उद्दीप्त कऽ दैछ । अतः आतुर भावनाक चित्रणमे प्रकृति बड़ सहायक रहलैक अछि । ओकर अतुलनीय सौन्दर्य स्वतन्त्र काव्यक विषय भऽ सकैत छैक, ई दृष्टिए गौण भऽ गेलैक । यद्यपि मुक्तक रूपमे, ऋतुवर्णनक रूपमे प्रकृति-चित्रण होइत रहलैक अवश्य, कालिदासक ऋतुसंहार एही प्रकारक काव्य थिकनि । आजुक तथा कथित कवि लोकनिकेँ तँ ऋतु वर्णनक नामे सुनि दुर्गन्ध लागऽ लगैत छनि । जँ कदाच कतहुसँ कानमे पड़ि जाइत छनि तँ जी ओकिआय लगैत छनि ।

यदि कवि लोकनि समय-प्रसिद्धि तथा रुढ़िए पर आश्रित नहि रहि, पर्यवेक्षणकेँ अधिक सजग राखि एहन काव्यक रचना करितथि तँ ओकर आकर्षण किछु विशिष्ट होइतैक । से भेलैक नहि । छिटफुट नवीनताक समावेश रहितो अधिक ठाम वर्णनमे काव्यगत रूढ़िएक परिपालन होइत रहलैक । वस्तुतः प्रकृति थिकैके पर्यवेक्षणक वस्तु, तेँ पर्यवेक्षण बिना प्रकृति-चित्रणमे मौलिकता आबिए नहि सकैत छैक । महाकाव्यमे सन्ध्या, रजनी, प्रातः काल, चन्द्र-सूर्य-नक्षत्र, प्रभृतिक संग विभिन्न प्रकारक चित्रणक विधान छैक । विशेषतः भिन्न-भिन्न ऋतुक वर्णन कोनो-ने कोनो व्याजेँ कयले जाइत रहलैक अछि ।

भारतीय ज्योतिष शास्त्रमे ऋतुक संख्या छओ कहल गेलैक अछि– ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर, वसन्त । सूर्यक चारू कात भ्रमण करैत पृथ्वीसँ सूर्यक विभिन्न दूरी होयबाक प्रभावसँ परिवर्त्तन होइत रहैत छैक । ग्रीष्मक समाप्ति होइत छैक आकाशमे उमड़ैत सघन घटाक आगमनसँ । वर्षा धूलि–धूसरित आकाशकेँ धो–पोछि स्वच्छ बनाय दैत छैक, तखन शरद ऋतुक आगमन होइत छैक तेँ शरदमे नील–निभ स्वच्छ स्वरूप आकाश दृष्टिगोचर होइत अछि । नदी, निर्झर, पर्वतश्रृंखला, वन–प्रान्तर, बाध–वन सब किछु एहि परिवर्त्तनसँ प्रभावित होइत अछि । हेमन्त ऋतुसँ पर्वतमाला हिमाच्छादित होअय लगैत अछि, शिशिरमे वन–उपवन पत्र विहीन भऽ जाइत अछि आ वसन्तक अबितहि गाछ–वृक्ष नव किसलयसँ शोभायमान भऽ उठैछ, रसाल सौरभसँ सम्पूर्ण वातावरण आपूरित भऽ जाइत अछि । एही विशिष्टताक कारणेँ काव्यमे ऋतुवर्णनकेँ विशिष्ट स्थान प्राप्त छैक ।

प्राकृत आ अपभ्रंश साहित्यमे षड् ऋतु वर्णन परम्पराक संग बरहमासाक परम्परा सेहो पाओल जाइत अछि । अपभ्रंश युगक समाप्तिक बाद आधुनिक भारतीय भाषामे षड्ऋतु वर्णनसँ अधिक लोकप्रिय बरहमासा रहल । लोकसाहित्यमे प्रकृतिक परिवर्त्तनशील रूपक वर्णन प्रचुर मात्रामे प्राप्त होइत अछि । ग्राम्य जीवनक क्रियाकलाप प्रकृतिक परिवर्त्तनसँ संचालित होइत अछि । एखनहु विभिन्न जनपदमे बरहमासा बहुजनप्रिय लोकगीत मानल जाइत अछि । हमरा जनैत साहित्यिक परम्परामे षड्ऋतु वर्णन आ लोककाव्यक परम्परामे बरहमासा वर्णन थीक । हमरा विश्वास अछि जे प्राकृते युगसँ लोककाव्यक परम्परा शिष्ट काव्य परम्परामे प्रवेश पओलक ।

साधारणतः षड्ऋतु आ बरहमासा वर्णन नायक–नायिकाक भावनाकेँ उद्दीपित करबा लै कयल जाइत छल । सामान्य रूपेँ काव्यमे षड्ऋतु वर्णन संयोग श्रृंगारमे तथा बरहमासामे विप्रलम्भ श्रृंगारमे अधिक होइत छल । मैथिली काव्य परम्परामे बरहमासाक संख्या अधिक अछि । एकरा संगहि छौमासा आ चौमासाक विकास सेहो भेल । एहि क्रममे विभिन्न प्रकारक रचना शैली आ छन्दक आविर्भाव भेल । सभ भेल, किन्तु एक वस्तुक अल्पता रहल जे मासक विस्तृत चित्रण पृथकसँ नहि भऽ सकल । कवि लोकनि वर्षक विभिन्न मासक प्राकृतिक रुपक सांगोपांग चित्रण करबाक दिस उदासीन रहलाह । एक वा दू पाँतीमे

मासक प्रसिद्ध विशेषता दऽ नायिकाक विरहजन्य निराशा, दुःख, वेदनाक चित्रण कऽ देल गेल अछि । ई आरोप मैथिलीएक कविपर लगायब समुचित नहि होयत, कारण, मध्यकालीनो काव्यमे जे बरहमासाक रचनाक परम्परा छल, ताहूमे उपर्युक्ते रचना-विधान देखबामे अबैत अछि । बरहमासाक उद्देश्य प्रकृति चित्रण नहि छल, प्रत्युत नायिकाक विरहावधिक दीर्घतासूचक मात्र रहि गेल ।

षड्ऋतुक प्रसंग एक बात कहब आवश्यक अछि । यास्काचार्य अपन निरुक्त अध्याय 4 पाद 4 खण्ड 27 संवत्सर निर्वचन प्रकरणमे कहैत छथि–

"त्र्यर्तुः संवत्सरो ग्रीष्मो वर्षा हेमन्त इति" ।

उपर्युक्त मात्र तीन ऋतुक अन्तर्गते बारहोमासक अभिनिवेशक व्याख्या करैत कहैत छथि–

तपस्याद्याश्चत्वारो मासाः ग्रीष्मर्तुः
शुच्याद्याश्चात्वारो मासाः वर्षतुः
कार्त्तिकाद्याश्चत्वारो मासाः हेमन्त इति

स्थूल दृष्टिएँ देखला उत्तर गर्मी, वर्षा आ जाड़ येह तीन ऋतु स्पष्टतः परिलक्षित होइत अछि । पुनश्च–

ऋ.सं. 2-3-16-3 मे उल्लेख अछि–

'पञ्चारे चक्रे परिवर्त्तमान इति'

एहि मन्त्रक अनुसार पाँच ऋतु होइत अछि ।

'पञ्चर्तवः संवत्सरस्येति ब्राह्मणम्, हेमन्त-शिशिरयोः समासेन' हेमन्त तथा शिशिरकेँ एक मानि कऽ पाँचे टा ऋतु भेल । ऋ.सं. 2-3-16-2 मे एक टा मन्त्र अछि– पञ्च पादं पितरं, द्वादशाकृतिं दिव आहुः परे अर्धे पुरीषिणम्, अथेमे अन्य उपरे विचक्षणे सप्त चक्रे षडर आहुरर्पितम्"

एहि क्रमेँ ऋतुक विभाजन भेटैत अछि । वर्षमे 12 गोट मास होइत छैक एक ऋतुक हेतु 2 मास निर्द्धारित छैक– साओन-भादव वर्षा, आसिन-कातिक शरद, अगहन-पूस हेमन्त, माघ-फागुन-शिशिर, चैत-वैशाख वसन्त आ जेठ-आषाढ़ ग्रीष्म । ऋतु-प्रियामे माघक वर्णनमे कहल गेल अछि–

"धन्य माघ ! अः बाघक खोदर
यमराजक छह प्रबल दूत तोँ
शिशिर पिशाचिनि शिशु हेमन्तकेँ काँचे खयलक
तेँ तोहर साम्राज्य आइ चारू दिस पसरल ।"

एक विषय स्पष्ट कऽ दी जे ऋतुप्रियामे वर्णित मासक वर्णन ओही मासमे लिखल गेल अछि आ भूमिका सब मासक वर्णन समाप्त भऽ गेलाक बाद पुस्तकक आकार देबाक विचार भेलापर लिखलहुँ तँ आत्मसन्तोष भेल जे हमर कल्पना ब्राह्मण ग्रन्थसँ अनुमोदित सिद्ध भेल । जाहि स्थान ओ जाहि समयमे ऋतुक विभाग कयल गेल होयत ताहि स्थान ओ ताहि कालक हेतु समुचित रहल हो, सम्प्रति युक्ति-युक्त प्रतीत नहि भऽ रहल अछि । भारतक अन्य कोनो भागमे यदि उपर्युक्त विभाजन उपयुक्तो हो, मिथिलाक हेतु सर्वथा उपयुक्त नहि अछि ।

ऋतु-प्रियाक रचना पर्यवेक्षणक आधार पर भेल अछि । साधारणतः हमरा बूझि पड़ल अछि जे कोनो ऋतुक लक्षण किछु सप्ताहे धरि भेटैत अछि । कोनो ऋतु निर्धारित समयसँ पहिनहि आरम्भ भऽ जाइत अछि आ कोनो-कोनो अपना समयसँ पहिनहि समाप्तो भऽ जाइत अछि । जेना वसन्तक हेतु कहल गेल छैक 'वसन्तो मधु माधवौ' अर्थात् चैत-वैशाख, मुदा वैशाखमे प्रचण्ड गर्मी पड़ैत रहैत छैक । तेँ चैत मासक वर्णनमे हमरा कहऽ पड़ल अछि–

"ऋतु पतिसँ पौने छह तोँही यद्यपि आइ स्वराज
किन्तु ग्रीष्मसँ आतंकित अछि बुझनुक सभक समाज
वन-उपवनमे सुमन-सुमनसँ नव उल्लास बिलायल
कहबा लै ऋतुराज किन्तु ई सद्यः ग्रीष्म तुलायल ।"

विभिन्न मासक प्राकृतिक परिस्थितिक सतर्क दृष्टिसँ पर्यवेक्षण कयला पर अनेक ठाम परम्परासँ भिन्न रूपेँ हमरा वर्णन करऽ पड़ल अछि, तेँ एकरा पूर्ण होयबामे कतोक वर्ष लागि गेल । हमरा बुझना गेल जे प्रत्येक मासक अपन स्वतन्त्र व्यक्तित्व छैक । यास्काचार्यक निर्वचन सर्वथा युक्ति संगत प्रतीत होइत अछि, थिकैक तँ ई वाग्विलासे तथापि प्रकृति वर्णनक भारतीय परम्परा आ मैथिल परम्परामे ऋतु प्रियाक कोन स्थान, से सुधी समाजे अन्तिम निर्णय करताह ।

●

डॉ. ललितेश्वरझा लिखित कवीश्वर चन्दाझा

आमुख

आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रवर्त्तक कवीन्द्र चन्द्रनाथझा, प्रसिद्ध कवीश्वर चन्दाझाक साहित्यक सम्यक् अध्ययन कऽ, अत्यन्त श्रमपूर्वक हिनका सम्बन्धक तथ्य-संग्रह कऽ सुस्पष्ट तथा बोधगम्य शैलीमे, परिष्कृत भाषामे हुनक सम्पूर्ण साहित्यक मार्मिक समीक्षा करैत अन्य रामायणकारक सङ्ग तुलनात्मक विचार डा. ललितेश्वरझा प्रस्तुत पुस्तकमे उपस्थित कयलनि अछि से स्तुत्य कार्य भेलनि अछि।

हम जानि-बूझि कऽ स्तुत्य शब्दक प्रयोग कयलहुँ अछि। एम.ए. परीक्षाक हेतु डाक्टर साहेब ई पुस्तक लिखलनि, जाहि हेतु जतेक श्रम ई कयलनि ताहिसँ थोड़ो श्रम कयलापर फल-प्राप्तिमे कोनो विशेष अन्तर नहि अबितनि। किन्तु डाक्टर साहेब विधि नहि पुरौलनि, अपितु रुचिपूर्वक एहि विषयकेँ पढ़लनि। दोसर बात जे मूल रूपमे ईहो हिन्दीएमे लिखल गेल छल, उद्देश्य प्राप्ति भऽ चुकल छलनि, तखन एकर मैथिली करब ततेक साहसक काज तँ नहि कहल जा सकत जतेक एकरा अपना व्ययसँ प्रकाशित करबाक काज दुस्साहपूर्ण कहल जायत। मैथिलीक पोथी जेना बिकाइत अछि तकरा दृष्टिमे रखैत यैह कहय पड़ैछ जे आइ धरि जहाँ डिहवारोकेँ दूधपीठ देबाक हेतु क्यो उद्यत नहि भेल छलाह ततय डाक्टर साहेब एहि डेढ़ दू हजारक बलि चढ़ौलनि अछि तेँ ई स्तुत्य प्रयास भेलनि। मातृभाषाक प्रति जे प्रगाढ़ प्रेम हिनका हृदयमे छनि तकरे ई फल थीक जे केवल कवीश्वरपर किछु श्रम कऽ ई अपन कर्त्तव्यक इतिश्री नहि बुझलनि अछि, अपितु लक्ष्मीनाथगोसाञि,

साहेबरामदास आदि जे एहि भूमिक सन्त कवि लोकनि भेलाह अछि तनिको सभक सम्बन्धमे डा. झा अनुसन्धानमे संलग्न रहलाह अछि । हिनक ई प्रथम प्रयास पुस्तकाकार धारण कऽ आइ लोकक समक्ष उपस्थित भऽ रहल अछि जे मैथिली साहित्यक समीक्षाक इतिहासमे सर्वप्रथम पृष्ठ ग्रहण करबे करत, संगहि लेखक सेहो एक एहन स्तम्भक संस्थापकक रूपमे परिगणित होयताह जनिकासँ आगाँ मार्ग संकेत भेटैत रहत । अत: हिनकासँ मैथिली साहित्यकेँ बड़ पैघ आशा छैक ।

एतबा तँ सब निस्सन्देह स्वीकार करैत छथि जे भाषा साहित्यक आरम्भिक विकासयुगमे यदि विद्यापति सर्वश्रेष्ठ भेलाह तँ आधुनिक साहित्यक विकासयुगमे कवीश्वर सर्वश्रेष्ठ छथि । एहि ग्रन्थक अध्ययनसँ मैथिलीक इतिहास-अध्येता एहि निष्कर्षक सत्यतापर पहुँचि सकताह जे वस्तुत: महाकवि विद्यापतिक बाद एहन सूक्ष्मदर्शी कवीश्वरे अवतीर्ण भेलाह जे मैथिली साहित्यक क्षितिजकेर विस्तार कयलनि । अत: कवीश्वरे पर यदि प्रथम समीक्षात्मक ग्रन्थ उपस्थित भऽ रहल अछि तँ से कम महत्त्वक नहि । एकमात्र एहि ग्रन्थक अध्ययनसँ केवल कवीश्वरक साहित्यक साङ्गोपाङ्ग परिचये नहि प्राप्त होइछ, अपितु मिथिलाक सांस्कृतिक, राजनीतिक, ऐतिहासिक महत्त्वक संगहि मिथिलाक भाषा, साहित्य, लिपि आदिहुक उत्थान-पतनक झलक प्राप्त होइत अछि ।

विद्यापतिक बाद यदि ककरो अध्ययन आवश्यक छल तँ कहय पड़त जे कवीश्वरक साहित्यक एहि प्रकारक विवेचन परम आवश्यक छल । एकर दू कारण । पहिल ई जे विद्यापति द्वारा स्थापित परम्परा आबऽवला युगक हेतु अनुपयुक्त होयत आ दोसर ई जे विद्यापतिक समयक भाषा जनजीवनसँ दूर, गीत मात्रक भाषा रहि गेल अछि, एहि दूनू तथ्यक अनुभव कवीश्वरेकेँ भेलनि । भाषा साहित्यक प्रवाह जाहि दिस घूमि चुकल छल, मैथिलीक प्रवाहकेँ ताहि दिस नहि घुमौलासँ एकर लोकप्रियता समाप्त भऽ जाइत । आजुक युग राधाकृष्णक परस्पर प्रेम ओ अभिसार वर्णनसँ सन्तुष्ट होमयवला नहि छल । एही तथ्यक आधारपर कवीश्वर अपना हेतु भाव ओ भाषा दुनूमे नवीन पथक निर्माण कयलनि । अनुसन्धानो करबाक हेतु तँ सर्वप्रथम कवीश्वरे प्रवृत्त भेलाह अत: यैह पहिल अधिकारी मानल जयताह ।

लोकप्रियता बढ़यबाक हेतु ई आवश्यक छल एकर प्रत्यक्ष उदाहरण

थीक कविवर हर्षनाथझाक साहित्य । एक कालमे महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक सभारत्न दूनू गोटे छलाह । राज दरबारमे समय समयपर अपन कवित्व ओ प्रतिभाक प्रदर्शनक अवसर भेटिते छल होयतनि । यदि सत्यक उद्घाटन अपराध नहि मानल जाय तँ ईहो उल्लेख करब अपराध नहि होयत जे राज दरबारमे कवीश्वरसँ अधिक प्रशंसा कविवरेक साहित्यक होइत छलनि । यद्यपि कवीश्वरक कवित्व प्रतिभा, तेजस्विता, सूक्ष्मदर्शिता आदि सब कविवर हर्षनाथ झासँ अधिक छलनि, किन्तु कववरि हर्षनाथझा महाराजक कुटुम्ब वर्गमे छलथिन आ कवीश्वर पछवारि पारक ब्राह्मण, तेँ हिनका साहित्यकेँ उपहासास्पद बनयबाक कुचक्रक रचना होइत रहैत छलनि । अपन प्रबन्धसंग्रहमे प्रो० रमानाथझा जे कवीश्वरक शब्दक रूढ़ अर्थ स्पष्ट करैत लिखने छथि जे एहिठाम कवीश्वर भाटकेँ कहल जाइत छलैक तकर पृष्ठभूमि यैह थीक । कवीश्वर अपना हेतु जनकण्ठक भाषाकेँ ग्रहण कयलनि तेँ हिनका साहित्यपर ग्राम्यत्वक दोषारोपणकयल जाइत छलनि । एहि सब व्यंग्य ओ उपहासकेँ सहन करैत कवीश्वर अपना निश्चयपर दृढ़ रहलाह, किन्तु पुरान लकीरक फकीर बनब स्वीकार नहि कयलनि ।

एहि प्रकरणमे ईहो अनुमान कयल जा सकैत अछि जे एहि उपहासक प्रतिक्रिया स्वरूप कवीश्वर संस्कृत हिन्दी आदि अन्यो भाषामे रचना कयलनि आ गीत सबमे अद्भुत सानुप्रासिक सुघटित भाषाक प्रयोग कऽ अपन भाषाधिकारक उदाहरण प्रस्तुत कयलनि । एकरे फलस्वरूप कवीश्वरक साहित्य जनकण्ठमे मिश्रित भऽ गेलनि, मुदा कविवर हर्षनाथझाक साहित्य अध्ययन-अध्यापनेक कोटि धरि सीमित रहि गेलनि । एहिसँ हमर आशय ई कथमपि नहि अछि जे कविवर हर्षनाथझाक रचना निम्न कोटिक छनि । अपना स्थान पर ओ अपूर्व रचना सब थिकनि जकर प्रशंसा डा. ग्रिअर्सनो यत्र-तत्र कयने छथिन । हमर आशय एतबे जे भविष्यकेँ देखैत जाहि नवीनताकेँ साहसपूर्वक कवीश्वर ग्रहण कऽ सकलाह तकरा कविवर नहि । तेँ जतय हर्षनाथझा विद्यापतिक परम्पराक सबसँ अन्तिम कविक रूपमे आदृत छथि ततय कवीश्वर आधुनिक युगक प्रवर्त्तकक रूपमे परिगणित होइत छथि आ तेँ विद्यापतिक बाद ई एक स्तम्भ मानल जाइत छथि, जनिक साहित्यपर विस्तार रूपेँ प्रकाश पड़ब आवश्यक छल, जकरा पूर्ण कऽ डा. साहेब सबसँ अगिला पंक्तिमे अपनाकेँ प्रतिष्ठित कयलनि अछि । तेँ ई काज सब दृष्टिसँ स्तुत्य मानल जयतनि ।

जखन कवीश्वरपर अध्ययन आरम्भ भेल अछि तखन अनेक ठाम मतभेदक समावेश भऽ सकैत अछि, किन्तु जहाँधरि कवीश्वरक मृत्युक सम्बन्ध अछि, हम डाक्टर साहेबक संग सहमत नहि छियनि । एहिमे राजपण्डित बलदेव मिश्रजीक विचार सैह मान्य होयबाक थीक । एहि पक्षमे हम कतिपय प्रमाण ओ तर्क उपस्थित करैत छी ।

प्रथम तर्क तँ ई जे स्व. मिथिलेश महाराजाधिराज रमेश्वरसिंह काशीवास करबाक हेतु कवीश्वरकेँ विदाकरबाक काल हुनकासँ पुत्र प्राप्तिक कामनासँ आशीर्वादक याचना कयलथिन आ कवीश्वर हृदयसँ आशीर्वाद देलथिन । लेखक सेहो स्वीकार करैत छथि जे काशीमे कवीश्वर स्व. मिथिलेश महाराजाधिराज कामेश्वरसिंहक जन्मक समाचार सूनि ईहो बजलाह जे एखन गणेश बाँकिए छथि जे राजा बहादुर विश्वेश्वर सिंह दिस संकेत छलनि, आ तखन आश्वस्त भऽ अपन पाञ्चभौतिक शरीर त्याग कयलनि । स्व. मिथिलेशक जन्म 1907 ई.क 28 नवम्बर मार्ग कृष्ण अष्टमी सन् 1314 साल, कऽ भेल छलनि, एहिमे विवादक स्थान नहि अछि । दोसर 1907 ई. आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (जुलाइ) कऽ रमेश्वर लता विद्यालयक स्थापना भेलैक ओही दिन हमर पूज्य पिता (पं. मुक्तिनाथ मिश्र) एहि विद्यालयमे अध्यापकक रूपमे नियुक्त भेलाह जे 1944 ई.मे प्रधानाध्यापकक पदसँ सेवा-निवृत्त भेलाह हुनका कवीश्वरक संग किछु दिन सहवासक अवसर भेटलनि । जाहि वर्ष रमेश्वरलता विद्यालयक स्थापना ताही वर्ष स्व. मिथिलेशक जन्म तथा कवीश्वरक महाप्रयाण भेलनि तेँ 1907 ई. ठीक । स्व. मिथिलेशक जन्म तथा कवीश्वरक मृत्युक समाचार जे मिथिला मोदमे प्रकाशित भेल छलनि सेहो प्रमाण स्वरूप हम उद्धृत करैत छी ।

...सबहिक परम पूज्य मिथिलेशहुसँ गुणिगणाग्रगण्यतया परम संस्कृत तथा अनेकानेक ग्रन्थ रचना टीका इत्यादिसँ भूमण्डलमे अति प्रथित वार्द्धक्यमे परम पवित्र वाराणसी क्षेत्राधिष्ठित सपुत्र अन्नपूर्णा विश्वेश्वरक शरणापन्न भय केवल मिथिलेश पुत्र जन्म श्रवणाभीष्ट पूर्त्ति मात्रसँ रहित परम शरणागत वत्सल परमदयाल विश्वेश्वर आजन्म एतावन्मात्र अभीष्ट पूर्त्ति रहित देखि पाँचहि चारि दिनमे चिरजीवि महाराज कुमार जन्मोत्सव सुनाय कृतकृत्य कय देल । तदुत्तर दिन संवत् 1964 मार्ग शुक्ल नवमी शुक्र अहर्निश आनन्द

सुखानुभव कय रात्रि शेषमे अपना शरीरकेँ कृतकृत्य जानि, विषम संसारकेँ असारमानि, गङ्गातटस्थ दुर्लभ मणिकर्णिका क्षेत्र जाय, स्वशरीरात्यय कय विश्वेश्वर लीन । हा; एहि घोर कलिमे ईदृशभाग्य ककरा भय सकैछ । लौकिक पारलौकिक उभय सिद्धि– शिवम् ।

श्री श्रीदेव चौधरि (चनौर)

एहि समाचारक शीर्षक थिकैक– शोकापनोद विनोद । ई मिथिला मोदक पृष्ठ 43 पर छपल अछि, किन्तु एहि अंकक वर्ष तथा मास फाटल छैक । तखन पृष्ठ 53 पर श्रीभोलानाथमिश्र आफिसर इनचार्य, प्राइवेट आफिस राज दरभंगा द्वारा प्रसारित हिन्दीमे एक विज्ञापन सेहो छपल अछि जाहिमे पुत्रोत्सवक अवसरपर आयोजित धौत परीक्षाक तिथि परिवर्त्तित कऽ आगामी श्रावण पौर्णमासी सँ आरम्भ करबाक सूचना देल गेल अछि ओहिमे ता० 21 फरवरी 1908 छपल अछि । एहिसँ स्पष्ट अछि जे ओहिसँ पूर्व कवीश्वरक मृत्यु थिकनि ।

तेसर प्रमाण थीक जोगियाड़ा निवासी स्व० श्रीनारायण सिंहक नामेँ, जे ओहि समय डिप्टी मजिस्ट्रेट छलाह, लिखल डा. जार्ज ग्रिअर्सनक पत्र, जे पत्र 9 मार्च 1908 ई. क रायफार्नहम कैम्बरेले, सुर्रे, सँ लिखल गेल छल । ओहि पत्रमे ओ अपन मैथिली व्याकरणक नवीन संस्करणक प्रकाशनक सूचना दैत सिंहजीसँ विद्यापतिक कीर्त्तिलताक अनुवाद करबाक आग्रह कयने छलथिन आ संगहि एहि काजक हेतु कवीश्वरसँ सहायता लेबाक परामर्श देने छलथिन। ओही पत्रमे ओ कवीश्वर चन्दाझा, हालेझा, हरखनाथझाक कुशलादिक जिज्ञासा कयने छलथिन । ई पत्र 15 सितम्बर 1963क अंकमे धर्मयुगमे प्रकाशित भेल अछि । एहि पत्रसँ केवल एतबे पता लगैछ जे डा. ग्रिअर्सनकेँ भारतीय भाषाक अध्ययनक कतेक प्रेम छलनि आ मैथिलीक अध्ययनक क्रममे कवीश्वरसँ कतेक सहायता हुनका भेटल छलनि, मुदा एहि पत्रक उत्तर जे ओ देने छलथिन, जे पत्र श्रीनारायण सिंहक पौत्रक दौहित्र श्री अरविन्द प्रताप सिंह लग सुरक्षित छनि, जे हम अपना आँखिएँ देखने छी, ताहिमे ओ स्पष्ट लिखने छथिन जे ई महानुभाव लोकनि आब जीवित नहि छथि । एहि प्रमाण सभक अछैत कवीश्वरक मृत्युक समयकेँ विवादास्पद बनायब समुचित नहि । अतः राजपण्डित बलदेवमिश्रक कथ्य सर्वथा समीचीन छनि ।

प्रस्तुत ग्रन्थमे डा. झा कवीश्वरक सम्बन्धमे तथ्य संग्रह करबामे पूर्णश्रम कयने छथि जाहिसँ कवीश्वरक जीवनी ओ व्यक्तित्व, सत्यनिष्ठा, स्वाभिमान, धर्मसम्प्रदाय, परिवार ओ आश्रयदाता सभक परिचय प्राप्त होइछ, मुदा कवीश्वरक जे भक्तिभावना छनि ताहिपर विस्तार रूपेँ लिखब आवश्यक छलनि, जकरा लेखक संक्षिप्त विवरण दऽ छोड़ि देने छथि। हमरा जनैत ई अंश अनुपेक्षणीय थीक, कारण हिनक शिव–सम्बन्धी पद सब जे छनि ताहिमे जे तन्मयता देखल जाइछ से विद्यापतिक पद सबसँ विशिष्टे मानल जायत, न्यून नहि। यद्यपि लेखक महेशवाणीक विशेष चर्चा कयलनि अछि, मुदा ताहिसँ सन्तोष नहि होइछ। ओना विवाह आदिक अवसरपर जे अनेक विधि–व्यवहार मैथिल ब्राह्मण समाजमे प्रचलित अछि ताहि अवसरपर गयबाक हेतु जे कवीश्वर पद सभक रचना कयने छथि से आधुनिक लोक सासुरमे पाग दोपटामे झाँपल तोपल रहब पसिन्न नहि करैछ ताहि दिस संकेत करैत कवीश्वर लिखैत छथि–

'चलु शिव कोवराक रीति हे दोपटा ओढ़ु भोला
अछि भरि नगर हँकार हे भलमानुस टोला
कैलहुँ बूढ़ जमाय हे भलमानुस जानी
पहिरब जौं नहि पाग हे मरयादा हानी'

तथा–

जतय विरंचि विष्णु वासव छथि मर्यादा सनमानि डरू
माथ पाग लिअऽ ओढ़ू दोपटा वसन विभूषणेँ अंग भरू
शिव लाज करू। आदि–

किन्तु शिवभक्ति विषयक पदमे जे आत्मसमर्पणक भावना व्यक्त भेल छनि से अन्यत्र भेटब दुर्लभ। ई पद देखू–

'शिव जाउ कतै
शरण धयल हम बड़ विपतेँ
भन कवि चन्द्र हमर करनी गुनि क्यो नहि देत शरण अनतै'

एहि पदमे 'क्यो नहि देत शरण अनतै'मे कविक आत्म–समर्पणक भाव जेना जगजियार लगैछ से ई विचार करबाक हेतु बाध्य करैछ जे अनेक देवी–देवताक स्तुति पदक रचना करितो अन्ततः कवीश्वर शिवक एकान्त भक्त छलाह आ एही भक्तिक प्रसादात् वाणीमे ओ सामर्थ्य आबि गेल छलनि

जे हृदयसँ जनिका जे आशीर्वाद दैत छलथिन से फलीभूत होइते छलनि । स्व. मिथिलेशक जन्मक कथा प्रमाण थीक । दोसर बात ई जे जैं ओ अनन्य शिवक भक्त छलाह तैँ ज्येष्ठ पुत्रक नामो विश्वनाथ रखने छलथिन तथा अनेक पदमे अन्त समय सम्हारबाक प्रार्थना शिवसँ करैत रहैत छलथिन । ततबे नहि मृत्युक काल निकट अयलापर काशीवास करबाक अभिलाषा व्यक्त कयलनि जे पूर्णो भेलनि । हिनक अन्तःकरणक करुणार्द्र निवेदन शिवक कान धरि पहुँचलनि आ कवीश्वर शिवसायुज्य प्राप्त कयलनि । अस्तु, उदाराशय लेखक आगाँ कवीश्वरपर विशेष अध्ययन कयनिहार लोकक हेतु जँ शेषान्न छोड़ि देलथिन अछि तँ से उदारते कहल जयतनि !

एहि ऐतिहासिक ग्रन्थक महत्त्वक भूमिका लिखबाक हेतु विद्वन्मूर्द्धन्य स्व. डा. अमरनाथझासँ कहल गेल छलनि आ ओ लिखनहुँ छलथिन, किन्तु दुर्भाग्यवश लेखक ओ उपलब्ध नहि कऽ सकलाह बीचेमे डा. झाक आकस्मिक मृत्यु भऽ गेलनि । तकर बाद हमरा सन अल्पज्ञ सँ कहल गेल गेल जे सुसंगत नहि छल, किन्तु हम जे एहन गुरुतर भारकेँ स्वीकार कयलहुँ से दू टा भरोस पर, प्रथम ई जे नाम साम्योसँ लोक बहुत किछु निमहि जाइत अछि । संयोगसँ जाहि मिथिलाक विभूतिक सम्बन्धमे ई ग्रन्थ लिखल गेल अछि हुनक नामकेँ दृष्टिमे राखि हमर पिता हमरो नाम चन्द्रनाथ रखलनि आ भूमिका जाहि महान पुरुषसँ लिखैबाक यत्न डा. साहेब कयने छलाह तनिको नामक एक शब्द हमरा नामक अन्तमे आबि जुटि गेल अछि तेँ नामक बलेँ कोनहुना पार लागि जयबाक भरोस कयलहुँ । दोसर हम आनोठाम उल्लेख कऽ चुकल छी जे हमर प्रेरणा स्रोत कवीश्वरे रहलाह अछि तेँ हिनका प्रति बाल्य अवस्थासँ अपार श्रद्धा रहल अछि, हिनक लिखल पद सब भाव-विभोर भऽ प्रेम सँ गबैत रहलहुँ। एहन पुण्य-श्लोक महाकविक सम्बन्धमे ई पोथी प्रस्तुत भऽ रहल अछि आ एकर सम्पादनक भार हमरा डा. साहेब देलनि ताहिसँ अपार आनन्द भेटल ।

हम मित्र प्रवर डा. श्री ललितेश्वरझा जीकेँ हृदयसँ धन्यवाद दैत छिऐनि जे मैथिली साहित्यक इतिहासमे नवीन अध्याय आरम्भ कयलनि अछि। हम पूर्ण आशावान छी जे हिनकासँ एहूसँ उत्तमोत्तम ग्रन्थ मातृभाषा साहित्यकेँ प्राप्त होयतैक आ समाज एहि ग्रन्थक पूर्ण आदर करत ।

●

किछु देखल : किछु सुनल

आमुख

महामनीषी पण्डित गिरीन्द्रमोहनमिश्र रचित 'किछु देखल किछु सुनल' एहन संस्मरण ग्रन्थ थिकनि जे 1975 ई.सँ अद्यावधि साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत ग्रन्थ सबमे अपन विशिष्ट स्थान बना कऽ रखने अछि ।

गत वर्ष दरभंगामे साहित्य अकादेमी (दिल्ली) द्वारा आयोजित एक विशेष आयोजनमे अकादेमीक उपाध्यक्ष डॉ. श्रीविश्वनाथ प्रसाद तिबारी अपन उद्‌गार व्यक्त करैत कहने छलथिन जे इतिहास ग्रन्थमे राजा-महाराजक नाम तथा वर्ष-तिथि सत्य रहैत छैक, शेष अंश हुनका सभक मनोनुकूल सब बात लिखल जाइत छैक जाहिमे तथ्यात्मक तोड़-मरोड़ पूर्ण मात्रामे कयल गेल रहैत छैक । साहित्यमे नाम ओ स्थान कल्पनात्मक आ तथ्य सर्वथा सत्य पर आधृत रहैत छैक । साहित्यहुमे संस्मरणात्मक ग्रन्थमे इतिहासे बेसी मुखर होइत छैक । वस्तु-स्थितिक एहन सुस्पष्ट विवरण अन्यत्र प्राप्त होयब दुर्लभे बुझबाक चाही ।

आइसँ 39-40 वर्ष पूर्व एहि ग्रन्थक प्रथम संस्करणक प्रकाशन कालमे हम एहिसँ सम्बद्ध छलहुँ, ताहि समय एहिमे प्रतिपादित विषयक गम्भीरतासँ ओतेक परिचित नहि भेल छलहुँ जतेक दोसर संस्करणक आमुख लिखबाक हेतु पुनः एकर अनुशीलनक क्रममे भऽ सकलहुँ । तखन डॉ. श्रीविश्विनाथ प्रसाद तिवारीक उक्तिक सार्थकता प्रतीत भेल ।

सम्पूर्ण भारतीय राजनीतिसँ लऽ मिथिलाक योगदान स्वतन्त्रता प्राप्तिक हेतु कयल जाइत आन्दोलनमे की रहलैक, संगहि मिथिलांचलक विकास ओ

वर्त्तमान दरभंगा नगरक विकास कोन प्रकारेँ भेलैक, ताहि विषयक सम्यक परिचय एहि ग्रन्थकेँ पढ़ने बिना आजुक युवा वर्ग नहि प्राप्त कऽ सकैछ ।

आत्मकथा, संस्मरण तथा जीवनवृत्त वा जीवनी ई सब विधा समगोत्रीय थीक । एहि सबकेँ विभाजित करबाक रेखा जेहने सूक्ष्म होइत छैक, एकरा चिह्नित करबाक हेतु दृष्टिओ तेहने सूक्ष्म अपेक्षित होइत छैक । प्रस्तुत ग्रन्थक आत्म निवेदनमे चिरस्मरणीय मिसरजी (ध्यातव्य जे पण्डित गिरीन्द्रमोहनमिश्र मिथिलेशसँ लऽ समाजक जनसामान्य धरिमे मिसरजीए नामसँ सम्बोधित होइत छलाह) लिखैत छथि–

'ई लेख हम आत्मकथाक रूपमे नहि लिखल अछि । आत्मकथाक रूप किछु भिन्ने होइत छैक । जीवनमे हमरा अनेको व्यक्तिसँ साक्षात् सम्पर्क होएबाक अवसर भेटल आओर अनेक व्यक्तिक सम्बन्धमे किछु सुनलो भेल । यद्यपि अनेक कारणसँ मुख्यत: अपन शारीरिक स्वास्थ्य बराबरि खूब नीक नहि रहबाक कारणेँ हमर देशाटन बहुत परिमित रहल आओर तएँ साधारणत: जाहि प्रकारक प्रत्यक्ष अनुभव लोककेँ होइत छैक ताहि प्रकारक हमर अनुभव बहुत सीमित रहल, तथापि अनुभवक एहि सीमित क्षेत्रहुमे भिन्ने-भिन्न स्तरक भिन्न-भिन्न लोकक सम्पर्कसँ अथवा अन्यथा जे किछु हम देखल वा सुनल अथवा जे बुझल से थोड़ बहुत लिखि देल ।'

एतावता मिसरजीक ई संस्मरणात्मक ग्रन्थ थिकनि, आत्मकथा नहि, जे स्वयं घोषित कयने छथि । तथापि प्रस्तुत संस्करणमे हिनक जीवित एक मात्र पुत्र आ हमर तुरिया 88 वर्षीय डॉ. श्रीजगदीशमोहन मिश्र अपन 'अभिव्यक्ति' शीर्षकमे कहलनि अछि जे प्रथम संस्करणक प्रकाशनक बाद किछु विद्वान समालोचकक कहब छलैन्ह जे 'मिसरजी थोड़बे लिखने छथि, अधिक हमरा सबसँ नुका लेने छथि' । वस्तुत: नारद गोत्रीय किछु अधिसंख्यके लोक छथि जनिका खढ़ खड़खड़यबामे विशेष आनन्द अबैत छनि । एहि ठाम विषयसँ हटि एक बात कहि देबऽ चाहैत छी, जकर संकेत हम अपन आत्म संस्मरणमे कऽ चुकल छी । स्वतन्त्रता संग्रामक क्रममे निम्नवर्गीय समाजक मध्य एक विष-मिश्रित धारणा उत्पन्न करबाक कुत्सित चेष्टा कयल गल जे तथाकथित उच्च वर्गक लोक धन ओ विद्या विभवक अहंकारमे निम्न वर्गक प्रति सदा अत्याचारे करैत रहलथिन । स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद हुनका लोकनिसँ

तकर बदला लेबाक अवसर जनसामान्यकेँ भेटि जयतैक । मिसरजी राजदरभंगाक उच्च पदाधिकारी छलाह, हिनकोसँ प्रजाकेँ सतयबाक काजमे योगदान करबाक दबाब पड़ल होयतनि । किन्तु मिसरजी आत्म-निवेदनमे ईहो स्पष्ट उल्लेख कऽ देने छथि जे एहि लेखमे कोनो प्रकारक कटु समालोचनाक त्याग करबाक चेष्टा कएल गेल अछि ।'

ई ग्रन्थ मुख्यतः दू खण्डमे विभाजित अछि । परिशिष्टोकेँ यदि एक खण्ड मानि लेल जाय, (जाहिमे अपन पूर्वजक विवरण विस्तारसँ देने छथि) तँ तीनिओ खण्ड मानल जाय सकैछ । एहि ग्रन्थक अनुशीलनसँ अध्येताकेँ मिसरजीक वंश परिचय, हिनक शिक्षा-दीक्षा, जीवनक सम्पूर्ण गति-विधि, पारिवारिक स्थिति-परिस्थिति, सामाजिक सम्बन्ध-सम्पर्क, सार्वजनिक क्षेत्रमे कयल गेल सेवा, राजनीतिक क्रिया कलाप, जीविकोपार्जनक क्रममे भेल सफलता-विफलता, देशभक्तिपूर्ण मानस, गान्धीवादी विचारधाराक प्रति अटूट श्रद्धा, सत्य ओ अहिंसाक प्रति निष्ठा, भारतीय संस्कार आ संस्कृतिक प्रति दृढ़ आस्था, स्वधर्मक प्रति विश्वास, देशक भविष्यक प्रति चिन्ता आदि सब विषयक सम्यक् ज्ञान भऽ जाइत छनि ।

दरभंगाकेँ कर्मक्षेत्र बनाय स्वतन्त्रता आन्दोलनमे अधिकसँ अधिक सक्रिय रहनिहार अग्रणी नेता लोकनि यथा- धरीणधर बाबू, ब्रजकिशोर बाबू, कमलेश्वरी चरण बाबू, जानकी रमणमिश्र, रामनन्दनमिश्र आदिक संग अपन सम्पर्क ओ सहयोग, हुनका लोकनिक सार्वजनिक जीवनमे कयल गेल क्रिया-कलाप ओ व्यक्तित्वक वैशिष्ट्य, तदुत्तर अन्यान्य राष्ट्रिय स्तरक नेता सभक संग भेल सम्पर्क, ताहिमे अपन गतिविधिक विवरण एहि सब वृत्तान्तकेँ हमरा जनैत आत्मकथेक अंश मानल जायत । प्रथम खण्डमे एही विषय सभक समावेश कयल गेल अछि ।

दोसर खण्डमे यद्यपि छिटपुट रूपमे अन्यान्यो विषय समाविष्ट अछि तथापि आन्तरिक इच्छा नहिओ रहैत मिसरजी सार्वजनिक जीवनसँ विरत भऽ कोना राज दरभंगाक सेवामे प्रविष्ट भेलाह मुख्यरूपेँ तकर विवरण लिखने छथि ।

एहि खण्डमे 1934 ई.क भूकम्पसँ पहिलुक दरभंगा नगरक स्वरूप, भूकम्पक बाद एहि नगरक नवीन रूपमे पुनर्निर्माणक योजना आ तकर

कार्यान्वयन, राज दरभंगाक स्वरूप, क्रमशः एकर उत्कर्ष पुनः ह्रास, राज दरभंगाक प्रशासनिक व्यवस्था, प्रजाक हितमे कयल जाइत कार्यकलाप, श्रीनगर-गढ़बनैली राजक दु:स्थिति-परिस्थिति, बरहगोड़िया, राँटी, मधुबनी, आनन्दपुर, शुभंकरपुर आदि बबुआन लोकनिक स्थिति एहू सब पर फड़िछा कऽ प्रकाश देल गेल अछि ।

दरभंगा नगरक शैक्षणिक संस्था सब यथा- एम्.एल्.एकेडमी, महारानी अधिरानी रमेश्वर लता संस्कृत महाविद्यालय, चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज, मिथिला संस्कृत शोध संस्थान, संस्कृत विश्वविद्यालय, मिथिला विश्वविद्यालय आदि, संस्था- यथा- मिथिला रिसर्च सोसाइटी, जाहिसँ प्रेरणा पाबि म.म. परमेश्वरझा मिथिला-तत्त्व विमर्श'क रचना कयलनि, मैथिल महासभा, मैथिली साहित्य परिषद्, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, मगन आश्रम आदि, बिहारसँ प्रकाशित होइत मिथिला मिहिर, बिहार दर्पण, आर्यावर्त्त, इण्डियन नेशन, सर्चलाइट आदि मैथिली, हिन्दी, अंग्रेजीक पत्र-पत्रिका सभक प्रसंग ऐतिहासिक विवरण देल गेल अछि ।

मिसरजी लिखने छथि जे हमर देशाटन परिमित रहल, तथापि बिन्ध्याचल, त्रिवेणी, दार्जिलिंग, शिलौंग आदि स्थानक भौगोलिक, प्राकृतिक छटाक वर्णन कयने छथि । 34क भूकम्पक बाद महात्मा गान्धीक दरभंगा ओ बिहार भ्रमणक ऐतिहासिक विवरण पाठककेँ उपलब्ध होइत छनि ।

ई निर्विवाद जे जीवनक पूर्वार्द्धमे मिसरजी जाहि प्रकारेँ राजनीतिक क्षेत्रमे सक्रिय रहलाह ताही रूपेँ अन्यान्य नेता जकाँ बनल रहितथि तँ निश्चित रूपेँ अखिल भारतीय राजनीतिक नेता लोकनिकेँ जे ख्याति ओ पद प्राप्त भेलनि से सुयोग हिनको भेटितनि । राज दरभंगाक सेवामे अयबा लेल हिनका ने कोनो विज्ञापन देखय पड़लनि ने आवेदन पत्र समर्पित करय पड़लनि, प्रत्युत महाराजाधिराज कामेश्वर सिंह स्वयं दरभंगा राजक लॉ सुपरिन्टेन्डेन्टक पद स्वीकार करबाक अनुरोधे नहि, अतिशय आग्रह कयलथिन । महाराजाधिराज मात्र 26 वर्षक अपरिपक्व अवस्थामे रहथि आ मिसरजीक पूर्वज राजवैद्यक रूपमे पहिनहिसँ सम्पर्कमे रहैत आयल छलथिन । महाराजाधिराज रमेश्वर सिंह राजक असार-पसारकेँ बहुत विस्तार दऽ देने छलथिन तेँ महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहकेँ एकरा सम्हारबा लै कोनो आत्मीय लोकक अपेक्षा छलनि ।

मिसरजी दरभंगा नगरपालिकाक चेयरमैन छलाह जे हिनक लोकप्रियताक संग कार्यकुशलताक परिचायक छलनि । भने ँ अनिच्छे पूर्वक सामाजिक दबाबमे मिसरजी राज दरभंगाक सेवा स्वीकार कयलनि, परन्तु मिथिलेश सब दिन हिनका अभिभावके रूपमे आदर दैत रहलथिन ।

बादमे स्वतन्त्रता प्राप्त होइतहि अपन दीर्घ जीवनमे कतिपय राजनीतिक नेता लोकनिक चरित्रमे जाहि प्रकारक क्षरण आरम्भ भऽ गेलनि से देखला उत्तर प्रतीत होइत अछि जे राजक सेवामे अयबाक समय मनमे जे तारतम्य छलनि से दूर भऽ गेल होयतनि । एहि कथनक पुष्टिमे एहि ग्रन्थकेँ अन्त करैत मिसरजी जे लिखने छथि तकरा उद्धृत करब समीचीन प्रतीत होइत अछि । मिसरजी लिखैत छथि–

किछुए दिन पूर्व कार्यवशात् हम राजस्व मन्त्रीक ओहि ठाम गेल छलहुँ आओर कृष्णवल्लभ बाबूसँ वार्त्तालापक प्रसंगमे हमरा किछु अपनहुँ प्रसंगमे गप्प भेल । नियमित ओकालति वृत्तिकेँ छोड़ि राज दरभंगाक सेवामे जएबाक तथा राजनीतिक सार्वजनिक काजसँ हटि जएबाक विषयहुमे चर्चा भेल । कृष्णवल्लभबाबूक उक्ति हुनकहि शब्दमे, परन्तु मिथिला भाषा रूपान्तरमे ई छल– ''मिश्रजी ! अहाँ नियमित रूपेँ ओकालति वृत्ति छोड़ल जाहिसँ हम जनैत छी जे ओकालतिमे प्रायः अधिक टाका कमैतहुँ, किन्तु महाराज अहाँकेँ कोनो कुकर्म करबा लेल तँ नहि कहैत छल होयताह आओर राजनीतिसँ जे अहाँ हटि गेलहुँ से हम बुझैत छी अहाँक धर्म बाँचि गेल ।'' हम बुझल– ई छल ओहि समयमे गान्धीवादक आर्त्तनाद आओर अन्तर्वेदनाक अभिव्यक्ति ।

एहि कथनसँ मिसरजी एहि ग्रन्थकेँ समाप्त कयने छथि । हमरा जनैत एहिसँ दू गोट भाव व्यक्त होइत अछि । पहिल ई जे गान्धीजीक विचारधारासँ च्युत भऽ भारतीय राजनीति जाहि दिशामे अधः पतित भेल जाय रहल अछि से देशक भविष्यक हेतु चिन्ताजनक थीक, जाहिसँ हिनको हृदय पीड़ित छलनि । कारण मिसरजी सात्विक भावक आमूलचूल शुद्ध गान्धीबादी छलाह, ततबे नहि, एक गम्भीर चिन्तक रहथि तेँ हिनका द्वारा एहि सम्पूर्ण ग्रन्थमे महात्मा गान्धी द्वारा कयल गेल आन्दोलनक विवरण दैत, तकर विवेचनसँ सिद्ध होइछ ।

दोसर भाव ई जे अर्थोपार्जन मात्र जीवनक चरम लक्ष्य नहि थिकैक । प्रत्युत धर्मक स्थान जीवनमे अर्थसँ ऊपर छैक । तेँ यदि धर्म बाँचि गेल तँ

बहुत किछु बाँचल । यथारुचि जीवन-यापनमे अर्थाभावक बोध तँ नहिएँ भेल होयतनि । अतः राजदरभंगाक सेवामे अयबाक कचोट नहि भेल होयतनि से मानि लेबामे तारतम्य नहि रहबाक चाही ।

जे व्यक्ति एहिमे तथाकथित साहित्यिकताक अन्वेषण करताह तनिका भनें क्षोदक्षेम करबाक अवकाश भेटि जाइनि, किन्तु परिमार्जित भाषा ओ परिनिष्ठित शैलीमे प्रामाणिक रूपें तथ्यपरक विषयक उपस्थापन एहि ग्रन्थमे कयल गेल अछि । ने कतहु आलंकारिक बनयबाक चेष्टा कयल गेल अछि ने काल्पनिक-सन्निवेश । तखन क्रमबद्धता अनेक ठाम टूटल अछि तकरो कारण स्पष्टे अछि जे अपन 84म 85म वर्षक वयसमे एहि ग्रन्थक प्रणयन कयलनि, जाहि वयसमे बहुतोकें स्वजन-परिजनहुक नाम बिसरि जाइत छैक जे अपनहु अनुभव भऽ रहल अछि । दोसर बात आत्म निवेदनमे स्वयं लिखिओ देने छथि ।

भनें देशाटन परिमित रहल होउन, तथापि विशिष्टसँ-विशिष्ट स्वतन्त्रता संग्रामक योद्धा, पैघसँ पैघ शासक-प्रशासक, विख्यातसँ विख्यात विधिवेत्ता, धनाढ्यसँ धनाढ्य लोक तथा महानसँ महान मनीषी विद्वान लोकनिसँ सम्पर्क रहबे कयलनि । जाहि जाहि व्यक्तिमे जे जे विशिष्टता परिलक्षित भेलनि ताहि सभक परमशालीनताक संग चर्चा करब हिनक मेधाविताक प्रमाण बूझल जयबाक चाही । सर्व गुण सम्पन्न मनुष्य भइए ने सकैत अछि, तें ककरोमे कदाच अवगुण देखबामे अयलो होइनि, किन्तु तकरा सभक चर्चा नहि कयने छथिन । हिनकामे मक्षिका वृत्तिक प्रवृत्ति छलनिहें नहि ।

भाषा शुद्धताक प्रसंग केहन गम्भीर छलाह तकर एक उदाहरण देबाक लोभक संवरण नहि कऽ सकलहुँ तें तकरो उल्लेख कऽ विराम लेब ।

सम्प्रति राष्ट्रसँ सम्बद्ध अर्थमे बहुलतासँ 'राष्ट्रीय' शब्दक प्रयोग भऽ रहल छैक जे पाणिनीय व्याकरणक अनुसार राजाक सारक अर्थमे निष्पन्न होइत छैक, सम्बन्धी अर्थमे 'राष्ट्रिय' अर्थात् ह्रस्व इकार होयबाक चाही । श्रीकान्तठाकुर विद्यालंकार अपन सम्पादन कालमे 'आर्यावर्त्त' दैनिकमे ह्रस्वे इकारयुक्त 'राष्ट्रिय' शब्द लिखैत छलाह । हमरा एहि ग्रन्थक प्रथम संस्करणक सम्पूर्ण ग्रन्थक प्रूफ देखबाक सुयोग भेटल छल । ताही क्रममे प्रूफमे राष्ट्रीय शब्द देखि चिह्न लगाय छोड़ि देलिऐक आ दोसर दिन जाय मिसरजीसँ कहलियनि— ई तँ अपाणिनीय प्रयोग थिकैक । मिसरजी अकचकाइत बजलाह—

एँ ! अपाणिनीय प्रयोग थिकैक ! लागल चिन्तित भऽ उठल होथि । किछु क्षण किछु सोचि कहलनि– आब अहाँ परसू आयब ।

स्कूलमे छुट्टी भेलाक बाद नित्य जाइत छलहुँ । मिसरजी आराम कुर्सी पर ओठङल पड़ल रहैत छलाह । तेसर दिन फाटके लग हमरा अबैत देखि सोझ भऽ बैसलाह आ हमरा पहुँचैत देरी मुस्कुराइत कहलनि– आइ हम अहाँकेँ परास्त कयल । 'परास्त' शब्द, से मिसरजी सदृश विशाल व्यक्तित्वक मुहेँ सुनि देह सिहरि उठल । ओ कहय लगलाह– अहाँ परसू जखन कहलहुँ जे ई अपाणिनीय प्रयोग थिकैक तँ हमरा एहि बातक चिन्ता भऽ गेल जे एतेक दिनसँ अशुद्धे शब्दक प्रयोग करैत रहलहुँ ? जे पढ़ने होयत से धाखेँ नहि किछु बाजल हो, परोक्षमे तँ ओ बजिते होयत जे मिसरजी सेहो अशुद्ध लिखैत छथि । हम काल्हिए पण्डित उपेन्द्रझा (विद्यावाचस्पति)केँ बजबाय पुछलियनि । ओ अहिंक पक्षक समर्थन कयलनि । तखन आओर चिन्ता भेल । तदुत्तर कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपति डॉ. श्रीरामकरणशर्माकेँ फोनपर कहलियनि जे पाणिनीय व्याकरणक अतिरिक्त कोनो अन्यान्य व्याकरणक पुस्तक अहाँक लाइब्रेरीमे हो तँ पठाय देबाक कष्ट करब ।ओ वार्हस्पत्य व्याकरण पठाय देलनि । पारिचारककेँ सोर कऽ टेबुलपर बान्हि कऽ राखल पोथी आनय कहलथिन । ओहिमे चेन्ह दऽ राखल पृष्ठकेँ उनटाय देखबैत कहलनि– देखू, विकल्पसँ एहू रूपकेँ स्वीकार कयने छथि । एहि घटनाक उल्लेख एहि हेतु कयलहुँ अछि जे एहि ग्रन्थमे एक-एक शब्दक प्रयोग तौलि-तौलि कऽ कयल गेल छैक । आइ काल्हि विशिष्टसँ विशिष्ट लोकक कलमसँ वर्चस्व, महानता, दृष्टा-सृष्टा आदि परम अशुद्ध शब्दक निर्बाध प्रयोग होइत दृष्टिगोचर होइत अछि ।

अन्तमे कहब जे मैथिली साहित्यमे ई ग्रन्थ अपना सन अपने अछि । ओना तँ भारतक, विशेषत: मिथिलांचलक स्वतन्त्रता आन्दोलनक इतिहास लिखनिहार व्यक्ति बिनु एहि ग्रन्थकेँ पढ़ने जँ इतिहास लिखताह तँ से अपूर्ण रहि जयतनि । मित्रवर डॉ. श्री जगदीशमोहन मिश्रकेँ साधुवाद दैत छियनि जे हमरा सन साधारण लोककेँ एहि ग्रन्थक आमुख लिखबाक योग्य बुझलनि, संगहि मिसरजीक पौत्र श्रीगुणेन्द्रमोहनमिश्रकेँ आशीर्वाद दैत छियनि जे अपन पितामहक एहि मूल्यवान ग्रन्थक पुन: प्रकाशन करबाक हेतु उन्मुख भेलाह । इति शुभम् ।

●

स्वतन्त्रता आन्दोलन कालीन मैथिलीक कविता

भारतवर्षमे जनसामान्यमे राष्ट्रिय चेतना उद्‌बुद्ध करबाक प्रयास व्यापक रूपसँ एहि शताब्दीक प्रथमे दशकसँ आरम्भ भेल । कोनो विचारक स्फुरण, चिन्तन, मन्थन ओ तदुत्तर तकर प्रसारण बुद्धिजीवीए वर्ग द्वारा सम्भव छैक । भारतवर्षक कोन कथा, प्राय: विश्वभरिक वाङ्मयमे ऋग्वेदकेँ प्राचीनतम ग्रन्थ कहल ओ मानल जाइत छैक । ताहि ऋग्वेदमे उल्लिखित श्रीसूक्तमे राष्ट्र शब्दक प्रयोग विद्यमान अछि–

उपैतुमां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन् कीर्तिमृद्धिन्ददातु मे

एकर उल्लेख करबाक प्रयोजन ई जे राष्ट्रशब्द एहि देशक हेतु कोनो नवीन नहि थीक । भारतवर्षमे राज्य अनेक अवश्य छल, प्रत्येक राज्यक प्रशासनिक व्यवस्थामे भने भिन्नता रहल होइक, किन्तु ओहि व्यवस्थाक आधारभूमि श्रुति–स्मृति–पुराणमे प्रतिपादित सिद्धान्तक अनुरूपे रहलैक अछि, अत: ई देश आदिकालेसँ एक राष्ट्र रहल अछि । कालक्रमे विभिन्नकालमे विभिन्न विदेशी शक्ति द्वारा आक्रान्त भेलापर परिस्थितिमे वैषम्य उपस्थित होइत रहलैक, जाहि कारणेँ ओ एकत्वभाव धूमिल होइत गेलैक, आ एहिठामक संस्कृतिमे, अनेक विकृति मिश्रित होइत गेल । ओ धूमिलता ततेक सधन भऽ गेलैक जे एखनहु वैचारिक धरातलपर जे चिन्तक, मनीषी तथा बुद्धिमान मानल जाइत छथि ताहूमे किछु लोककेँ ओ सत्य परिलक्षित नहि होइत छनि । ओ लोकनि एकरा एक राष्ट्र मानबाक हेतु प्रस्तुत नहि होइत छथि, प्रत्युत अनेक कुतर्क उपस्थित करैत छथि । जखन बुद्धिजीवीवर्गक ई हाल तखन कतोक

शताब्दीसँ पराधीनतामे जीवन यापन कयनिहार एहि ठामक जनसामान्य अपन स्वरूपकेँ विस्मृत कयने जा रहल छल, तँ से कोन विस्मयक बात ?

जाहि ब्रिटिश साम्राज्यमे सूर्य अस्त नहि होइत छलथिन ताहि विशाल साम्राज्यसँ संघर्ष कऽ अपन अपहृत स्वतन्त्रताकेँ आपस आनब जन-सामान्यक हेतु असंभवप्राय मानल जाय लागल छल, तथापि छिटपुट रूपमे अनेक चिन्तक लोकनिक हृदयमे स्थित आगिक ओ चिनगी नितुआन नहि भेल छलनि जकर प्रत्यक्ष प्रमाण स्वामी विवेकानन्द, बालगंगाधर तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, वीर साबरकर, महात्मागान्धी आदि थिकाह ।

इतिहासकार लोकनि 1857क सिपाही विद्रोहकेँ स्वतन्त्रता संग्रामक बीज मानैत छथि । जाहि बीजकेँ अंकुरित होयबासँ पहिनहि नष्ट कऽ देबाक विचारसँ अंग्रेजे शासक द्वारा 1885 मे राष्ट्रिय कांग्रेसक स्थापना कयल गेल, परन्तु सर्वविदित अछि जे सैह कांग्रेस देशमे राष्ट्रिय चेतनाक संवाहक बनल आ अन्ततः ब्रिटिश शासककेँ एहि ठामसँ अपन सेली-टोपी, झोरा-झपटा समेटि, जयबाक हेतु बाध्य कयलक ।

कोनो विचारकेँ जनजनधरि पहुँचयबाक हेतु सम्प्रति आकाशवाणी ओ दूरदर्शन सदृश प्रभावशाली माध्यम प्रचुरतासँ उपलब्ध अछि, परन्तु ताहि समय धरि दू गोट माध्यम उपलब्ध छल-पत्र-पत्रिका तथा सभा-समितिक मंच । देशक अन्यान्य भागकेँ यद्यपि पर्याप्त मात्रामे नहिओ, तथापि अल्पोमात्रामे ई दूनू साधन प्राप्त छलैक, परन्तु मैथिलीभाषी क्षेत्र भारतवर्षक तेहन कात-करौटमे अवस्थित अछि जाहिठाम संसारमे होइत कोनो प्रकारक राजनीतिक उथल-पुथल, सामाजिक परिवर्तन, वैज्ञानिक आविष्कार वा वैचारिक ऊहापोहक कोनो सूचना पर्यन्त पहुँचैत-पहुँचैत अतिकाल भऽ जाइत छलैक । ताहि हेतु कारण अनेक, यथा-

'मिथिलायां प्रदीप्तायां न मे दहति किंचन' एहि प्रकारक बीतरागिता व्यक्त कयनिहार विदेहक एहि भूमिमे अत्यन्त प्राचीनकालहिसँ दार्शनिक चिन्तन ओ कर्मकाण्डक अनुपालन करैत रहब जीवनक प्रमुख कर्तव्य मानल जाइत रहल । जखन जीवन अनित्य थीक तथा सांसारिक सुख-सुविधा प्राप्त करब भाग्यक अधीन रहैछ तखन एहि तुच्छ वस्तु सभक हेतु एहन अमूल्य समय नष्ट करब अज्ञानता वा मूर्खता थीक, एहि प्रकारक धारणा बुद्धिजीवी वर्गमे रहल ।

दोसर कारण- न्याय, वेदान्त, व्याकरण, ज्योतिष, वेद ओ मीमांसा शास्त्र सभक अनुखन अनुशीलन कयनिहार लोकनिक परम्परामे पालित एहिठामक उच्च वर्णक लोक अंग्रेजी राज्य द्वारा प्रवर्तित आधुनिक शिक्षाकेँ एहि ठामक सदाचारकेँ भ्रष्ट करबाक उपक्रम मानि 'न वदेत् याविनीं भाषां प्राणै: कण्ठगतैरपि' एहि प्रकारक प्रतिज्ञा करैत, बीसम शताब्दीक तेसर चरण धरि ताहिसँ अपनाकेँ असम्पृक्ते रखने रहल । जन साधारणमे तँ शिक्षाक सर्वथा अभावे छल ।

तेसर कारण जाहि दू जातिकमध्य शिक्षाक प्रचार छल से जाति छल ब्राह्मण ओ कायस्थ । एहि दूनू जातिकेँ आजीविकाक हेतु आश्रय देनिहार होइत छलथिन पैघसँ लऽ छोट-छोट जमीन्दार लोकनि जाहिमे अनेक महाराज ओ राजाक उपाधिसँ विभूषित छलाह यथा महाराज दरभंगा, बेतिया, सुरसंड, श्रीनगर, चम्पानगर, गढ़बनैली, वरारी, सुलतानगंज, दुर्गागंज, पचगछिया, कुरसेला, नरहन आदि स्टेटक अधिस्वामी लोकनि जे सब अन्त: करणसँ किछु रहल होथि, बाहरसँ अंग्रेजशासकक अनुवर्तीए प्रतीत होइत छलाह । अत: आश्रित लोकनि यदि किछु अनुभव करितो छलाह तैयो आश्रयदाता कुपित ने भऽ जाथि ताहि भयसँ व्यक्त नहि करैत छलाह । सय-पचास बीघा भूमि जोतनिहार पैघ गृहस्थलोकनि साक्षरमात्र होयब पर्याप्त बूझैत छलाह । छोट छोट गृहस्थ ओ कृषि-मजदूर वर्गमे शिक्षाक प्रति कोनो आकर्षण छलैके नहि ।

चारिम कारण- उनैसम शताब्दीक कोन कथा, बीसम शताब्दीक प्रथम चरणधरि लोकभाषामे साहित्य रचना करब कोनो पाण्डित्यक प्रकर्ष नहि मानल जाइत छल, प्रत्युत एकरा रजनी-सजनी कहि पण्डितलोकनि उपहासास्पदे मानैत छलथिन जकर प्रत्यक्ष प्रमाण थीक- महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक दरबारमे आधुनिक युगक प्रवर्त्तक चन्दाझाकेँ कवेस्सर कहि उपहास करबाक प्रवृत्ति । ई भिन्न बात जे कवीश्वर चन्दाझा अपन साहित्य साधनासँ अपनाकेँ कवीश्वरे नहि सिद्ध कयलनि, अपितु महाकवि विद्यापतिजकाँ भविष्य-द्रष्टा बनि, मातृभाषा-साहित्यकेँ भविष्यक हेतु प्रोद्भासित पथपर अग्रसर करैत अपनाकेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रवर्तक रूपमे प्रतिष्ठापित करबामे समर्थ भेलाह ।

जाहि समयमे राष्ट्रिय कांग्रेसक स्थापना भेलैक ताहि समयमे दरभंगाक राजगद्दी पर महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह विराजमान छलाह । ओ आधुनिक दृष्टि-सम्पन्न

प्रखर राष्ट्रिय चेतना रखनिहार व्यक्ति छलाह, जकर उदाहरण ओ प्रयागमे भूमि अर्जित कऽ कांग्रेसकेँ दान करब तथा अपन राजकाजसँ मैथिलीकेँ बहिष्कृत कऽ ताहिस्थानपर हिन्दीकेँ प्रतिष्ठापित करब, एहि दू काज द्वारा उपस्थित कयने छलाह, तथापि ऊँट कखन कोन गरेँ बैसत ताहिसँ आशंकित भऽ अपनाकेँ प्रच्छन्ने राखय चाहैत छलाह ।

'भारतमे स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास'मे डा. पुखराजजैन स्वतन्त्रता संग्रामकेँ तीन कालमे विभाजित कयने छथि । ओ 1885 मे कांग्रेसक स्थापना कालसँ 1905 ई. धरिक काल खण्डकेँ उदार वा नरम राष्ट्रियताक काल कहैत छथि । एहि अवधिमे महाराजलक्ष्मीश्वर सिंहक निधन (1898 ई.) भऽ गेलनि आ महाराजधिराज रमेश्वरसिंह सिंहासनारूढ़ भेलाह । ओ कट्टर सनातनी छलाह । समाजकेँ अशिक्षा, अन्धविश्वास, मिथ्याभिमान तथा अनेक प्रकारक वैषम्य सबमिलि दिनानुदिन ह्रासोन्मुख बनौने जा रहल छलैक, तेँ समाजकेँ दूषणसँ मुक्त करबाक तथा जनसामान्यमे आत्मचेतना जगयबाक हेतु जे किछु गनल-गूथल जाग्रतचेतनाक लोक रहथि से जातीय संगठन ठाढ़ करब उपयुक्त मानैत छलाह । समाज-सुधार सेहो स्वतन्त्रता आन्दोलनक एक अंग मानल जाइत छल । ताहीक्रममे मिथिलांचलमे अनेक जातीय संगठन भेल छल यथा- गोपमहासभा, कायस्थ महासभा, राजपूत महासभा, वैश्य महासभा आदि । एही जाति सभक मध्य यत्रतत्र शिक्षाक क्षीण आलोक उदित भेल जा रहल छलैक । एही सरणिपर महाराजधिराज रमेश्वर सिंह सेहो मैथिल ब्राह्मण ओ कर्णकायस्थक एक संस्था मैथिल महासभाक नामसँ 1910 ई.मे स्थापित कयलनि जकर ओ आजीवन सभापति रहलाह । ताबत धरि कवीश्वर चन्दाझाक तिरोधान भऽ गेल छलनि । मैथिलीमे विद्यावाचस्पति मधुसूदनझाक सम्पादकत्वमे 'मैथिल-हित-साधन' नामक तथा काशीसँ महामहोपाध्याय मुरलीधरझाक सम्पादकत्वमे 'मिथिला मोद' नामक मासिक पत्रिका (1905) सँ प्रकाशित भऽ रहल छल । दरभंगा राज दिससँ सेहो मिथिलामिहिर नामक एक मासिक पत्रिका 1909 ई. सँ प्रकाशित होमय लागल छल । यद्यपि एहि तीनू पत्रिकामे हिन्दी भाषा सेहो समाविष्ट छल, परन्तु अन्तर ई छल जे 'हितसाधन' ओ 'मोद'मे मैथिलीक प्रमुखता रहैत छलैक आ मिहिरमे हिन्दीक भगिनमानक घड़ारी जकाँ एक कातमे किछु पृष्ठमात्र मैथिलीकेँ देलगेल छलैक ।

अंग्रेज शासकवर्ग तेहन धूर्त्त छल जे ओकर शासन व्यवस्थासँ जनसाधारण अतिशय प्रभावित छल । सड़क, रेल, डाक, तार, कोट, कचहरी आदि देखि, लोक चकित-विस्मित रहैत छल तथा एहि नवीन व्यवस्थाकेँ ईश्वरीय वरदान मानैत छल । भीतर-भीतर ओ सब एहि देशक संस्कृति ओ धर्मकेँ नष्ट-भ्रष्ट करब, इतिहासकेँ विकृत रूपमे उपस्थित करब, वर्ग-वर्गक मध्य वैमनस्यक बीजारोपण करब इत्यादि प्रक्रिया तेना छद्‌म रूपेँ करैत छल जकर आभासमात्रो जन-साधारणकेँ के कहय, अधिकतर शिक्षितो वर्गकेँ नहि भऽ पबैत छलैक । जनिका लोकनिकेँ होइतो छलनि से अपना आश्रयदाताकेँ कुपित भऽ जयबाक भयसँ व्यक्त करब हितकर नहि मानैत छलाह । जनिकालोकनिकेँ नहि रहल जाइत छलनि से लोकनि अन्योक्तिकेँ माध्यम बनाय अभिव्यक्त करैत छलाह, किन्तु प्रकाशनक अभावमे जनसाधारण धरि ओ पहुँचि नहि पबैत छल । ई प्रवृत्ति कवीश्वर चन्देझाक साहित्यसँ परिलक्षित होमय लगैत अछि ।

उदाहरणार्थ निम्नांकित पद्य देखल जा सकैत अछि-

चिरंजीव रहु सीमर गाछ
परशहि ककर आंग नहि चाँछ
के नहि लज्जित सेबि समाज
कुसुम समय खग वंचन काज
आगिहु जरय न जारन तोर
साँखु समान शाल बल थोर
तुअ छाया नहि पथिक जुड़ाय
विधि घर विहित बबूरक भाय

एहि प्रकारक अन्योक्तिक माध्यमसँ अन्तरक उद्वेलनकेँ अभिव्यक्त करबाक परम्परा बहुतो दिन धरि चलैत रहल अछि जे संकलित पद्यसमूहमे पाठक वृन्दकेँ भेटतनि ।

अंग्रेज शासक द्वारा आधुनिक पाश्चात्य पद्धतिक शिक्षा प्रारम्भ भेल छल ताहिमे आधुनिक भारतीय भाषा सबकेँ सेहो समाविष्ट कयल गेलैक, किन्तु मैथिलीकेँ, जे ताहि समय मिथिला भाषा कहबैत छल आ जकर छओ

सयवर्षसँ अधिकेक इतिहास छलैक, जाहिमे पद्य ओ नाटकक अतिरिक्त वर्णरत्नाकर सदृश गद्य-ग्रन्थ उपलब्ध छलैक तकरा, जखन स्वयं मिथिलेशे अपन राजकाजक भाषासँ बहिष्कृत कऽ देलथिन तखन एकर सुधि आन के लितैक ? मैथिलहितसाधन ओ मिथिलामोद एहि दूनू पत्रिकाकेँ भाषाक अस्तित्वरक्षे करब प्रमुख समस्या प्रतीत भेलैक, तदतिरिक्त समाज-सुधारक जे एकटा बसात बहल छलैक ताहि क्रममे मिथिलामे बालविवाह, बृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, बहु विवाह प्रथा तथा उपनयन, विवाह आदिमे भोज-भात, भार-दोर आदिमे पैघत्वक प्रदर्शन करब, किन्तु सदाचार-पालनमे प्रमाद आदि सामाजिक दूषण विकट रूप धारण कयने जा रहल छल, ताहि सभक निराकरणमे अपन शक्तिक उपयोग करय पड़ैत छलैक । राष्ट्रिय चेतना जगयबामे समाज-सुधार आधारभूत कार्य मानल जाइत छल, तेँ बंगाल वा महाराष्ट्र अथवा पंजाब आदिमे जाहि प्रकारक क्रान्तिकारी विचारधाराक प्रसार भऽ रहल छलैक तकर सूचनो एतय धरि कदाचिते पहुँचि पबैत छलैक ।

दोसर बात उदार राष्ट्रवादी विचारधाराक प्रखर नेता गोपालकृष्ण गोखले पर्यन्त कहल करथिन जे हमरालोकनिकेँ ई मानय पड़त जे ब्रिटिश शासन विदेशी होयबाक कारणेँ अपन त्रुटि सभक अछैतो देशवासीक प्रगतिमे एक बहुत पैघ साधन रहल अछि, एकर बनल रहबाक अर्थ ओहि शान्ति तथा व्यवस्थाकेँ बनल रहबासँ छैक जकरा यैह कायम राखि सकैत अछि तथा जाहिसंग हमरा लोकनिक श्रेष्ठ हित बन्हायल अछि । ब्रिटिश सम्राटक प्रति राजभक्ति राखब ओ तकर सार्वजनिक उद्घोष करब उदारवादी राष्ट्रिय नेता अपन कर्तव्य बुझैत छलाह, तेँ ने कांग्रेसक प्रथम अधिवेशनक सभापति व्योमेश चन्द्र बनर्जी बाजल छलाह— हम जखन कहैत छी जे अंग्रेजी सरकारकेँ हमर तथा एतय बैसल हमर मित्र लोकनिक अपेक्षा अधिक गंभीर तथा पक्का राजभक्त व्यक्ति भेटब असंभव छैक, तँ से एतय उपस्थित सब सज्जनक मत व्यक्त करैत छी ।

दोसर अधिवेशनमे दादाभाई नौरोजी घोषणा कयने छलाह जे- आउ, हमरालोकनि पुरुष जकाँ बाजी आ घोषणा कऽ दी जे हम सब आचूड़ राजभक्त छी । ताहि समयक उदारवादी नेता लोकनिक प्रसंग श्रीमती एनीबेसेण्ट बाजल छलीह जे ताहि समयक नेता अपनाकेँ प्रजा मानबामे गौरवक अनुभव करैत छलाह ।

सुरेन्द्रनाथ बनर्जीक कहब छलनि जे अंग्रेज लोकनिक न्याय, बुद्धि तथा दयाभावनामे हमरा लोकनिकेँ दृढ़ विश्वास अछि । डा० पट्टाभि सीतारमैयाक अनुसार-उदारवादी नेता लोकनि एहि बातपर विश्वास करैत छलाह जे अंग्रेज स्वभावसँ न्यायप्रिय होइत अछि, यदि ओकरालोकनिकेँ भारतीय दृष्टिकोणक समुचित ज्ञान कराय देल जाइक तँ ओ सब भारतीय दृष्टिकोणकेँ स्वीकार कऽ लेत ।

एहि प्रकारक दृष्टिकोण मैथिलीक साहित्यकारलोकनिमे सेहो देखल जाइत अछि । उदाहरण स्वरूप प्रथम विश्वयुद्धक क्रममे एक गीत अनाम प्रकाशित अछि–

(खेमटा मिथिलाभाषा)

गाउ ब्रिटिश विजय ।
ब्रिटिशक रिपुक झटिति होय क्षय ।।
ब्रिटिश रविक भेल जखन उदय ।
तखनहि भारतक दुखभेल क्षय ।।
सबजन सुखमय शयन करय ।
देखल कतहु नहि एहन सुनय ।।
मिथिलाक उन्नतिक अछि सुसमय ।
मातृभूमि ऋणसँ उऋण जाउ भय ।
सुतल युरोप मध्य समर समय ।
जर्मन करय कर्म छाड़ि नृप-नय ।।
दुखितक दुखहारी ब्रिटिश सदय ।
समर सुभूमि मध्य करथि विजय ।
तनमनधान दिय अरपन कय ।
कीर्ति सौरभित करू जगत हृदय ।।
जानकी सौं करजोड़ि करिय विनय ।
ब्रिटिशक जय होय जय ! जय ! जय ।।

सामन्तलोकनि अंग्रेजी शासनकालमे अपनाकेँ सुरक्षित बुझैत छलाह,

हुनका लोकनिक आश्रयमे रहनिहार लोकक मानसिकता ताहिसँ भिन्न कोना होइतैक ?

एमहर कांग्रेसक नीतिमे जमीन्दारी उन्मूलन, अस्पृश्यता-निवारण, शोषित-पददलित वर्गक जीवनस्तरकेँ ऊपर उठायब, समतापर आधारित समाजक पुनर्गठन आदि प्रमुख स्थान रखैत छल । अतः जमीन्दारी उन्मूलनसँ जनिक वर्चस्विता खतरामे पड़ितनि तनिके आश्रयमे रहि, ताही नीतिक समर्थन लिखल-पढ़ल लोक कोना करैत ?

मिथिलाकेँ कर्मकाण्ड तेना जकड़ने छलैक जे स्पृश्यास्पृश्यक विचार पाखण्डक पराकाष्ठाधरि पहुँचि गेल छल । यद्यपि कतहु कतहु संस्कृतोक पण्डितलोकनिमे प्रगतिशील विचार आबि रहल छलनि, यथा अपना युगक सबसँ लोकप्रिय तथा भाषापर अप्रतिम अधिकार रखनिहार कविवर सीतारामझाक निम्नांकित पद—

जगमे सबसौं थिक अशुचि श्वान
ई कहय शास्त्र ओ श्रुतिपुरान
पोसी तकरा हम सहित मान
दै छी चिनुआरक निकट थान
पर अंग हमर जे मनुजजात
हलखोड़, डोम मुसहर, किरात
यदि ओ दुआरिपर दैछ लात
तँ भ्रष्ट घरक सब वस्तु-जात
बुझि, फेकि करै छी तुरत कात
डाँटी ओकरा कहि कहि कुबात
एहि सौँ विशेष की आत्मघात
बहि रहल आइ उनटा बसात

सिद्ध करैत अछि जे अस्पृश्यता-निवारण सदृश आवश्यक काजक प्रति दृष्टिकोणमे परिवर्तन आबि रहल छल । तथापि सम्पूर्ण समाजमे एहि प्रकारक उदार दृष्टि रखनिहार अपवादे रूपमे देखल जाइत छलाह ।

एहिठामक आभिजात्यवर्गक निर्धनसँ निर्धनो लोक अपना हाथेँ अपन काज करब सामाजिक प्रतिष्ठामे हानि मानैत छलाह । शोषित वर्गक जीवनस्तर यदि सुधरि जइतैक तँ हुनकालोकनिक टहल-टिकोरा, सेवा-शुश्रूषामे व्याघात होयबाक संभावना । अतः एहू नीतिसँ सहमति अत्यल्पे लोकक छलैक । एतावता मिलाजुलाकऽ कांग्रेसक नीति अधिकतर लोकक हेतु बाँतरे प्रतीत होइत छलैक । तथापि यदि कतहु-कतहु ककरो-ककरो हृदयमे क्रान्तिक चिनगी छलैको तँ तकरा प्रज्वलित होयबाक हेतु अपेक्षित इन्धने प्राप्त होयब कठिन छलैक । अतः निःसंकोच कहल जा सकैछ जे जहिना आधुनिक शिक्षाकेँ एतय पहुँचबामे विलम्ब भेलैक तहिना आधुनिक विचारधारा सेहो एतय बहुत बिलम्बसँ पहुँचि सकल । एना कहल जा सकैछ जे भारतीय राजनीतिक क्षितिजपर स्वतन्त्रता आन्दोलनक सूत्रधारक रूपमे जखन महात्मा गान्धीक उदय भेलनि तथा मिथिलाक पश्चिमान्त सीमाक्षेत्र चम्पारणकेँ ओ अपन कार्यक्षेत्र बनौलनि तखन एहू क्षेत्रमे स्पन्दन अयलैक तथा कवीश्वर चन्दाझाक साहित्यमे जे राष्ट्रिय चेतनाक बीज परिलक्षित होइत अछि ताहि बीजकेँ अंकुरित, पल्लवित ओ पुष्पित होयबाक अनुकूल वतावरणक सृष्टि होमय लागल । किन्तु साधनक अभावमे ओहि प्रकारक रचनाकेँ प्रकाशमे अयबामे बहुत बिलम्ब होइत गेलैक । ने कोनो तेहन पत्र-पत्रिका, ने प्रेस, ने मंच, अतः कण्ठे कण्ठ चलैत किछुकाल धरि पहुँचितो रहलैक तथापि पुस्तकक आकार ग्रहण कऽ स्थायी रूपमे अयबाक काज नगण्ये कहल जा सकैछ । ओहि समयमे प्रकाशनक सुविधा नहि रहलाक कारणेँ कतोक ठाम उत्साही युवक लोकनि हस्तलिखित पत्रिका प्रकाशित कऽ अपन सौख्य पूर करैत रहलाह जकर प्रचार-प्रसार सीमितोमे सीमित कहल जा सकैछ । ओहो पाण्डुलिपि सब अत्यल्पे संख्यामे सुरक्षित रहि सकल, अधिकतर अगिलग्गीमे अग्निदेवक तथा बाढ़िमे वरुण देवक नैवैद्य बनिगेल, सुरक्षितोमे बहुतो दिवाड़क आहार बनल । तथापि प. यदुनाथ झा 'यदुवर' द्वारा 1923 ई. मे संकलित तथा 1926 मे सम्पादित ओ मुद्रित मैथिली गीताञ्जलि नामक पुस्तकक भूमिका, जे आब दुर्लभ भऽ गेल अछि, साक्ष्य रूपमे उपस्थित कयल जा सकैछ, जाहिमे देशक अन्यान्य भाषाक साहित्यिक प्रवृत्तिक संग तत्कालीन मैथिली साहित्यकार लोकनिक प्रवृत्तिहुक संकेत भेटैत अछि तथा साहित्यकारलोकनिकेँ राष्ट्रिय विचारधारा दिस उन्मुख होयबाक प्रेरक सन्देश से हो । लुप्तप्राय होइत ओहि

भूमिकाक अत्यावश्यक अंश एतय उद्धृत करब समीचीन प्रतीत होइछ, जाहिसँ वर्तमान ओ भविष्यहुमे जनसामान्यकेँ तात्कालीन युगसत्यक परिज्ञान भऽ सकैक । यदुवरजी अपन भूमिकामे लिखैत छथि–

''संसार परिवर्तनशील अछि । एके वस्तु वा विषयक सर्वदा स्थिरता नहि रहैछ । जे आइ से काल्हि नहि और जे काल्हि से आइ नहि । एहि प्रकारेँ सब विषयक संग मनुष्यक रुचिओ बदलल जाइत अछि । जाहि वस्तुपर एक दिन सभक विशेष रुचि छल, जकरा प्रचारक हेतु लोक विशेष यत्नवान छलाह, जाहि भावमध्य तन-मनसँ यत्नशील छलाह ताहि वस्तुसँ आइ सभक चित्त हटल देखैत छी, ओ लोकनि ओहि वस्तुकेँ आब बहुत अल्प चर्चा करैत छथि । अथवा ई कहि सकैत छी जे ओही वस्तुकेँ आब दोसर रूप दै रहल छथि, दोसर तरहेँ देखैत छथि जे ओ व्यवहृत करैत छथि । साहित्यहुक यैह दशा अछि, भक्ति, ज्ञान और वैराग्य एवं श्रृंगार विषयक कविता दिशि आब लोक-रुचि कम देखना जाइछ । सभक सभ राष्ट्रीय धूनमे मस्त छथि, देशकेँ जातिकेँ अथवा समाजकेँ ऊपर उठैबाक प्रयत्न सब कऽ रहल छथि, भारतवर्षक ब्राह्मणसँ लै कै अस्पृश्य एवं मुसलमान पर्यन्त एहि रंगमे रँगि गेल छथि । राष्ट्रीय भावसँ सभक हृदय भरल अछि, जे किछु करैत छथि से केवल राष्ट्रीय उद्देश्यसँ । यैह दशा कविता तथा गानहुक देखना जाइत अछि । अथवा ई कहू जे भक्ति, ज्ञान श्रृंगारादि सम्बन्धिनी कविता पराकाष्ठा धरि पहुँचि गेल अछि । आब राष्ट्रीये विषयक कविताक प्रकाश होएब परम आवश्यक अछि । कहबाक तात्पर्य जे अन्यान्य विषयक काव्यरसमे हमर भारतवर्ष पूर्ण अवगाहित भऽ चुकल, श्रृंगार, ज्ञान, भक्ति इत्यादि सम्बन्धिनी कविताक रसास्वादन ई देश नीक जकाँ कऽ चुकल, किन्तु आब ओ समय नहि रहल, विलासादिक समय गेल, आब विकट मार्मिक समय उपस्थित भेल अछि । अतः भारतवर्षक अन्यान्य प्रान्त वा जाति जकाँ हमरहु सबकेँ कोमल श्रृंगारसँ रहित भऽ, नायिकाजनक व्यर्थ स्तुति ओ प्रशंसाकेँ त्यागि, वीर वेषमे माता (मिथिला)क भक्तिपूर्ण गानमे तन-मनष्क होमक चाही ।

क्यो कवि कहने छथि– सद्यः प्रीतिकरोरागः । अर्थात् गान द्वारा मनुष्यक चित्तपर स्वभावतः अधिक प्रभाव पड़ैत अछि । एकरा प्रायः सब विज्ञलोकनि समर्थन करैत छथि । प्रायः पाश्चात्यकोनो सभ्य जाति वा देश

एहन नहि भेटत जतै एहि तरहक गानक विशेष प्रचार नहि अछि । वर्तमानकालमे सबठाम प्रायः एकरे अधिक चर्चा अछि, एतद्विषयक अनेको पत्र, पुस्तक प्रकाशित भऽ जनता द्वारा आदृत भऽ रहल अछि । जाहिसँ ताहि देश वा जातिमे पूर्णजागृति प्रदर्शित होइछ । भारतवर्षक प्रायः सब उच्च भाषामे एहि तरहक पुस्तक अछि और राष्ट्रीय गान संगहि, तथा राष्ट्रीयवीणा, राष्ट्रीय झंकार, राष्ट्रीय तरंग, राष्ट्रीय तान तथा भारतीय गान, स्वराज्य गान प्रभृति एहि विषयक पुस्तकक पूर्ण आदर अछि । कतौक पुस्तक-प्रकाशकलोकनि एहन एहन पुस्तक प्रकाशित कऽ यशक संग संग पूर्ण धन ओ ख्याति प्राप्त कयने छथि तथा कऽ रहल छथि । एतदतिरिक्त सम्प्रति देशमे औरो देशानुराग सम्बन्धिनी कविता ओ संगीत सुधाक फुहारा सर्वत्र पड़ि रहल अछि ओ एहि प्रकारक कविताक समादर प्रायः सबठाम दृष्टिगोचर होइछ । गमारसँ गमार व्यक्ति एहि तरहक गीत ओ कविता गाबि-गाबि आनन्द मनबैत अछि ओ मस्त रहैत अछि । हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, उर्दू प्रभृति भाषाक कवि किंवा लेखक लोकनि स्वदेशानुरागपूर्ण लेख पुस्तक तथा गीत कवितादि लिखि अपन अपन लेखनीकेँ पवित्र कऽ रहल छथि । एहना सुअवसरकेँ पाबि हमर मैथिलो कवि लोकनि मौन बैसल नहि छथि ।

हँऽ एतबाधरि अवश्य स्वीकार करबे जे अधिकांश मैथिलक हृदय राष्ट्रीय भावक प्रकाशसँ प्रकाशित नहि भेल अछि, किन्तु हँऽ हम मुक्त कण्ठसँ कहि सकैत छी जे मैथिल कविलोकनिक हृदय ओहि प्रकाशसँ वंचितो नहि अछि, जकर सद्यः प्रमाण यैह पुस्तक अछि ।

कविलोकनिक हृदय स्वतन्त्रता ओ उच्चभावसँ परिपूर्ण रहैत अछि अतः अनुमान होइछ जे परमात्मा एहि स्वतन्त्रजीवकेँ प्रसुप्त देश तथा जातिकेँ जगैबहिक निमित्त पठौने छथि ।

उक्त विचारसूत्रहिक प्रेरणासँ हम ई मिथिला गीतांजलि नामक पुस्तक सम्पादित कैल अछि । जकर अत्यन्त अभाव हमरा मिथिलाभाषा-भाषी समाजमे छल । एहिमे देशानुराग, देश ओ समाज सुधार कुरीति-सुधार सम्बन्धिनी, उत्साहवर्धिनी मैथिली कविता विशेषतः गानक संग्रह भेल अछि ।

एहन एहन गीत सभकेँ पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक हमरा ई अभिप्राय अछि जे- मैथिल युवकगण एहि पुस्तककेँ ध्यानपूर्वक पढ़ि ओ

गाबि ओ विवेचना करथि तथा देश किंवा समाज-सुधारमे सर्वथा तत्पर रहि अपन-अपन जीवनकेँ आदर्श बनाबथि कारण जे-

स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम् ।
परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते ।''

एतय ईहो स्पष्ट कय देब आवश्यक अछि जे एहि विशाल देश भारतमे अनेकतामे एकात्मभाव सुप्रतिष्ठित रहल अछि । भिन्न-भिन्न प्रान्तक भिन्न-भिन्न भेष-भूषा-भाषा, भिन्न-भिन्न प्रकारक खान-पान, रीतिरेवाज, विधि-व्यवहार, एतेक धरि जे भौगोलिक ओ नैसर्गिक स्थिति ताहूमे अन्तर अछि, तथापि सांस्कृतिक आधारभूमि समान रहल अछि । तत्रापि सांस्कृतिक धरातल सम रहितहु परिस्थितिजन्य वैषम्य सेहो विद्यमान रहल अछि, जाहि कारणेँ स्थानीय समस्यामे भिन्नता रहब स्वाभाविके मानल जायत । पहिनहु कहल गेल अछि जे समाज-सुधार स्वतन्त्रता आन्दोलनक आधारभूमिए मानल जाइत छल । मिथिलाक निकटतम प्रतिवेशी बंगाल, जे बहुतो दिन धरि अंग्रेजी साम्राज्यक राजधानी रहल आ राष्ट्रिय चेतनाकेँ उद्‌बुद्ध करबामे अग्रणीओ, सेहो समाज सुधारेकेँ सर्वप्रथम जगजागरणक माध्यम बनौलक जाहिसँ उत्कट राष्ट्रभक्तिक प्रेरणा जन-साधारणकेँ प्राप्त भेलैक आ खुदीरामबोस, वारीन्द्रघोष नेताजीसुभाष सदृश कतोक बलिदानी आत्माहुतिक हेतु ,अग्रसर भेलाह आ स्वतन्त्रता आन्दोलनकेँ संजीवनी शक्ति प्राप्त होइत रहलैक ।

अपन-अपन भूखण्डमे अखण्ड भारतमाताक स्वरूपक दर्शन कयनिहार लोकनि यथा- बंकिमचन्द्र चटर्जी अपन मातृभूमि बंगलाक तथा लक्ष्मीनाथ वेजबरूवा अपन मातृभूमि आसामक वर्णन करैत ओहीमे सम्पूर्ण भारतक आत्माक दर्शन कयलनि तहिना मिथिलाक्षेत्रक कवि लोकनि मिथिलेकेँ-

''लघु प्रतिमा भारतक ई विधि शिल्पी कर-कौशलेँ
दर्शनीयरूपेँ रचल, जनक-पदक छवि छलेँ

बूझि मिथिलेमे सम्पूर्ण भारतक प्रतिविम्ब देखलनि तँ कोनो अस्वाभाविक विषय नहि मानल जायत । बंगाल ओ आसामक संग मिथिलाकेँ बहुत प्राचीन कालसँ निकटसम्पर्क रहलैक अछि । महाकवि विद्यापतिएक कालसँ बंगाल ओ आसाम मैथिली साहित्यसँ प्रेरणा ओ प्रभाव ग्रहण करैत रहल । न्याय

शास्त्रक अध्ययनार्थ जँ बंगाली छात्र एतय अबैत छलाह तँ एतयसँ शक्तिपीठ कामाख्या जाय, तन्त्रसाधक लोकनि मन्त्रसिद्ध कऽ अबैत छलाह, जाहि माध्यमसँ मैथिली साहित्यक सुरभि बंगाल ओ आसाम धरि पहुँचैत छल। दोसर जहिना बंगाल ओ असमिया भाषासाहित्यक मूलमे मैथिलीभाषासाहित्य प्रमुख प्रेरक तत्त्व रहल अछि तहिना उक्त दूनू प्रान्तक लिपिक मूल सेहो मिथिलाक्षर वा तिरहुतालिपि रहल अछि। बीसम शताब्दीक प्रथम दशक धरि मिथिलामे मिथिलाक्षरेक प्रचार छल। ताहि समयक पत्र-पत्रिका साक्षी अछि जाहिमे मैथिल विद्वानलोकनिसँ देवनागरी लिपि सिखबाक आग्रह कयल जाइत छलनि, कारण जे प्रेस देवनागरीए लिपिमे पुस्तक छपैत छल। कहबाक तात्पर्य जे लिपि साम्यक कारणेँ बंगला ओ असमिया साहित्य पढ़ब मैथिल विद्वान लोकनिक हेतु सुगम छलनि। यैह कारण थीक जे मैथिली भाषामे अन्यान्य भाषासँ जे अनुवाद भेल अछि ताहिमे संस्कृतक बाद बंगले भाषा साहित्यक अनुवाद अधिकतर भेल अछि। तेँ बंगला साहित्यसँ राष्ट्रिय चेतना मैथिली भाषामे आयल तँ से स्वाभाविके। फलतः मैथिली साहित्यमे ताहियुगक अधिकतर कवि मातृभूमि (मिथिला)क वन्दनाक माध्यमसँ अतीतक गौरव-स्मरण करबैत तथा वर्तमानक हीन दशाक वर्णन करैत समग्रराष्ट्रक प्रति अपन समर्पण भाव व्यक्त कयने छथि जे राष्ट्रिय चेतनाकेँ उद्‌बुद्ध करबामे सहायक सिद्ध भेल। अतः एहि संकलनमे ताहि प्रकारक मातृभूमि वन्दना, समाज-सुधार सम्बन्धी रचना, सामाजिक स्थिति तथा ताहि समयक प्रशासनमे प्रविष्ट अनाचार-भ्रष्टाचार आदिक वर्णन-मूलक रचना सबकेँ समाविष्ट कयल गेल अछि।

कवीश्वर चन्दाझासँ आरम्भ कऽ स्वतन्त्रता प्राप्तिसँ पूर्व धरिक जे सामग्री प्रकाशित अप्रकाशित पत्र-पत्रिकादिमे उपलब्ध भऽ सकल से संकलित कयल गेल अछि। संगहि एहि प्रकारक रचना जे रचल गेल ताही समयमे, परन्तु पुस्तकक आकार स्वतन्त्रताप्राप्तिक बाद ग्रहण कऽ सकल, ताहू रचनासबकेँ स्थान देल गेल अछि।

ई दाबा तँ नहि कयल जा सकैछ जे एतत्सम्बन्धी समग्र रचना एहिमे संकलिते भऽ सकल अछि। मात्र एकेबेरक प्रयासमे सम्पूर्ण समाजमे छिड़िआयल सामग्रीकेँ एकत्र कऽ लेब कठिने नहि, असम्भवप्राय सेहो अछि। आब एकर

प्रकाशनसँ एक आधार प्रस्तुत भेल अछि । साहित्यक प्रति विशेष रुचि रखनिहार सजग पाठकवृन्दसँ आग्रह ओ अनुरोध जे एहि प्रकारक कविता ओ गीत यदि स्मृति-पथ अथवा दृष्टिपथपर होइनि तँ कृपापूर्वक एहि पुस्तकक सम्पादकके सूचित करथि जाहिसँ भविष्यमे यदि एकर दोसर संस्करण होयबाक सुयोग लागि सकैक तँ ताहिमे समाविष्ट कयल जा सकय ।

एतेक जागरण भेलाक बादो मैथिलीकेँ एहन सौभाग्य नहि भेलैक अछि जे कतहु प्राचीन सामग्री एकत्र उपलब्ध होयबाक सुविधा होइक । तेहना स्थितिमे सामग्री संकलनमे रने-वने पात तोड़बाक अतिरिक्त कोनो आन उपाय नहि । विगत दू वर्ष सँ अनवरत लागल रहलाक बाद जे संचित भऽ सकल से समक्ष उपस्थित कयल गेल अछि । एहि अनुष्ठानमे यदि सर्वाधिक डा. श्रीरामदेवझा तदुत्तर डा. श्री भीमनाथ झा, श्री शम्भुनाथ मिश्र, श्री कृष्णदेवझा, श्री शंकरदेव झा, आदिक सहयोग तथा आचार्य श्री सुरेन्द्रझा सुमनक मार्गदर्शन नहि भेटैत तँ ने जानि और कतेक समय लागि जाइत । एहि हेतु हिनका लोकनिक प्रति आभारी छी ।

अन्तमे एहि संकलित रचना सभक दिवंगत ओ जीवित साहित्यकार लोकनिक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करैत छिऐनि जे लोकनि युगानुरूप रचना द्वारा मैथिली भाषा साहित्यकेँ प्राणवन्त रखलनि तथा भविष्यमे अयनिहार पीढ़ीक हेतु मार्गदर्शन कयलनि । अपन अल्पज्ञता तथा काँटाक दोषेँ भेल त्रुटिक हेतु क्षमा-याचनाक अतिरिक्त दोसर उपाये कोन ?

[स्वातन्त्र्य स्वर]

●

गीत गोविन्द आ मैथिली

संस्कृत साहित्य सागर जकाँ विस्तृत अछि, जकर आदि–अन्तक पार पायब असम्भवप्राय प्रतीत होइछ, परन्तु ताहिमे 'गीत गोविन्द'क एक पृथक स्थान छैक । एकर लोकप्रियता एहीसँ बूझल जाय सकैछ जे मिथिलामे गीत गोविन्दक नटुआकेँ विशेष प्रतिष्ठा प्राप्त छलैक । सखबाड़ग्राम निवासी दरबारीदास एकर गायनमे परम पटु छलाह । अपन किशोरावस्थामे राज दरभंगा द्वारा आयोजित दरभंगाक इन्द्र पूजा तथा राजनगरक दुर्गा पूजाक अवसर पर भाव मुद्रा–प्रदर्शन पूर्वक हिनक गायन अनेक वर्ष धरि सुनैत रहबाक सुअवसर प्राप्त भेल अछि । जातिक दुसाध होइतो हिनक स्फुट तथा विशुद्ध संस्कृतक उच्चारण आश्चर्य सन लगैत छल । दरबारी नामानुरूप राज दरबारमे हिनका नटुआमे पण्डित मानल जाइत छलनि । सुनल अछि जे साहित्य–रत्नाकर महाकवि मुंसी रघुनन्दन दाससँ ई गीत गोविन्दक कतिपय अति प्रचलित गीत सभक अर्थ ओ उच्चारण बुझने, पढ़ने आ सिखने छलाह ।

महाकवि जयदेवक लोकप्रियताक दोसर उदाहरण थिकाह मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापति, जनिका अभिनव जयदेवउपाधिसँ विभूषित कयल गेल छलनि ।

मैथिलीमे महाभारत, मेघदूत, कुमारसम्भव आदि अनेक महाकाव्यक अनुवाद भेल अछि, किन्तु गीत गोविन्दक अनुवाद दिस कम गोटे प्रवृत्त भेलाह, ताहिमे पहिल नाम कविचूड़ामणि 'मधुप'क सेहो सुनल अछि, परन्तु से प्रकाशित नहि छनि ।

प्रकाशित प्रथम पुस्तक मङरौनी निवासी श्रीविनयानन्द झा द्वारा

'विद्या-नयन-नीलिमा-विलास' नामसँ लोकार्पित करबाक सुयोग लागल तथा गोनौली ग्राम वास्तव्य स्वतन्त्रता सेनानी महादेव मिश्र द्वारा अनूदित गीत गोविन्दक मैथिली गीतगोविन्द नामक पाण्डुलिपि सेहो देखबाक सुअवसर भेटल ।

अनेक आचार्य लोकनि काव्यकेँ अपना-अपना ढंगेँ परिभाषित कयने छथि, ताहिमे आचार्य विश्वनाथ द्वारा कयल 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्'केँ अधिक प्रश्रय भेटलैक ।

विभिन्न मनोभावकेँ यथा– रति, उत्साह क्रोध, हास, घृणा, विस्मय भय शोक निर्वेद आदिकेँ आधार मानि नओ गोट रसक नाम कहल गेल अछि यथा–श्रृंगार, वीर, रौद्र, हास्य, वीभत्स, करुण, भयानक, अद्‌भुत ओ शान्त । रति स्थायिभावक परिधि कनेक विस्तृत छैक तेँ एकर तीन भाग भऽ गेलैक– शृंगार, भक्ति ओ वात्सल्य, पुनश्च शृंगारक दू भेद संयोग शृंगार, विप्रलम्भ शृंगार आ महाप्रभु चैतन्य देवक आविर्भावक पश्चात भक्तिक एक प्रशाखा प्रेमाभक्तिक रूपमे स्थान बनौलक ।

हमरा जनैत जेना वाक्यमे रसकेँ स्थान छैक तहिना भोज्य पदार्थहुमे रसकेँ स्थान छैक । एकरा छओ भागमे बाँटल गेल छैक– मधुर, कटु (कड़ू) अम्ल, लवण, तिक्त, कषाय (आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' सोन्ह स्वादकेँ, जे भूजा, आगिमे पका कऽ बनाओल आलूक साना (सन्ना) आदिमे भेटैत अछि सातम रस मानैत छलाह) । जेना गरीबसँ गरीब लोक रुख-सुख रोटीकेँ कण्ठक नीचाँ उतारबाक लेल कमसँ कम नोन-मेरिचाइक उपयोग करैत अछि, तहिना मूर्खसँ मूर्ख, गमार लोकोक जीवनमे शृंगार ओ भक्ति नैसर्गिक रूपमे व्याप्त रहिते छैक । निसर्गे ओकर स्वभाव कही, प्रवृत्ति कही ताहिमे घोरि देने छैक ।

पौराणिक मान्यताक अनुसार भगवान शंकर कामकेँ भस्म कऽ देलथिन तँ देव मण्डलमे कोलाहल मचि गेल जे आब ई सृष्टि चलत कोना ? कारण 'कामः संसार हेतुश्च' कहले नहि गेल अछि, प्रत्युत प्रत्यक्षे अछि । तखन ब्रह्मा, विष्णु आदि सब देवगण भगवान शंकरक शरणमे पहुँचलाह । हिनका सभक अनुनय-विनयसँ द्रवित भऽभगवान शंकर अनंग रूपमे कामकेँ पुनः जीवन दान कऽ जंगम प्राणिमात्रक हृदयमे वास देलथिन । अतः सुखमे शृंगार तथा दुखमे भक्ति मानव जीवनक आधार बनि गेल ।

ई प्रेम लौकिक रूपमे श्रृंगार आ दिव्य प्रेमक रूपमे भक्तिक नामसँ सर्वत्र व्याप्त अछि । ई श्रृंगार आ भक्ति कोनो देशविशेष, जातिविशेषक सीमामे बान्हल नहि अछि । महाकवि जयदेव रचित 'गीत गोविन्द'मे उद्दाम श्रृंगारक वर्णन भेल अछि, जाहिमे भक्त लोकनिकेँ दिव्य प्रेमक दर्शन होइत छनि, परन्तु जन-सामान्य लौकिके प्रेमकेँ देखि पबैत अछि ।

जयदेव पर लिखल विनिबन्धमे डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी अपन पूर्ववर्त्ती बंगाली विद्वान लोकनिक विचारकेँ उद्धृत कयने छथि । ओहि सभकेँ उद्धृत बिनु कयने 'जयदेव' तथा 'अभिनव जयदेव'क प्रसंगक विचारसँ पाठक अवगत नहि भऽ सकताह ।

चटर्जी महाश्रय लिखैत छथि-

'अपन संस्कृत भाषा ओ संस्कृत साहित्य शास्त्र विषयक प्रस्तावमे संस्कृत साहित्यक सूक्ष्मदर्शी अध्येता ईश्वरचन्द्र विद्यासागर अपन अभिमत व्यक्त करैत लिखने छथि-

''एहि महान काव्यक रचना मधुर, मृदु ओ आकर्षक अछि तथा एहि प्रकारक रचना संस्कृत साहित्यमे अधिक संख्यामे उपलब्ध नहि अछि । हुनक वर्णन हृदयकेँ विमोहित करैत अछि, मुदा यदि जयदेवक कवित्व शक्ति ओतबे महान छलनि जतेक हुनक असाधारण कौशल, जकरा ओ अपन श्लोक रचनामे देखौलनि अछि से एहूमे देखौने रहितथि तँ हुनक गीत गोविन्दकेँ अद्‌भुत एवं श्रेष्ठ काव्य मानल जइतनि । कालिदास, भवभूति एवं अन्यान्य आचार्य सदृश महाकविक अपेक्षा जयदेव प्राय: न्यून कोटिक छथि, तथापि लगैत अछि जे बंगालमे जे संस्कृत कवि भेलाह, जयदेव ताहिमे महान छथि । कारण **गेयधर्मिता तँ कविताक मुख्य परिचिति थिकैक । यैह गुण एकरा गद्यसँ फराक करैत छैक** । किन्तु संगीतात्मक, जाहिमे मात्राक संग ताल सेहो अनिवार्य होइत छैक, ताहि परम्पराक प्रवर्त्तक भेलाह । ई जेँ नवीनधारा दिस संस्कृत काव्यकेँ मोड़लनि, तेँ एहि बिन्दुक विचारसँ सर्वोच्च शिखर पर विद्यमान छथि ।'

आब जयदेव तथा अभिनव जयदेव पर तुलनात्मक विचार कयल गेलनि अछि, ताहि प्रसंग किछु उद्धरणीय अंश द्रष्टव्य अछि । सुनीति बाबू लिखैत छथि-

'रवीन्द्रनाथक पूर्ववर्त्ती उन्नैसम शताब्दीक बंगालक सर्वश्रेष्ठ लेखक बंकिमचन्द्र प्रेम कविक रूपमे जयदेव आ विद्यापतिक तुलनात्मक अध्ययन करैत एकटा लेख लिखने छथि । एहिमे जयदेव द्वितीय सर्वश्रेष्ठक रूपमे प्रकट होइत छथि आ बंकिमचन्द्र द्वारा मौलिक विशेषता युक्त मन्तव्य देल गेल अछि एहि तरहेँ–

जयदेव सदृश कविमे हमरा लोकनि बाह्य संसारक प्रधानता पबैत छी, विद्यापतिमे हमरा लोकनि अन्तरात्माक राज्यमे छी । जयदेव आ विद्यापति दूनू राधाकृष्णक प्रेमक विषयमे गबैत छथि । मुदा प्रेमक गीत जे जयदेव गबैत छथि, हमरा लोकनिक बाह्य जीवनक–अनुसरण करैत छथि । मुदा विद्यापतिक गीत खास कऽ चण्डी दासक अन्तरात्माकेँ ऊपर उठा दैत छनि । इन्द्रिय बोधक संग, भौतिक शरीरक संग हमरा लोकनिक अपूर्ण बाह्य सम्बन्धकेँ जखन अधिक मात्रामे उपस्थित कयल जाइत अछि, तँ ओ काव्यकेँ एक तरहेँ मांसल बना दैत अछि । विद्यापति केवल मनुष्यक हृदयमे अन्वेषण ओकरा कामुकतासँ फराक कऽ करैत छथि । फलस्वरूप विद्यापतिकेँ इन्द्रिय बोधसँ सम्बन्ध नहि छनि आ एकर संस्कार किछु एहन वस्तुमे भेल छैक जे विषयानुरागसँ ऊपर अछि जे अकलुष ओ मर्यादित अछि । पुनः एकर अतिरिक्त 'पोलुलर लिटरेचर ऑफ बंगाल' लेखमे लिखने छथि– आदिसँ अन्त धरि गीत गोविन्दमे पुरुषोचित संवेदनाक एकोटा अभिव्यक्ति अथवाा एकोटा उन्नीत भावबोध नहि अछि– नारी सुलभ संवेदनाक अभिव्यक्ति पर्याप्त अछि । कविकेँ एकोटा नव सत्यक शिक्षा देबाक नहि छनि । सामान्यतः कविए लोकनि (धार्मिक आ पार्थिव) छथि जे हमरा लोकनिकेँ भव्य नैतिक शिक्षा छैत छथि जे मनुष्यक जीवनकेँ मानवताक प्रति मंगल कामनासँ भरि दैत अछि ।'

हम निष्कर्ष पर पहुँचैत छी जे अभिनव जयदेव मूल जयदेवसँ कनेक बीसे छथि उन्नैस नहि तथा मैथिलीक अनुवादक लोकनि 'गीत गोविन्द'क अनुवाद दिस एही हेतुसँ अधिक उन्मुख नहि भेल होयताह ।

●

शोक काव्य रोम-रोम-रामज्योति : एक विहंगम दृष्टि

व्यावहारिक दृष्टिएँ देखल जाय तँ ककरो जन्मक समयमे माता-पिता स्वजन-परिजन सब प्रसन्न रहैत छथिन, किन्तु जन्म लेनिहार कनिते जन्म लैत अछि। मृत्युक समय मुइनिहार चेतना शून्य रहैत अछि, किन्तु स्वजन-परिजन शोकसागरमे डूबि जाइत छथिन। गर्भ-निवाससँ लऽ प्राण-विसर्जन पर्यन्त अन्तिम परिणति कष्टे-कष्ट होइत छैक। तेँ नारद गीतामे ईश्वरसँ प्रार्थना कयल गेल छनि–

'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं पुनरपि गर्भ निवासम्।
सोढुमहं प्रभुरस्मिन् माधव मामुद्धर निज दासम्॥'

एहने परिणतिकेँ देखि सिद्धान्तकार कहलनि– रसेषु करुणः श्रेष्ठः। करुण रसक स्थायिभाव थिकैक शोक। शोक कोनहु स्थितिमे सुखदायक नहि होइत छैक, तथापि प्रगाढ़तामे थोड़ बहुत अन्तर होइत छैक। हिन्दीमे कोनो कविक उक्ति छनि–

'वियोगी होगा पहला कवि, आह से निकले होंगे गान'

आजुक लोकार्पित ई 'रोम-रोम रामज्योति' एकर प्रत्यक्ष उदाहरण थीक।

सूचना भेटल– श्रीराजानन्दजीक पत्नीक स्वर्गवास भऽ गेलनि। अतिशय शोकित छथि। मन उद्विग्न भऽ गेल। तकर विशेष कारण भेल। स्वयं जयबासँ असमर्थ छी, तेँ एक सान्त्वनापत्र पठौलियनि। पत्रवाहक छात्र कहलनि– चिट्ठी पढ़ि बहुत कानऽ लगलाह, रहि-रहि कऽ चिट्ठीकेँ माथसँ लगाबथि आ आँखिसँ मोतीमाला जकाँ नोर झहरि जाइनि। पछाति ज्ञात भेल जे संस्मरण लिखि रहल छथि। ई अपन काव्यगुरु कविचूड़ामणि मधुपजी

जकाँ कविते विधाधरि अपनाकेँ सीमित रखलनि । सामान्यतः आने भाषा जकाँ मैथिलीओमे बहुविधावादीए साहित्यकार छथि । यद्यपि ई अंग्रेजीसँ मैथिली, मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवादमे पटु छथि, बंगलाक समरेश मजुमदार रचित साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत उपन्यास 'कालबेला'क अनुवाद पर साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त कयने छथि । मनमे भेल जे संस्मरण लिखि रहल छथि ताहिमे हिनक मौलिक गद्यक दर्शन होयत ।

ओ पुरस्कार हैदराबादमे वितरित भेल रहैक । श्रीराजानन्दजी सपत्नीक छलाह । प्रतिनिधिक रूपमे एक छात्रक संग हमहु संग रहियनि । कुशल वधूक प्रसंग कोनो नीतिकारक कहल छनि–

'सदा प्रहृष्ट्या भाव्यम्, गृहाकार्येषु दक्षया,
सुसंस्कृतोपस्करया, व्यये चामुक्त हस्तया ।'

संगहि ईहो कहल गेल छैक– 'नारीणां भूषणं लज्जा' । एक सप्ताह व्यापी एतेक दूरक यात्रामे उपर्युक्त सब लक्षण हिनकामे परिलक्षित भेल ।

द्रौपदीक बटलोही जकाँ तेहन अक्षय पात्रमे पाथेय लऽकऽ चललि रहथि जे अपना संग जे बटखर्चा लऽ गेल रही से बन्हले घर घुरि आयल । बाटमे चाहटा कीनऽ पड़ल, तकरो पाइ हमरा नहि देबऽ देथि । हम चारि बेर चाह पिनिहार । हिनक पत्नी तेहन नैष्ठिक जे बाटघाटमे बिनु स्नाने अन्न-जल मुँहमे देनिहारि नहि, तेँ जखन कखनहु लटुआइलि सूतलि रहैत छलथिन तँ श्रीराजानन्दजी हमर हाथ पकड़ि लेथि आ चाहवलाकेँ घूरि आबऽ कहि देथिन । तेँ हम परिहासमे कहिऐक- एखन ए.टी.एम्. केर लिंक फेल छनि ।

रोम रोम रामज्योति शीर्षक ई शोक काव्य समक्ष आयल तँ निम्नांकित पद पर दृष्टि पड़ल–

'छोड़ि गेल छी हमरा जे बतहू बालकके़ँ पोसी
आँचरमे बान्हल कुंजी हम अपन डाँड़मे खोँसी'
हहरि हहरि हरि नाम लैत हम साँझक दीप घुमाबी
माउग जकाँ घर-आङनमे रहि जीवन शेष बिताबी'

तऽ बाटमे कयल परिहास मन पड़ि गेल, संगहि आँखि सजल भऽ गेल ।

वस्तुतः श्रीराजानन्दजी धन अर्जन आ साहित्य सर्जनमे रमल रहैत छलाह। घर–गृहस्थीक समस्त भार गृह–लक्ष्मीएक माथ पर छलनि, हुनके हाथेँ सब राजकाज होइत छलनि। एक टा पदमे लिखैत छथि–

'अहाँ छलहुँ तँ ओफा छल, नहि चिन्ता आ न फिकीरे
सरिपहुँ 'राजा' छलहुँ आब हम छी भऽ गेल फकीरे'

अतीत–मन्थनमे एक लोक कथा लिखने छिऐक– कटहर कहियो नहि खयने एक व्यक्तिकेँ कटहर फाँड़ि कऽ खाय देलकैक तँ कमरी खाय लागल तँ टोकलकैक–कमरी नहि, को खाह। खयनिहार बाजल को खाइ छी ओहो मिट्ठ कमरी खाइ छी, ओहो मिट्ठ, की खाउ ? की नड़ाउ ? सैह परि हमरो भऽ गेल– जैह पद पढ़ी यमकक गमक, अनुप्रासक विलास, उपमाक पथार लागल–

कहल सुनल सुमिरी अहाँक, किछु अदनोसँ जे सूनी
दूनू नयन नयन नहि रहि कऽ, छै बनि जाइत द्विवेणी
तेसर वेणी वाणी छथि हिअसँ बहैत स्वच्छन्दे
ककरो लागौ वा नहि, हमरा नीक लगै अछि छन्दे'

एकर प्रयोजनीयताक प्रसंग लिखै छथि–

'लोक सुनत तँ हँसत एतेक किए छनि विरहक ज्वाला
जे मुइली तनिकर किएक ई एना जपै छथि माला'

एकर उत्तर दैत लिखैत छथि–

'पुस्त–पुस्त ई पुस्तक पढ़ि शोकार्णव पार उतरता
हम जहिया नहि रहब ताहि दिन ओ सब सुमिरन करता'

एतबे नहि आगाँ कहैत छथि–

जै ममतासँ माँ सन्ततिकेँ पहिरबैत अछि गाँती
लहालोट लखि आँचर तर लऽ लगा लैत अछि छाती
ताही ममतासँ हम कागतपर लीखी ई पाँती
घुटुर–घुटुर पीता एकरा पुनि भावी पोता–नाती'

किछु उपमाक रसास्वादन कयल जाय–

'दिनक चान म्रियमाण जेना हम भोगी तकरे परिया
दुनू पक्ष तम, राम ज्योति बिन हैत न आब इजोरिया'
किनका बिसरू जनिका सङ सङ बीतल वयस जुआनी
हम छत्ता बनि कऽ रहलहुँ ओ बनि कऽ छली कमानी'

विशेषतः बुढ़ारीमे पत्नीक अनिवार्यताक संकेत करैत लिखैत छथि–

नारि सुनारि सुदुक नारी नहि, पुरुखक होइ छथि नाड़ी
घर-आङन आङनवाली बिनु जनु उपटल फुलबाड़ी'

उजड़लकें पुनि जोड़ल जा सकैछ, उपटल अर्थात् निर्मूल, तें आगाँ कहैत छथि–

'लुरू-खुरू करिते दलान पर कहुना मन बहटारी
हैत तकर क्षति-पूर्त्ति न कहियो पुनि पुनि से मन पाड़ी'

एक-एक गतिविधिक केहन विलक्षण अंकन भेल अछि, एक उदाहरण–

'सत्सासुक धाखें सुक-सुक शुक सम मधु-मृदु पद बाजी
भोरे उठि चिनुआर चूल्हि फुकि वासन कूसन माँजी'

कवि आत्माक नित्यता पर दृष्टि निक्षेप करैत मृत्युकें ललकारैत कहैत छथिन–

अहो मृत्यु, दाबी जुनि देखबह, देह तोहर, से लै छह
मुदा आत्मा अविनाशी ओ तोहरा वशमे नै छह । अतः –
छी हे, छलहुँ, रहब हम दूनू हम राजा ओ रानी
अहो मृत्यु, तों मरि जयबह जीअब हम दुनू परानी ।

धैर्य धारण करबाक प्रसंग कहैत छथि–

उठइत, सुतइत सीखि लेलक अछि आँखि हमर ई धच्चा,
अपना जलसँ नहा लैछ जनु भूखें लोहछल बच्चा,
आब अधिक नहि कानब हम, ई मोती नहि बिलटायब
बहुतो बहल, रहल जे किंचित् तकरा आब बचायब,
किएक तँ– बचल नोरकें जुगता राखब, लोचनमे नहि आनब
अहाँ हृदयमे आसनस्थ छी, तें हम आब न कानब ।

करुणा ओ हास्य परस्पर विरोधी रस थीक तथापि एक-दू ठाम हमरा

स्मित हास्यहुक दर्शन भेल, जेना–

छै बड़ पाछू स्वर्ग धरासँ ओतऽ न पहुँचै फाइलो
एतऽ कतौसँ गप कऽ ली, छै दुर्लभ ओतऽ मोबाइलो । तथा–
एहि गेहमे कोन वस्तु जै मे नहि अहाँ विराजी
अहाँ छलहुँ जा ता हम बाबा, आब भेलहुँ बाबाजी ।

महाकवि कालिदास मेघदूतमे विरहगीत गौने छथि, परन्तु ओहि वियोगमे पुनः संयोगक सम्भावना निहित छैक । बादशाह शाहजहाँ अपन अति प्रिया मुमताजक स्मृतिमे अमर प्रेमक प्रतीक रूपमे ताज महलक निर्माण करा गेलाह । भनेँ ओ संसारक आठ महान प्रतीकमे गनल जाउन, थिकनि स्थावरे । ओकरा देखबाक अभिलाषीकेँ ओतय जाय पड़ैत छैक । हमरा दृष्टिएँ ओहिसँ विशिष्ट अमर प्रेमक प्रतीक महाराजाधिराज कामेश्वर सिंहक 'कामेश्वरी प्रिया पूअर होम' स्थावर रहितहु सहस-सहस नेत्ररोगीकेँ एखनहु नेत्रदान कऽ अन्हार घरमे इजोत पसारि रहल छैक, तेँ महाराज धन्यवादार्ह थिकाह ।

श्रीराजानन्दजीक अमर प्रेमक प्रतीक 'रोम रोम रामज्योति' जंगम छनि ई स्वयं गाम-गाम, घर-घर जाय, सहृदय लोक हृदयकेँ ज्योतिर्मान बनबैत रहतनि । भौतिक रूपेँ निर्मित कोनो प्रतीक क्षरणशील होइते अछि, आइ नहि, काल्हि ओकर नष्ट होयब अवश्यम्भावी छैक, परन्तु राजानन्दजीक अमरप्रेमक प्रतीक अक्षरब्रह्म रूपमे व्यक्त भेलनि अछि । एकरा ने कोनो सुनामी वा भयंकर बाढ़ि भसा कऽ लऽ जा सकैछ आ ने कोनो भूकम्प ध्वस्त कऽ सकैत छैक ।

हम एहि काव्यकेँ पढ़ैत-पढ़ैत चकित-विस्मित होइत करुणाक सागरमे निमज्जित होइत रहलहुँ । शोकः श्लोकत्वमागतः एहि उक्तिक प्रत्यक्ष उदाहरण भेटि गेल । सोआइत रसक मर्मज्ञ आचार्य कहि गेल छथि– रसेषु करुणः श्रेष्ठः । हम एहि अनुपम कृतिक हेतु अनुपम ओ सिद्धहस्त शब्दशिल्पी कविक हार्दिक संवर्द्धना करैत कहबनि जे विधाताक कोनो विधान निरुद्देश्य नहि होइत छनि । प्रायः मैथिलीकेँ एहन विशिष्ट कृति प्राप्त करयबे विधाताक उद्देश्य रहल होयतनि । हम पुनः पुनः कविक संवर्द्धना करैत विराम लैत छी ।

●

रमेश्वरचरित मैथिली रामायण : एक अवलोकन

कलाक दुइ पक्ष अछि, उपयोगी कला एवं ललित कला । ताहिमे उपयोगी कलाक कोन स्थान मिथिलामे छैक एवं मिथिलाक निजत्व ओ विशेषता की रहलैक अछि, तकर स्पष्ट प्रमाण एहि ठामक निवासी लोहार, सोनार, कमार, मलाह, डोम आदिक द्वारा निर्मित भिन्न-भिन्न दैनिक कार्यमे उपयोगी वस्तुक संग वृद्धासँ लऽ छोट-छोट बालिकाक हाथेँ काटल टकुरी, चर्खाक सूत सीकी आ मूजक पौती, चङेरी, मौनी, बिड़हरा आदि अछि । ललितकलाक पाँच भेद कहल गेल अछि– वास्तुकला, मूर्तिकला, चित्रकला, संगीतकला एवं काव्यकला । क्रमहि एकक बाद दोसर जे भेद अछि जाहि सभक उपादान एवं आधार क्रमहि सूक्ष्मसँ सूक्ष्मतर एवं सूक्ष्मतम भऽ जाइछ । एहू पक्षमे मिथिलाक निजत्व रहलैक अछि, ई कला मर्मज्ञ लोकनि स्वीकार करताह । वास्तुकला तँ अत्यन्त स्थूल थीक, बाँसक साधारण जाफरीसँ लऽ बड़का-बड़का महल धरि मे एकर निजत्व परिलक्षित होइछ । मूर्तिकलाक हेतु कृष्णाष्टमी, दुर्गा-पूजा, सरस्वती-पूजा, आदिक अवसर पर कलाक मर्मसँ अनभिज्ञ कुम्हारक चातुरीक संग सामा चकेबाक चुगिलाधरिमे एकरो उदाहरण सर्वविदित अछि । चित्रकलाक सम्बन्धमे विशेष नहि किछु कहि कोबरक टाटसँ लऽ विभिन्न अवसर पर मिथिलामे जे अरिपन देल जाइछ, जाहिमे शास्त्रीय रहस्य भरल पड़ल छैक, उदाहरणार्थ ध्यान पर आनल जा सकैछ । संगीतकलामे मिथिला कतेक उन्नत रहल अछि एकर ज्वलन्त उदाहरण थीक तिरहुत राग, जे मिथिलाक नाम पर अछि आ' संगीतशास्त्रमे अपन पृथक् महत्त्वपूर्ण अस्तित्व रखने अछि । ततबे नहि विदागान जे समादाउनि आ उदासी नामेँ ख्यात अछि, मिथिलाक विशिष्ट राग थीक, जकरा सुनला सन्ताँ

पाथरो हृदय पिघलि कऽ मोम बनि जाइछ, जाहिसँ सद्यः करुणाक धारा फूटि पड़ैछ आ रसेषु करुण:श्रेष्ठः ई कथन मूर्त्त भऽ उठैछ । एकर विशद वर्णन सैह व्यक्ति कऽ सकैछ जकर श्रुतिपुट एहि रागसँ गुंजित भऽ चुकल होइक । एहि सम्बन्धमे विशेष जिज्ञासा रखनिहार लोचन कवि कृत रागतरंगिणीक अनुशीलन करथि तँ मिथिलाक वैशिष्ट् एहि पक्षमे की छैक तकर समुचित ज्ञान भऽ सकतनि ।

तखन कलाक सबसँ सूक्ष्म एवं गम्भीरपक्ष जे काव्यपक्ष थीक, एहू पक्षमे मिथिलाक अपन पृथक् अस्तित्व ओ विशेषता ओहिना रहलैक अछि जेना भारतीय दर्शन क्षेत्रमे ई अपन विशिष्ट स्थान रखने अछि । अपन प्रतिभा प्राचुर्य एवं विलक्षण दृष्टिकोणसँ भारते नहि, अपितु पाश्चात्यो देशकेँ आश्चर्यचकित एवं मन्त्रमुग्ध कऽ चुकल अछि । निष्पक्ष भावेँ हृदय पर हाथ राखि काव्य-शास्त्र-चिन्तक व्यक्ति ई स्वीकार करबामे कनेको तारतम्य नहि करताह जे उत्तर भारतक प्रत्येक प्रान्तीय वाङ्मयकेँ मैथिल कोकिल महाकवि विद्यापतिक काव्य-माधुरी विशिष्टरूपेँ सिंचित ओ प्रभावित कयने अछि, जकर साक्षी इतिहास अछि । ज्योतिरीश्वरक गद्य विस्तार, अभिनव जयदेवक मृदु झंकार कोन महाकविक अन्तरकेँ स्फूर्ति एवं प्रेरणा नहि प्रदान कयलक ? ब्रजक महाकवि सूरदास, अवधक गोस्वामी तुलसी दास, बंगलाक महाप्रभु चैतन्य देवसँ लऽ विश्व-कवि रवीन्द्रनाथ ठाकुरक अन्तः प्रान्तकेँ प्रोद्भासित करबाक श्रेय एही मधुमयी मैथिली भाषाकेँ प्राप्त छैक । एहि सम्बन्धमे भाषा विशेषज्ञ डा. श्री सुनीति कुमार चटर्जी मैथिली भाषाक इतिहासक भूमिकामे लिखैत छथि जे– A great Maithil Poet Vidyapati had a host of imitators in Bengal and these imitators followed their master to the extent of imitating his Early Maithil speech in Bengal; and this resulted in the creation of an artificial mixture of Maithili and Bengali into a special dialect for vaishnava religious poetry known in Bengal as the Braja_Buli, in which Bengali poets from the second half of the 15th century down to our day have composed lyrics centering round the divine love of Radha & Krishna. Rabindranath Tagore him self having succumubed to the charms of the sweet Braja-buli speech and composed a whole series of poems (Bhanu nath Singha Thakur padavali) एहि भाषाक आह्लादकारिणी

मधुरिमा कोन एहेन काव्य-माधुरी-पीयूष-पिपासित-सरस-रस-वेद्य-मानससँ परोक्ष अछि ? अभिनव जयदेवक कल-कण्ठसँ निःसृत कोमल कान्त पदावली रूपी कविता-कालिन्दी कोन प्रान्तमे वृन्दावनक निकुंज नहि बना देलक, कोन कदम्बमे पुलक आ कोन वंशीमे मृदु झंकार नहि भरि देलक ?

नाटकक युग जखन आरम्भ होइत अछि तँ लोक भाषामे सर्वप्रथम नाटककार उमापतिए मानल जाइत छथि, जेना गद्य ग्रन्थमे ज्योतिरीश्वराचार्यक 'वर्णरत्नाकर' तहिना नाटकमे पारिजात हरण । ईहो श्रेय एही भाषाकेँ प्राप्त छैक । यद्यपि मध्ययुगमे मैथिलीक काव्यधारा विस्तृत क्षेत्रमे प्रवाहित नहि बुझना जाइछ, मुदा कृष्णभक्ति शाखाक सबसँ प्रतिभाशाली कवि महाकवि विद्यापतिक परम्परा कोना टुटितन्हि ? तेँ अनेको भक्त कविक प्रादुर्भाव होइतहिँ रहलनि जकर विशद वर्णन इतिहासक विषय बूझि एहि ठाम उल्लेख करब उपयुक्त नहि बुझैत छी । अठारहम शताब्दीमे मनबोध अपन प्रतिभाक परिचय कृष्ण जन्म सन सरल महाकाव्य लिखि कऽ देने छथि । भाषामे कतेक परिवर्त्तन एहि मध्यमे भेलैक, सेहो एहिसँ सर्वथा बुझबाक योग्य भऽ जाइछ ।

उन्नैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे मिथिले नहि, अपितु समस्त भारतीय साहित्यक प्रवृत्तिमे राष्ट्रियताक नवीन रंग चढ़ऽ लगलैक । के नहि जनैछ जे 1857क विद्रोह ओकरे प्रत्यक्ष रूप छल । हिन्दी साहित्यकाशमे भारतेन्दुक उदयसँ पूर्वे मिथिलाक चन्दा साहित्य गगनकेँ आलोकित कऽ चुकल छलाह । व्रजभाषाक अन्तिम घड़ीक संग जहिना खड़ीबोली जोर पकड़ऽ लागल तहिना मैथिली क्षेत्रमे मातृभाषाक प्रति प्रेमक उदय भऽ चुकल छल । लल्लू लाल जीक 'प्रेमसागरमे' खड़ी बोली निखरि नहि सकल, मुदा जीवन झाक नाटकमे मैथिली गद्यक प्रांजलता ओहिना झलकैछ । जहिना बीसम शताब्दीक दोसर चरणमे खड़ी बोली क्रमहि अधिकार प्राप्त करैत गेल, तहिना मैथिली कलकत्ते विश्वविद्यालयसँ अपन अपूर्व माधुरी एवं जीवनी शक्तिक परिचय दऽ चुकल अछि ।

एहि सफलताक श्रेय सर्वप्रथम ओही युगक साहित्य-मनीषी लोकनिकेँ छनि जाहि युगमे एहि रामायणक पुण्य श्लोक कवि अवतीर्ण भेल छलाह । यद्यपि डा. जयकान्त मिश्रजी अपन A History of Maithili Literature (मैथिली भाषाक इतिहास)मे एहि कविक जन्म वर्ष 1873 ई. लिखैत छथि

मुदा यथार्थतः हुनक जन्म वर्ष 1856 ई. थिकनि । एहि प्रकारक किछु भ्रम आनो ठाम देखना जाइछ जाहिमे एक हमहुँ छी । हमर जन्म वर्ष 1918 ई. देल अछि मुदा 1925 ई. थीक । अस्तु, ई ककरोसँ अविदित नहि जे आइसँ किछुए दिन पूर्व वा एखनहुँ किछु भाषा-ज्ञान-विदग्ध लोकनि मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली प्रमाणित करबाक हेतु तिल-तण्डुल-न्यायसँ श्रम कऽ रहलाह अछि, ताहि ठाम आइ बिहार सरकार एकरा भाषाक रूपमे स्वीकारे नहि, अपितु प्राथमिक शिक्षासँ लऽ उच्च शिक्षा धरि क्षेत्रीय भाषाक सब अधिकार दऽ चुकल छैक । एक मात्र अधिकारसँ मैथिली आइधरि वंचित अछि, आ ओ अधिकार थीक राजभाषाक पद । परन्तु जन-जागरणक सुप्रभातमे आब किछु स्वार्थी लोकनिक कुचक्र अधिक दिन धरि चलि सकतनि से विश्वास करबाक कोनो टा युक्ति नहि देखि पड़ैछ । नहि आइ तँ काल्हि बिहारक अनुपेक्षणीय भूभाग जे मिथिला आ एहि प्रदेशक एक मात्र सर्वतोभावेन समुन्नत भाषा मैथिली, कमसँ कम अपना क्षेत्रक हेतु राजभाषाक पद प्राप्त करत ।

जे किछु, एहि सबटाक श्रेय ओही युगक दूरदर्शी साहित्यकार लोकनि केँ छनि ताहिमे सन्देह नहि । ओहि युगक धुरन्धर संस्कृतक विद्वान् लोकनि अपन अपूर्व उत्साह, अदम्य धैर्य, अनुपम प्रतिभा एवं अवर्णनीय मातृभाषा प्रेमक उदाहरण उपस्थित कयने छथि । जाहिमे मैथिलीक भारतेन्दु कवीश्वर चन्दा झा, पुण्यश्लोक म.म. मुरलीधर झा विद्यावाचस्पति मधुसूदन झा, म.म. बख्शी मुकुन्द झा, म.म. वैयाकरण केसरी प. परमेश्वर झा एवं एहि ग्रन्थक रचयिता महाकवि लालदासक नाम एके सूचीमे उपस्थित कयल जा सकैछ । जखन हम मिथिला भाषा रामायण, मिथिला तत्त्व विमर्श, मिथिला भाषामय इतिहास आदि ग्रन्थक संग मिथिला हित साधन, मिथिलामोद आदि पत्र देखैत छी तँ निश्चित रूपेँ ई विश्वास करऽ पड़ैछ जे ओही युगक प्रेरणासँ ओहि परम्परामे 'सुभद्रा हरण' महाकाव्यक प्रणेतासँ लऽ बाबू भोलालाल दास कविवर प. सीतारामझा सन प्रतिभा सम्पन्न मैथिलीसेवीक संग विभूति, मिथिला, स्वदेश आदि स्वस्थ एवं सर्वाङ्गपूर्ण प्रेरणा एवं स्फूर्त्तिदायक पत्रक प्रादुर्भाव एकक बाद दोसराक होइत रहल अछि । संगहि बिहारक गंगाक पुरातत्त्वाङ्कक संग मिथिला-मिहिरक मिथिलाङ्क प्रकाशित करबाक गौरव प्राप्त भेल छैक ताहू मे मैथिली पश्चात्पद नहि देखना जाइछ । अतः ओहि युगक जतेक पैघ ऋण वर्त्तमान कालीन मैथिलीसेवी एवं मैथिलीभाषीक माथ पर

छनि तकर सूदो मात्र चुकैबामे समस्त धन्यवाद एवं कृतज्ञता ज्ञापन अल्पे बुझना जाइछ ।

ई तँ स्वीकार करबामे ककरो आपत्ति नहि होयतनि जे मातृभाषाक सेवामे संस्कृतज्ञ जाहि प्रकारेँ संलग्न रहलाह अछि दोसर वर्गक लोक ओतेक नहि । वर्त्तमानो युगमे जाहि कोनो ग्रन्थ-रत्नक नामोल्लेख कऽ हम अपन मस्तक गौरवसँ उपर उठबैत छी ताहिमे के नहि जनैछ जे संस्कृतमे 'राधा-परिणय' सन महाकाव्यप्रणेता कवि शेखर बदरीनाथ झाक 'एकावली परिणय' महाकाव्य, आदरणीय महावैयाकरण प. दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा विद्योतन, श्रद्धेय प. सुरेन्द्र झा 'सुमन'क 'साओन-भादव' कविचूड़ामणि मधुपजीक राधाविरह काव्य आदि अछि । आ, एहि ग्रन्थक प्रणेता सेहो संस्कृतक विद्वान् छलाह जकर प्रमाण एहि ग्रन्थक आदि एवं कतेको काण्डक आरम्भ वा अन्तमे संस्कृतकश्लोक देखैत छी ।

मैथिली भाषामे ई दोसर रामायण थीक । प्रथम कवीश्वर चन्दाझाक रामायण जे अध्यात्म रामायणक आधारपर लिखल गेल अछि, बहुत पहिने प्रकाशित भऽ चुकल अछि आ ओहि रामायणक कतेको संस्करण सेहो भऽ चुकल अछि । संगहि ओहि ग्रन्थक लोकप्रियता रामचरित मानस जकाँ समस्त मिथिलामे बढ़ल अछि, जे सबकेँ विदित अछि । एहेन मैथिली प्रेमी विरले भेटताह जनिका कण्ठमे ओहि रामायणक किछुओ अंश नहि होइनि । रावण अंगद संवाद तँ ततेक रोचक अछि जे नेना लोकनि पर्यन्त ओहि अंशकेँ पढ़ि-पढ़ि पुलकित होइत रहैत छथि । कवीश्वरक फुटकर पदावली सेहो मिथिलामे पूर्ण प्रचलित छनि । साढ़े छौ सय संस्कृत, मैथिली एवं हिन्दीक फुटकर पद्य 'चन्द्र पद्यावली'मे संकलित अछि, जकर सम्पादन परम आदरणीय राजपण्डित बलदेवमिश्र जी कयने छथि आ राजप्रेससँ प्रकाशित अछि । परन्तु ई रामायण आदि काव्य वाल्मीकीय रामायणक आधार पर लिखल गेल अछि आ दुर्भाग्यवश बालकाण्ड मात्र 1973 संवत् मे रमेश्वर प्रेससँ प्रकाशित भऽ सकल, शेष अंश अपने सभक समक्ष आब उपस्थित भऽ सकल अछि । आरम्भेमे कवि लिखैत छथि–

"आदि कवीन्द्रक सुधा-समुद्र
कथा हमर कृत सरिता क्षुद्र

तेहि समुद्रसँ भरि भरि नीर
पूरित करब सरित गम्भीर''

अतः, ई स्पष्ट अछि जे कवीश्वरक रामायण आ एहि रामायणक आधार भिन्न रहलाक कारणेँ दुहूक वर्णन क्रममे सेहो भिन्नता अछि । जखन कवीश्वरक रामायण काण्डक अतिरिक्त प्रत्येक काण्ड अध्यायमे विभक्त अछि अध्यात्म रामायण जकाँ तेना वाल्मीकीय रामायण जकाँ ई सर्गमे विभक्त नहि अछि । वर्णन क्रममे जे भिन्नता अछि ताहि प्रसंग स्थाली पुलाक न्यायसँ एक घटनाक उल्लेख हम करैत छी ।

अरण्य काण्डमे विराध–वधक वर्णन करैत आदिकवि कतेक सर्ग लिखि गेल छथि; कवीश्वर चन्दाझा प्रथम अध्यायमे एकर वर्णन कयलनि अछि; महाकवि भट्टी दुइ श्लोकमे वर्णन समाप्त करैत लिखैत छथि–

"अटाट्यमानोऽ रण्यानी ससीतः सह लक्ष्मणः ।
वलाद्बुभुक्षुणोत्क्षिप्य जह्वे भीमेन रक्षसा ।।
अवाक् शिरसमुत्पादं कृतान्तेनापि दुर्दमम् ।
भंक्त्वा भुजौ विराधाख्यं तं तौ भुवि निचख्नतुः ।।''

गोस्वामी तुलसी दास दुइ पंक्तिमे एकरा समाप्त करैत छथि–

''मिला असुर विराध मग जाता
आवत ही रघुवीर निपाता''

आचार्य केशव अपन रामचन्द्रिकामे एक पद मात्र मालती छन्दमे लिखि एकर वर्णन समाप्त करैत छथि–

'विपिन विराध बलिष्ठ देखियो
नृप तनया भयभीत लेखियो
तब रघुनाथ वाण कै हयो
निज निर्वाण पंथ को ठयो'

परन्तु एहि रामायणमे वाल्मीकीय रामायण जकाँ विशद वर्णन देखैत छी ।

यद्यपि एहि रामायणक आधार वाल्मीकीय रामायणसँ लेल गेल अछि तथापि एक बात पर ध्यान देब आवश्यक । जेना मैथिल कोकिलक गोसाउनिक गीतक परम्परा मे–

'जय जय भैरवि असुर भयाउनि पशुपति भामिन माया'क संगहि संग
'जय जय जय भय भंजिनि भगवति आदिशक्ति तुअ माया'
'वदन भयान कान शव कुण्डल विकट दशन घन पाँती'
'जय जय मधु कैटभ अर्द्दिनि जय जय महिषासुर मर्द्दिनि'

आदि देखैत छी तहिना रामायणक परम्परामे मंगलाचरण संस्कृतमे देखना जाइछ ।

कवीश्वर चन्दाझा मंगला चरण करैत लिखैत छथि–

'सरस मधु सुधातो गद्य पद्यन्नवीनं
वचन जनि धरायाश्शारदाया अधीनम्
सकल जन नमस्यासन्नमस्यन्ति यस्याः
पद युगलमतोऽस्या नौमि नित्यं सुभक्त्या'
वन्दे वारण वदनं विघ्न ध्वान्त प्रणाशने सूरम्
शाङ्करिमतुलोदारं विधिगण शरणं गुणातीतम्''

गोस्वामी तुलसीदासजी रामचरितमानसमे मंगलाचरण करैत छथि–

''वर्णानामर्थ सघानां रसानां छन्दसामपि
मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणी विनायको''
तथा– ''भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धा विश्वास रूपिणौ
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तः स्थमीश्वरम्''

यद्यपि एहि परम्पराक निर्वाह ईहो कयलनि अछि परन्तु हिनक विशेषता ई छनि जे ई शक्तिकेँ प्रधानता दैत छथिन तेँ मंगलाचरणमे आगाँ चलि ई लिखैत छथि–

प्रणमो लक्ष्मिक दशविध रूप । पुरथु मोर अभिलाष अनूप
सीता प्रथमा काली नाम । कृत सहसानन पुर-संग्राम''

एवं क्रमें दशो रूपक वर्णन करैत अन्तमे लिखैत छथि–

'लक्ष्मिक दशविध रूप ई, सभखन रहथु सहाय
क्रमहि दशो दिशि सौं हमर, रक्षा करथु सदाय ।''

एहि क्रमकें देखि एक सन्देहक निराकरण बुझबाक चाही आ ओ सन्देह थीक डा. जयकान्तमिश्रक मैथिली भाषाक इतिहासमे एहि रामायणक नामक व्याख्या। ई रामायण रमेश्वर चरित रामायण थीक । एकर कवि महाराजाधिराज रमश्वेरसिंहक दरबारमे रहैत छलाह अतः डा. मिश्रजी महाकाव्यक विवरण प्रस्तुत करैत लिखैत छथि–

"Laldas tried to follow the lead given by Chanda Jha in his Rameshwar Ramayan named after Maharajadhiraja Rameshwar Singha."

परन्तु रमेश्वर शब्दसँ, रमा + ईश्वर एहि तरहें खण्ड कयला उत्तर कविक वास्तविक तात्पर्य छनि जे शक्तिएक महिमासँ राम मर्यादा पुरुषोत्तम रूपें प्रतिष्ठित भऽ सकलाह । अभिधार्थसँ भने महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक अर्थ बोध हो, परन्तु लाक्षणिक अर्थ यैह थीक । एकरा पुष्ट करबाक हेतु हम ईहो कहि देबै चाहैत छी जे स्वर्गीय मिथिलेश तन्त्रक निष्णात विद्वान छलाह, एहि रामायणक कवि सेहो तन्त्रक प्रति विशेष आस्था रखैत छलाह । कारण जे एखनो हुनक हस्तलिखित वस्तु सभमे यत्र-तत्रसँ तन्त्रक विशिष्ट विषय संकलित ओ सुरक्षित छनि । अतः निस्सन्देह कहल जा सकैछ जे कवि शाक्त छलाह । अतः शक्तिक प्रधानता मानि, एहि रामायणक रचना कयलनि आ यैह थीक कविक निजत्व ओ विशेषता जे आन रामायणमे नहि देखल जाइछ ।

एहि रामायणपर जहाँ धरि भाषासँ सम्बन्ध छैक, मनबोधक प्रभाव कतहु-कतहु स्पष्ट रूपें परिलक्षित होइछ । उदाहरणार्थ सबसँ पहिल शब्द 'प्रणमो'क प्रयोग मनबोध करैत लिखैत छथि–

'प्रणमो हिमगिरि कूमरि चरण'

आ ई रामायणकार लिखैत छथि– ''प्रणमो लक्ष्मीक दश विध रूप'' एक मात्र प्रणमो शब्दक संग साम्य देखने नहि हो, प्रत्युत शक्तिक प्रथम वन्दना ताहूसँ हमर अभिप्राय अछि । एकर पुष्टिमे निम्नलिखित पंक्तिक

उल्लेख कयल जा सकैछ यथा–

कटला तरुजकाँ खसु अड़राय (मनबोध)
खसला काटल तरुक समान (कविलालदास)
तखनुक हर्ष कहब गऽ काहि (मनबोध)
तखनुक हर्ष कहल नहि जाय (कविलालदास)
कलह विशारद नारद मुनि (मनबोध)
वचन विशारद नारद मुनि (कविलालदास)

एवं क्रमेँ अनेको स्थल एहेन देखना जाइछ जाहिसँ एकर पुष्टि होइछ।

भाव एवं भाषाक सम्बन्धमे किछु कहबा सँ पूर्व ई कहब जे हिन्दीक सुप्रतिष्ठित कवि मैथिली शरण गुप्त लिखैत छथि–

''राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है
कोई कवि बन जाय सहज सम्भाव्य है।''

परन्तु एकर ई आशय कथमपि नहि थीक जे ढोँढाइ मङनू सब महाकवि भऽ सकैछ। ई तँ सर्व विदित अछि जे राम सन नायक आ सीता सन नायिका आन महाकाव्यकेँ नहि भेटि सकलथिन। रामायण आदि काव्य कहल जाइछ, मुदा अन्तिमो काव्य यदि एकरा कही तँ अत्युक्ति नहि। यैह कारण थीक जे ई आर्ष मानल जाइछ। एहि ठाम हम अपन दुइ पंक्तिक उल्लेख करबाक धृष्टता करैत छी जे–

''नहि अविदित अछि कथा अहाँ सँ कहू लेखनी ! की थिक फूसि,
वाल्मीकि कर-कमल बीच जा अहीँ देने छी सबकेँ दूसि,
नहि अछि काव्य श्रव्य पुनि दोसर जे लिखने दी पहिले बेर,
रामायण लिखलहुँ काजरसँ कृष्ण मुखी भऽ कहब न फेर''

परन्तु राम सन अद्‌भुत ओ अनुपम चरित्रक चित्रण करबाक साहस साधारण प्रतिभासँ कथमपि सम्भव नहि।

डा. मिश्रजी एहि रामायणक सम्बन्धमे लिखैत छथि–

It is a plain and simple narration of the story (ई रामायणक

कथाक स्पष्ट ओ साधारण वाक्य विन्यास थीक) एकरा उदाहरणमे ओ सुन्दर काण्डक किछु पद्यक अंश प्रस्तुत कयने छथि । एहि सम्बन्धमे हम एतबा कहब जे यद्यपि एहि रामायणक आधार वाल्मीकीय रामायण थीक । तथापि स्थल-स्थल पर कविक मौलिक प्रतिभा एकदम चमकि उठलनि अछि । शिशिरक वर्णन करैत अरण्यकाण्डमे कविक ई पंक्ति देखबाक योग्य अछि जे–

"जल ऊपर धूमक सदृश बढ़य बाष्प विस्तार
बुझि पड़ जल भीतर वरुण जाड़ेँ तपथि अंगार,

वाल्मीकीय रामायणक अरण्य काण्डक सोड़हम सर्ग हेमन्त ऋतुक वर्णनसँ भरल अछि । एहू रामायणमे क्रमहिं छबो ऋतुक वर्णन कयल गेल अछि । बहुतो एहेन स्थल अछि जकर अनुवाद एहिमे नहि देखि पड़ैछ जेना–

ज्योत्स्ना तुषार मलिना पौर्णमास्यां न राजते ।
सीतेव चापतश्यामा लक्ष्यते नच शोभते ।।
निवृत्ताकाशशयनाः पुष्यनीता हिमारुणाः ।
शीत वृद्धतरायामास्त्रियामा यान्ति साम्प्रतम् ।।
रवि संक्रान्त सौभाग्यस्तुषारारुण मण्डलः ।
निश्वासान्ध इवादर्शश्चन्द्रमा न प्रकाशते ।।
मयूखैरुपसर्पद्भिर्हिम नीहार संवृतैः ।
दूरमप्युदितः सूर्यः शशाङ्क इव लक्ष्यते ।। आदि

बहुतो स्थल एहन अछि जे अविकल अनुवाद थीक यथा–

खर्जूर पुष्पाकृतिभिः शिरोभिः पूर्ण तण्डुलैः ।
शोभन्ते किञ्चदालम्बाः शालयः कनक प्रभाः ।।

मैथिली रूपान्तर–शोभ शालि मंजरि सुखमूल । जनि लटकल खर्जूरक फूल ।।

परन्तु 'कनक प्रभाः' केर अविकल अनुवाद नहि कऽ कवि लिखै छथि–

शोभ शश्य महि मे कतिरंग । जनि कामिनि पहिरल पट अङ्ग ।।

एहि प्रकारेँ कविक विलक्षण दृष्टिक परिचय निम्नलिखित पंक्तिमे भेटैछ जेना–

दिवस छलाह बढ़ल सब भाँति । जाडेँ सकुचि गेला लघु काँति ॥
हिम भय रवि उत्तर तजि देल । आग्नेय दिशिक सु आश्रयलेल ॥
कैकयि मुख विल सौं वरदान । बहरायल दुइ सर्प समान । (अयोध्याकाण्ड)
इत उत झट आबय झट जाय । यथा नदी बान्धेँ अकुलाय । (अरण्यकाण्ड)
बढ़ल दुखद खल मच्छड़ जोंक । कलि मे जनि खल निन्दक लोक ।
(किष्किधाकाण्ड)

परन्तु अध्यात्म रामायणमे एहि प्रकारेँ ऋतु सभक वर्णन नहि देखना जाइछ । अतः, कवीश्वर चन्दाझाक रामायणमे सेहो ई वस्तु नहि देखैत छी । ई सभ देखला उत्तर ई कहल जा सकैछ जे इतिहास लिखबाक काल डा. श्री मिश्रजीक दृष्टिपथ पर सम्पूर्ण रामायण नहि आबि सकल छलनि । अन्यथा कविक प्रतिभा प्राचुर्यक चर्चा ओहिमे अवश्य कयल जाइत ।

कवीश्वर चन्दा झाक जन्म 1830 ई.मे भेल छलनि आ हिनक 1856 ई.मे अतः 26 वर्षक अन्तर दुनू गोटेक अवस्थामे छलनि । प्रथम रामायणक रचना महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक समय मे भेल आ दोसर महाराजाधिराज रमेश्वर सिंहक समयमे लिखल गेल । एहि रामायणक कवि मिथिलेशक संग रहैत छलाह, तैं कामाख्या गेलाह मिथिलेश तँ ई हुनक संगहि छलथिन । सुन्दर काण्डक अन्तमे लिखल–

'स्व कल्पितमिद ग्रथं कामाख्या सन्निधौ मया ।
लिखितं प्रीतये देव्याः लालदासेन सुन्दरम् ॥'

एहि श्लोकसँ कविक शाक्त हैबाक आरो पुष्ट प्रमाण भेटैछ । तथापि कवीश्वरक संग हिनका पूर्ण सद्भाव छलनि । हमर पूज्य पिता स्वर्गीय प. मुक्तिनाथमिश्र ओहि समयमे राज दरभङ्गामे छलाह आ दुनू गोटाक संग सद्भाव छलनि । एहि रामायणकारक दीक्षा गुरु खोजपुर निवासी फन्नावार वंश थिकथिन, आ ओहि वंशसँ हमहुँ सम्बद्ध छी, तेँ हमरा पिताक संग अपेक्षा बेस घनिष्ठ छलनि । कविक सबसँ प्रचलित गद्यग्रन्थ स्त्रीधर्म शिक्षाक एक प्रति कवि हमरा पिताकेँ देने छलथिन जे प्रति एखनहुँ हमर पूजनीया

माताक लग छनि आ ओकर शतावधि आवृत्ति पारायण हमरा माताक मुहेँ टोलक स्त्री वर्गादि सुनि चुकल होइतीह, तेँ हमरा पिताक मुहेँ ई कथा सुनल थीक जे एहि रामायणक कवि समय समय पर कवीश्वरसँ विचार विमर्श करबाक हेतु अबैत छलथिन । ई उचितो छल जे पूर्ववर्त्ती कविक लग आबि विचार लेथि तेँ डा. मिश्रजीक ई कथन जे–

"Laldasa tried to follow the trend given by Chanda Jha"

उचित थीक । मुदा एकर अर्थ ई नहि बूझक चाही जे ओहि रामायणक प्रभाव एहि रामायण पर पड़ल अछि ।

कवीश्वरक सम्बन्धमे डा. मिश्रजी लिखैत छथि–

"Wonderful mastery over the langauge, oppropiate idioms... all these contribute to its success" से भाषाक सम्बन्धमे कवीश्वरक लोहा के नहि मानतनि । अप्रासंगिक होइतहुँ हम दुइ शब्द कहि देबै चाहैत छी जे हमरा बड़ नेना अवस्थासँ कवीश्वरक पद गैबाक अभ्यास रहल अछि । कहिओ काल सायं शिवपूजाक शुभ क्षणमे हमरा पिताक आज्ञा भेटय शिवक भजन गयबाक, तँ हम मन्त्रमुग्ध भऽ कवीश्वरक भजन सब गाबी आ ओही प्रसादात् किछु तुकबन्दी करबाक प्रवृत्ति हमरो भेल । कविताक प्रति प्रेम उत्पन्न भेल तकरा मूलमे अछि आ एहू रामायणमे संस्कृत बहुल शब्दक प्रयोग अछिए, मुदा अनुपातत: देशज शब्दक प्रयोग एहि रामायणमे अधिक देखि पड़ैछ जे मनबोधक कृष्णजन्ममे देखना जाइछ जेना–

''हरि पुनि हथगर गोड़र भेल''
''कदमक तरु चढ़ि भड़कछ मारि''
''गुड़कल गुड़कल भिड़ुकल जाय''
''शकटक अकट वकट सब फूटल'' आदि

तहिना देशज शब्दक उदाहरणार्थ 'क्वाथ, अधछ, उजहल, चाड़ि, हुकहुक, गटगट, भट दै, लाथ, दमसि–दमसि, ठहक्का, कादर, घाड़, छपित, मंच, बकेन आदि शब्दक उल्लेख कयल जा सकैछ । वृत्यनुप्रासक पुटक जे मैथिलीक निजत्व रहलैक अछि, बाहुल्य एहूमे स्वाभाविके थीक । हँऽ गोद, घायल अब साथ आदि हिन्दीक प्रयोग सेहो कतहु–कतहु देखना जाइछ ।

यद्यपि साथ, पास आदि शब्दक प्रयोग एहि सँ प्राचीनो साहित्यमे अछि ।

विभिन्न छन्दक प्रयोग एहि रामायणमे रहितो कवीश्वरक रामायणमे 'जाहि मात्रामे भेटैछ तकर तुलनामे रामचरितमानस सेहो नहि अबैछ, एकर एक कारण अछि । फुटकर पदावलीक रचना एहि रामायणकारक नहिए जकाँ छनि । हँऽ खण्ड काव्यमे महेश्वर-विनोद, जानकी-रामायण, गणेश-खण्ड, चण्डी चरित आदि छनि । संगहि अनेको व्रत-कथाक छन्दोबद्ध अनुवाद, विरुदावली आदिक अतिरिक्त स्त्रीधर्मशिक्षा, सावित्री सत्यवान आदि गद्य एवं नाटकक रचना सेहो हिनक उपलब्ध अछि । तेँ फुटकर पदावली लिखबाक प्रवृत्ति हिनकामे नहि देखल जाइछ । पदलालित्य जे कवीश्वरमे छनि तकरा तुलनामे वाल्मीकीये रामायण आबि सकैछ । ओना छन्दक बाहुल्य जे आचार्य केशवक रामचन्द्रिकामे छनि से छन्दक ग्रन्थ छोड़ि काव्य ग्रन्थमे एतेक एकठाम भेटब असम्भवे अछि । आचार्य केशव संस्कृतक प्रचलित छन्द जेना वसन्त तिलका, त्रोटक, भुजङ्ग प्रयात, चामर, आदिक प्रयोगक संग सुगीत, रमण तरणिजा, प्रिया, सोमराजी, कुमारललिता, मधुभार, हाकलिका, आभीर, अमृतगति सुन्दरी, पङ्कज वादिक चंचरी, पद्धटिका तल्ली विजय, हरनी, विशेषक ताम्र रस त्रिभङ्गी अनेको छन्द गनौने छथि । परन्तु आन दृष्टिएँ एहिसँ ग्रन्थक उपादेयता बढ़ि जाइछ से नहि कहल जा सकैछ । यद्यपि रामचन्द्रिकाक क्लिष्टता सब जनैछ आ एही कारणेँ पाण्डित्य-प्रदर्शन तरमे काव्य प्रतिभा ढेङ तर पड़ल वेङ जकाँ कुहरि उठल अछि परन्तु कतहु-कतहु पदलालित्यो अपूर्व अछि । पंचवटीक वर्णन केशव दासक देखू-

सब जाति फटी दुख की दुपटी कपटी न रहै जहँ एक घटी ।
नीघटी रुचि मीच घटीहु घटी जग जीव जतीन की छूटीतटी ।।
अघ ओघ की बेरी कटी वीकटी नीकटी प्रगटी गुरु-ज्ञान गटी ।
चहुँ ओरन नाचती मुक्ति नटी गुन धूरजटी बन पंचवटी ।।

एहि रामायणकारक पदलालित्य देखबाक हेतु अयोध्या काण्डक गंगा वर्णनक दुइ चारि पंक्ति देखू-

''शोभ सुदर सुखद दुहु तट सघन कानन कुंज,
सुमन सौरभ अति प्रफुल्लित उपर मधुकर गुंज,

मधुर मधुमय फड़ल फल भल कूंज कोकिल कुंज,
अमर किन्नर अप्सरागण ततय बसि सुख भुंज,
पाप राशि विनाश कारिणि लोक तारिणि गंग
ईश शीशक दीश राखल जानि धर्म तरंग''

एहि प्रकारेँ विभिन्न स्थलसँ–

''चंचल चंचरीक मधुलोभ''
''कुण्डल कनक कटक केकर''
''संच संच संगहि संचरथि''

आदि अनेको उदाहरण उपस्थित कयल जा सकैछ ।

कविक कला निपुणताक उदाहरणमे दुइ गोट पद देखू तँ–

''शोकताप सँ विह्वल प्राण । जनु जल बिनु गम्हड़ायल धान ॥'

कुम्भकर्णक भयङ्करताक वर्णनमे हास्यक अद्भुत पुट देखना जाइछ–

''शीश मुकुट जनि गिरि मैनाक
कर अंगुरी कुम्हारक चाक''

कुम्हारक चाक सन अङुठीक उपमा कुंभकर्णक विरूपताक एहेन स्पष्ट द्योतक थीक जाहि सँ हास्यक सृष्टि सर्वथा उचिते ओ अवश्यम्भावी थीक ।

रसक परिपाक, मौलिकताक झलक, अलङ्कारक पुट अद्भुत चमत्कारक संयोग आदि कतेको वैशिष्ट्यसँ पुष्ट ई महाकाव्य अपन स्थान अवश्ये बना लेत, समाजमे एहिग्रन्थक आदर होयतैक, ई विश्वास कऽ सकैत छी । ओना तँ पाठकक अभाव, राजनीतिक धुमसाही, नहि साहित्यिक तेँ काव्य धरिकेँ पिसबाक हेतु जाँतक दुनू पट्टा थीक । एही दुनूक मध्य पड़ल साहित्यिक भावना विज्ञानक अन्हरजालीमे एहि रूपेँ चोन्हरा गेल अछि जे दिशाक ज्ञान युगकेँ नहि, भऽ रहल छैक । बुझि पड़ैछ जेना काव्यगंगा भावनाक गम्भीरताकेँ छोड़ि, मस्तिष्कक शुष्क वन होइत, काव्य फल्गूक रूपमे परिवर्त्तित होमऽ जा रहल छथि ! अस्तु !

लेखकक शैलीक सम्बन्धोमे किछु कहि देब आवश्यक बुझैत छी 'ए'

तथा 'ओ' एहि दुहूस्वरक पृथक् प्रयोग नहि कऽ 'भए'क स्थानमे भय वा 'भै', 'सएह'स्थानमे सैह, 'अओताह'क स्थानमे 'औता' आदि प्रयोगकेँ नवीन प्रयोग कहि अशुद्ध मानबाक आग्रह कतेको ठाम देखि पड़ैछ । परन्तु जखन हम एहि रामायणक अतिरिक्त मिथिला तत्त्वविमर्श मे म.म. पं. परमेश्वर झाक प्रयोग- खनौलन्हि, पौलन्हि, और करैक, पठौलक, तथा म.म बख्शी मुकुन्द झाक मिथिला भाषामय इतिहासमे 'कएल'क स्थानमे 'कैल' 'दए'क स्थानमे 'दै' 'जएतैन्ह'क स्थानमे जैतैन्ह आदिक प्रयोग प्रचुर मात्रामे देखैत छी तखन अशुद्ध कहबाक अधिकार भाषाक एहि संक्रमण कालमे कहाँ धरि अछि से विज्ञ पाठक जानथि । म.म.प. मुरलीधर झा द्वारा संचालित मिथिला मोदक शैली तँ सभक सम्मुखे अछि । एहि परम्परामे कविवर सीतारामझा कविचूड़ामणि पं. काशीकान्तमिश्र 'मधुप' आदि सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित कवि एखनो विद्यमान छथि । हमर कथन ई जे यावन्तो रूपक प्रयोग एहि एक शताब्दीमे भेल अछि । शुद्ध रूप मानले सन्ताँ भाषाक क्षेत्र विस्तृत भऽ सकैछ । 'ककरो स्वर साम्यक भयसँ हम अपन रूपमे ततेक परिवर्त्तन लऽ आनी जे ओ हमरा नहि चीन्हि सकै' ई नीति भाषाक हेतु श्लाघनीय नहि । भाषामे जीवनी-शक्तिक संग भाषा-भाषीमे ओ शक्ति चाही जाहिसँ एकर अस्तित्व अक्षुण्ण रहि सकैत छैक । आ ई जीवन-शक्ति मैथिलीमे छैक । अतः, क्षेत्र विस्तारक हेतु एकरा एक कोनक भाषा नहि राखि सब रूपकेँ शुद्ध स्वीकार करबे चतुरता थीक ।

अन्तमे ई कहि देब आवश्यक बुझैत छी जे रामायण सन विशिष्ट वस्तुक सम्बन्धमे गंभीर एवं मर्मज्ञ विद्वान् सेहो कतबो लिखताह तँ थोड़े कहल जयतनि आ ताहि ठाम हमरा सन अल्पज्ञ व्यक्तिक हेतु तँ ओतबो कहब कठिन । एकगोट त्रुटि जे एहि ग्रन्थमे रहि गेल से अक्षम्य त्रुटि कहल जा सकैछ, जे थीक छपाइमे अशुद्धिक रूप । एक ठामक उल्लेख तँ नितान्त आवश्यक प्रतीत होइछ । आदिमे रामायणक कथाक संख्या वर्णन कयल गेल अछि । ओहिमे पृ. संख्या 12 मे हैबाक चाही–

"खर दूषण वध सीता हरण । विपिन काण्ड मुनि, शवरी तरण ।।
बालिक वध सुग्रीवक राज । किष्किन्धा कपि दूत समाज ।।"

से छपल अछि–

"खरदूषण वध सुग्रीबक राज । किष्किन्धा कपि दूत समाज ।।"

यद्यपि ग्रन्थक संग शुद्धि-पत्र लगा देल गेल अछि, परन्तु भविष्यमे एकर मार्जन छोड़ि दोसर कोनो टा उपाय नहि देखि पड़ैछ ।

हमरा पूर्ण विश्वास अछि जे समाज एकर आदर करत । हम ईहो विश्वास रखैत छी जे एहि ग्रन्थक उत्साही प्रकाशक एही उत्साहसँ पुनः अन्य गद्यात्मक एवं पद्यात्मक उपयोगी अन्य ग्रन्थक प्रकाशनमे संलग्न होयताह । ई सौभाग्य एहि भाषाक बहुत पहिनेसँ रहलैक अछि । कविक लेखनी गद्य आ पद्य दूनूमे अप्रतिहत गतिसँ महाकवि विद्यापतिएक युगसँ चलि रहल छनि जखन कि सूर तुलसी, कबीर, रहीम, बिहारी आदि कविक गद्यात्मक ग्रन्थ उपलब्ध नहि अछि । जहिना स्त्रीधर्म शिक्षासँ नारी समाजक उपकार भेल अछि तहिना सावित्री सत्यवान नाटकक प्रकाशनसँ होयत ।

इत्यलम्



चाणक्य महाकाव्य ओ महाकवि बन्धु

हितोपदेशकार कहने छथि–

'संसार विष वृक्षस्य द्वे एव रसवत्फले
काव्यामृत रसास्वादः सुजनैः सह संगमः'

संसार तत्त्वतः विषवृक्षे थीक, जाहि ठाम जन्मक चरम परिणति मृत्यु अर्थात् सृष्टिक चरम परिणति प्रलय होइत आयल अछि । जन्मसँ मृत्युक मध्य जे अवधि अछि ताहिमे रोग, शोक, परिताप, बन्धन, व्यसन, ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोह आदि अनायासे एहि शरीरमे प्रवेश पाबि लैत अछि, किन्तु गुण समूहकेँ प्राप्त करबा लै तपः साधना करऽ पड़िते छैक । स्वतः सद्गुणक समावेशक कोनो सम्भावना नहि । तेँ संसारकेँ विषवृक्ष कहलनि अछि । एहिमे जाहि दू गोट रस–परिपूरित फलक कल्पना कयल गेल अछि ताहिमे प्रथम थीक काव्य रूपी अमृतक आस्वादन अर्थात् स्वाद लेब ।

काव्य मीमांसाकार भारतीय वाङ्मयकेँ दू भागमे विभक्त कयने छथि– 'शास्त्रं काव्यञ्चेति वाङ्मयं द्विधा । शास्त्र आ काव्य एहि दूनूमे काव्यकेँ बेसी महत्त्व प्राप्त छैक । कारण सत्यं शिवं सन्दरम् एहि तीनूक समष्टि रूपे काव्य थीक, जकरा ब्रह्मानन्द सहोदर कहल गेलैक अछि । एहि काव्यक अंग–प्रत्यंग पर संस्कृतक प्रकाण्ड पण्डित लोकनि अति विस्तारसँ विवेचन कयने छथि । काव्य साहित्यक एक अंग थीक आ कहल गेल अछि– 'साहित्य संगीत कला विहीनः, साक्षात्पशुः पुच्छविषाण हीनः' अर्थात् साहित्य, संगीत आ कला एहि सबसँ विहीन लोक बिनु नाङड़ि ओ सिंघक पशुए थीक ।

मनुष्यक मनोभावक अभिव्यक्ति साहित्यक माध्यमसँ होइत छैक । ओ अभिव्यक्ति दू प्रकारेँ होइत छैक– एक गद्य जकर आश्रय व्यक्ति मात्र लैत अछि, जकरा कण्ठमे बोल छैक आ दोसर पद्य, जकर प्रयोग विशेष प्रतिभा सम्पन्ने व्यक्ति कऽ पबैत अछि । तेँ कहल गेल छैक–

'नरत्वं दुर्लभं लोके, विद्या तत्र सुदुर्लभा,

कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा'

छन्दक बन्धनसँ मुक्तकेँ गद्य तथा छन्दोबद्धकेँ पद्य कहल जाइत छैक । ओही छन्दोबद्ध पद्यकेँ जखन तालबद्ध कऽ वाद्य यन्त्रक संग स्वरक आरोह–अवरोहसँ झंकृत कयल जाइत छैक तँ तकरा संगीतक संज्ञा प्राप्त होइत छैक ।

प्रकृति द्वारा निर्मित एहन कोनो वस्तु नहि अछि जकर उपादेयता नहि होइक, संगहि जाहिमे गुणक सत्ता नहि होइक । ई भिन्न बात थीक जे हमरा सभक सीमित बुद्धिमे समस्त पदार्थक गुण बुझबाक सामर्थ्य नहि अछि । उपयोगिता तँ सभक कोनो ने कोनो रूपमे अवश्य छैक, तेँ कोनो वस्तुकेँ गुणसँ सर्वथा हीन बूझब अपन अल्पज्ञताक द्योतक होयत । उपयोगिताक अतिरिक्त एक वस्तु आरो छैक जकरा सौन्दर्य कहल जाइत छैक । एही सौन्दर्यक उपयोग वा उपभोग वा अनुकरण द्वारा जे अनुभूति होइछ सैह अभिव्यक्ति कलाक रूप धारण करैत अछि । से कला दू भागमे विभक्त अछि– पहिल उपयोगी कला, दोसर ललित कला । विवेचनामे स्पष्टताक हेतु ललित कलाकेँ सेहो दू भागमे विभाजित कयल गेलैक अछि । एकमे कोनो मूर्त्त आधारक आवश्यकता होइत छैक, जेना कोनो पद्यक रचनाक हेतु कोनो मूर्त्त आधार नहि चाही, किन्तु ओही पद्यकेँ संगीतक स्वरूप देबाक हेतु झालि, मृदंग, वीणा आदि–आदि अनेक वाद्य यन्त्रक प्रयोजन होइत छैक । से मूर्त्त आधार भेलैक । ललित कलामे मूर्त्त आधार जतेक थोड़ से कला ततेक उत्कृष्ट । एही आधार पर काव्य कलाकेँ सर्वोत्तम स्थान प्राप्त छैक । तत्त्वतः काव्यमे साहित्य, संगीत ओ कला, ई तीनू समष्टि रूपमे समाविष्ट रहैत छैक । अतः काव्यक मर्मज्ञ व्यक्ति साक्षात्पशुः पुच्छ विषाण हीनः जे भर्त्तृहरिक उक्ति छनि ताहि दोषसँ मुक्त रहि जाइत छथि । एही कारणेँ संसार विष वृक्षमे काव्यकेँ अमृत तुल्य रसवान फल मानल गेलैक अछि ।

यद्यपि काव्यक सर्व-सम्मत परिभाषा नहि भऽ सकल अछि आ से भइयो नहि सकैत अछि, तथापि संस्कृतक मर्मज्ञ तथा कारयित्री ओ भावयित्री प्रतिभा-सम्पन्न अनेक विद्वान अपना अपनामतेँ समय-समय पर एकर परिभाषा दैत रहलाह अछि । एहन मनीषी लोकनिमे मम्मटक 'काव्य प्रकाश' दण्डीक 'काव्यादर्श' विश्वनाथक 'साहित्य दर्पण' तथा पण्डितराज जगन्नाथक 'रसगंगाधर' प्रामाणिक ग्रन्थ मानल जाइत रहलनि अछि । आचार्य मम्मट काव्यक स्वरूप निर्वचन 'तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि' एहि शब्देँ कयने छथि, अर्थात् जाहि शब्द ओ अर्थमे दोष नहि होइक, गुण तथा अलंकार होइक अथवा अलंकार नहिओ होइक, किन्तु दोष रहित आ गुण संवलित वाक्यकेँ काव्य माननलि अछि ।

साहित्य दर्पणकार आचार्य विश्वनाथ 'वाक्यं रसात्मकं काव्यम्' अर्थात् रस होइक आत्मा जकर तेहन वाक्यकेँ काव्य माननलि अछि । अधिकतर रचनाकार हिनक परिभाषाकेँ बेसी महत्त्व दैत छथिन । रसगंगाधरक प्रणेता पण्डितराज जगन्नाथक मत छनि- 'रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्' अर्थात् जाहि शब्दक रमणीय अर्थ होइक से काव्य थीक । आचार्य दण्डी तँ 'रीतिरात्मा काव्यस्य' कहि रीतिएकेँ काव्यक आत्मा कहलनि अछि । एहि परिभाषा सभक तत्त्वार्थ बुझबाक हेतु गुण, दोष, अलंकार, रस, रीति, रमणीयता एहि सभक तऽहमे जाय पड़ैत छैक । एहि सब पर अति विस्तारसँ संस्कृत ग्रन्थ सबमे विवेचन भेल छैक । किन्तु एतेक विस्तारमे नहि जा कऽ संक्षेपमे एतबे मानबामे लाघव होयत जे सत्यं शिवं सुन्दरम् समष्टि रूपमे काव्यक विधान करैत अछि आ तेँ काव्य द्वारा लोककेँ लोकोत्तर आनन्दक प्राप्ति होइत छैक ।

एहि काव्यक अनेक भेद-प्रभेदमे एक भेद थीक 'महाकाव्य' । एहि महाकाव्यक लक्षण 'अग्निपुराण'क 337 म अध्यायमे विस्तारसँ देल गेल अछि । ओहि लक्षणक अनुसार महाकाव्य एक सर्ग-बन्ध रचना थीक जाहिमे विस्तार पूर्वक विभिन्न वृतान्त होइक । शक्वरी, अति शक्वरी, जगती, अति जगती, त्रिष्टुप, पुष्पिताग्रादि छन्दक प्रयोग होइक । नगर, वन, पर्वत, चन्द्र, सूर्य, वृक्ष, आश्रम, उपवन, जल-क्रीड़ा, मधुपान, उत्सव आदिक वर्णन होइक संगहि रीति, वृत्ति, गुण, रस एहि सभक समावेश होइक । यद्यपि उक्ति

वैचित्र्य रहिते छैक तथापि प्राण रूपमे रस व्याप्त रहबाक चाही । विश्व विख्यात नायकक कथा द्वारा अर्थ, धर्म, काम ओ मोक्ष जे चतुवर्ग कहबैछ तकर प्राप्ति देखाओल जाइक । यद्यपि अग्नि पुराणक अनुसार महाकाव्यक आरम्भ संस्कृतेसँ होयबाक चाही । प्रायः एही उक्तिकेँ ध्यानमे राखि सन्त तुलसीदास अपन रामचरित मानसमे तथा कवीश्वर चन्दाझा, लालदास अपन रामायणमे प्रत्येक काण्डक आरम्भ संस्कृत श्लोकसँ कयने छथि, किन्तु ई नियम युग विशेषक हेतु भने ग्राह्य रहल हो, आजुक युगक लेल काल-बाह्य भऽ गेल अछि । तेँ कविशेखर बदरीनाथझा अपन एकावली परिणयमे, जकरा संस्कृत लक्षण ग्रन्थक सर्वथा नियमानुरूप कहल गेल अछि, ताहिमे एकरा नहि मानने छथि ।

आचार्य दण्डी अग्नि पुराणक लक्षणक समीप रहितो किछु नवीनताक समावेश सेहो कयलनि अछि । दण्डी छन्द सम्बन्धी विशेषता, रसक प्रधानता आ संस्कृतेमे महाकाव्यक आरम्भकेँ आवश्यक नहि मानने छथि । हुनका मतेँ प्रारम्भमे आशीर्वचन, स्तुति, कथा वस्तुक संकेत होयबाक चाही । संगहि विविध वृत्तान्त, लोक रंजकता तथा कल्पान्तर स्थायित्व होयब आवश्यक ।

आचार्य विश्वनाथ अपन साहित्य दर्पणमे एहूसँ विकसित लक्षण देलनि अछि, जाहिमे महाकाव्यक प्रत्येक अंगक स्पष्ट धारणा निरूपित भेल अछि । कथावस्तु, ओकर संघटन, नायक, रस, छन्द, वर्ण्य विषय, नाम, उद्देश्य आदि सब किछु स्पष्ट भऽ जाइत अछि ।

सर्गक संख्याक प्रसंग ईशान संहितामे कहल गेल अछि—

'अष्ट सर्गात् न तु न्यूनं त्रिंशत् सर्गाच्च नाधिकम्

महाकाव्यं प्रयोक्तव्यं महापुरुष कीर्त्तियुक्'

अर्थात् महाकाव्य कोनो महापुरुषक वर्णनमे आठ सर्गसँ कम नहि आ तीस सर्गसँ अधिक नहि होयबाक चाही ।

मैथिली साहित्यक इतिहास सहस्राब्दीक सीमाकेँ स्पर्श करैत अछि । एहिमे कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वरक गद्यग्रन्थ वर्ण रत्नाकर एवं महाकवि विद्यापतिक सहस्रावधि गीतक दर्शन तँ होइते अछि, संगहि नाटकक परम्परा

अक्षुण्ण देखबामे अबैत अछि, जाहिमे गद्यक प्रयोग अत्यल्प हो, किन्तु नाटकक कथानककेँ आगाँ बढ़बैत ओ गीत सब अभिन्न अंग तँ अछिए । ई क्रम कवीश्वर चन्दाझासँ पूर्व धरि रहल अछि । किन्तु महाकाव्यक प्रणयन दिस प्रवृत्ति दृष्टिगत नहि होइछ । अतः चन्द्र रामायणे मैथिलीमे प्रथम महाकाव्यक स्थान ग्रहण करबाक अधिकारी अछि ।

हमरा एहनो प्रतीत होइत अछि जे कवि कोकिलक काकली बंगालक सार्द्र भूमिसँ लऽ ब्रज निकुंज धरिकेँ ताहि रूपेँ अनुगुंजित कऽ देने छल ओकर माधुरीक समक्ष मिथिलाक सहकार वनमे महाकाव्यक तेहन आवश्यकता नहि बूझल गेल हो ।

चन्दाझाक युग अबैत-अबैत लोकभाषाक महत्त्व स्पष्ट होअय लागल छल । एक दिस रामचरित मानसक लोक-प्रियता, दोसर हिन्दीक क्षेत्रमे भारतेन्दु हरिश्चन्द्रक राष्ट्रवादी विचारधारा समाजकेँ जगयबामे प्रेरक तत्त्वक काज आरम्भ कऽ देने छल । एकर अव्यवहिते काल खण्डमे महाकवि लालदास रमेश्वर चरित रामायण लऽ उपस्थित भेलाह आ क्रमशः साहित्य रत्नाकर मुंसी रघुनन्दन दास 'सुभद्रा हरण' कविशेखर बदरीनाथझा 'एकावली परिणय', कविवर सीतारामझा 'अम्ब चरित', प. जीवनाथझा 'विद्याभूषण' 'रावणवध', प्रो. तन्त्रनाथझा 'कीचक वध'क रचना कयलनि । ओमहर बाबू भुवनेश्वर सिंह 'भुवन' बंगलासँ माइकेल मधुसूदन दत्त रचित 'विरहिणी ब्रजांगना'क तथा प. गौरीशंकरझा 'मेघनाद वध'क अनुवाद कऽ महाकाव्यक एक शृंखला ठाढ़ कऽ देलनि ।

प्रस्तुत महाकाव्य 'चाणक्य' महाकाव्यक लक्षणानुसार कसौटी पर कसला उत्तर महाकाव्यत्वक अति समीप धरि पहुँचैत अछि । समयक गतिक संग लक्षणो सबमे संक्षेपण ओ संशोधन होइत रहलैक अछि । कहल जा चुकल अछि जे 'प्रारब्धं संस्कृतेन यत्' जे अग्नि पुराणक मन्तव्य छैक, कवि शेखर बदरीनाथझा स्वयं एकरा शिथिल कयलनि । तकरबादसँ जतेक महाकाव्य लिखायल, कोनोमे संस्कृतसँ आरम्भ भेल नहि देखैत छी । विवेच्य विषयसँ असम्पृक्त रहितो सूचनार्थ उल्लेख करब अप्रासंगिक नहि होयत जे मधुपजीक 'राधा विरह' वैद्यनाथमल्लिक 'विधु'क 'सीतायन' तन्त्रनाथझाक 'कृष्ण चरित' मार्कण्डेय प्रवासीक 'अगस्तयायनी' किरणजीक 'पराशर' अज्ञातजीक 'प्रतिज्ञा

पाण्डव' श्रीचन्द्रभानु सिंहक 'शकुन्तला' ई सात गोट महाकाव्य साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत भऽ चुकल अछि । निर्णायक मण्डलमे विद्वाने लोकनि रहलाह अछि । अस्तु ।

कहबाक तात्पर्य जे जतबा संशोधन वा संक्षिप्तीकरण भेल अछि तकरा सबकेँ ध्यानमे राखि एहू महाकाव्यपर विचार होयबाक चाही । कवि सर्वप्रथम रवि शब्दक प्रयोग कयने छथि–

'रवि सम दीप्त अनल सम दाहक पवि सम कठिन कठोर' रवि अर्थात् सूर्य जे वैदिक युगक आरम्भेसँ उपास्य देवता रहलाह अछि, जे एक एहन ज्योति पुंज थिकाह जनिक चतुर्दिक ई समस्त सृष्टि ओ सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड नचैत अपन अस्तित्व रखने अछि । एखनो हिनके उपासना गायत्री मन्त्र द्वारा कयल जाइत छनि तथा मन्त्रमे सबसँ शक्तिमान गायत्रीए मन्त्रकेँ मानल जाइत अछि ।

दोसर अनल शब्दक प्रयोग कयने छथि । अनल अर्थात् अग्नि, ई दोसर प्रत्यक्ष देवता थिकाह आ सब यज्ञक अधिष्ठाता । ई दूनू शब्द मंगल सूचक थीक । जाहि महाकाव्यक नायक ब्राह्मण होथि, ताहि महाकाव्यक मंगलाचरणमे सूर्य ओ अग्निसँ बढ़ि कऽ मंगलकारक दोसर के भऽ सकैत छथि ?

एहि महाकाव्यक नायक चाणक्य थिकाह जे इतिहास प्रसिद्ध तँ छथिहे संगहि नीतिशास्त्रक अद्वितीय विद्वान, पुनि परम त्यागी, जे धीरोदात्त नायकक प्रथम गुण कहल गेल अछि । कृती एहने जे शिखा फोलि नन्दवंशक विनाश कऽ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तकेँ एकच्छत्र साम्राज्यक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक संकल्प लेलनि आ सम्पूर्ण आर्यावर्त्तसँ सब अनाचार, भ्रष्टाचारकेँ निर्मल कऽ एक पराक्रमशील, प्रतिभावान तथा प्रभविष्णु युवक चन्द्रगुप्तकेँ शिक्षित–प्रशिक्षित कऽ राजसिंहासन पर अभिषिक्त करैत स्वयं–

''कटितटमे कौपनी, काँखतर कृष्णसार मृगछाला
करमे दर्भ–कमण्डलु राजित, गर रुद्राक्षक माला,
जटाजूट, चन्दनसँ चर्चित भाल, स्वयंप्रभ वेष,
एखन चलल छथि जन्म भूमिमे बितबय जीवन शेष''

(एगारम सर्ग)

'अष्टसर्गात् न तु न्यूनम्' केर अनुसार ई महाकाव्य एगारह सर्गमे रचल गेल अछि । छन्दक विविधता तँ अनेक सर्गमे अछिए, किन्तु सर्गान्तिमे भिन्न छन्दक प्रयोग सब सर्गमे नहि भेल अछि । एहिसँ अतिरिक्त कवि एक दिस संस्कृतोक छन्दक प्रयोग कयने छथि तँ दोसर दिस नवीनतम छन्दकेँ सेहो नहि छोड़लनि अछि । तेँ वार्णिक ओ मात्रिक दूनू छन्दक प्रयोग कुशलता पूर्वक एहि मे भेल अछि ।

द्वितीय सर्गमे जे आश्रमक वर्णन भेल अछि ताहि ठाम प्रकृतिक अति मनोरम वर्णन दृष्टि गोचर होइत अछि । चतुर्थ सर्गमे उद्यान, सरोवर आदिक वर्णन अछि तकर एक-आध अंशक रसास्वादन कयल जाय-

''जलमे किरण, किरणमे लाली, लालीमे सौन्दर्य अपार
सुखमे खग, खगमे कलकलरव, कलरवमे मुद मोद प्रचार
सरमे कमल, कमलपर मधुकर मधुकरमे कलमद गुंजार
तरुमे दल, दल पर कोकिल कुल, कोकिलकुल कलनाद उचार''

मनोमुग्धकारी एहन-एहन वर्णन काव्यक सौन्दर्यकेँ रमणीय बना देने अछि ।

नन्दक औद्धत्य, ओकर विनाशक संकल्प, पुनि विदेशीक आक्रमण आ ओहि आक्रमणसँ देशक रक्षा लै संघटन, अन्तमे नन्दवंशक मूलोच्छेद कऽ चुन्द्रगुप्तकेँ सम्राटक पद पर अभिषिक्त कऽ सेल्यूकसक बेटीसँ विवाह करबाक अनुमति दैत छथिन आ अपने चाणक्य जन्मभूमि मिथिलाक हेतु प्रस्थान करैत छथि । यैह थिक एहि महाकाव्यक संक्षिप्त कथावस्तु ।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे वर्तमानक सजीव चित्र अंकित करैत राष्ट्र निर्माणक दिशा-निर्देशक दिस इंगित करैत, ओज ओ प्रसादगुणसँ समन्वित प्रवाहमय भाषामे रचित ई महाकाव्य मैथिली साहित्यक क्षितिजक जे विस्तार कयलक अछि, श्री-सम्पन्न बनयबामे योगदान कयलक अछि तकरा निःसंशय अनुपम कहल जा सकैछ ।

सबसँ अधिक विशेषता जे एहि महाकाव्यक थिकैक से ई जे स्वतन्त्रता प्राप्तिक बाद देश पर सम्भावित समस्या दिस पाठकक ध्यान आकृष्ट करैत अछि । कविकेँ भविष्य-द्रष्टा कहल गेलनि अछि, प्रस्तुत महाकाव्य पढ़ला उत्तर ई उक्ति चरितार्थ होइत प्रतीत होइछ । आधुनिक युगमे प्रत्येक

वस्तुक मान्यतामे परिवर्त्तन भेलैक अछि अथवा विकास कहल जाय, जाहि परिप्रेक्ष्यमे एहि महाकाव्यकेँ पढ़ला उत्तर बुझना जाइत अछि जे एहिसँ पूर्व प्रकाशित महाकाव्य सब प्राचीन विषय वस्तुएमे ओझरायल रहि गेल अछि, आधुनिकताक रंच मात्रो दर्शन नहि करबैत अछि ।

स्वतन्त्र भारत जनतन्त्र पद्धति पर चलि रहल अछि, जकरा समाजसँ घनिष्ठ सम्बन्ध छैक अर्थात् समाजे द्वारा जनतन्त्रक संचालन हेतु कोनो नेताकेँ निर्वाचित कऽ अधिकार समर्पित कयल जाइत छनि । चाणक्यक कवि नेताक परिभाषा दैत छथि–

''कालकूट घट पीबि, सुधारस जगकेँ बाँटि सकैछ
मर्त्यलोकसँ देवलोक धरि ओ नेता कहबैछ
विष ज्वाला–परिपूर्ण नागफन चढ़ि जे नाचि सकैछ
सैह समाजक, धर्मक, राष्ट्रक जननेता कहबैछ''

राजतन्त्रमे राजाक पुत्रे राज्यक उत्तराधिकारी होइत छलैक आ ओकरे द्वारा प्रजा शासित होइत छल । ओ विद्वान हो वा मूर्ख, दयालु हो वा क्रूर, न्यायपरायण हो वा अन्यायी, विवेकवान हो वा स्वार्थान्ध, परन्तु लोकतन्त्रमे–

''शासक होइछ न जन्मजात क्यो, ने अदृष्ट फल भोगी
राजनीति–दृढ़ पथ अनुगामी, सतत कर्मरत योगी
जनतासँ विश्वासप्राप्त नर शासन–सूत्र सम्हारय
जन–हित–कारक–कार्यव्यूहसँ जनमर्यादा पालय'' (10म सर्ग0

राजनीतिक अधिकारी के थीक ? कवि परिभाषा दैत छथि–

''कालायस कर्कश, अतिशय मृदु, कुटिल करेज जकर हो
राजनीति केर अधिकारी ओ पौरुष जकर प्रखर हो''

(10म सर्ग)

पौरुषसँ परिपूर्ण पुरुषक द्वारा राज्यक संचालन सम्भव होइत छैक, किन्तु राज्याधिकार प्राप्त भऽ गेला उत्तर यदि निश्चिन्त भऽ सूति रहल तँ ओकर स्वतन्त्रता सुरक्षित नहि रहि सकतैक । कारण–

'राजनीति-तरु शोणित-जलसँ सिंचित होइछ सदिखन
बलिदानक उर्वरक प्राप्त कय फड़य-फुलाय विलक्षण'

(10म सर्ग)

चीनी ओ पाकिस्तानी एहि दूनू आक्रमणसँ पूर्वे लिखल एहि महाकाव्य केँ एहि दूनू युद्धक पृष्ठभूमिमे देखल जाय–

'हो ठाढ़ घेरि घर जखन युद्धकेर दानव
अछि उचित कि घरमे बैसि विकलमन कानब ?
नहि विजय-पराजय, पाप-पुण्य नर हेरय
बनि प्रतिकारक अंगार शत्रुसँ खेलय'' (10म सर्ग)

जखन राष्ट्र एहि नीतिक अनुसरण कयलक, तखन–

''डूबि गेल गाम-गाम वीरताक रंगमे
माँतल नर-नारी सभ राष्ट्रप्रेम-अंगमे'' (षष्ठ सर्ग)

तखन पत्नी पतिसँ, माता-पिता पुत्रसँ आ बहिन अपन भायसँ आग्रह करैत छैक–

''युद्ध जीति आयब तँ आरती उतारि लेब...
काटि लाउ वीर पुत्र ! शत्रु-माथ हेरि-हेरि...
वीरताक पाठ शत्रु-शिष्यकेँ पढ़ाउ बाउ !....'' (छठम सर्ग)

विज्ञान मानव जाति हेतु समस्त दुख-दुविधाक अन्त कऽ अनन्त सुख-सुविधा प्रदान करबाक आश्वासन दैत रहल अछि, किन्तु परिणाम जे देखबामे आबि रहल अछि से कविक चित्तमे एक प्रश्न उपस्थित करैत छनि–

'आग्नेय अस्त्र मानव केर त्राण करत की ?
अछि रिक्त प्रेम केर कोष आह ! सम्पूर्ण भरत की ?''

आ अपने अन्तर्मनसँ उत्तर भेटैत छनि–

''विज्ञान जतेक बढ़त आगू संसारक
भय जयत ततेक निकटतम तट संहारक'' (छठम सर्ग)

आइसँ आधशताब्दी पूर्व लिखल एहि पंक्तिमे जे भविष्यवाणी भेल अछि, आइ संसार कोन रूपमे संकटापन्न प्रतीत होइछ, स्वयं ऊह्य थीक ।

जतय कतहु महाकाव्यक स्वरूप निर्वचन भेल अछि, सब ठाम विधेय अवश्य कहल गेल अछि, किन्तु निषेध नहि । एहिसँ ई बुझबाक थीक जे युग तथा परिस्थितिक परिवर्त्तनक संग-संग जे स्वाभाविक विकास अथवा ह्रास ताहि पर अंकुश नहि लगाओल गेल अछि ।

यदि प्राचीन महाकाव्यमे नगर, समुद्र, वन, पर्वत आदिक वर्णनकेँ आवश्यक मानल गेल तँ आजुक महाकाव्यमे जे नवीन चेतना, नव जागरण एवं वैज्ञानिक उपलब्धि सब भेल अछि तकर वर्णन किएक ने समाविष्ट हो ? प्रत्युत ई कहल जा सकैछ जे आब जँ नव रूपमे महाकाव्यक लक्षण बनत तँ ताहिमे एही वर्णन सबकेँ अनिवार्य मानल जायत । प्राचीनताक विसर्जन आ नवीनताक उन्मेषक एहि युग-सन्धिक स्थल पर वीररसात्मक ई महाकाव्य 'चाणक्य' मीलक पाथर बनि गड़ल अछि जाहिसँ मैथिली साहित्य गुण-गौरवान्वित भेल अछि ।

●

लक्ष्मीनाथ गोसाँइ महाकाव्यक प्रसंग

संवर्द्धना

नीतिकारक वचन छनि–

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ॥

अर्थात् मनुष्य रूपमे जन्म लेब दुर्लभ होइत छैक, ताहिपर विद्या सेहो प्राप्त होयब और दुर्लभ । विद्या प्राप्त कयलो उत्तर कविता लिखबाक रुचि हो से ताहूसँ दुर्लभ । कविता लिखबाक प्रवृत्ति रहलोपर शक्तिओ प्राप्त भऽ जायब पूर्व जन्मक कठिन तपस्याक प्रतिफल मानल गेलैक अछि ।

ई प्रतिभा जन्मजात, स्वतः स्फूर्त होइत छैक । एहि हेतु शास्त्रक ज्ञानक कोन कथा अक्षरहुक ज्ञान ततेक आवश्यक नहि होइत छैक । हमरे सभक पीढ़ीमे एक कवि विन्देश्वर नामक भऽ गेलाह अछि जे अपन हस्ताक्षरो करब बादमे सिखलनि, ताहिसँ पहिनहि भिन्न भाषामे हिनक चारि-पाँचटा छोट-छोट पुस्तिका छपि चुकल छलनि । आकाशवाणीसँ अनुबन्ध भेटलाक बाद हस्ताक्षर करब सिखलनि । अनेक मंचसँ हिनका संग कविता पाठ कऽ चुकल छी ।

कबीरदास अपन नैसर्गिक प्रतिभाक प्रसादेँ स्वतन्त्र धार्मिक सम्प्रदायक प्रवर्त्तक भऽ गेलाह । लाखक लाख कबीर-पंथी-सम्प्रदायक लोक एखनहु विद्यमान छथि । समय-समयपर हिनका लोकनिक वृहत् आयोजन होइत रहैत छनि । प्रत्येक व्यक्तिक अपन परिवेश आ परिस्थितिक प्रभावसँ स्वतन्त्र

चिन्तन होइत छैक तथा तदनुरूपे अभिव्यक्ति सामर्थ्य सेहो होइत छैक ।

प्राचीनकालमे दोसर सन्त कवि तुलसीदास छथि । तुलसीदास कबीर जकाँ कोनो सम्प्रदायक प्रवर्त्तक तँ नहि भेलाह तथापि हिनक 'रामचरित मानस'क जे सम्मान, जे प्रतिष्ठा सुशिक्षितो समाजमे छनि, सूर्यस्तव, गंगास्तव जकाँ हिनक हनुमान चालीसाक पाठ होइत छनि से प्रतिष्ठा कबीर दासक कोनो रचनाकेँ प्राप्त नहि छनि । मानसिक भावकेँ व्यक्त करबाक हेतु दू टा प्रकार छैक– गद्य तथा पद्य । दूनूक प्रयोग हेतु अनुशासन विधान छैक । गद्य पर केवल व्याकरणक अनुशासन रहैत छैक, किन्तु पद्य पर व्याकरणक संग पिंगल (छन्दशास्त्र सेहो अपन अनुशासन रखैत छैक आ गद्य आ पद्यकेँ विभाजित करबाक रेखा एहीसँ बनैत छैक ।) पिंगलक विधान जटिल छैक तेँ कठोर होइत छैक । समाजमे ओझरायल विचार रखनिहारकेँ पिंगल' विशेषण सँ विभूषित कयल जाइत छैक– 'अरे ! अहाँ फल्लाँक फेरमे पड़ल छी ? ओ तँ महाग पिंगल अछि' सोझ डारिएँ माननिहार नहि । कवित्व प्रतिभा रहितो ओहि प्रतिभाकेँ विकसित करबाक शक्ति अर्जित करय पड़ैत छैक । से होइत छैक स्वाध्याय आ अध्यवसाय सँ ।

शास्त्रकारक मत छनि– 'अपि माषं मषं कुर्यात् छन्दो भंगं न कारयेत्' छन्दक अनुरोधेँ 'माष' शब्दकेँ 'मष' रूपमे प्रयोग क्षम्य मानल जा सकैछ, परन्तु छन्द भंग सह्य नहि भऽ सकैत अछि ।

हमरा लोकनिकेँ स्वतन्त्रता प्राप्त भेल । स्वतन्त्र शब्दक तात्त्विक अर्थ होइत छैक– सामाजिक जीवनमे समरसता, शासनमे निष्पक्षता तथा प्रशासनमे पारदर्शिता बना कऽ रखबाक लेल एहन तन्त्र, एहन विधानक संरचना करब जे स्व अर्थात् अपन परम्परा, अपन संस्कार, अपन संस्कृति, अपन रहन-सहन, अपन आहार-विहार, भेष-भूषा, पावनि-तिहार, अपन इतिहास आ भौगोलिक स्थिति, एहि सभक संरक्षण-संवर्द्धन तथा कालक्रमेँ आयल विकृतिक परिष्कार करबाक सम्पूर्ण अधिकार अपना हाथमे हो ।

भारतक भाग्य-विधाता, नीति-नियन्ता लोकनि उत्कृष्ट कोटिक बुद्धिमान, विद्वान आ अनुभवी छलाह अथवा छथिहो, हुनका लोकनिक बुद्धिमत्ता, विद्वत्ता वा दूरदर्शिता पर सन्देहो करब अपन संकुचित मानसिकताकेँ उघाड़ करब मानल जायत । तथापि देश आइ जाहि भ्रष्टाचार आ दुष्कर्मक अगाध पंकमे

धसि गेल अछि, धसले जा रहल अछि, हमर अल्प बुद्धि कहैत अछि जे अनकर अन्धानुकरण करबामे परमपटु (माहिर) हम सब अपन सर्वस्व गमा चुकल छी, तकरे परिणाम दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि। वर्तमान कालिक स्थिति पर एतेक विषयान्तर होयबाक प्रयोजन ई जे आइ साहित्योक क्षेत्रमे स्वतन्त्रताक अर्थ भेल स्वच्छन्दता। एही परिवेशमे पालित युवक अपनाकेँ एहि प्रवाहसँ बचा कऽ कोना राखि सकैछ।

कोनो आचार्य लोकनि काव्यक परिभाषा देलनि– रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्। दोसर गोटे कहलनि– रसात्मकं वाक्यं काव्यम्। तेसर अपन मत व्यक्त कयलनि– रीतिः आत्मा काव्यस्य। ककरो मत छनि– काव्यं ग्राह्यम् अलंकारात्। उत्तर आधुनिकतावादी एहि सबकेँ वितण्डा मानैत छथि। बहुचर्चित रचनाकार राजकमल अपन 'स्वरगन्धा' कविता संग्रहक भूमिकामे कहि गेल छथि– 'कविताक हेतु केवल शब्द चाही।' आजुक रचनाकार भोगल यथार्थक चित्रण मात्रकेँ साहित्य मानैत छथि।

श्रीअरविन्दकुमार मिश्र 'नीरज' एहन विषाक्त वातावरणमे अपना युगक एक महान साधक, सिद्धपुरुष, जन्मजात वैरागी मिथिलाक एक सन्तकेँ अपना काव्यक नायक बनाय रचना कयलनि अछि। जखन कोनो ऐतिहासिक व्यक्तिकेँ नायक बनायब तखन ओहिमे भोगल यथार्थक अँटाबेस (गुंजाइश) हमरा जनैत सम्भव नहि छैक। वर्त्तमान कालिक रचनाकार महाकाव्यकेँ कालबाह्य मानैत छथि। तथापि महाकाव्यक नाम पर एखनहु बहुत पुस्तक मैथिलीमे आयल अछि सात गोट महाकाव्य साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भऽ चुकल अछि। प्रत्येक क्षेत्रक विषयक अवमूल्यन भेलैक अछि तखन एहि क्षेत्रमे कोना नहि होयतैक। किनतु सन्त तुलसीदासक उक्ति छनि– 'राम से बड़ो राम का नाम' प्राप्तः स्मरणीय लक्ष्मीनाथ गोसाँइ एहने नाम अछि जे असाधारण कोटिमे अबैत अछि। एहि नामक प्रति मिथिलाक निवासीकेँ असीम श्रद्धा ओ आस्था छनि। हम अहाँ आइ छी, काल्हि नहि रहब, परन्तु जाबत धरि धर्मक लेश मात्रो रहतैक गोसाँइजीक नाम अमर रहतनि। एहन महत्त्वपूर्ण व्यक्तिक चरित्रकेँ काव्यात्मक रूपदेबाक चेष्टा कयनिहार श्रीनीरज निश्चित रूपेँ समाजक धन्यवाद-साधुवाद प्राप्त करबाक अधिकारी छथि।

हम स्वयं परम्पराक पोषक छी। एहि काव्यक नायक परम्पराक एक

ज्योतिर्मान नक्षत्र थिकाह, किन्तु महाकाव्यक एकटा विधान छैक, ढाँचा छैक ओहि 'फ्रेममे फिट' करबाक हेतु नियम सभक पालन करब बेसी श्रमसाध्य छैक । यद्यपि एहिमे ओहि नियम सबमे कहल विधान किछु नहिओ रहैत बहुत किछु छैको । रसो छैक, अलंकारो छैक, प्राकृतिक छबि छटाक संग अष्टांग योग ज्योतिष शास्त्र, विभिन्न संस्कार आदिक सांगोपांग वर्णन छैक । घुणाक्षर न्याससँ उपमा, उत्प्रेक्षा, श्लेष, यमक, वृत्त्यनुप्रास, श्रुत्यनुप्रास आदि अलंकार जाहि तरहेँ अनायास उत्कीर्ण भऽ गेलैक अछि से प्रशंसनीय छैक, उदाहरणार्थ स्थालीपुलाक न्याससँ किछु उद्धरण द्रष्टव्य–

पुण्य भूमि पर पुण्य ग्राम हो, पुण्यवान लोकक व्यवहार
पुण्यमयी हो कीर्त्ति समाजक हो परिपूर्ण पुण्य परिवार

कवि जेनाा 'पकार'क, 'णकार'क पथारे पाठककेँ परसि देलनि अछि । दोसर उदाहरण– 'सुन्दर सुभग स्वरूप सभक अछि' एहि पदमे 'सकार'क संगम साकार भऽ उठल अछि ।

उपमाक एक उदाहरण– 'मुख मण्डल केर आभा जहिना नील गगनमे चान' यमक चमक चमचम करैत अछि– लखि लछनक ई सब शुभ लच्छन'

उत्प्रेक्षा– तेहि छन गुरुकेर दिव्य वचन, दय रहल सभाकेँ तत्त्वक ज्ञान
जनु अर्जुनकेँ कर्मयोग केर पाठ पढाबथि श्रीभगवान'

बाल लीलाक वर्णन तँ ततेक मनोहर बनि सकल अछि जे राम चरितमे सन्त तुलसीदास तथा सूर सागरमे सूरदासक चमत्कारक स्मरण कराय दैत अछि– एक उदाहरण–

लघु पदमे लघु पनही लागल
पनहीमे पुनि झुनकी तागल
झुनकी केर झुनझुन बोल सबदि
बालक केर झुण्ड बनय पागल'

बेसी उदाहरण दऽ विचारकेँ बोझिल बनायब होयत । मर्मज्ञ पाठककेँ पढ़ैत काल स्वतः बोध होयतनि ।

श्रीनीरजजी एहि महाकाव्यमे अग्रिम सर्गमे की वर्णित अछि तकर

पूर्वाभास करयबाक हेतु मात्र एक पद तथा सर्ग समाप्त भेला पर सर्गान्तमे एक मात्र पदक विधान कऽ एक नवीन प्रयोगक उद्‌भावना कयलनि अछि । ई नवीन प्रयोग एहि ग्रन्थक वैशिष्ट्यकेँ उजागर करैत अछि । लोक मान्यता छैक जे सोहारी गोल-गोल बेलल गेल हो अथवा तीन कोन भऽ गेल हो, मुदा पूरा फूलि गेल हो तँ पूर्णतः परिपक्व अछि, अपाच्य नहि भऽ सकैछ, तहिना लड्डू गोल हो वा टेढ़, माधुर्यमे कोनो अन्तर नहि होइत छैक । कवि श्रीनीरज' अपन भाषा साहित्यक भविष्य थिकाह । मातृभाषा अर्चनाक हेतु जे उपादान लऽ उपस्थित भेलाह अछि से श्लाघनीय छनि । हम कविक संवर्द्धना करैत अशेष आशीर्वाद दैत छियनि- वर्द्धस्व, देशं विमली कुरुष्व ।



परिशिष्ट

साहित्य अकादेमीक महत्तर सदस्यता प्राप्तिक अवसर पर व्यक्त उद्‌गार

हम अपनाकेँ दुविधाग्रसत मानसिकतामे पाबि रहलहुँ अछि । की बाजू से नहि फुरैत अछि । चकित-विस्मित छी एहि हेतु जे साहित्य अकादेमी जाहि सम्मान हेतु हमरा नामक चयन कयलक अछि तकर भार वहन करबामे हम क्षम छी ?

यद्यपि हम भाग्यवादी नहि छी, कर्मभूमि थिकैक तेँ कर्मकेँ प्रधानता दैत रहलिऐक । एक वरिष्ठ मित्र एहि उपलब्धिक लेल दूरभाष पर शुभकामना व्यक्त कयलनि तँ हम अपन लघुता व्यक्त करैत कहलियनि- हम तँ एहि योग्य नहि छी । ताहिपर ओ कहलनि- भाग्य ! ई भाग्य शब्द बहुत काल धरि हमरा माथकेँ मथैत रहल । हम अपन जीवन पर सोचैत सिंहावलोकन कयल । नीतिकार कहि गेल छथि- 'भाग्यं फलति सर्वत्र न विद्या न च पौरुषम् । नीतिकार मूर्ख नहि रहल होयताह । स्मरण भेल महाभारतक अनुशासन पर्वमे कहल एक उक्ति । व्यास कहने छथि-

> यथा बीजं विना क्षेत्रमुप्तं भवति निष्फलम् ।
> तथा पुरुषकारेण विना दैवं न सिध्यति ।

अर्थात् जेना बीज बिनु बाओग कयने जोतलो-कोड़ल खेत परता रहि जाइत अछि तहिना बिना उद्यम कयने भाग्य सेहो संग नहि दैत छैक । आब नीतिकारक कथनकेँ मानी अथवा व्यासक उक्तिकेँ ? यैह प्रश्न हमरा

दुविधाग्रस्त कयने अछि। यद्यपि पूर्व वर्षक प्रथम चरणमे हमर 'अतीत मन्थन' नामसँ आत्म-संस्मरण प्रकाशित भऽ चुकल अछि, जाहिमे जीवन भरिक गतिविधिक एक्स-रे हम समाजक समक्ष उपस्थित कऽ चुकल छी, तथापि आइ अपन मुहेँ अपन छोट-छोट उपलब्धिक निर्लज्जतापूर्वक चर्चा करबाक अनुमति उपस्थित जन समुदायसँ माङय अयलहुँ अछि। कारण आब साहित्य सेहो क्षुद्र राजनीतिसँ आक्रान्त भऽ रहल अछि। साहित्योमे प्रतिबद्धताक प्रश्नकेँ उठाओल जाय रहल अछि। राजनीतिमे आत्मप्रशंसाकेँ पूर्ण छूट भेटल छैक। आइसँ 60 वर्ष पूर्व एहि कलमसँ किछु पंक्ति लिखा चुकल अछि जकर एक मात्र पदक उल्लेख करैत छी–

अपन प्रशंसा अपने मुँह सँ
    द्वार-द्वार पर कयने घूरथि
जकर जेहन छै चालि तकर सङ
    टुक-दुम टुक-दुम तहिना पूरथि
बैसल बगुली केर टकाकेँ पाँच आइ पचास करै छथि।
चक्रक गति निर्माणक युगमे उनटे तेरह चास करै छथि।

एहि अवसरपर कोनो कटु-तिक्तक चर्चा वांछनीय नहि। हमरा सभक शिक्षा-ग्रहण समय धरि संस्कृतोमे फक्किकाक घनघोर युग आबि गेल छलैक। ओही फक्किकाक फक्की फँकैत सरसरायल प्रथमासँ आचार्य धरि परीक्षा पास करैत गेलहुँ। कवित्वक बीज प्रायः जन्मजात छल। जेना आचार्य सुरेन्द्रझा सुमन, हास्य सम्राट हरिमोहनझा अथवा विश्वकवि रवीन्द्रनाथ टैगोर लोकनिकेँ उत्तराधिकारमे रचना-संस्कार प्राप्त छलनि, हमरा से नहि प्राप्त छल। हमर पिता अध्यापक रहथि, अध्यापन आ 'कलौचण्डी महेश्वरौ' केँ प्रमुखता दैत देवाराधन आ अध्यापन यैह दू गोट काज छलनि। कोनो स्तोत्र अथवा श्लोक गुनगुनाइत नहि सुनलियनि। केवल शिव विषयक भक्तिपरक गीत सुनबामे रुचि छलनि। कवीश्वर चन्दाझाक चरणस्पर्शपूर्वक आशीर्वाद प्राप्त करबाक सुयोग भेटल रहनि। तेँ राजपण्डित बलदेव मिश्र द्वारा सम्पादित कवीश्वरक चन्द्रपद्यावली जखन राजपण्डितजी उपहृत कयलथिन तँ प्रदोष कालमे पार्थिव शिवलिंगक पूजा काल ओहिमेसँ सुनाबय कहथि। ओहि गायनसँ हमरामे जे जन्मजात बीज छल तकरा नामसाम्यक कारणेँ प्रायः

अंकुरित होयबाक अनुकूल वातावरण भेटि गेलै । यद्यपि ओहि अंकुरकेँ पल्लवित होयबामे प्रबल बाधा उत्पन्न भऽ गेलैक । अनुशासन पालन कयनिहार लोकक श्रेणीमे विशेष रूपेँ हमरो नाम लेल जाइत अछि, किन्तु ओहि बाधासँ लड़बा लै हम अपन किशोरावस्थेमे अनुशासनक घोर उल्लंघन कयने रही । सरस्वतीक कृपासँ भविष्यमे ओ विद्रोह हमरा जीवनयात्राक पाथेय बनल, जाहिसँ हमरा विमुख होयबाक आदेश छल, सैह कविकर्म आइ एतेक दूर धरि अनलक अछि । एहि क्रममे कनेक विषयान्तर होइत समाजकेँ कहय चाहैत छियनि जे आजुक अभिभावक धनार्जनक लालसासँ अपन सन्ततिकेँ अपन रुचिक अनुसार शिक्षित करय चाहैत छथि, जे उपयुक्त नहि । नेनाक विशेष रुचि देखि, ओही विषय दिस ओकरा प्रेरित-प्रोत्साहित करबाक चाही । ताहिसँ सफलताक सोपान पर द्रुत गतिएँ ओकर डेग आगू बढ़ैत छैक ।

हमरा जीवनमे अनेक एहन अवसर आयल अछि जाहिमे हमर नाम एक नंबर पर बिनु कोनो आयासेँ अबैत रहल अछि । यथा– 1941 ई.मे जखन सोड़ह वर्षक रही तँ मिथिला मिहिरमे पहिल कविता प्रकाशित भेल । 1946मे हमर कविता-संग्रह गुदगुदी छपल । जहिया प्रेससँ बहरायल ताहि दिन हमरा 200 प्रति देलक । राजनगरमे मैथिल महासभाक अधिवेशनमे कविसम्मेलन छलैक । हमरा भाग्येँ संयोगसँ मिथिलेश दूनू भाय ओहिमे उपस्थित रहथि । मैथिल महासभामे अधिकतर सक्रिय सदस्य ओकील लोकनि रहथि । हम 10 गोट संगी सभक संग कविता-पुस्तक लऽ पहुँचल रही । की फूरल, कविता-पाठक हेतु हमरो समय भेटल तँ हम ओकील शीर्षक कविताक पाठ कयलहुँ–

ओकील हाय मोकील बिना
कोकिलक संग की कूकि रहल
चातक बनि स्वातीबुन्द टकापर
ध्यान गाड़ि छी झूकि रहल

एकटा वरीय ओकील पहिल प्रति किनलनि आ हमर संगी सभक हाथमे राखल बीस-बीस प्रति हाथो-हाथ छुहुक्का उड़ि गेल । एतहिसँ हमर नाम एक नंबर पर आबय लागल । हमर पिता जखन पुस्तक देखलनि, उनटौलनि तँ अध्यापक शीर्षक पर दृष्टि पड़लनि–

हम 'अइउण् ऋलृक्' रटल जखन
कप्पार दरिद्रा सटल तखन
दस बर्ख परिश्रम कयला पर
दस टका भेटय ई फल पापक?
हम अध्यापक ।

कहलनि, हम अहाँक नाम चन्द्रनाथ राखल से सार्थक भेल । ध्यातव्य जे कवीश्वर चन्दाझाक सम्पूर्ण नाम चन्द्रनाथझा छलनि ।

उच्च माध्यमिक विद्यालयमे एकटा हेड मास्टर आ एकटा हेड पण्डित होइत छथि, शेष सब सहायक शिक्षक । पटना विश्वविद्यालय जखन ऐच्छिक रूपमे मैथिलीकेँ मान्यता देलकैक तँ कतहु-कतहु पढ़ाइओ शुरू भेलैक । मैथिली पढ़यबाक भार हेड पण्डित लोकनि उठौलनि । एम.एल.एकेडमीमे राधानन्दनझा छात्र छलाह । ओ मैथिलीक पढ़ाइ लेल आन्दोलन कयलनि । हमर नियुक्ति विशेषतः एही हेतु भेल । हेड पण्डितकेँ पलखति नहि रहनि ।

जखन बिहार विद्यालय परीक्षा समिति विषयानुक्रमसँ शिक्षक लोकनिक डाइरेक्टरी प्रकाशित कयलक तँ ओहूमे मैथिली शिक्षकक रूपमे हमर नाम एक नंबर पर रहल ।

फिल्मक माध्यमसँ भाषाक विकास ओ प्रचार-प्रसार होइत छैक । मैथिली भाषीकेँ सेहन्ता होइत छलनि जे मैथिलीमे सेहो फिल्म बनय, से मैथिलीमे पहिल फिल्म कन्यादान बनल । ओहिमे एकोटा मैथिली भाषी पात्र नहि । विभिन्न अन्यान्य भाषा-भाषीकेँ मैथिलीक संवाद पढ़ौनिहार चाही । हरिमोहनबाबू पटनामे, हम दरभंगामे । यद्यपि प्रबन्ध-अनुबन्ध आदिमे गोपेशजी संग दैत छलथिन, तथापि मैथिली सिखयबाक हेतु हरिमोहनबाबूकेँ हम ध्यानमे अयलियनि । हुनक आग्रह पर एतय छात्र सबकेँ पढ़ायब स्थगित कऽ पात्र सबकेँ मैथिली सिखबय ताहि दिनुक बम्बइ, आजुक मुम्बइ गेलहुँ । ओतय परिस्थितिवश रजतपटपर उतरय पड़ल । मातृभाषाक विकासक लेल नाचऽ पड़ल तँ नचलहुँ । कोनो चरित्रक भूमिकामे रजतपटपर उतरनिहार मैथिली भाषीमे हमरे नाम परिगणित भेल । एहि घटनाक संस्मरण 'कन्यादान फिल्मक नेपथ्य कथा नामक पुस्तकमे लिखि चुकल छी ।

जहियासँ ज्ञान-प्रान भेल तहियासँ मैथिली भाषाक स्वतन्त्र सत्ता लै संघर्ष चलिए रहल छलैक । कोनो युद्धमे नियन्त्रण भनेँ कमाण्डरक हाथमे रहौक, लड़ैत छैक सैनिक । मैथिलीमे सैनिकक सर्वथा अभाव छलैक । हम एक अध्यापकक पुत्र । एक सामान्य शिक्षक पद पर रहि आजीविकामे लागल रही, किन्तु ओतय सैन्य संघटनक पर्याप्त सम्भावना छलैक । हम ओही मोर्चा पर जमल रहलहुँ । मैथिली साहित्य परिषद्क उपमन्त्री रही । अधिकसँ अधिक छात्रक संख्या बढ़यबा लै साहित्य परिषद्क नाम पर एक परिपत्र छपाय अवकाशक दिनमे नगरक चारू कातक गाममे साइकिलसँ घूमि अभिभावक लोकनिसँ सम्पर्क करी 'मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण' नामक पुस्तकमे परिपत्रक प्रारूप देने छिऐक, देखल जा सकैछ । एतबा आत्मविश्वासक संग कहि सकैत छी जे छात्र समुदाय जे प्रेरित भेल से साहित्य तँ सहजहि, अन्यान्यो कोनो क्षेत्र- डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, विधायक, सांसद, प्रान्तीय ओ केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल, साहित्य अकादेमीक मौलिक ओ अनुवाद पुरस्कृत एकोटा क्षेत्र अवंच नहि रहल जतय हमर छात्र नहि होथि । गत वर्ष साहित्य अकादमी एक नवीन योजनाक अन्तर्गत विभिन्न भाषाक 25 गोट साहित्यकारकेँ अपन आवास पर रहैत अपन रुचि-प्रवृत्तिक अनुसार किछु लिखथि, ताहि हेतु मेधावृत्ति देलकनि । एहू अल्पज्ञकेँ ओ भेटलनि । अवधिक अभ्यन्तर 'अतीत मन्थन' शीर्षकसँ आत्मसंस्मरण लिखि मुद्रित कराय अकादेमीक समक्ष ई पहिल पोथी भेल जे उपस्थित कऽ देलहुँ ।

1941मे पहिल कविता छपल छल । आइ 2010मे हम सब एकत्र छी । विगत सत्तरि वर्षसँ सेवामे लागल छी । भनेँ अरकचे बथुआ लिखने होइ, निरन्तरता कतहु खण्डित नहि भेल अछि । हँऽ झण्डा लऽ इन्क्लाब-जिन्दाबाद, धरना-प्रदर्शन आदिमे हम अग्रसर नहि रहलहुँ, एहिमे अग्रणी रहल विद्यापति सेवा संस्थान । विगत 50 वर्षसँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान लेल चलैत संघर्ष फलीभूत भेल, तकर श्रेय संस्थानकेँ भेटलैक । संयोग एहन लागल जे ताहि समयसँ संस्थानक अध्यक्षक रूपमे हमरे नाम चलैत अछि, भनेँ कोल्हुआड़क महंकारे होइ, किन्तु नाम तँ हमरे चलैत अछि ।

1965मे साहित्य अकादेमीमे मैथिलीकेँ प्रवेश भेटलैक । विगत 45 वर्षमे महत्तर सदस्यताक योग्य अनेक दिग्गज विद्वान लोकनि छलाह । प्रथम

प्रतिनिधि आचार्य रमानाथ झा, दोसर डॉ० जयकान्त मिश्र, तेसर आचार्य सुरेन्द्रझा सुमन, सर्वोपरि डा० सुभद्रझा प्रभृति अनेक विद्वान, जनिका सभक पासङोक बराबरी हम नहि कऽ सकैत छी, किन्तु मैथिलकेँ ई सुयोग नहि लागि सकलैक ।

एहि महत्तर सदस्यताक हेतु जाहि तरहक काज अपेक्षित छैक से हमर दू गोट काज अछि । प्रथम- 'मैथिली आन्दोलन : एक सर्वेक्षण' दोसर 'मैथिली पत्रकारिताक इतिहास' । मैथिली पत्र-पत्रिकाक 1905 सँ 1979 ई. धरि 75 वर्षमे प्रकाशित 87 गोट पत्र-पत्रिकाक समीक्षा । मैथिली साहित्यक इतिहासमे पसरल बहुतो धुन्ध ओकर प्रकाशनक बाद छँटल, ओझरायल गीरह सोझरायल ।

एकर अतिरिक्त हमर जे पँचटकही, दसटकही मूल्यक काज, तकरा सबकेँ जोड़ि पूर्णांक हमरे नाम पर उचरल तँ तकर श्रेय हमरा नहि, मैथिलीकेँ जाइत छैक । गीतामे भगवान् श्रीकृष्ण अर्जुनकेँ कहलथिन-

'निमित्त मात्रं भव सव्यशाचिन्', हम निमित्तं मात्र छी । वस्तुतः ई सम्मान मैथिलीकेँ भेटलैक अछि ।

26 मइ 1912मे विश्वकवि रवीन्द्रनाथठाकुरकेँ नोबेल पुरस्कारक प्रसंग स्टाकहोममे प्रतिक्रिया पुछलकनि तँ उत्तरमे कहलथिन- हमरा आनन्द एहि हेतु नहि भऽ रहल अछि जे ई हमरा भेटल अछि, हमर छात्र समुदाय, जे हमरासँ प्रेम करैत छथि, हमर प्रशंसक लोकनि छथि, तनिका सबकेँ सेहो एहि पंक्तिमे बैसबाक योग्य घोषित कयल गेलनिं अछि, हम तेँ आनन्दित छी । कवीन्द्र रवीन्द्रक ओहि उक्तिकेँ हमहूँ दोहरा सकैत छी । छठमे दशकमे प्रतिज्ञा मूलक किछु पाँती राष्ट्रभाषा हिन्दीक माध्यमे लिखने रही-

मै काम करता जाऊंगा
जीवन में मिलने वालों का मैं स्वागत करता आया हूँ
मरने की हुई जरूरत तब मौके पर मरता आया हूँ
परवाह न मुझको है तेरी मग पर डग भरता जाऊंगा ।
मैं काम करता आऊंगा ।

अपनाकेँ अज्ञ कहब अपना प्रति अन्याय होयत । विज्ञ वा अभिज्ञ कहब मर्यादाक उल्लंघन होयत । प्रयोजन पड़ला पर विभिन्न विधामे कलम भँजैत रहलहुँ । कतहु प्रतिभाक बीज देखि पड़ल तँ तकरा अंकुरित करबा लै, अंकुरित भेटल तँ पल्लवित करबा लै तथा पल्लवितकेँ फलान्वित बनयबा लै, स्नेह-जल सिंचित करबा लै तत्पर रहलहुँ । बुन्देँ-बुन्देँ घट भरैत छैक । जलबिन्दु निपातेन क्रमशः पूर्यतेघटः । हमर विभिन्न प्रकारक मातृभाषाक सेवाकेँ रेखांकित करैत मूल्यांकन रूपमे मैथिलीओकेँ महत्तर सदस्यता देबाक योग्य बुझलक तदर्थ साहित्य अकादेमीक प्रति आभार व्यक्त करैत समस्त पदाधिकारी, संगहि काउंन्सिलर लोकनिकेँ धन्यवाद ज्ञापित करैत छियनि जे सर्वसम्मतिसँ ई निर्णय लेलनि तथा सभा भवनमे समुपस्थित बन्धु ओ बान्धवी लोकनिक संगहि मैथिली अनुरागी सम्पूर्ण समाजकेँ एहि सम्मानमे सहभागी होयबा लै आमन्त्रित करैत हार्दिक अभिनन्दन करैत छियनि ।

अन्तमे इहो जनाय दी जे एहि लै कोनो राशि नहि, केवल गरदामी छैक जे पखेबक बाद गृहस्थ अपन माल-जालकेँ पहिरबैत छैक ।

●

साहित्य अकादेमी हीरक जयन्तीक अवसर पर भेल अभिनन्दनक उत्तरमे व्यक्त किछु शब्दक मैथिली रूपान्तरण

स-रि-ग-म-प-ध-निरतान्ताम्
वीणा संक्रान्त कान्त हस्तान्ताम्
शान्ताम्   मृदुल-स्वान्ताम्
कुचभर नभितान्तां नमामिशिवकान्ताम्

अध्यक्ष महोदय, भारतीय भाषा-साहित्यसागरक मूल्यवान रत्न लोकनि, भारतीय भाषा साहित्यकाशक जगमगाइत नक्षत्र लोकनि, ज्ञान पिपासु साहित्यानुरागी बन्धु ओ बान्धवी लोकनि !

विश्ववन्द्य महात्मागान्धी कतोक शताब्दीसँ पराधीनताक पाशमे जकड़लि भारत माताक उद्धार हेतु सत्य ओ अहिंसाकेँ अस्त्र बनाय स्वदेशीक प्रसार ओ विदेशीक बहिष्कारक मन्त्रकेँ सविनय अवज्ञा आन्दोलनक माध्यमसँ आगाँ बढ़बैत अन्ततः विदेशी शासनसँ भारतकेँ मुक्त करौलनि । ई बात सत्य जे अन्यान्य विचारक लोक सेहो ओहि आन्दोलनकेँ सफल बनयबामे योगदान करैत रहलाह । कांग्रेसेमे नरम दल आ गरम दल दू भाग भऽ गेल छलैक ।

महात्मागान्धीक मान्यता छलनि– 'भारत माता ग्रामवासिनी' तेँ देशक उत्थान गाँवसँ होयबाक चाही । महात्मागान्धीक हत्या एक उद्दण्ड आततायी व्यक्ति द्वारा भऽ गेलनि, परन्तु हुनक सिद्धान्तक हत्या हुनक अतिप्रिय अनुयायी लोकनिए द्वारा कयल गेलनि आ देशक नौकामे उनटा पाल तनाय गेल । अहिसांक नञ्समासक 'अ' सत्यक संग जुटि गेल । आइ असत्य आ हिंसाक नग्न नृत्य सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ । विदेशीक बहिष्कार आइ सत्कारमे बदलि

गेल अछि। युग परिवर्त्तनक व्याजेँ त्यागक भावनाकेँ पातालमे गाड़ि, भोगक भावनाकेँ माथ चढ़ाय लेलहुँ। खान-पान-परिधान पर्यन्त पर अंग्रेजियत चढ़ि बैसल आ नैतिकता महासागरमे डूबि गेल।

साहित्य अकादेमीक स्थापना उत्कृष्ट साहित्यक निर्माणकेँ प्रोत्साहन संवर्द्धन तथा बहुभाषाभाषी एहि विशाल देशक आन्तरिक चिन्तनधारासँ सब केँ परिचित करयबाक हेतु अनुवादकेँ प्रश्रय देल गेलैक। राजनीतिक प्रदूषण साहित्योमे प्रवेश कयलक। राजनीतिक विचारक अनुसार साहित्योमे प्रतिबद्धता जोर पकड़लक जे नेबोक एक बुन्द रस जकाँ कराह भरि दूधकेँ फाड़ि देबामे समर्थ होइत गेल।

'साहित्य समाजक दर्पण थीक' से सर्वमान्य परिभाषा कहल गेल अछि, हम अपन अत्यल्प बुद्धिक कारणेँ दर्पणक सोझाँ ठाढ़ भऽ परीक्षा लेल तँ बामा हाथक घड़ी दहिना हाथमे बान्हल देखि पड़ल। आब अपनहि लोकनि कहू जे विम्बकेँ मान्यता होयबाक चाही अथवा प्रतिविम्बकेँ ? हमरा जनैत साहित्य अकादेमी सेहो अपन महान उद्देश्यसँ भटकि रहल अछि। समय रहैत चिन्तक लोकनिक ध्यान आकृष्ट होइनि एतबे कहैत हम विराम लैत छी।





साहित्य अकादेमीक तत्कालीन उपाध्यक्ष सह वर्त्तमान अध्यक्ष
श्रीविश्वनाथप्रसादतिवारी
एवं सचिव
श्रीअग्रहारकृष्णमूर्त्तिसँ
महत्तर सदस्यता सम्मान ग्रहण कैत
प. श्रीचन्द्रनाथमिश्र 'अमर'

नवरत्न गोष्ठी
आदित्य सदन, मिश्रटोला,
दरभंगा- 846004